



मुबलिलग्रात के लिये सीरते सव्यिदा फ़तिमतुज़ज़हरा بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के मुतब्लिलक बयानात का हसीन मदनी शुलदस्ता

शाने

खातूने जनत

رضي الله تعالى عنها

- खातूने जनत के लिये फ़िरिश्ते की बिशारत
- खातूने जनत के चलने और गुफ्तगू करने का अन्दाज़
- खातूने जनत का ज़ौके नमाज़
- खातूने जनत का निकाह व जहेज़
- काशानए फ़तिमा में फ़ाक़ा कशी का आलम
- खातूने जनत की वसियतें
- खातूने जनत के कफ़न का भी पर्दा
- खातूने जनत को किस ने गुस्ल दिया ?



शो शु फ़ेर्ज़ा जहाँशाहा

أَنْهَنَّا بِيُورَبِ الْعَلَيْبِينَ وَالشَّلُوْقَ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ النَّزَارِ سَلِيْمَنَ أَمَا بَعْدَ فَأَعُذُّ بِإِلَهِ مِنَ الْكَفَرِينَ الرَّؤْبِنِ طَبِّنِ اللَّهُ الرَّجُلُنِ الرَّجُونِ ط

کیتاب پढنے کی دعاء

दीनी کتاب یا اسلامی سبک پढنے سے پہلے جے ل مें दी हुई
دعاء پढ لیजिये اِن شاء الله عزوجل م جो کुछ پढ़ेंगे याद रहेगा । دعاء ये है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُئْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इस्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे
और हम पर अपनी रहमत नज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴ دار الفکر بیروت)

نोट : अब्बल आखिर एक-एक बार दुरुद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना

بکھی اع

و ماغفیرات



13 شबّان لول مُوکَرَّم 1428ھ.

کیامت کے روزِ حسرت

فَرْمَانِيَ مُسْتَفْضًا : سab سے جیयادا
ہسرت کیامت کے دین उस को होगी जिसे दुन्या में इस्म हासिल
کरने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स
को होगी जिस ने इस्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन
कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या नी उस इस्म पर
अُمَل ن کیया) (تاریخ دمشق لا بن عساکر ج ۱ ص ۳۸۵ دار الفکر بیروت)

کتاب کے خریدار مُوتવज्जेह हों

کتاب की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइंडिंग में
आगे पीछे हो गए हों तो مکتبतुल मदीना से रजूअ़ फ़रमाइये ।

أَنْهَنُّ بِيُورَبِ الْعَلَيْبِينَ وَالشَّلُوْلُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ النَّزَارِ سَلَيْلِينَ أَمَا بَعْدَ فَأَعُذُّ بِإِلَهِي مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِيبِنِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

مجالिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मव्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरक्कब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाए़अू करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिसे को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ **Sms, E-mail, Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इन्तिलाअू दे कर सवाबे आखिरत कमाइये।

मदनी इलितजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

 ...राबिता :-



सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = ٿ	ਤ = ٿ	ਫ = ڻ	ਪ = ڦ	ਭ = ڻ	ਬ = ٻ	ਅ = ۽
ਛ = ڙ	ਚ = ڙ	ਝ = ڙ	ਜ = ڙ	ਸ = ٿ	ਠ = ڻ	ਟ = ڻ
ਜ = ڙ	ਢ = ڙ	ਡ = ڙ	ਧ = ڙ	ਦ = ڙ	ਖ = ڙ	ਹ = ڙ
ਸ਼ = ڙ	ਸ = ڙ	ਜ = ڙ	ਜ = j	ਫ = ڙ	ਡ = ڙ	ਰ = r
ਫ = ڙ	ਗ = ڙ	ਅ = ڙ	ਜ = ڙ	ਤ = ٿ	ਜ = ڙ	ਸ = ڙ
ਮ = m	ਲ = l	ਬ = ڳ	ਗ = ڳ	ਖ = ڪ	ਕ = ڪ	ਕ = ڪ
ੀ = ڦ	ੁ = ڦ	ਆ = ڦ	ਯ = ڦ	ਹ = ڦ	ਵ = ڦ	ਨ = n

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
اَللّٰهُمَّ اكْبِرْ
كُلُّ هُنْدٍ مُّكْبَرٍ
كُلُّ هُنْدٍ مُّكْبَرٍ

کے موت اُولیٰ کے 12 بیانات پر مُعْتَدِل میں ہنسین گولڈستہ

شادی کھاتوں کے جانات

-:- مُکْرِنْتیبِیَن :-

مَدْنَى عَلِيٰ لَمَّا

شُو' بَاعِ فَإِذَا نَهَىَ سَاهَابَيَّاَتَ، سَاهَدَابَابَادَ
مَجَالِيَّةَ اَلَّا مَدْنَى نَتُولَ الْإِلْمَيَّاَ (دَوْلَتَهُ اِلْكَلَامِيَّا)

-:- نَاشِر :-

مَكْتَبَتُولَ مَدْنَى

سیلےکٹےڈ ہاؤس، ایلیفٹ کی مسجد کے سامنے،
تین دروازا، احمدآباد - 1، مो. + 919327168200

رَحْمَةُ اللّٰهِ وَرَأْصَحَابِهِ يَا حَبِيبَ اللّٰهِ

نام کتاب : شانے خواہوںے جنگت

مُرਜّیٰ بیویں : مَدْنَیٰ ؓ-لَمَّا (شُو'بَعْ فَجَانِ سَهْبَیَّات)

سینے تباہ اُت : شَفَّالَوْلَ مُوکَرْم، سि. 1434 ہی۔

ناشر : مکتبہ تعلیم مدنیہ، تین داروازا، احمدآباد - 1

تصدیق نامہ

تاریخ :

ہواں :

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى الله واصحابه اجمعين

تسدیق کی جاتی ہے کہ کتاب

“شانے خواہوںے جنگت” (उर्दू)

(مترابو : مکتبہ تعلیم مدنیہ) پر مجذلیسے تفتیش کوٹुبو
رسائل کی جانیب سے نجڑے پانی کی کوشش کی گई ہے۔ مجذلیس
نے اسے متابیلہ و مفہوم کے اُتباً سے مکٹور بھر مولانا
کر لیا ہے، البतھا کمپونیجینگ یا کتابت کی گلٹیوں کا
جیسا ماجذلیس پر نہیں ।

مجذلیسے تفتیش کوٹुبو ۲۶۳۷
(ڈا' وتو ۴۸۱)

E-mail : ilmia@dawateislami.net

مدنی ایلٹیجیا : کیسی اور کو یہ کتاب آپنے کی ڈیا جات نہیں ।

याद दाश्त

दौराने मुत्तालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफहा नम्बर नोट फरमा लीजिये । **इल्म** में तरक्की होगी ।

याद दाश्त

दौराने मुत्तालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफहा नम्बर नोट फरमा लीजिये । **इल्म** में तरक्की होगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
اَمَّا بَعْدُ فَقَاعُذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِيسِمُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

“شانے خاتمے ہجۃ النبی” کے ۱۱ نیتیتے کی نیتیتے سے इس کیتاب کو پढ़ने की “11 نیتیتے”

فَرْمَانَهُ مُسْتَفْضًا : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰيهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“يَا'نِي مُسْلِمٌ مُؤْمِنٌ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ”

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ۲۲۹۵، ج ۲، ص ۵۸۱)

दो मदनी फूल :-

- ﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अःमले खैर का षवाब नहीं मिलता ।
- ﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व सलात और ﴿2﴾ तअब्वुज़् व तस्मिय्या से आग़ाज़ करूँगी (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अःबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अःमल हो जाएगा) ﴿3﴾ रिजाए इलाही के लिये इस किताब का अब्वल ता आखिर मुतालआ करूँगी ।
 ﴿4﴾ हत्तल वस्त्र इस का बा वुजू और किल्ला रू मुतालआ करूँगी ।
 ﴿5﴾ जहां जहां “**اللّٰہ**” का नामे पाक आएगा वहां **عَزٰ وَجْلٌ** और
 ﴿6﴾ जहां जहां “**سَرَكَار**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां पढ़ूँगी । **﴿7﴾** दूसरों को ये ह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊँगी । **﴿8﴾** इस हडीषे पाक “**تَهَادُوا تَحَبُّو**” एक दूसरे को तोहफा दो आपस में महब्बत बढ़ेगी । (موطأ مالک، الحديث: ۱۳۷۱، ج ۲، ص ۴۰۳)
 पर अःमल की नियत से (एक या हस्बे तौफ़ीक) ये ह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूँगी । **﴿9﴾** अपनी इस्लाह के लिये मदनी इन्अ़ामात पर अःमल की कोशिश करूँगी । **﴿10﴾** सीरते फ़तिमा पर अःमल की कोशिश करूँगी **﴿11﴾** किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूँगी ।

(मुसनिफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अःलातِ سिर्फ़ ج़बानी बताना ख़ास मुफ़्रद नहीं होता)

झاجماںی فہریست

نمبر	مجاہمیں	سफہاں
1	پہلے اسے پढیے!	9
2	الل مددین تعلیمی کا تआڑھ	7
3	خواہوں جننات کی شانوں اعجمت	13
4	خواہوں جننات کی کرامات	47
5	خواہوں جننات کا جوکے ایجاد	75
6	خواہوں جننات کا ایشکے رسول	113
7	خواہوں جننات کا ایسا و سخا و	157
8	خواہوں جننات کا نیکا و جہوج	217
9	خواہوں جننات اور ٹمروں خاناداری	271
10	خواہوں جننات کا پردے کا اہتمام	313
11	خواہوں جننات کے فناکے	349
12	خواہوں جننات کا جوہد	379
13	ویسا لے رسول پر خواہوں جننات کی کافیتی	401
14	خواہوں جننات کا ویسا ل	441
15	تفسیلی فہریست	479

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرْسَلِيْنَ
آمَّا بَعْدَ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ طِبْسِمُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

अल मदीनतुल इलिम्या

अज़ : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, आशिके आ'ला हज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अंतार क़ादिरी रज़वी ज़ियाहि

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى احْسَانِهِ وَفَضْلِ رَسُولِهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी
तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत
और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का
अज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उम्र को ब हुस्नो खूबी सर
अन्जाम देने के लिये मुतअद्विद मजालिस का कियाम अमल में
लाया गया है जिन में से एक मजलिस “**अल मदीनतुल इलिम्या**” भी है जो दा'वते इस्लामी के ड़-लमा व मुफ़ित्याने
किराम क्षेर हमُّ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी,
तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के
मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इलिमय्या” की अवलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अःजीमुल बरकत, अःजीमुल मर्तबत, परवानए शम्पु रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअःत, अःलिमे शरीअःत, पीरे तरीकःत, बाईषे ख़ैरो बरकत, हज़रते अःल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफिज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن की गिरां मायह तसानीफ़ को अःसरे हाजिर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्त्र सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इलमी, तहकीकी और इशाअःती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअः होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह “दा’वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल **“अल मदीनतुल इलिमय्या”** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़ी अःता फ़रमाए और हमारे हर अःमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअः में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

امين بجاہ اللہی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم



کرماں جا نوں مुبارک 1425ھ.



پہلے ڈسے پڑھیے!

इस्लामी बहनों में नेकी की दावत आम करने में सहाबिय्यात व सालिहात का किरदार मशअले राह है। तब्लीग़ इस्लाम और ख़िदमते दीन के मुआमले में इन की ख़िदमात से चन्दां इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन बद किस्मती से आज के दौर में इस मौजूद पर मुषबत व मुस्तनद मवाद बहुत कम मिलता है और इस्लामी बहनों की इस इन्तिहाई अहम ज़रूरत और इन के देरीना मुतालबे के पेशे नज़र तब्लीग़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दावते इस्लामी के चैनल “मदनी चैनल” पर एक सिलसिला ब नाम “फैज़ाने سहाबिय्यात” शुरूअ़ किया गया, जिस में रुक्ने शूरा, निगराने पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, हाजी अबू रजब मुहम्मद शाहिद अन्तारी مَدْظُولُهُ الْعَالَى अपने ईमान अफ़रोज़ अन्दाज़ में सहाबिय्यात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की सीरते तथ्यिबा के दर-ख़शिन्दा पहलूओं को उजागर फ़रमाते हैं और मदनी चैनल के नाज़िरीन के लिये मदनी फूल इरशाद फ़रमाते हैं। मजलिस “अल मदीनतुल इलिम्या (सरदाराबाद)” इस सिलसिले को इस्लामी बहनों के लिये मुफ़ीद जानते हुए ज़रूरी तरमीम, इज़ाफ़े और तख़रीज के साथ तहरीरी सूरत में पेश करने की सआदत हासिल कर रही है। इस की पहली कड़ी ज़ेरे नज़र किताब “شانے خواہ نے جنات” है।

بारगाहे रब्बुल इज्जत में दुआ है कि इस सअूये सईद की तकमील में मुअ़ाविन तमाम इस्लामी भाइयों की काविशें अपनी आ़ली बारगाह में क़बूल व मन्जूर फ़रमाए।

اَمِين بِجَاهِ الرَّبِيعِ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

किताब “**शाने खातूने जन्नत**” को खुद भी मुकम्मल पढ़िये और दीगर मुसलमानों को भी इस के मुतालए की तरगीब दे कर नेकी की दा’वत को आ़म करने का षवाब कमाइये। **अल्लाह** तआला से दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्झामात का आमिल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक अ़ता फ़रमाए और दा’वते इस्लामी की तमाम मजालिस व शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अ़ता फ़रमाए।

اَمِين بِجَاهِ الرَّبِيعِ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

शो’बए फैजाने सहाबिय्यात (सरदाराबाद)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा’वते इस्लामी)

22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1434 हि. ब मुताबिक़ 5 जनवरी 2013 ई.



फरमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ऐ लोगो !

मैं ने तुम में दो चीजें छोड़ी हैं कि जब तक तुम इन को थामे रहोगे गुमराह न होगे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की किताब और मेरी इतरत या’नी अहले बैत।

(سنن الترمذى، ص ٨٥٨، حديث ٣٢٩١)

बयान नम्बर 1

ख्रिस्तूने जन्मत

की

शानों अज़मत

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّمَا تُؤْمِنُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِينِ الْجِيِّنِ طَبَّاسُمُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ط

خاتونے جنات کی شانوں درجات

دُوسرਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਰੀਫ਼ ਕਾਗ਼ਜ਼ੀ ਲਿਤ

ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੇ ਵਿਲਾਯਤ, ਮੌਲਾਏ ਕਾਏਨਾਤ, ਮੌਲਾ ਅੱਲੀ, ਮੁਖਿਕਲ ਕੁਸ਼ਾ, ਅੱਲਿਧੁਲ ਮੁਰਤਬਾ ਫਰਮਾਤੇ ਹਨ : ਹਰ ਸ਼ਾਖ਼ ਕੀ ਦੁਆ ਪਦੋਂ ਮੌਜੂਦ ਹੋਤੀ ਹੈ ਯਹਾਂ ਤਕ ਕਿ ਸਥਿਤੁਨਾ ਮੁਹੱਮਦ ਔਰ ਆਲੇ ਮੁਹੱਮਦ ਪਰ ਦੁਰੂਦੇ ਪਾਕ ਪਢੇ।

(المعجم الاوسط، ج ۱، ص ۲۱۱، الحدیث: ۷۲۱)

ਅੱਲਲਾਮਾ ਕਿਫ਼ਾਯਤ ਅੱਲੀ ਕਾਫ਼ੀ ਸ਼ਹੀਦ عَلَيْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُجِيدِ ਫਰਮਾਤੇ ਹਨ :

ਦੁਆ ਕੇ ਸਾਥ ਨ ਹੋਵੇ ਅਗਰ ਦੁਰੂਦ ਸ਼ਾਰੀਫ	ਨ ਹੋਵੇ ਹਵਾਰ ਤਕ ਭੀ ਬਰ ਆਵਰ ਹਾਜਾਤ
ਕੁਵੂਲਿਧਿਤ ਹੈ ਦੁਆ ਕੋ ਦੁਰੂਦ ਕੇ ਬਾਇਥ	ਧੇਰ ਹੈ ਦੁਰੂਦ ਕਿ ਧਾਰਿਤ ਕਰਾਮਤ ਵ ਬਰਕਾਤ
(ਕਾਫ਼ੀ ਕੀ ਨਾ'ਤ ਅਜੇ ਅੱਲਲਾਮਾ ਕਿਫ਼ਾਯਤ ਅੱਲੀ ਕਾਫ਼ੀ	عَلَيْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الشَّافِی

صَلَوٰعَلِ الْحَبِيبِ ! صَلَوٰعَلِ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰى مُحَمَّدٍ

ਫਿਰਿਥਤੇ ਕੀ ਬਿਥਾਰਤ ਬਣਾਉ ਖਾਤੂਨੇ ਜਨਤ

رضي الله تعالى عنه فرما : "میں نے اپنی والید امدادی سے اسے دیکھا : آप مुझے اجازت اُتਾ ਫਰماਏ ਕਿ मैं नबਿਯੇ ਰਹਮਤ, ਸ਼ਾਫੀਏ ਤਮਮਤ ਕੀ ਖਿਦਮਤ ਮੈਂ ਹਾਜ਼ਿਰ

ہو کر آپ کی ایکیتدا میں نمازِ مغرب
 ادا کر کر اور ارجمند کر کر کی آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم میرے اور
 تुمھارے لیے دعاؤں مغرب فرمائے ۔ ہجرت سایید دُنہا ہو جئے فرمائے
 فرماتے ہیں : “میں نبی یہ کریم، رکھ فورہ حییم
 کی خیدمتے بار بارکت میں ہاجیر ہو گا اور
 آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی ایکیتدا میں نمازِ مغرب پڑی، جب
 آپ دُشا کی ادا اپنی سے بھی فرمائے گئے
 اور تشریف لے جانے لگے تو میں آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے پیشے
 پیشے چل پڑا । نبی یہ گئے دام، رسمی ڈسٹریکٹ
 نے میری آواز سمعنی تو فرمایا : کون ؟ کیا ہو جئے فرمائے ؟
 ارجمند کی : جی، ہاں ! دُشا دُشا دُشا : تُمہاری کیا ہاجرت ہے ؟
 مان کی مغرب فرمائے ! فرمایا : یہ ایک فریشنا ہے جو
 اس رات سے پہلے کبھی جنمین پر نہیں ہوتا، اس نے اپنے رخ
 سے یہاں میں کی مسٹر سلام کرے اور مسٹر بیشarat دے کی
 بیان کاظمہ سیدہ نبیاء اہل الجنة و اہل الحسن والحسین سیدا شباب اہل الجنة
 یا نبی فرماتیما جناتی اورتوں کی سردار ہے اور
 ہوسن و ہوسن جناتی نبی جوانوں کے سردار ہے ।

(شیعہ تزمینی، ابواب المناقب عن رسول اللہ، باب مناقب حسن بن علی بن ابی طلب، ص ۸۵۷، حدیث: ۳۷۸۸)

صلوٰۃ علی الحبیب ! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! آپ نے مولانا حسین فرمایا

کی تاجدارے رسالت، مسٹر فہم جانے رحمت نے صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ نورے نبوبت سے ہجرتے سدیع دُناؤ ہجۃ الفہم کو پہچان بھی لیا اور ان کی دلیل ہاجت بھی مالوں کر لی کیا یہ کیون آ رہے ہیں؟ اور بیگیر ان کے کہے ان کے لیے اور ان کی والیدا کے لیے دعا ائمہ فرماتے بھی فرمایا۔

ہمارے آکھ پر کوچ پوشیدا نہیں،
آپ پر تو پ�ر کی ہلالت بھی ڈیاں (جذبہ)
ہے، چنانچہ ”بُوخَارِي شَارِف“ میں ہے، سرکارے مدنی نے مونوبرا،
سردارے مککا نے فرمایا : صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ نہ فرمایا :
”أَحُدْ جَبَلٍ يَجْنَبُ وَجْهَهُ“
اوہم اس سے محببت کرتے ہیں ।“

(صَحِيْحُ البَخَارِي، کتاب الزکاة، باب حرث التمر، ص ۱۲، الحدیث: ۱۳۸۲)

”ہداۓ اکے سدیع دی آلا ہجرت“
”بُو خَشَاش شَارِف“ میں کیا خوب فرماتے ہیں :

اور کوئی گئے کیا توم سے نیہاں ہو بھلا
جب ن خودا ہی چھپا توم پے کر دوں دوں دوں

(ہداۓ اکے بُو خَشَاش شَارِف اجڑی امامے اہل سنت سمعانی)

شہرِ کلماں مें رجा :

या रसूलल्लाहؐ आप की शाने अ़ज़मत
निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती हालत में आप
ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार
का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जो कि गैबुल गैब
है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार
हो गया तो अब कोई और गैब आप से किस तरह निहां या'नी
छुपा रह सकता है । आप صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَامٌ पर करोड़ों बार
दुरुदो सलाम का नुज़ूल हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सच्चिदुना हुज़ैफ़ा
बिन यमान سे مरवी ईमान अफ़रोज़ हृदीषे पाक
से आक़ा की शहज़ादी की शाने अ़ज़मत
निशान के साथ साथ आप صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَامٌ के नवासे ह़सनैने
करीमैन, तथ्यबैन, ताहिरैन, सच्चिदैन, जलीलैन, क़मरैन,
शहीदैन की शानो शौकत भी ज़ाहिर हुई कि येह दोनों शहज़ादे
ह़सन व हुसैन جन्नती जवानों के सरदार हैं ।

ک्या بات رज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और हसन फूल

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرْضَاتِ) (हृदाइके बख़िशाश अज़्य इमामे अहले सुन्नत)

شَرْفُ الْكَلَامِيِّ رَج़ा :

ऐ रज़ा ! उस करम व रहमत के गुलशन की क्या बात व
मिषाल है जिस की कली व गुन्चा हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा
तथियबा ताहिरा और जिस के फूल जन्ती जवानों
के सरदार हज़रते इमामे हसन व हुसैन हैं।

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَامٍ

سَاصِيَّدَا فَاطِمَا كَوْ مُعْكَتْسَرْ تَأْمَارِفُ

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
की मत्कूआ 872 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “सीरते मुस्तफ़ा”
सफ़हा 697 पर शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल
मुस्तफ़ा आ’ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيِ फ़रमाते हैं : हज़रते सच्चिदतुना
फ़ातिमतुज़्ज़हरा صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَامٍ शाहनशाहे कौनैन
की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा प्यारी और लाडली
शहज़ादी हैं⁽¹⁾ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम “फ़ातिमा” और

(1)...याद रहे कि हमारे प्यारे आकाصَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَامٍ के 3 शहज़ादे और 4 शहज़ादियां
थीं शहज़ादों के नाम हज़रते सच्चिदुना क़ासिम, हज़रते सच्चिदुना इब्राहीम, हज़रते
सच्चिदुना अब्दुल्लाह أَبْدُ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ और शहज़ादियों के नाम हज़रते सच्चिदतुना
ज़ैनब, हज़रते सच्चिदतुना रुक़या, हज़रते सच्चिदतुना उम्मे कुलषूم, हज़रते सच्चिदतुना
फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ शहज़ादियों में सब से
बड़ी थीं।

الْمَوَابِدُ الْلَّذِيَّةُ مَعَ شَرْحِ الْأَزْقَانِ، الفَصْلُ الثَّانِيُّ ذِكْرُ أَوْلَادِ الْكَرَامِ، ٤، ص ٣١٤، ٣١٣

प्रेशकश : नज़ारियों अल मदीनतुल इलिया (दा'वते इस्लामी)

لکھ “जहरा” और “बतूल” है। इमाम अब्दुर्रहमान बिन अली जौज़ी फ़रमाते हैं : ए’लाने नुबुव्वत से 5 साल क़ब्ल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा की رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا پैदाइश हुई। وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّوَجَلَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (الْفَوَاهِبُ الْلَّذِيَّةُ مَعَ شَرْحِ الرَّزْقَانِيِّ الفَصْلُ الثَّانِي فِي ذِكْرِ اُولَادِ الْكَرَامِ ج٤، ص٣١)

صلوات على الحبيب! صلى الله تعالى على محمد

अलक़बात

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा के बे शुमार अलक़बात हैं जैसे उम्मुस्सादात, मख्दूमए काएनात, दुख्तरे मुस्तफ़ा, बानूए मुर्तज़ा, सरदारे ख़वातीने जहां व जिनां, हज़रते सय्यिदा, त़स्थिबा, त़ाहिरा, फ़ातिमा ज़हरा और बतूल, ज़ाकिया, राजिया, मरजिया, आबिदा, ज़ाहिदा, मोहद्दिषा, मुबारका, ज़किया, अज़रा, सय्यिदतुनिसा, खैरुनिसा, ख़ातूने जनत, मुअज्ज़मा, उम्मुल हाद-उम्मुल हसनैन वगैरा⁽¹⁾ जैसी अज़ीम कुन्यतें और कषीर अलक़बात आप की رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا शख़िس़य्यत को ही मौजूं हो सकते हैं।

आप की एक ख़ास कुन्यत “उम्मे अबीहा” भी है। (الْمُفْجُمُ الْكَبِيرُ، ذِكْرُ سَنِ فَاطِمَةٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا، ج٩، ص٣٦١، محدث: ١٨٤١٨)

(1).... उम्मुस्सादात या’नी सादात की अस्ल। मख्दूमए काएनात या’नी तमाम काएनात के लिये क़बिले ता’ज़ीम। दुख्तरे मुस्तफ़ा या’नी

فَاطِمَةُ الْمُصْلَى

खातूने जनत के बाबाजान, रहमते आलमिय्यान,
महबूबे रहमान का फरमाने आलीशान है :

إِنَّمَا سُمِّيَتْ فَاطِمَةٌ لِأَنَّ اللَّهَ فَطَمَهَا وَمُحِبِّيهَا عَنِ النَّارِ

तर्जमा : इस (या'नी मेरी बेटी) का नाम फ़ातिमा इस लिये
रखा गया क्योंकि **अल्लाह** तआला ने इस को और इस के
मुहिब्बीन को दोज़ख से आज़ाद किया है ।

(كَنْزُ الْعِمَالِ،كتاب الفضائل،الفصل الثاني فضل أهل البيت مفصلا، ج ١٢، حسن، ٥٠، حدیث ٢٢٢)

..... प्यारे आका की बेटी । बानूए मुर्तज़ा या'नी
हज़रते सच्चियदुना अलिय्युल मुर्तज़ा की अहलिया ।
सरदारे ख़वातीने जहां व जिनां या'नी तमाम दुन्या और जनत की
औरतों की सरदार । सच्चियदा या'नी सरदार । त्रुच्छियबा या'नी पाकीजा ।
ताहिरा या'नी त्रहारत वाली । फ़ातिमा ज़हरा या'नी रोशन । बतूल या'नी
मुन्क़ते अ होना, कट जाना (चूंकि आप دُنْيَا مें रहते हुए भी
दुन्या से अलग-थलग थीं । लिहाज़ा आप رضي الله تعالى عنها का लक़ब बतूल
हुवा) । ज़ाकिया या'नी नेक । राजिया या'नी राज़ी रहने वाली । मरजिया
या'नी पसन्दीदा । आबिदा या'नी इबादत गुज़ार । ज़ाहिदा या'नी दुन्या से
बे रग्बत । मोहृदिषा या'नी अहादीष बयान करने वाली । मुबारका या'नी
बा बरकत । ज़किया या'नी पाक । अज़रा या'नी पाक दामन दोशीजा ।
सच्चियदतुनिसा या'नी तमाम औरतों की सरदार । ख़ैरुनिसा या'नी
औरतों में सब से बेहतर । खातूने जनत या'नी जनती औरत । मुअ़ज़्ज़मा
या'नी अज़मत वाली । उम्मुल हाद-उम्मुल हसनैन या'नी हिदायत याप्तगान
सच्चियदैना हसनैने करीमैन رضي الله تعالى عنها की मां ।

رَحْمَةِ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبِالْمُسْلِمِينَ
हज़रते सव्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसउद्

إِنَّ فَاطِمَةَ أَحْسَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَ اللَّهُ ذُرِّيَّتَهَا عَلَى النَّارِ

तर्जमा : बेशक फ़ातिमा ने पाक दामनी इख्तियार की
और **अल्लाह** तभीला ने इस की अवलाद को
दोजुख पर ह्राम फ़रमा दिया है।

(الستارك للكلام، كتاب معرفة الصحابة، باب فاطمة احصنت فرجها.. الخ، ج ٢، ص ١٣٥، الحديث ٢٧٩)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فَرَمَأَتْهُ
हृज़रते सम्यिदुना अनस बिन मालिक
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
हैं कि मैं ने अपनी वालिदा से हृज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
के मुत्अल्लिक पूछा तो फ़रमाया : گَانَتْ گَالْفَمِر لَيْلَةَ الْبُدْرِ
या'नी सम्यिदा चौदहवीं रात के चांद की तरह हसीनो जमील थीं ।

(**المُسْتَدِرُكُ لِلْكَلِمَكِ**، كتاب معرفة الصحابة، ذكر ما ثبت عندنا من اعتقاد فاطمة... الخ، ج ٢، ص ١٢٩، الحديث: ٣٨١٣)

बतल व कातिमा जुहरा लक्कब इस वासिते पाया

कि दुन्या में रहें और दें पता जन्त की निगहत⁽¹⁾ का

(دیوانے سالیک ارجوں حکیم مل عتمت مسکنی احمد دیار خان) علیہ رحمۃ الرحمٰن

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) खुशबू

੨ ਅਲਕਾਬਾਤ ਕੀ ਵਗਹੇ ਕਸ਼ਮਿਆ

﴿1﴾ जहरा (या'नी जन्मत की कली)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार
खान नईमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا آپ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ के नाम और लकड़ी की वजह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** तआला ने जनाबे प्रतिमा की अवलाद, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا آप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुहिब्बीन को दोज़ख़ की आग से दूर किया है इस लिये आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम “फ़तिमा” हुवा। चूंकि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا दुन्या में रहते हुए भी दुन्या से अलग थीं लिहाज़ा “बतूल” लकड़ी हुवा, “ज़हरा” ब मा’ना कली, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जन्नत की कली थीं हत्ता कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا कभी ऐसी कैफ़ियत न हुई जिस से ख़वातीन दो चार होती हैं और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के जिस्म से जन्नत की खुशबू आती थी जिसे हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का लकब “ज़हरा” हुवा।”

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيَّحِ، كِتَابُ الْمَنَاقِبِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ، ج ٨ ص ٤٥٢ نَعِيمِي كِتَابُ خَانَهُ گُجرَات)

२..... ताहिरा व जाकिया

इस का मत्तूलब हैः “पाको साफ़”। चूंकि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا
بचपन ही से अपने बाबाजान रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ
की नजरे रहमत और फैज़ान से ज़ाहिरी और बातिनी तहारत व पाकी

ہاسیل کر چکی ٹھیک ہتھا کی آپ **ہے** جو و نیفاس سے بھی مونجھا و مورا (میرے زمین پر یا نبھی) نہیں پاک ساکھی (بھی جسما کی ہے جو رحمۃ اللہ علیہ رحیم رحیم کی سیلیت سے ساییدوں اور اعلیٰ ائمہ کی طرف سے مورا کی طرف سے پاک نکل کرتے ہیں کہ شاہزادے ہر دو سارے، مککی مدنی آکا، والیدے ماجیدے جو رہا نے صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا : ”میری بیٹی فاطمہ انسانی شکل میں ہوئے کی تھے ہے جو و نیفاس سے پاک ہے । ”

(کنز المثقال، کتاب الفضائل، الفصل الثانی فضل اهل البيت مفضل، ج ۱۲، ص ۵۰، الحدیث: ۳۲۲۱)

سادیکا سالیہ ساہما سابیرا	ساف دل نے کھو پارسا شاکیرا
آبیدا جاویدا ساجیدا جاکیرا	ساییدا جاویدا تاییدا تاہیدا
جانے احمد کی راہت پے لاخوں سلام ^(۱)	

صلوٰعَلِيُّ الْحَبِيبِ ! صلی اللہ علیٰ علیٰ محمد

(۱).... ماجھوڑا اشاعت میں بیان کردہ مسٹر کل ایڈیشن کے مباحثی : سادیکا یا'نی سچ بولنے والی । سالیہ یا'نی نے ک । ساہما یا'نی روزے رخنے والی । سابیرا یا'نی سب کرنے والی । نے کھو یا'نی اچھی خسلت والی । پارسا یا'نی نے ک । شاکیرا یا'نی شوک کرنے والی । آبیدا یا'نی دبادت کرنے والی । جاویدا یا'نی دنیا سے بے رجوبت । ساجیدا یا'نی سجدہ کرنے والی । جاکیرا یا'نی جیکر کرنے والی । تاییدا یا'نی پاکو ساف । تاہیدا یا'نی تھا رات والی ।

شہزادی کوئی نہ، عالم ہسپنے کی جناتی اورتوں کی سردار، خوب سوت کلی کی تھے را پاکیجا تھا رات والی ہے، آپ کی جات ہے جو رحمۃ اللہ علیہ رحیم رحیم کے لیے راہتے جان ہے ।

فِجَادِ لِلَّهِ بَطْوُلَ بِجَبَانَةِ رَسُولِ

﴿1﴾ ... جो کुछ تेरی خوشی ہے خودا کو وہی اُنجیز۔

خاتم مولیٰ مُرسَلین، رحمٰتُ اللہِ عَلَیْہِ وَالْوَسْلَمُ سادیکو اُمّین نے ہجرتے ساییدتُونا فاطمہ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَالْوَسْلَمُ سے فرمایا : “تُمُّھارے گُजَّب سے گُجَّبےِ إلٰہی ہوتا ہے اور تُمُّھاری ریضا سے ریضاۓِ إلٰہی ।”

(المُسْتَدِرُكُ لِلْحَلَمِ، کتاب معرفة الصحابة، باب نداء يوم المشر.....الخ، ج 4، ص ١٣٧، حدیث ٤٧٨٣)

﴿2﴾ ہم کوئے ہے وہ پسندِ جیسے آٹو تُو پسند

دیلبارے اُمّینا، سرتاجے اُداشا، والیدِ فاطمہ رَضِیَ اللہُ عَنْہَا نے ارشاد فرمایا : “فاطمہ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَالْوَسْلَمُ میرے جسم کا ہیسپا (ٹوکڈا) ہے جو اسے نا گوار وہ مُझے نا گوار، جو اسے پسند وہ مُझے پسند । روجے کیا مات سیوا اے میرے نسب، میرے سبب اور میرے ہمیڈو جو ریشوں کے تماام نسب مُنکرے اُ (یا' نی ختم) ہو جائے ।”

(المُسْتَدِرُكُ لِلْحَلَمِ، کتاب معرفة الصحابة، باب دعاء لدفع الفقر.....الخ، ج 4، ص ١٤٤، حدیث ٤٨٠)

﴿3﴾ جیسا رہو شاہو رسول

آلبانوؑ کے مہبوب، داناۓ گویوب، مونجھوہن رَضِیَ اللہُ عَنْہَا اُنیل ڈیوب کا ارشاد ہے : “فاطمہ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَالْوَسْلَمُ تماام جہاونوں کی اُرتوں اور سب جننتی اُرتوں کی سردار ہے ।”

या'नी फ़ातिमा (رضي اللہ تعالیٰ عنہا) मेरा टुकड़ा है जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।” और एक रिवायत में है : يُرِيْبِيْنِيْ مَا رَأَيْهَا وَيُوْدِيْبِيْنِيْ مَا اذْهَاهَا : या'नी इन की परेशानी मेरी परेशानी और इन की तक्लीफ़ मेरी तक्लीफ़ है।”

(مشكوة المصاين، كتاب المناقب، باب مناقب أهل بيته... النبي... الخ، ج ٢، ص ٤٣٦، حديث ٦١٣٩)

सथ्यदा, ज़ाहिरा, तथ्यबा, ताहिरा

जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّزِ) (हृदाइके बख्खिश अज़्र इमामे अहले सुन्नत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायात से
पता चला कि **अल्लाह** نے سच्चिदतुन्निसा, वालिदए उम्मे
कुलषूम व जैनब व रुक्म्या हज़रते सच्चिदतुना फ़तिमतुज़्ज़हरा
की ज़ाते मुक़द्दसा को फ़ज़ाइले हमीदा व कमालाते
कषीरा से सरफ़राज़ फ़रमाया हत्ता कि आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की
खुशी को अपनी खुशी और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की नाराज़ी को
अपनी नाराज़ी क़रार दिया यहां उन बद नसीबों के लिये मकामे
गौर है जो सच्चिदए काएनात **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**
की अवलादे पाक की गुस्ताखियां करते और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**
की नाराज़ी मौल ले कर उख़रवी तबाही का सामान करते हैं ।

باغے جننات کے हैं बहरे मदह ख़्वाने अहले बैत

तुम को मुज़دा نار का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

(जौके ना'त अज़ : شاہنशाहे سुख्न मौलाना हसन रज़ा ख़ान) (علیهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

या'नी अहले बैत की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करने वालों के
लिये जन्नत के बाग़ात हैं और ऐ अहले बैत के दुश्मनो ! तुम्हारे
लिये दोज़ख़ की बिशारत है ।

صَلُوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

खुश नसीब हैं वोह लोग जो अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان
से महब्बत करते हैं और **अल्लाह** व रसूल

عَزَّوَجَلَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
वालिदे फ़ातिमतुज़्ज़हरा (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को खुश करने वाली
चीज़ हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा व आले फ़ातिमा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से
महब्बत व अक्रीदत है और जिसे खुश किस्मती से रसूले पाक,
साहिबे लौलाक, सच्चाहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा
हासिल हो गई उसे रब्ब तआला की रिज़ा मिल गई क्यूंकि

खुदा की रिज़ा चाहते हैं दो अलम

खुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद

(हदाइके बख्शाश अज़ इमामे अहले सुन्नत) (علیهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرْبِ)

शर्हे कलामे रजा :

दोनों जहां दुन्या व आखिरत खुदा की खुशनूदी के ख़्वाहां हैं और रब्ब तआला हुज़ूर ﷺ کो खुश रखना चाहता है जैसा कि इरशाद فُरमाता है : ”وَسُوفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ“ تर्जमए कन्जुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राजी हो जाओगे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ਤੱਖੀਰੇ ਮੁਸ਼ਟਫਾ

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीक़ा,
तथ्यिबा, تَاهِيرَا فُرْمَاتِي هُنْهَا कि मैं ने चाल ढाल,
شکلो शबाहत (रंग-रूप) और बात-चीत में फ़ातिमा अ़फ़ीफ़ा
(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) से बढ़ कर किसी को हुज़ूर नबिये अकरम
से مुशावेह नहीं देखा और जब हज़रते फ़ातिमा
आप (صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) की बारगाह में हाज़िर होतीं
तो हुज़ूर आप (صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) के इस्तिक्बाल के
लिये खड़े हो जाते, آप (صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) के हाथ थाम कर उन को
बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते ।

जहरा जदों वी आइयां खडे हो गए रसुल

एन्हों कहवां शफकत या प्यार फातिमा

صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم اور جب ہужرے پورنور، شاپے پرمیونشہار
 رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم آپ کے پاس تشریف لے جاتے تو آپ رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم
 ہujr رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم کی تا'جیم کے لیے کیا مفرما تھا،
 آپ رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم کے مبارک ہاثوں کو ثام کر گوسا دئتے
 اور اپنی جگہ بیٹھاتے ।

(سنن ابو داؤد، کتاب الادب، باب ما جاء فی القيام، ص ۸۱۲، حدیث ۵۲۱۷)

رسول اللہ کی جیتی جاگتی تसوییر کو دेखا

کیا نجرا را جن آنکھوں نے تفسیر نبیع و نبیع (۱) کا

(دیوان سالیک ارجح ہکیمی مولیٰ عالم مسٹر احمد یار خاں علیہ رحمۃ الرحمٰن

صلوٰۃ اللہ علی الحبیب ! صلی اللہ علی محمد

سچیدا فاتیما روہنگ پیر ہنس پڈیں

عمول موالیں ہجڑتے سچیدا تو نا ایسا سیدھی کا،
 تھیبا، تھیرا، ابیدا، جھیدا رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم کی فرماتی ہے :
 آکھ کی شہزادی، خاتونے جنگت ہجڑتے فاتیما رضی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم سرکرے کائنات کی خدمتے با برکت میں
 ہاجیر ہریں । ان کا چلنہا ہبھب (یا نی بیلکل) رسول اللہ کے معاشرہ ثا، جب مہبوبے رہب، شاہنشاہے
 ابربو ارجمند نے ان کو دेखا تو فرمایا : اے
 میری بیٹی ! مرحبا ! فیر ان کو بیٹھایا، فیر ان سے سرگوشی

(۱)..... یا نی سچیدا فاتیما تو جھرہ

شانے خاٹونے جننات (رضي الله عنهما) خاٹونے جننات کی شانے درجات

की (या'नी कान में कोई बात कही) जिस को सुन कर शहज़ादी बहुत रोईं। जब महबूबे रब्ब, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने उन की बे क़रारी देखी तो दोबारा सरगोशी की जिस से आप हंस पड़ीं (हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीक़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ फ़रमाती हैं :) जब हुज़ूरे पुरनूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا खड़े हो गए तो मैं ने ख़ातूने जन्नत से पूछा : आप से रसूले खुदा मैं ने क्या सरगोशी की थी ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का राज़ इफ़क़ा (या'नी ज़ाहिर) नहीं करूंगी, (हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :) जब **अल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के रसूल عَزَّ وَجَلَّ रफ़ीके आ'ला से जा मिले (या'नी महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का विसाल हो गया) तो मैं ने कहा : मेरा आप पर जो हक़ है मैं आप को उस हक़ की क़सम दे कर सुवाल करती हूं, मुझे बताइये : रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने आप से क्या फ़रमाया था ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : हां ! अब मैं बताती हूं, पहली बार हबीबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने सरगोशी की तो मुझे येह ख़बर दी कि हर साल जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَامُ (मुझ से एक बार कुरआने पाक का दौर किया करते थे इस मरतबा उन्होंने 2 बार दौर किया है, अब मेरा येही गुमान है कि मेरा वक़्त क़रीब आ गया है, तुम **अल्लाह** तआला से डरना और सब्र करना, बेशक मैं तुम्हारा अच्छा पेशवा हूं ख़ातूने जन्नत ने कहा :

ये ह सुन कर मुझ पर गिर्या तारी हुवा (या'नी मैं रोने लगी) । जब बाबाजान, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने मेरी बे क़रारी देखी तो मुझ से दोबारा सरगोशी की और फ़रमाया :

يَا فَاطِمَةُ أَلَا تَرْضِيْنَ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةً نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَوْ نِسَاءُ الْمُؤْمِنِيْنَ
तर्जमा : ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम तमाम जन्नतियों की बीवियों या मोमिनों की बीवियों की सरदार हो !
खातूने जनत ने फ़रमाया : फिर मुझे हँसी आ गई ।

(مشكاة المصايب، كتاب المناقب، باب مناقب أهل بيته، الفصل الأول، ج ٢، ص ٢٣٥، الحديث: ٦١٣٨)

10 फ़ज़ाइले फ़ातिमा

《1》.... खातूने जनत हज़रते फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها सर से पांच तक हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं ।

《2》.... आप رضي الله تعالى عنها की चाल-ढाल हर वज़अ-क़त़अ हुज़र صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के मुशाबेह थी ।

《3》..... **अल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इन्हें रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की जीती जागती तस्वीर बनाया था ।

《4》.... मुफ़्ती अहमद यार खान عليه رحمة رب العالمين उम्मुल हसनैन رضي الله تعالى عنها की शान में अर्ज़ करते हैं :

रसूلुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा
किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ्सीरे नुबुव्वत का
(दीवाने सालिक अज़्हर कीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿5﴾.... हुजूर صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज्ज़हरा को आता देखते तो खुशी से खड़े हो जाते और अपनी जगह बिठा लेते ।

﴿6﴾.... जब ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बारगाहे रिसालत में हाजिर हुईं तो तमाम उम्महातुल मुअमिनीन मौजूद थीं मगर शाहे बहूरो बर, रसूले अन्वर صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने राज़ की बात सिर्फ़ अपनी लाडली शहज़ादी से की ।

﴿7﴾.... माहे रमज़ान में कुरआन का दौर करना सुन्नते रसूली भी है और सुन्नते जिब्रीली भी । (कुरआने पाक का दौर करने का मतलब येह है कि एक पढ़े और दूसरा सुने, फिर दूसरा पढ़े और पहला सुने, मालूम हुवा हबीबे खुदा صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपने विसाले मुबारक का पहले से ही इल्म था कि अगले रमज़ान से पहले ही हमारी वफ़ाते ज़ाहिरी हो जाएगी)

﴿8﴾.... ऐ फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) जैसे तुम हमारी हयात शरीफ में तथ्यिबा, ताहिरा, मुत्तकिय्या, साबिरा रही हो ऐसे ही हमारी वफ़ात के बाद भी रहना, तुम्हारे पाए इस्तक्लाल (اِس-ْتَقْلَال) (या'नी मुस्तक्लिल मिज़ाजी) में जुम्बिश (مُمْبَشٌ) (या'नी हरकत)

ن آنے پا�، خاطونے جننات نے اس پر اُمَل کر کے دیخا دی�ا، رونا سब्र کے خیلaf نہیں، نوہا، پیٹنا وغیرا سب्र کے خیلaf ہے یہ آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا نے کبھی نہیں کیا ।

﴿9﴾.... تاجدارے رسالت ﷺ نے اپنی شاہزادی کو جناتی لوگوں کی بیویوں یا مومینوں کی بیویوں کی سردار ہونے کی بیشarat دی ।

﴿10﴾.... هجرتے ساییدتُونا مالک بین ان س فرماتے ہیں : تھارتے نفس اور شرفے نسب مें خاطونے جننات هجرتے ساییدتُونا فاتحِ مُتужَّہ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کے برابر کوئی نہیں ہو سکتا ।

(مرأة المناجح شرح مشكاة المصايب،كتاب الفضائل،باب مناقب أهل بيته،ج ٨،ص ٢٥٣ تا ٢٥٥)

एक और रिवायत में है : उम्मुल मोअमिनीन हज़रते ساییدतُونा आइशा सिद्दीका، तथ्यिबा، ताहिरा फरमाती हैं : रसूले करीम، رَجُلُ فُرْहَمٍ ﷺ ने अपनी شاہزادी खातूने جननत हज़रते ساییدتُونा فاتحِ مُتужَّہ को बुलाया और कान में कोई बात फरमाई वो ह बात सुन कर खातूने جननत रोने लगीं, आका ने फिर सरगोशी की (या'नी कान में कोई बात फरमाई) तो खातूने جननत हँसने लगीं, हज़रते ساییدتُونा आइशा सिद्दीका، तथ्यिबा، ताहिरा फरमाती हैं : मैं ने खातूने جननत से कहा : आप के बाबाजान, رَحْمَتُهُ اَلَّا لَمِيزَانٌ ने आप के कान में क्या फरमाया जो आप रोईं और दोबारा सरगोशी में क्या

फूरमाया जो आप हंसीं ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : मेरे बाबाजान रहमते अ़्लिमिय्यान, महबूबे रहमान ﷺ ने पहली बार सरगोशी में अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी की ख़बर दी तो मैं रोई और दूसरी बार सरगोशी में येह ख़बर दी कि आप के अहल में से सब से पहले मैं आप से मिलूंगी, तो मैं हंसने लगी ।

(صحيح البخاري، كتاب المناقب، باب علامات النبوة في الإسلام، ص ٩٢٠، حديث ٣٦٢٥، ٣٦٢٦ ملقياً)

इस हृदीष में कई गैंडी खबरें हैं :

﴿١﴾ خاتونے جنّت رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کا وکٹے وफّات ।

﴿٢﴾..... نویسندگان کے اینہا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ کا خاتم میں
ایمان، تکوہ اور پرہے جگاری کے آ'لہا درجے پر ہوگا ।

﴿٣﴾..... آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ کا کُبُرُو هُشَر مें اول نمبر کامیاب ہونا ।

﴿٤﴾..... آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का पुल सिरात् से बखूबी गुजरा
जाना ।

﴿٥﴾..... آپ ﷺ کا جنнат کے آ'لہ مکاّم پر ہٹتا
کی ہجور ﷺ کے ساتھ رہنا ।

مِرَاةُ الْمَنَاجِيْحُ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ، ج٨، ص٥٥	जिन का नामे मुबारक है बी फ़ातिमा	जो ख़वातीने आलम में हैं आलिया
أَعْبَدِيَا، جَاهِدَا، سَاجِدَا، سَالِيْهَا	سَاجِدَا، جَاهِدَا، تَعْبِيْهَا، تَاهِيْرَا	
جَانِيْهُ اَهْمَدُوكِيِّ رَاهِتُ پِيْ لَاهِخُونِ سَلَامُ		

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّوا عَلٰى الْحَيْبِ!

پ्यारी پ्यारी इस्लामी बहनो ! ج़िक्र कर्दा रिवायत और

इस की शहूँ फ़ज़ाइले फ़ातिमा और कमालाते मुस्तफ़ा का हसीन
इम्तिज़ाज (ام۔ ت۔ ۷) (या'नी आमेज़िश) है, एक तरफ़ हज़रते
सच्चिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की शाने अंज़मत निशान के
फूल खिलते हैं तो दूसरी तरफ़ उलूमो कमालाते मुस्तफ़ा के
गुलशन महकते हैं, एक तरफ़ लाडली شहज़ादी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को
मिलने वाला कुर्बे इलाही, इन की बक़िया दुन्यवी ज़िन्दगी और
उख़रवी इन्धाम व इकरामात की ख़बर दी जा रही है तो दूसरी तरफ़
फ़ज़्लो कमाले मुस्तफ़ा के बाब भी रोशन तर होते जा रहे हैं जिन
को हकीमुल उम्मत سَمَّئَتْ هر سाहिबे बसीरत
(या'नी अ़क्ल मन्द) ने अपनी बिसात (या'नी हिम्मत) के मुत़ابिक़
समझा और इश्के रसूल व अ़कीदते बतूल को फुज़ूں ف۔ زُون (या'नी ज़ियादा)
करने वाले खुशनुमा फूलों का मदनी गुलदस्ता
हमारी तरफ़ बढ़ाया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَخْبَيْهُ فَاطِمَةَ الْكَبِيرَةَ

سच्चिदे कौनैन की प्यारी लाडली

ख़ातूने जन्नत, बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا खुद
तनूर में रोटियां लगाया करतीं, घर में झाडू देतीं और चक्की

پیساتی ٹھیں جیس سے آپ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا کے ہا�وں مें چالے پड़ گए۔
थे، رंग مुبارک مُوتگُریयر اور کپड़ے گرد آلود ہو گئے۔ اک
دफ़ آخِدِیم کی تلاب مें بارگاہے مُسْتَفْفَی مें ہاجیر ہریں تو
تسبیح فَاتِیمَا کا تُوہفَۃ میلہ چونا نچے ہجڑتے ساییدتُونا ابू
ہُرَیْرَہؓ فَرَمَّا تے ہیں کہ ہجڑتے ساییدتُونا فَاتِیمَتُوْزُجَہ را
آکھا ا نامدار، دو اُالم کے مالیکو مُخکھار
کی بارگاہ مें ہاجیر ہریں اور آپ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ
سے خادِیم کا سُوال کیا : ہُبُر
نے ارشاد فَرَمَّا : تُوہنے ہمارے پاس خادِیم تو
نہیں میلے گا، ک्यا میں تُوہنے اُسی چیز ن بتاؤں جو خادِیم سے
بےہتر ہے؟ تُوہ جب بیسٹر پر جاؤ تو ۳۳ بار سُبْحَنَ اللَّهِ ۳۳
بَارَ اور ۳۴ بارَ اللَّهُ أَكْبَرَ پدھ لیا کرو ।

(صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ، کتاب الذکر والحمد والنبوة والاستغفار، باب التسبيح اول النہار عند النوم، ص ۱، الحدیث: ۲۷۲۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

شاخے تریکھت، امیرے اہلے سُننَت، بانیے دا'�تے
اسلامی، ہجڑتے اُلَّامَا مौلانا ابू بیلال مُحَمَّدِ ایلیاس
اُٹھا کا دیری رجھی نے جو شاری اُت و تریکھت
کا جامِ اُ مجمُو اخِدِیم بہنوں کے لیے بنام ۶۳ مدنی
انڈھاماں ب سُورتے سُوالات اُٹا فَرمائے ہیں، اس میں مدنی

इन्हाम नम्बर (3) है कि क्या आज आप ने नमाज़े पञ्जगाना के बाद नीज़ सोते वक्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी, सूरतुल इख्लास और तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ी ?

तो आइये ! निय्यत कर लीजिये कि इस मदनी इन्हाम पर ज़रूर अ़मल करेंगी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ**

صَلُوَاعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**इस्लामी बहनों के लिखे
शीश्वरों आलिहाते डम्मत**

मख्दूमए काएनात हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها के ज़िक्र कर्दा वाकिए से पता चलता है कि ताजदारे काएनात, शाहे मौजूदात صلى الله تعالى عليه وسلم अपनी लाडली शहज़ादी के लिये येही पसन्द फ़रमाते हैं कि वोह घर के काम-काज खुद ही करें, इस से इस्लामी बहनों के लिये एक राहे अ़मल मुतअ़्यन होती है, चुनान्वे

सीरते सालिहात

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जनती ज़ेवर” सफ़हा 60 पर शैखुल हडीष अल्लामा मुफ्ती अब्दुल मुस्तफ़ आज़मी इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते हुए फ़रमाते हैं : औरत के फ़राइज़ में येह भी है कि अगर शोहर ग़रीब हो और

घرےلू کام-کاج کے لिये نोکرानी رک्खने की تاک़त ن हो तो
अपने घर का काम-काज खुद कर लिया करे इस में हरगिज़
हरगिज़ न औरत की कोई ज़िल्लत है न शर्म। बुखारी शरीफ़ की
बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि खुद रसूलुल्लाह
صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
फ़ातِिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का भी येही मा'मूल था कि वोह अपने घर
का सारा काम-काज खुद अपने हाथों से किया करती थीं, कुंवें से
पानी भर कर और अपनी मुक़द्दस पीठ पर मशक लाद कर पानी
लाया करती थीं, खुद ही चक्की चला कर आटा भी पीस लेती
थीं इसी वजह से इन के मुबारक हाथों में कभी कभी छाले पड़े
जाते थे इसी तरह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदना अबू
बक्र سिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
की سाहिबज़ादी हज़रते सच्चिदना अस्मा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا
के मुतअ़्लिक़ भी रिवायत है कि वोह
अपने ग़रीब शोहर हज़रते सच्चिदना जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
के यहां अपने घर का सारा काम-काज अपने हाथों से कर लिया करती
थीं यहां तक कि ऊंट को खिलाने के लिये बाग़ों में से खजूरों की
गुठलियां चुन चुन कर अपने सर पर लाती थीं और घोड़े के लिये
धास-चारा भी लाती थीं और घोड़े की मालिश भी करती थीं।

مج़ीद فرمाते हैं : हर बीवी का येह भी फ़र्ज़ है कि वोह
अपने शोहर की आमदनी और घर के अख़राजात को हमेशा
नज़र के सामने रखे और घर का ख़र्च इस तरह चलाए कि इज़्ज़त

व आबरू से ज़िन्दगी बसर होती रहे। अगर शोहर की आमदनी कम हो तो हरगिज़ हरगिज़ शोहर पर बे जा फ़रमाइशों का बोझ न डाले इस लिये कि अगर औरत ने शोहर को मजबूर किया और शोहर ने बीवी की महब्बत में क़र्ज़ का बोझ अपने सर पर उठा लिया और खुदा عَزُوْجٌ न करे इस क़र्ज़ का अदा करना दुश्वार हो गया तो घरेलू ज़िन्दगी में परेशानियों का सामना हो जाएगा और मियां-बीवी की ज़िन्दगी तंग हो जाएगी इस लिये हर औरत को लाज़िम है कि सब्रो क़नाअत के साथ जो कुछ भी मिले खुदा का शुक्र अदा करे और शोहर की जितनी आमदनी हो उसी के मुताबिक़ ख़र्च करे और घर के अख़राजात को हरगिज़ हरगिज़ आमदनी से बढ़ने न दे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

घरेलू क्वाम-काज करने के 11 फ़ावाइद

घरेलू काम-काज करने के बहुत फ़्राइद हैं, यहां इन में से चन्द बयान किये जाते हैं :

(1).... 26 शा'बानुल मुअज्ज़म 1432 हि. को इजतिमाएँ रिदापोशी के सिलसिले में होने वाले मदनी मुज़ाकरे में शैखे त्रीकृत, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دامت بر كائِنَتُهُمُ الْعَالِيَةُ ने इरशाद फ़रमाया : अपना काम अपने हाथ से करना सुन्ते मुस्तफ़ा है। इस्लामी बहनों को इस प्यारी प्यारी सुन्त पर अमल करना चाहिये। घर के काम-काज वगैरा करने से हाथों की रगें मुतहर्रिक रहेंगी और नसें सख्त नहीं होंगी।

(2)..... اپنے گھر کے کام-کاج خुد کرنا اور ب وکٹے نماز۔
دیگر تمام مسروق فیضیات ختم کر دینا سُنّتِ مُسْتَفَى ہے ।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ النِّفَقَاتِ، بَابُ خَدْمَةِ الرَّجُلِ فِي أهْلِهِ، ص: ١٣٧٥، حَدِيثٌ)

(3).... گھر مें رہتے ہوئے اسلامی بہنوں کا دستکاری کرنا اور
کسی ہلال کے جرایع اور اپنانا سُنّتِ عالمیں و
سُنّتِ سہابیات ہے ।

(سنن نسائي، كتاب الزينة، لبس البرود، ص: ٨٤٣، حديث ٥٣٣١)

(4).... گھر کے کام-کاج کرنا سُنّتِ سَمِيَّدَا فَاتِیْمَا ہے । اس
کی تفصیل مکتبتوں مداری کی جاری کردا اونڈیو کے سات
“شہزادیوں کی نائن کی سادگی” میں میل جائے گی ।

(5)..... گھر لے کام-کاج کرنے والی اسلامی بہن کی گھر مें
اہمیت ہوتی ہے یعنی یہ اسے گھر میں مداری ماحول بنانے میں
آسانی ہوتی ہے ।

(6).... گھر کے کام-کاج پر تواজوہ دینے سے سُسراں لی جنگلے
خُوسُسِن سا س بہوں کی چپکلیشیں ختم ہونے کی عالمی دے واقعیک
ہے । فیر بھی اگر یہ جنگلے ختم نہ ہونے تو مکتبتوں مداری کا
متابوں 32 سفہاً پر مُشتمل رسالہ ب نام “سا س
بہوں میں سُلھ کا راجح” ہاسیل کیجیے اور اس میں دیے ہوئے
نُسخے پر اُمل کیجیے ।

(7)..... بے کار شاخش شیطان کا آلات اکار بناتا اور تفکر کو رات
کے ہujum میں بھر جاتا ہے جب کی گھر کے کام-کاج کرنا بے
کاری، سُسٹی اور کاہلی کو دور کرتا اور شیطانی خیالات
و ہجوم تفکر کو رات سے مہفوظ رکھتا ہے ।

- (8)..... خود کو جیسمانی تaur پر س्मارٹ اور جہنی تaur پر چاک و چوبند رکھنے کی خواہیش ہوتی ہے اور یہ چیज گرلے کام کا ج کرنے سے ہاسیل ہوتی ہے ।
- (9)..... گرلے کام کا ج میں ورجیش ہے اور ورجیش بیماریوں سے بچاتی اور سیدھت کی بہارے لاتی ہے ।
- (10)..... اگر گرلے کام کا ج ٹکا دے تو سیرتے فاطمہ کے مutilا اور تسبیح فاطمہ کے ورد سے اس کا ایلاج کیجیے ।
- (11)..... آج کل دیپریشن اور تنسن کی شکایت اُم ہے، اس سے بچنے کا بہترین نوسخا مسروفیت ہے ।

صلوات علی الحبیب! صلوات اللہ تعالیٰ علی محمد

Ібадт ہو تو دُسری !

نورے نجڑے مسٹفہ، دلبارے اعلیٰ یعلیٰ مرتضیا، راہتے فاطمۃ توجہ رہا ہجڑتے ساید دُنا امامہ ہسنے مُعذبہ ساید فاطمۃ توجہ رہا ہجڑتے ساید کو دेखا کہ رات کے مسجدے بیت کی مہرآب (یا' نی گھر میں نماج پढنے کی مखسوس جگہ) میں نماج پڑتی رہتی یہاں تک کہ نماج فوج کا وکٹ ہو جاتا، میں نے آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو مُسالمان مداری اور اُرتوں کے لیے بہت جیسا دُعا ائے کرتے سُنا، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنی جات کے لیے کوئی دُعا ن کرتیں، میں نے اُرج کی: پُرانی

اممی جان (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) کیا وچہرہ ہے کہ آپ اپنے لیے کوئی دُعاؤں نہیں کرتے، فرمایا：“پہلے پڈھے سے ہے فیر بھر ।”

(مَذَارِجُ النُّبُوْتِ (مترجم)، ج ۲، قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام ص ۱۲۳)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! اس کا کیا میں یعنی اسلامی بہنوں کے لیے کہی نہ سیہوت آموز مدنی فلول ہے جو نوافیل تو دار کنار فراہم سے بھی گرفتار برقراری ہے، دو جہاں کے تاجدار، دو اہل ملک کے مالکوں مुखٹاں کی ساہبی جادی، خواہوں نے جنگت ہجڑتے ساییدتُونا فاتح متعجب ہر راتِ یہاں نے تو راتِ یہاں ایلہاہی میں گزراں مگر ان کی راتِ گرفتاری ہے، کبھی “گُناہوں بھرے چنلے” کے سامنے “فیلمے دیراً” دیکھتے، کبھی مہمندی کی تکڑیوں میں بے ہیار کرتے اور کبھی شادی کے ماؤکے پر خوب ڈول پیٹتے، بآجے بجاتے اور ڈانس کرتے گُنجارتی ہے۔ بے ہیار سماں ہے ن بے پردگی سے خوار خاتی ہے، ہلاکتیں نورے نیگاہے رسوں ہجڑتے ساییدتُونا فاتح ما بتوں کا پردہ کا اس کدر مدنی جہن کی جیتے جی ہی نہیں بلکہ سफرے آخیرت پر گام جن ہوتے وکٹ بھی اس کے بارے میں مُعتَفِکِر ہوں اور اس کی پابندی کی تاکید فرمائیں، چوناں

बीबी फ़ातिमा के जनाजे का भी पर्दा

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا فَرَمَّا تَوْلِيدَهُ مُحَمَّداً فَلَمَّا
نَبَأَ أَنَّهُ مُتَوَلِّ لِلْمُسْلِمِينَ قَدِمَ إِلَيْهِ الْمُؤْمِنُونَ
وَقَدِمَ إِلَيْهِ الْمُنْكَرُونَ وَقَدِمَ إِلَيْهِ الْمُنْكَرُونَ
وَقَدِمَ إِلَيْهِ الْمُنْكَرُونَ وَقَدِمَ إِلَيْهِ الْمُنْكَرُونَ

(مَدَارِجُ النُّبُوَّتِ (مُتَرْجَمٌ)، ج ٢، قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام ص ٦٤)

तमाम इस्लामी बहनें दुन्या व आखिरत में काम्याबी पाने, बा पर्दा व बा इज़ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने और शर्मों हया के साथ जीने का ढंग सीखने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहें, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात में शिर्कत का मा'मूल बनाएँ^{ابن شاَءُوْلَهُ عَزَّوَ جَلَّ} अपनी ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस करेंगी, आइये ! अपना ईमान ताज़ा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत की अज़ीमुशशान मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ 1548 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ैज़ाने सुन्नत” (जिल्द अब्वल) सफ़हा 561 पर है :

70 दिन पूरानी लाश

3 रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. बरोज़ हफ्ता पाकिस्तान के मशरिकी हिस्से में खौफनाक जूलजूला आया जिस में लाखों

अफ़राद फ़ौत हुए इन्हीं में मुज़फ़राबाद (कश्मीर) के अलाके “मीरा तसोलियां” की मुकीम 19 सालह नसरीन अ़त्तारिया बिन्ते गुलाम मुर्सलीन जो कि दा’वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती थीं, शहीद हो गईं। मर्हूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 जुल क़ा’दतुल हराम 1426 हि. शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वजह से क़ब्र को खोल दिया, यकबारगी आने वाली खुशबूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो गए ! शहादत को 70 अच्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्तारिया का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था !

अलَا رَبُّ الْعَالَمِينَ مَوْلَانَا مُحَمَّدُ عَلِيٌّ وَآلُهُ وَسَلَّمَ

अ़त़ाए हबीबे खुदा मदनी माहोल ⁽¹⁾	है फैज़ाने गोषो रज़ा मदनी माहोल
सलामत रहे या खुदा मदनी माहोल	बचे बद नज़र से सदा मदनी माहोल
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी	सुनो है बहुत काम का मदनी माहोल
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अहकाम	ये ह ता’लीम फ़रमाएगा मदनी माहोल
कियामत तलक या इलाही सलामत	रहे तेरे अ़त्तार का मदनी माहोल

(वसाइले बख़्िاش अज़ अमीरे अहले सुन्नत स. 602 ता 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) दा’वते इस्लामी के सुन्नतों भरे और नेकियों से लबरेज़ माहोल को “मदनी माहोल” कहा जाता है।

خاتونے جنّت کا وسالہ بار کممال

وسالہ نبవی کے ۶ ماہ بار'د ۳ رمضان نوں مubarک سینے ۱۱ ھجری مंگل کی رات سدیحدا، تدیحدا، تاھیرا ہجرا تے سدیحدتوں فاطمۃ تجوہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے داہدے اجل کو لبکہ کہا । ہجرا تے سدیحدتوں اعلیٰ یعلوں مورتجہ یا ہجرا تے سدیحدتوں اعلیٰ عباد (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) نے نماجے جناجہ پढہا اور آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا جنّت نوں بکھڑا میں مدد فون ہوئے ।

(مدارج النبوت (متجم) قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام، ج ۲، ص ۶۶)

مذکور تے خاتونے جنّت

ہے رتبہ اس لیے کوئنے (۱) میں اس مت (۲) کا افسکھت کا
شارف ہاسیل ہے ان کو دامنے جہرا سے نیست کا
جو جانا خویل (۳) میں ہو پاۓ جہرا سے لیپٹ جاؤ
جیسے کہتے ہے جنّت مولک ہے خاتونے جنّت کا
نبی کے دل کی راہت اور اعلیٰ کے بھر کی جنّت ہے
بیان کیس سے ہو ان کی پاک تینت پاک تعلیمات (۴) کا
انھی کے ماہ پارے دو جہاں کے لاج والے ہے
یہ ہی ہے ماجماع بھرائے (۵) سر چشمہ ہیدایت کا
رسویل لالاہ کی جیتی جاگتی تسویر کو دेखا
کیا نجرا رہا جن آنکھوں نے تفسیر نوبعثت کا
بتوں و فاطمہ جہرا لکھ اس واسیتے پاہا
کی دنیا میں رہے اور دے پتا جنّت کی نیگاہت (۶) کا

(۱)..... دو جہاں (۲)..... پارسراہ (۳)..... جنّت (۴).... روحی پاک (۵).... دو سمعان، اشراہ ہے
ہجرا تے حسن نے کریمہ نبی حسن و حسین کی ترک (۶).... خوشبو ।

नबी की लाडली, बीवी वली की, माँ शहीदों की
यहां जल्वा नुबुव्वत का विलायत का शहादत का
तआलल्लाह इस सअ़दैन ⁽¹⁾ के जोड़े का क्या कहना
कि रहमत की दुल्हन ज़हरा, अ़ली दुल्हा विलायत का
वोह इतरत ⁽²⁾ जो कि उम्मत के लिये कुरआने धानी है
नबी का है चमन या'नी शजर इस पाक मम्बत ⁽³⁾ का
वोह चादर जिस का आंचल चांद सूरज ने नहीं देखा
बनेगी हशर में पर्दा गुनहगाराने उम्मत का
अगर **सालिक** भी या रब्ब दा'वए जन्नत करे, हक़ है
जो वोह ज़हरा की है येह भी तो है ख़ातूने जन्नत का
(दीवाने सालिक अज़्हकीमूल उम्मत मुफ्ती अहमद यार ख़ान عليهِ رحمةُ اللَّهِ عَلَيْهِ الْحَمْدُ)
صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

ଆବାଜ୍ ବୈଠ ଜାଣୁ ତୋ ତୀନ ଝୁଲାଜ

﴿١﴾ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में खूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फैरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर इस पानी को पी जाइये । दो तीन बार येह इलाज करने से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ **फाइदा हो जाएगा ।**

२ एक चमच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आखिर में निगल जाइये।

『३』 ख़शख़ाश के छिलके और अजवाइन हम वज्ञ लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाशत के क़बिल हो जाने के बाद इस पानी से गुरारे कीजिये। (नैकी की दावत, स. 601)

(1)... दो मुबारक सव्यारे, यहां मुराद मौला मुशिकल कुशा हज़रते सम्बिदुना अलियुल मुर्तजा^{رضي الله تعالى عنها} और हज़रते सम्बिदुना फ़اتिमतुज़्ज़हरा^{رضي الله تعالى عنها} हैं

(2).... नस्ले पाक (3).... जाए पैदाइश।

बयान नम्बर 2

ख़ातूने जन्नत

की

करामात

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبَّسُ اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ط

ख्रातूने जन्नत की करामात

दुर्घट शरीफ की फूजीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्कूआ 419 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “मदनी पञ्ज सूरह” सफ़हा 164 पर है : शहनशाहे कौनो मकां, ग़मख़्वारे बे कसां, शफ़ीए मुजरिमां^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ} का फ़रमाने आफ़िय्यत निशां है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शग्भ़स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कषरत से दुरूद पढ़ा होगा ।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الـياء، ج ٩، ص ١٢٩، الحديث ٢٧٦٨٦)
दुन्या व आखिरत में जब मैं रहूँ सलामत
प्यारे पढ़ने क्यं कर तुम पर सलाम हर दम

क्या खौफ़ मुझ को प्यारे ! नारे जहीम से हो
तुम हो शफीए मेहशर तुम पर सलाम हर दम^(علیہ رحمۃ اللہ علیہ)
(जौके ना'त अज शहनशाहे सुखन मौलाना हसन रजा खान

शाही दा'वत

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 346 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “करामाते सहाबा” सफ़हा 330 ता 333 पर शैखुल हडीष हज़रते अल्लामा

अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيُ نक्ल फ़रमाते हैं : रिवायत
है कि एक रोज़ हज़रते सच्चिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने
हुज़र नविये करीम, रज़फुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ की दा'वत की।
जब दोनों अ़ालम के मेज़बान हज़रते सच्चिदुना उषमान बिन
अ़फ़फ़ान के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो हज़रते
उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप के पीछे चलते हुए आप के
क़दमों को गिनने लगे और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह
पर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ !
मेरे मां बाप आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ
मेरी तमन्ना है कि हुज़र صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ
के एक एक क़दम के
इवज़ मैं आप की ता'ज़ीम व तकरीम के लिये एक एक गुलाम
आज़ाद करूँ । चुनान्वे हज़रते सच्चिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
के मकान तक जिस क़दर हुज़र के क़दम पड़े थे
हज़रते सच्चिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इतनी ही ता'दाद
में गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया ।

کرم اللہ تعالیٰ وَجْهُهُ الْکَرِيمُ نے اس دا'ват
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا سے مُتَأْثِرٌ ہو کر هجڑتے ساییدا فاطمہ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کہا : اے فاطمہ آج میرے دینی بائی هجڑتے
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے ہujjorے اکرم رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کی بडی ہی شاندار دا'ват کی ہے اور ہujjorے اکرم
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کے ہر ہر کڈم کے بدلے اک گولام آجاد
 کیا ہے، میری بھی تمنا ہے کی کاش ! ہم بھی ہujjor عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ

की इसी तरह शानदार दा'वत कर सकते। हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने शोहरे नामदार हज़रते सच्चिदतुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ के इस जोशे तअष्वर से मुतअष्वर हो कर कहा : बहुत अच्छा। जाइये, आप भी हुज़र ان شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ को इसी क़िस्म की दा'वत देते आइये हमारे घर में भी इसी क़िस्म का सारा इन्तज़ाम हो जाएगा।

चुनान्चे हज़रते सच्चिदतुना अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में हाजिर हो कर दा'वत दे दी और शहनशाहे दो आलम अपने سहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرَّحْمَانُ की एक कषीर जमाअत को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। हज़रते सच्चिदा ख़ातूने जनत ख़ل्वत (या'नी तन्हाई) में तशरीफ़ ले जा कर खुदावन्दे कुहूस عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में सरब सुजूद हो गई और येह दुआ मांगी : “या अल्लाह تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे महबूब और अस्हाबे महबूब की दा'वत की है, तेरी बन्दी का सिफ़्र तुझ ही पर भरोसा है लिहाज़ा ऐ मेरे रब्ब तू आज मेरी लाज रख ले और इस दा'वत के खानों का तू आलमे गैब (या'नी दूसरा जहां जो छुपा हुवा है) से इन्तज़ाम फ़रमा।”

येह दुआ मांग कर हज़रते सच्चिदतुना बीबी फ़ातिमा ने हांडियों को चुल्हों पर चढ़ा दिया। खुदावन्दे तअला का दरियाए करम एक दम जोश में आ गया और उस

रज्जाके मुतलक (बिगैर किसी कैद के रिझ्क अतः फरमाने वाले) ने दम जून में (या'नी फौरन) उन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया।

हज़रते سच्चिदतुना बीबी ف़اطِمَةٌ نے इन हांडियों में से खाना निकालना शुरूअ़ कर दिया और हुजूर अपने सहाबए किराम के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन खुदा عَزَّوَجَلُّ की शान कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सहाबए किराम इन खानों की खुशबू और लज्ज़त से हैरान रह गए। हुजूरे अकरम ने सहाबए किराम को मुतहस्यर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) देख कर फ़रमाया : क्या तुम लोग जानते हो कि ये हांडियों से आया है? सहाबए किराम ने अर्ज़ किया : नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! आप ने इरशाद फ़रमाया : ये हांडियों के लिये जन्नत से भेज दिया है।

फिर हज़रते سच्चिदतुना फ़اطِمَةٌ गोशए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गई और ये हांडियों को इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे लिए ये अल्लाह हज़रते उषमान نے तेरे महबूब के एक एक क़दम के इवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़اطِمَةٌ को इतनी इस्तिताअत नहीं है। लिहाज़ा ऐ खुदावन्दे अलाम جहां तू ने मेरी खातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है वहां तू मेरी खातिर

अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ लाए हैं, अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की उम्मत के गुनाहगार बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।

हज़रते سِيِّدِ الدُّنْيَا فَاطِمَةٌ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا جूँही इस दुआ से प़ारिंग हुई एक दम ना गहां (या'नी अचानक) हज़रते سِيِّدِ الدُّنْيَا जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَامُ येह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की दुआ बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गई, **अल्लाह** तआला ने प़रमाया है कि हम ने आप के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया। (جامع المُعجزات (مصرى), ص ٦٥, بحوالہ سچی حکایات)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत महबूबे रब्बुल इज़्ज़त की शाने इलिम्यत, हज़रते सियदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के जज्बए सखावत और मल्कए जनत की अज़मत व करामत की बय्यन (या'नी वाज़ेह) दलील है। नबिय्ये गैब दां رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने पहचान लिया कि येह आज की दा'वत का खाना कहां से आया, हज़रते सियदुना उषमान जुनूरैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौलत कदा (या'नी मकाने

आलीशान) की तरफ बढ़ने वाले हर क़दमे नबी पर गुलाम आजाद किये, और **अल्लाह** مُوَحَّدٌ نے बिन्ते रसूल (رضي الله تعالى عنها) को अपने मेहमानों की मेज़बानी के लिये जनत का खाना भेज कर और आप (رضي الله تعالى عنها) की दुआ को शरफे कबूलियत अंता फ़रमा कर इस दा'वत की तरफ उठने वाले हर क़दमे नबी के सदके हज़ार हज़ार गुनाहगारों की शफ़ाअत का वा'दा फ़रमा कर ख़ातूने जनत को ताजे करामत से नवाज़ दिया । **अल्लाह** رَبُّ الْعِزَّةِ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ाफिरत हो ।

امين بحاجة الى امين صل الله تعالى عليه والله وسلام

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करामत हक है

अहले सुन्नत का मुत्तफ़िक़ा अःकीदा है कि सहाबَةَ किराम
और اُलیٰ اہلِ الصَّوَانَ اُولیٰ اہلِ الصَّوَانَ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ کी کراماتें हक़ हैं
और हर ज़माने में **अल्लाह** वालों की करामात का सुदूर व ज़ुहूर
होता रहा और **كِيَامَتُ** تक कभी भी इस का سिलसिला
मुन्क़्टे अ* या'नी ख़त्म) مُنْقَطٍ- طَعَنَ (مुन्क़्टे अ* से करामात सादिर व जाहिर होती रहेंगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

کرامات کی تاریف

دا'वتے اسلامی کے اشاعتی ادارے مکتبتوں مداریا کی متابوں 1250 سफھات پر مسٹرمیل کتاب "بہارے شاریعت" جلد اول سفھا 58 پر سدھششاریا، بدرتھریکا، ہجرتے بلالا مسلمان مسٹی مسیمداد اعلیٰ آجھی علیہ رحمۃ اللہ القوی کرامات کی تاریف کुछ اس تاریخ بیان فرماتے ہیں : "والی سے جو بات خیلائے اُرادت سادیر ہو اس کو کرامات کہتے ہیں ।"

کورآن سے کرامات کا شعبوت

کورآن سمعنے میں کہی مکامات پر اولیا اکرام کی کرامات کا شعبوت میلتا ہے اس سلسلے میں دو کورآنی واقعیات پر کیے جاتے ہیں :

۱۷۳ وَجَتَتْ مِنْ سَيِّئَاتِنَا يَقِينٌ ۝ إِنِّي وَجَدْتُ أُمْرًا كَثِيرًا لَهُمْ وَأُوْتَيْتُ مِنْ كُلِّ

شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدْتُهَا وَقُوَّمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّيْءِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَذَرَّنَ

لَهُمُ الشَّيْطَنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْدَى دُونَ ۝ أَلَا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي

يُخْرِجُ الْحَبَّءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُحْكُمُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ ۝ أَللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا

هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ قَالَ سَتَنْظِرُ أَصَدَّقَتْ أَمْ نَتَشَاءَلُ مِنَ الْكَذِبِينَ ۝ إِذْ هُبَ

بِكَلِيْعِ هَذَا فَأَلْقَهُ إِلَيْهِمْ شَمْسَ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَأَنْظَرْمَا ذَيْرَ جُهُونَ ۝ قَالَتْ يَا أُمَّةُ الْمُكَوَّرِيْنَ

أُنْقِي إِلَى كِتَابِ كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ سُمِّ اللَّهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ أَلَا

شانے خواہیں جنات (رضی اللہ عنہا) خواہیں جنات کی کارماں

تَعْلُوْ اَعْلَىٰ وَ اَتُّوْنِي مُسْلِمِيْنَ ۝ قَاتَتْ يَآيُّهَا الْمُلْءُ اَفْسُوْنِي فِي اَمْرِيٍّ مَا لَكُنْتْ قَالَ عَلَيْهِ اَمْرِيٍّ مَا دَأَتْ اَمْرِيْنَ ۝ قَاتَتْ اِنَّ اَيْلُوْكَ اِذَا حَلُوْاقَرِيَّةً اَفْسُدُوْهَا وَ جَعَلَوْهَا اَعْزَزَةً
 اَمْرَاحَتِي شَهَدُوْنِ ۝ قَالُوْ اَنْحُنُ اُولُوْ اُقْوَةً وَ اُولُوْ اَبَابِسْ شَرِيْبِيْلَهُ وَ اَلَامْرِ اِلَيْكَ
 قَاتَطِرِيْ مَا دَأَتْ اَمْرِيْنَ ۝ قَاتَتْ اِنَّ اَيْلُوْكَ اِذَا حَلُوْاقَرِيَّةً اَفْسُدُوْهَا وَ جَعَلَوْهَا اَعْزَزَةً
 اَهْلِهَا اَذَلَّةً وَ كَذِلِكَ يَقْعَلُوْنَ ۝ وَ اِنِّي مُرْسِلُهُ اِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَظَرَهُمْ يَرْجُمُ
 اَنْرُسَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ سَلِيْبِيْنَ قَالَ اَتِتُّدُوْنِ بِمَالٍ فَهَا اِنَّ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا اَشْكُمْ
 بَلْ اَنْتُم بِهَدِيَّتِيْمُ تَقْرُبُوْنَ ۝ اِرْجُمُهُمْ فَلَمَّا تَيَّمَّهُم بِجُنُوْدٍ لَا قَبْلَ اَنْتُمْ بِهَا
 وَ لَنْتُحْرِجُهُم مِّنْهَا اَذَلَّةً وَ هُمْ صَعْرُوْنِ ۝ قَالَ اِيْهَا الْمُلْءُ اَيْكُمْ يَا تَيَّمَّنِي بِعَرْشِهَا
 قَبْلَ اَنْ يَأْتُوْنِي مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَ عَفْرِيْتُ مِنَ الْجَنِّ اَنَا تَيَّبِكَ بِهِ قَبْلَ اَنْ تَقُومَ مِنْ
 مَقَامِكَ وَ اِنِّي عَلَيْهِ لَقَوْيُ اَمِيْنَ ۝ قَالَ الَّذِي عَنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَبِ اَنَا تَيَّبِكَ بِهِ
 قَبْلَ اَنْ يَرْتَدَ اِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقْرًا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَصْلِ رَأْيِي
 لِبَيْلُوْنِي اَشْكُرُ اَمَا كُفُرْتُ وَ مَنْ شَكَرَ فَآتَيْشَكْرُ لِنَفْسِهِ وَ مَنْ كَفَرَ فَآتَنَ رَأْيِي عَنْهُ
 كُرْيُمُ ۝ (پ ۱۹، النَّلْ: ۲۲۰ تا ۴)

تَرْجِمَةِ كَنْجُولِ اِيمَان : (हुद हुद ने कहा) और मैं शहरे सबा से हुज्जूर के पास एक यकीनी खबर लाया हूँ मैं ने एक औरत देखी कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है और उस का बड़ा तख्त है मैं ने उसे और उस की कँूम को पाया कि **अल्लाह** को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैतान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से रोक

شانے خواہوں جنگت (رضی اللہ عنہا) خواہوں جنگت کی کارماں

दिया तो वोह राह नहीं पाते । क्यूँ नहीं सजदा करते **अल्लाह** को जो निकालता है आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीजें और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो, **अल्लाह** है कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं, वोह बड़े अर्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया : अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू झूटों में है, मेरा ये हु फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख कि वोह क्या जवाब देते हैं । वोह औरत बोली ऐ सरदारो ! बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्जत वाला ख़त डाला गया, बेशक वोह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहम वाला ये ह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो और गर्दन रखते मेरे हुजूर हाजिर हो । बोली : ऐ सरदारो ! मेरे इस मुआमले में मुझे राय दो मैं किसी मुआमले में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाजिर न हो । वोह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख्त लड़ाई वाले हैं और इखिल्यार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है । बोली : बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाखिल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इज़्जत वालों को ज़लील और ऐसा ही करते हैं और मैं इन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ फिर देखूँगी कि एलची क्या जवाब ले कर पलटे फिर जब वोह सुलैमान के पास आया । सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया वोह बेहतर है इस से जो तुम्हें दिया बल्कि तुम अपने तोहफे पर खुश होते हो पलट जा उन की तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को इस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूँ कि वोह पस्त होंगे । सुलैमान ने फ़रमाया : ऐ दरबारियो ! तुम में

کوئی نہیں ہے کہ وہ اس کا تھاٹ میرے پاس لے آئے کبھی اس کے کہ وہ میرے ہو جاؤ رہے ہو کر ہاجیر ہوئے । اک بڑا خوبیوں جیں بولتا ہے میں وہ تھاٹ ہو جاؤ رہے ہا جیر کر دو گا کبھی اس کے کہ ہو جاؤ رہے یہ جلالاں برخواست کرئے اور میں بے شک اس پر کوئی تھاٹ کا، امامان تدار ہوئے । اس نے اُرج کی جس کے پاس کتاب کا ڈبلم تھا کہ میں اسے ہو جاؤ رہے ہا جیر کر دو گا اک پل مارنے سے پہلے فیر جب سولہ میان نے اس تھاٹ کو اپنے پاس رکھا دیکھا کہا یہ میرے رబ کے فوجیل سے ہے تا کہ میں آج ہمایہ کی میں شوک کرتا ہوئے یا نا شوکی اور جو شوک کرے وہ اپنے بھلے کو شوک کرتا ہے اور جو نا شوکی کرے تو میرا رب بے پر واہ ہے سب خوبیوں کا لالا ।

۲) اذ قالت امرأة عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدْعُوكَ مَافِي بَطْنِي مُحَرَّرٌ أَفْتَقِيلُ

مِنْ حِلْكَ أَنْتَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿۱﴾ فَلَمَّا وَضَعَهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَصَعُّهَا أُنْثِي

وَإِنَّ اللَّهَ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيُسَمِّ الدُّجَرُ كَالْأُنْثَى وَإِنِّي سَيِّدُهَا مَرْيَمَ وَرَافِقَ

أَعْيُذُهَا بِكَ وَدُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ ﴿۲﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبْوِلَ حَسِينٍ وَآتَيْتَهَا

نَبَاتًا حَسَنًا وَنَفَّهَا كَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَيْهَا زَارَ كَرِيَّا الْمُحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا مَرْيَمَ قَائِمَةً

قَالَ لِمَرْيَمَ أَنِّي لَكِ هَذَا قَاتَلْتُهُ وَمَنْ عَنِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ عِنْدَهُ

حَسَابٌ ﴿۳﴾ (پ ۳۵، ایل عمرن: ۳۷)

ترجمہ اک نجیلِ ایمماں : جب ایمراں کی بیوی نے اُرج کی : اے رabb میرے ! میں تیرے لیے مرنے کا مانتری ہوئے جو میرے پستان میں ہے کہ خالیں تیری ہی خیدمت میں رہے تو تو میڈ سے کبوتر کر لے بے شک تو ہی ہے سونتہ جانتا فیر جب اسے جانا بولی : اے رabb میرے ! یہ تو میں نے لडکی

जनी और **अल्लाह** को खूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने उस का नाम मरयम रखा और मैं उसे और उस की अवलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से तो उसे उस के रब्ब ने अच्छी तरह कबूल किया और उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़करिया की निगहबानी में दिया जब ज़करिया उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिक्क पाते कहा : ऐ मरयम ! ये हतेरे पास कहां से आया ? बोली : वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अप्ज़लुल औलिया

उँ-लमा ए किराम व अकाबिरीने इस्लाम का
इस पर इतिफ़ाक़ है कि तमाम सहाबए किराम
“अप्ज़लुल औलिया” हैं कियामत तक के तमाम औलियाउल्लाह
आगर्वे दर्जए विलायत की बुलन्द तरीन मंज़िल पर
फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ वोह किसी सह़बी
के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते । **अल्लाह** रब्बुल
इज़ज़त ने मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्पू बज़मे रिसालत,
नौशए बज़मे जन्नत के गुलामों को विलायत का
वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया और इन मुक़द्दस हस्तियों
बुजुर्गियों से सरफ़राज़ फ़रमाया कि दूसरे तमाम औलियाए किराम

के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, इस में शक नहीं कि हज़राते सहाबए किराम رَحْمَةُهُمُ اللَّهُ اسْلَامٌ से इस क़दर ज़ियादा करामतों का तज़किरा नहीं मिलता जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَحْمَةُهُمُ اللَّهُ اسْلَامٌ से करामतें मन्कूल हैं। येह वाजेह रहे कि येह कषरते करामत, अफ़ज़्लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर हृकीक़त कुर्बे बारगाहे अह़दिय्यत का नाम है और येह कुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा हासिल होगा उसी क़दर उस का दर्जए विलायत बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सहाबए किराम चूंकि निगाहे नुबुव्वत के अन्वार और फैज़ाने रिसालत के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हुए, इस लिये बारगाहे रब्बे लम यज़्ल में इन बुजुर्गों को जो कुर्बों तक़र्रब हासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह رَحْمَةُهُمُ اللَّهُ اسْلَامٌ को हासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सहाबए किराम رَحْمَةُهُمُ اللَّهُ اسْلَامٌ से बहुत कम करामतें मन्कूल हुईं लेकिन फिर भी इन का दर्जए विलायत दीगर औलियाए किराम رَحْمَةُهُمُ اللَّهُ اسْلَامٌ से हृद दर्जा अफ़ज़्ल व आ'ला और बुलन्दो बाला है।

सरकारे दो आलम से मुलाक़ात का आलम आलम में है मे'राजे कमालत का आलम
येह राज़ी खुदा से हैं खुदा इन से है राज़ी क्या कहिये सहाबा की करामत का आलम

(बयानाते अ़त्तारिय्या, हिस्सा 3, स. 342)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! خواہوں جننات

کی کرامات پر مُسْتَمِلِ جِنْکِ کرْدَ رِیَاْيَت
مَجْبَانِی وَ مَهْمَانِی کی تَرَفُّ بھی تَوْجِہٖ دِلَاتی ہے کہ ہمارے
اسْلَافِ کِرَامَ مَهْمَانَ نَوَاجِزَ ثے وَهُوَ اپنی بِسَاتُ بَرَ
مَجْبَانِی کرتے اور مَهْمَانَ کوِ اِجْزَت دُتے، ان نुفُوسے کُودُسِیَّا
کے نَكْشَہ کَدَمَ کو راہے مَجْنِیلَ بَنَاتے ہُوئے مَهْمَانَ نَوَاجِزَ کا
جَهَنَ رَخَنَا چاہیے اور اس کے لیے هَنْلَ وَسَعْ کَوْشِش
کرنی چاہیے । اہمَادِیَہ مُبَارَکَ مَنْ خَلَانے کے بَعْد سے
فَجَّارِیلَ وَارِدِ ہُوئے ہیں، جैسا کہ

**“پُشاٹِیمَا” کے ۵ ہُوڑپُ کی نِیکَت سے خوانا
خیلانا کے فُجَّارِیل پر مُبَنِی ۵ فَرَامِیَنے مُسْتَفْرِ**

دا'वَتِ اسلامی کے ایشانِ اُبُتی اِدارے مکتبِ تُلِمَذَ مَدِینَۃ
کی متابِ بُؤا 1548 سَفَہَتَ پر مُسْتَمِلِ کِتَاب “فَجَّارِی
سُونَت” جِلْدِ اَبْوَالِ سَفَہَتَ 519 پر ہے :

《1》..... تُو مِنْ سے بَهْتَرَ وَهُوَ ہے جو خَانَا خِلَاتا ہے اور جو
سَلَامَ کا جَواب دَتَتَ ہے ।

(مسندِ احمد، مسند الانصار، حدیث صہیب رضی اللہ عنہ، ج ۹، ص ۷۰۲ حدیث ۲۶۵۲)

《2》..... مَغْفِرَتَ کو وَاجِبَ کرنا والے عَمُورَ مِنْ سے خَانَا
خِلَانَا اور سَلَامَ کو اَعْمَ کرنا ہے ।

(مَکَارِمُ الْأَخْلَاقُ لَابْنِ ابْنِ الدِّنِیَا، بَابُ فَضْلِ اطْعَامِ الطَّلَعَمِ، ص ۳۷۰، حدیث ۱۵۸)

(3)..... جب تک بندے کا دست رخُّوان بیٹھا رہتا ہے، فیریشتے
उس پر رہمتوں ناجیل کرتے رہتے ہیں ।

(شعبُ الإيمان، باب فی اکرام الضیف، فصل فی التکلف للضیف، ج ۷، ص ۹۹، حدیث ۱۱۲۶)

(4)..... جو اپنے مुسالمان بارے کی بُوك میٹانے کا اہتمام
کرے اور اسے خانا خیلائے یہاں تک کہ وہ شکم سے رہے
جائے اور اسے (پانی) پیلائے ہوئے کہ وہ (پانی پی کر) سرماں
ہو جائے تو **अल्लाह** تاہلہ کی مگر فیرت فرمائے گا ।

(مسند ابی یعلیٰ، ثابت البُنَانِی عن انس، ج ۳، ص ۱۳۸، الحدیث ۳۴۲)

(5)..... جس نے بُوك کو خانا خیلایا **अल्लाह** تاہلہ
اسے ساچے اُرْش تسلیم کر دے گا ।

(مکارمُ الْأَخْلَاقُ لَابْنِ أَبِي الدِّنَيَا، بَابُ نَفْلِ اطْعَامِ الطَّعَامِ، ص ۳۷۳، حدیث ۱۶۴)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! جیکر کردا اہمادیے
مُبَارکا سے پتا چلتا ہے کہ مگر فیرت، دُبُّا اے ملائکا اور
ساچے اُرْش پانے اور بارگاہےِ ایلہاہی میں بےہتر آدمی کُرار
پانے کا اک جُریا دُوسروں کو خانا خیلانا بھی ہے । اسے
اُجڑی مُششانِ انْجَامَات کے ہُسُول کے لیے اس اُمَل پر جُرُور
کاربند رہیے ।

अल्लाह تاہلہ ہمےِ اسْتِک़امَت کے ساتھ نے کیا
کرنے اور نے کی کی دا'vat کے امام کرنے کی تاویلیک اُتھا فرمائے ।

امین بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ساقی اُرْش

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! اجڑ رُلے هدیہ خانا
 خیلانے والے کو اُرْش کا ساہا نسیب ہوگا، اس کے ایلاتھا بھی
 کہہ اے اے آمَال ہے جس کے سیلے میں روچے کیا مات سا یہ اُرْش
 نسیب ہوگا اس کو بیتھسیل جاننے کے لیے دا'�تے اسلامی
 کے اشاعتی ادارے مکتبتوں مدنیا کی متابوں ۸۸ سفہاً
 پر مشتمل کتاب “سا یہ اُرْش کیس کیس کو میلے گا?”
 کا معتال اُمَال اُمَال نے کام اے عزوجل نے کام آمَال کھرست سے بجا
 لانے کا مدنی جہن نسیب ہوگا ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى مُحَمَّدٍ

شیکھ مادر سے نیدا

دا'�تے اسلامی کے اشاعتی ادارے مکتبتوں مدنیا
 کی متابوں ۶۴۹ سفہاً
 پر مشتمل کتاب “ہیکایتیں
 اور نسیحتیں” سفہاً ۵۳۲ پر هجراً سی دننا شیخ شواعب
 حیری فیش فرماتے ہیں: جب کوپھارے باد اتھار نے
 آپ سے کہا: ہمیں چاند کے دو ٹوکڈے کار کے
 دیکھائے۔ ان دینوں هجراً سی دننا خدیجتول کبرا
 کے باتنے اتھر میں هجراً سی دننا فاطمۃ تужھرا
 کا ہملا معاشر کو ٹھہر چुکا ہے۔ هجراً سی دننا

(الرُّوْضَةُ الْفَالِقُ، المَجْلِسُ الثَّامِنُ وَالْعَشْرُونُ فِي أَزْوَاجِ عَلَى بْنِ أَبِي طَالِبٍ... الْخَ ص ٢٧٤) **अल्लाहु** रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फिरत हो।

أَمِين بْن جَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर, तेरा सब घराना नूर का

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرَبِ) (हृदाइके बख्तिरश अजू इमामे अहले सुन्नत

शर्हे कलामे रजा :

صَلُّوا عَلَى الْحَيْبِ !

خواہوں جنّت کی کرامات

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! اس واکیپیڈیا مें سرکارے جیشان، ساہبیوں کوئونो مکان صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اور هجرتے ساییدتوں کا خوبی جتوں کو کبرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی انجاماتوں شان کے ساتھ ساتھ هجرتے ساییدتوں کا فاتح متعجب ہر کی فوجیلتوں کا بھی پتا چلتا ہے، بے شک یہہ اس پیکرے افسوس کی ریاضت کی انجیمسشان کرامات ہے کہ مان کے پستان میں ہی گوفٹگو کو سुن کر سماں لیا اور آنے والے ہالات کے معتابیک اس کا جواب بھی دے دیا । **اللہ** کا دیرے معتول کی کو درست سے کوچ برد نہیں کہ وہ مان کے پستان میں پالنے والے کو فہم و گویا ای کی کوچت دے کر با کرامات بنانا ہے । هجرتے ساییدتوں کا فاتح ماہرا تھیبا تھاہرا کی احوالاً اتھاڑ میں سے اک انجیمسشان شاخیسیت هجرتے ساییدتوں کو ابھول کا دیر جیلانی کو بھی **اللہ** رجھل ایجات نے مادر جادا کرامات والی بنانا کر شکمے مادر میں بولنے سماں نے کی کوچت اپنا فرمادی، چنانچہ

ٹائیپے جلی مادر جادا کرامات والی

دا'وتے اسلامی کے ارشادی ادارے مکتبتوں مداریا کی متابوں 415 سفہاً پر مشریعی کتاب "رسائلہ اخلاق" ہیسے دوسرے سفہاً 273-274 پر ہے : ہمارے

گُسپوں آ‘جُم مَادَرْ جَادَ وَلَيْ شَاءَ | (1) آپ ابھی اپنی مां کے پेट مें थे اور مां کو جب چੌंक آتی اور اس پर وोह حَمْدُ اللَّهِ كہرتی تو آپ پेट ہی مें جوابن يَرْحَمُكُ اللَّهُ کہتے | (2) پانچ بارس کی ڈپ्र में جب پہلی بار بِسْمِ اللَّهِ يَرْحَمُكُ اللَّهُ پढ़نے کی رسماں کے لिये کیسی بُرُوج کے پاس بیٹھتے تو بِسْمِ اللَّهِ يَأْعُوذُ اور بِسْمِ اللَّهِ يَأْعُوذُ سے لے کر اٹھا رہ پارے پढ़ کر سو رہ فَاتِحَہ اور الْمَمْلُوك سے لے کر پढ़ دیے ! فرمایا : بس مुझے ایسا ہی یاد ہے کیونکی میری مां کو بھی ایسا ہی یاد تھا | جب مैں اپنی مां کے پेट مें था اس کو ہو گئی پڑھا کر سو رہا تھا |

اللَّا هُوَ إِلَّا جَلَلُ الْجَنَّاتِ کی اُن پر رہنمائی ہے اور اُن کے ساتھ ہماری ماغِ فیرت ہے ।

اَمِينٌ بِجَاهِ اللَّهِيِّ الْأَمِينِ مَنْ لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْمُسْلِمُ

واہ کیا مرتباً اے گُسپ ہے بala تera
ऊچے ڈنچوں کے سرائے سے کڑم آ‘لا تera

اُنہے جھرا کو سُبَارک ہے ڈرُسے کُدرت
کا دیری پا اے تسدھک میرے دُلھا تera

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ ربِّ الْعَزَّةِ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ب وکٹے ویلادت فِیجا مُوناہر

ہجڑاتے ساییدوں شیخ شواعب حیری فیش نکل رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتے ہیں : جب ہجڑاتے ساییدوں فاطمۃ تجوہ رہا

की विलादते बा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا सआदत हुई तो आप के रुखे अन्वर के नूर से सारी फ़ज़ा मुनव्वर हो गई।

(الرؤوش الفائق، المجلس الثامن والعشرون في ازواج على بن ابي طالب... الخ ص ٢٧٤ ملخصاً)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

निखानी अङ्गारिज़ से मुकर्रा⁽¹⁾

نَبِيٌّ مُّصَدِّقٌ، سَابِقٌ بِالْحِكْمَةِ وَالْعِلْمِ وَالْأَوْسَاطِ نے ارشاد دیا
فرمایا : “میری بیٹی فاتیما انسانی شکل مें ہوئیں کی تھیں
ہُجَّ وَنِفَّاسٍ مِّنْ قَبْلِهِ ”

(**كُنْزُ الْعَمَالِ**، كتاب الفضائل، فضل أهل البيت، ج ١٢، ص ٥٠، حديث ٣٤٢٢١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाहू** रब्बुल इज़ज़त
 نے **عَزَّوَجَلَّ** हज़रते सव्यिदतुना **फ़اطِمَة** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को पुरनूर
 بनाया, हैज़ व निफ़ास जैसे निस्वानी अ़वारिज़ से दूर रखा और
 इस के इलावा आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ज़ाते सितूदा सिफ़ात को
 मम्बए बरकात (या'नी बरकतों का सर चश्मा) बनाया जैसा कि

(1) या'नी औरतों को पेश आने वाले मुआमलात से पाक।

बरकत वाली सीनी (1)

(1) या'नी धात का बना हुवा रोटी सालन रखने वाला ख्वान ।

फिर हुजूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अली, رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अहले बैत जम्मु फ़रमा कर सब के साथ (सीनी में से) खाना तनावुल फ़रमाया और सब सैर हो गए फिर भी खाना इसी क़दर बाकी था और उस को हज़रते सच्चिदतुना बीबी फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने पडोसियों को खिलाया ।

(**تَفْسِيرُ رُوحُ الْبَيَانِ**، پ ۳، ایل عِمَرْنَ، تَحْتُ الْآيَةِ ۳۷، ج ۲، ص ۳۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

عَزُّ وَجْلَ
प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** की
प्यारी बन्दी, आका^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ} की शहज़ादी हृज़रते
सच्चिदतुना फ़तिमतुज़्ज़हरा^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} की अ़ज़ीमुशशان करामतें
कि आप^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} की दिलजूही^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} के लिये कभी जनती खाने
हाजिर हों और कभी आप^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} की बरकत से थोड़ा सा
खाना अहले बैत और पड़ोस के कई अफ़राद को किफ़ायत करे
और जब पूछा जाए कि येह सब कैसे हो गया तो सच्चिदा
आबिदा ज़ाहिदा का जवाब कि येह सब कुछ **अल्लाह** रज़ज़ाक़
عَزُّ وَجْلَ^{की} तरफ़ से है, इस में हमारे लिये ता'लीम है कि जब भी
कोई फ़ज़लो कमाल हासिल हो, दीनी व दुन्यवी इज़ज़त व अ़ज़मत
नसीब हो तो इस को मिन जानिबिल्लाह (या'नी **अल्लाह**
عَزُّ وَجْلَ^{की} तरफ़ से) ही तसव्वुर करना चाहिये, अपनी ज़ात की तरफ़ इस
की निस्बत नहीं करनी चाहिये और हड़कीक़त भी येही है कि बन्दे
को जो भी दीनो दुन्या की ने'मत व करामत मिलती है मशिय्यते

ईج़दी (مُعْتَدِلٍ - ایڈر-وی) (يَا'نِي ﴿اللّٰهُ أَكْبَر﴾) की मरज़ी, तक़दीरे इलाही) और जनाबे इलाही से मिलती है, अब बन्दे की मरज़ी कि वोह इस हक़ीक़त का मुक़িर रहे या नफ़्س की चालों और शैतान के जालों में उलझ कर अपनी मेहनत व कोशिश का नतीजा तसव्वुर करे। बहर कैफ़ कौलो फे'ल और ज़बान व दिल हर लिहाज़ से अपने आप को आजिज़ तसव्वुर करना और हर कमाल की निस्बत ज़ाते इलाही की तरफ़ करना **اللّٰهُ أَكْبَر** के बर्गज़ीदा बन्दों और बन्दियों का शिअ़र है। वोह बुलन्द से बुलन्द तर मक़ाम तक रसाई पा कर भी खुद को आजिज़ व मुतवाज़ेअ (مُعْتَدِلٍ - ایڈر-وی) (يَا'نِي इन्किसारी करने वाले) रखते हैं और व तक़ाज़ए बशरिय्यत (या'नी इन्सान होने के नाते) अगर दिल में अपने बुलन्द मक़ाम का तसव्वुर भी आ जाए तो इस तसव्वुर को भी तकब्बुर जानते और इस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं, जैसा कि

अपने दिल की निशानी करते रहो !

दा'वते इस्लामी के इशाअूती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्कूआ 97 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “तकब्बुर” سफ़हा 50 पर है : हज़रते सच्चिदुना बायज़ीद बुस्तामी قُدُس سَلَامُ عَلَيْهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ को एक मरतबा येह तसव्वुर हो गया कि मैं बहुत बड़ा बुजुर्ग और शैख़े वक़्त हो गया हूं, लेकिन इस के साथ येह ख़्याल भी आया कि मेरा येह सोचना फ़ख़्र व तकब्बुर का आईनादार है। चुनान्चे फ़ौरन खुरासान का रुख़ किया और एक मंज़िल पर पहुंच कर दुआ की : “ऐ **اللّٰهُ أَكْبَر** جब तक ऐसे कामिल बन्दे को

نہیں بھے�ےگا جو مुझ کو میری ہٹکیکٹ سے رُ شناس (یا' نی آگاہ) کرا سکے اس کو تک یہیں پڑا رہنگا । ” تین دن اسی ترہ گujر گئے تو چوथے دن اک بُرُوجُر رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کو کریب آنے کا ایسا رکا کیا لیکن اس ایسا کے ساتھ ڈن کے پاؤں جُنمیں میں ڈھنستے چلے گئے । انہوں نے چوبتے ہوئے لہجے میں کہا : “ کیا تुم یہ چاہتے ہو کی میں اپنی خुلیٰ ہری آنکھوں کو بند کر لے اور بند آنکھ خوکل دوں اور بآی جی د سمت پورے بیس تام کو گڑ کر دوں ? ” یہ سون کر آپ بھبھرا گئے اور پوچھا : “ آپ کیون ہیں اور کہاں سے آئے ہیں ? ” جواب دیا کی ” جس کوکت تुم نے **اللّٰہ** تھا لہا سے ابھد کیا ہے اس کوکت سے 3000 میل (تکریبی 4828 کیلو میٹر) دوڑ ہے اور اس کوکت میں سیدھا وہیں سے آ رہا ہے، میں تumھے بآ خبر کرتا ہوں کی اپنے کلب کی نیگرانی کرتے رہو । ” یہ کہ کر وہ بُرُوجُر گاہیب ہو گئے ।

(تذكرة الأولياء (مترجم)، حضرت بايزيد کے حالات و مناقب، ص ۱۰۳)
اللّٰہ بخوبیہ ایک کیا ہے اور ان کے ساتھ ہماری ماغفیلیت ہے ।

اوین بجاہ اللہی الامین ملی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم

صلوٰۃ اللہی علی الحبیب ! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

jab darayaa dijalaa distikbal ke liye badha

ہجڑاتے سایی دُننا بآی جی د بیس تامی فرماتے ہیں کی اک مرتبہ میں داریا اے دیجالا پر پھونچا تو پانی جو ش

مارتا हुवा मेरे इस्तिक़बाल को बढ़ा लेकिन मैं ने कहा : “मुझे तेरे इस्तिक़बाल से (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ) शम्मा बराबर (या’नी थोड़ा सा) भी गुरुर न होगा क्यूंकि मैं अपनी 30 सालह रियाज़त को तकब्बुर कर के हरगिज़ ज़ाएँ नहीं कर सकता। (ایضاً ص ۱۱۲)

اللَّٰهُمَّ रबुल इज़्जतِ عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फिरत हो।

اَوْيَنْ بِحَمْدِ اللَّٰهِ الْأَكْبَرِ مَصَّلَى اللَّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

फ़ख्रो गुरुर से तू मौला मुझे बचाना
या रब्ब ! मुझे बना दे पैकर तू आजिज़ी का

(वसाइले बरिकाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत स. 195) دامت بر كراماتهم العالية

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा दो हिकायतों से ये हर दर्स मिलता है कि बन्दा ख़्वाह कैसा ही बुलन्द मक़ाम पा ले और कितने ही इन्हामात ह़ासिल कर ले अपने नफ़्स को क़ाबू से बाहर न होने दे। अगर दिल में कोई ऐसा ख़्याल उभरता महसूस हो तो फ़ैरन बारगाहे इलाही में आजिज़ी व इन्किसारी के साथ हाजिर हो कर ताइब हो ताकि वसाविसे शैतानी से दिल पाक हो और अमल शफ़्फाफ़ हो और इसी तरह शैतानी व नफ़्सानी शुरूर से महफूज़ रहते हुए बा ईमान मौत से हम किनार हों कि बा ईमान मौत दुन्यवी ज़िन्दगी की इन्तिहाई काम्याबी है और इस काम्याबी तक रसाई नेकी और नेक माहोल से मुमकिन है, इस पुर

आशोब دaur مें تब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी बेहतरीन माहोल फ़राहम कर रही है। दुन्या व आखिरत की बेहतरी पाने के लिये इस मदनी माहोल से वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है। दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल में अनोखी अनोखी मदनी बहारों का जुहूर भी होता रहता है। तरगीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअूती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 35 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “सींगों वाली दुल्हन” सफ़हा 10 पर है :

दिल का सूराख़

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई की दादी अम्मां दिल की मरीज़ा थीं जिस की वजह से सीने में शदीद दर्द उठता था, टेस्ट करवाने पर पता चला कि दिल में सूराख़ है लिहाज़ा ओपरेशन के बा'द भी बचने के Chances (या'नी इम्कानात) कम हैं, ब ज़ाहिर येह चन्द दिन की मेहमान हैं, दुआ करें और बेहतर येह है कि घर जा कर इन की ख़िदमत करें। बहर ह़ाल वोह इस्लामी भाई दादी अम्मां को घर ले आए तो किसी ने मशवरा दिया कि शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले سुन्नत के ता'वीज़ات इस्ति'माल करवाएं। येह इस्लामी भाई जामिअतुल मदीना (सरदाराबाद) में ज़ेरे ता'लीम थे लिहाज़ा इन्होंने वहीं से

تَأْتِيَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ تَأْتِيَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ چند دین کے اندر اندر درد بیلکुل ختم ہو گیا، جب دوبارا ٹیکسٹ وغیرہ کرવایا تو ڈوکٹر ہیرت جدرا رہ گئے کہ دل کا سوڑا خبیر بند ہو چکا تھا، انہوں نے پوچھا کہ پیشے دینوں کیون سی دوا ایسٹ مال کی ہے؟ جواب دیا کہ امریکے اہل سونت کے تأثیر کا جنگل ایسٹ مال کرفاہ ہے۔ یہ سونت کو ڈوکٹروں کا کہنا تھا کہ یہ ہماری جنگی کا پہلا واقعہ ہے کہ اس کیس کی مریض کو اس ترہ شفافی میلی ہے۔

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ ہماری دادیجان (یہ بیان دئے تک) ہیات ہے اور انہوں دل کی کوئی تکلیف نہیں۔ (سینگھیاں دل، ص ۱۰)

خیلنا میرے دل کی کلی گئے آجِ جنم

میتا کلب کی بے کلی گئے آجِ جنم

(سماں بخشش اجِ مဖیتے آجِ جنمہ ہند (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ)

صلوٰۃ علی الحبیب! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

مौत کی یاد مें بُرکتی رहनے والی آنکھ

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا
ہیجرتے ساییدنوا معاذہ ابادیتیا
روجنا سوہنے کے وکٹ فرماتیں: (شاید) یہ وہ دن ہے
جس میں مुझے مرنانا ہے۔ فیر شام تک کوچھ ن خاتیں فیر جب
رات ہوتی تو کہتیں: (شاید) یہ وہ رات ہے جس میں مुझے
مرانا ہے۔ فیر سوہنے تک نماز پढ़تی رہتیں।

(احیاء العلوم، ج ۵، ص ۱۰۱)

बयान नम्बर ३

ख़ातूने जन्नत

का

जौँक़े झबादत

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَ الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرُّسَلِيْنَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِّسَ اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ط

خاتونے جنات کو جوئے خداوت

دُوڑھ د شاریف کوی فرجیلات

دا'वتے اسلامی کے ایشاؤتی ادارے مکتبتوں مداریا کی متابوں 616 سلفہات پر مुشتمیل کتاب "فرجانے سُننات" جیلڈ دوپھم کے اک باب "نکوی کی دا'�تہ حیسے اور اول" سلفہ 147 پر شیخے تریکت، امریکے اہلے سُننات، بانی دا'വتے اسلامی ہجرتے اعلیٰ امام مولانا ابو بیلالم محدث ایلیاس اعلیٰ اولیاء کا دیری رجیو نکل فرماتے ہیں : ہجرتے ساییدونا ابو معرفہ محدث بین اعلیٰ اولیاء احمد بن حنبل خیلیام سمرکندی فرماتے ہیں : میں اک روچ راستا بھول گیا، اچانک اک ساحیب نجیر آئے اور انہوں نے کہا : "میرے ساتھ آओ ।" میں ان کے ساتھ ہو لیا । مझے گومان ہوا کہ یہ ہجرتے ساییدونا خیلیام علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں । میرے اسٹیفسار (یا'نی پوچھنے) پر انہوں نے اپنا نام خیلیام باتا یا : ان کے ساتھ اک اور بزرگ بھی ہے، میں نے ان کا نام داریافت کیا تو فرمایا : یہ ایلیاس (علیہ السلام) ہے । میں نے ارج کی : **اعلیٰ اول** آپ پر رحمت فرمائے، کیا آپ دونوں ہجرات نے سرکارے کائنات، شہنشاہ موجو دات، مہبوبے ربانی اور وسیع مسماوات، احمد مودع موجبا، محدث مسٹفہ کی جیوارت کی ہے ؟ انہوں نے

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ، الْبَابُ الثَّانِيُ فِي ثَوَابِ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، ص ١٣٧)

साकिये कौपर पे लाखों सलाम दोनों आलम के सरवर पे लाखों सलाम
जिस का अब्रे करम सब पे साया फ़िजान ऐसे प्यारे पयम्बर पे लाखों सलाम

जिस की खुशबू से तऱ्यबा की गलियां बर्सें
ऐसे जिस्मे मअत्तर पे लाखों सलाम

”صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ“
पढ़ने की अदात बनाइये और अपने ऊपर रहमतों के खूब खूब
दरवाजे खूलवाइये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सहियदा फ्रांतिमा कर जौके नमाज़

ہجڑتے اُلّاماما شیخ اُبُول ہک مُہدِیٰ دِہلَویٰ
 علیہ رحمة اللہ القویٰ ”مَدَارِيجُ نُبُوْبَه“ مें نکल فرماتे ہیں : ہجڑتے
 سَعِیدُ دُنَا اِمَامَہ هَسَنَ فرماتे ہیں : مैं ने अपनी
 وَالِيدَ اِمَادَہ سَعِیدُ دُنَا فَاتِیٰ مَامَہ کो

देखा कि आप (بسا अवकात) घर की मस्जिद के मेहराब में रात भर नमाज़ में मशूल रहतीं यहां तक कि सुब्ह तुलूअ हो जाती ।

(مدارج النبوة(متترجم)، قسم پنجم، در ذکر اول اور کرام، سیده فاطمة الزهراء، ج ۲، ص ۱۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! खातूने जन्नत को किस कंदर इबादत का जौक था कि पूरी पूरी रात **अल्लाह** की इबादत में गुजार देती थीं लिहाज़ा आप से हकीकी उल्फ़त व महब्बत का तकाज़ा है कि हम न सिफ़ फ़राइज़ बल्कि सुननो नवाफ़िल की अदाएंगी को भी अपना मा'मूल बनाएं । नमाज़ की उल्फ़त व महब्बत को उजागर करने की निय्यत से फ़ज़ाइलो बरकाते नमाज़ पर मुश्तमिल **3** अहादीषे मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाइये :

नमाज़ की बरकतें

﴿1﴾..... हज़रते सर्यिदुना अबू जर سے مरवी है कि एक मरतबा सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मौसिमे सर्मा में बाहर तशरीफ़ लाए जब कि दरख़तों के पत्ते झड़ रहे थे, आप ने एक दरख़त की दो टहनियों को पकड़ा तो उन के पत्ते झड़ने लगे, आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू जर ! मैं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मैं हाजिर हूं । तो इरशाद फ़रमाया : बेशक जब कोई मुसलमान बन्दा **अल्लाह** की रिज़ा के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे इस दरख़त के येह पत्ते झड़ रहे हैं ।

(مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابي ذر الغفارى، ج ۸، ص ۵۷۳، حدیث ۲۲۱۷۷)

(2).... हज़रते سالیٰ دُنَا अबू हुरَّا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے رِیَاوَاتْ है कि نُور के پैकار तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर ने इरशाद فرمाया : नमाज़ एक बेहतरीन अमल है जो इस में इजाफ़ा कर सके तो वोह ज़ख्त करे ।

(الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة، الترغيب في الصلاة مطلقاً، ص ١٣٠، الحديث ٩)

(3)..... نبیِّنے مُکرَّم، نُورِ مُجسَّسِم نے इरशाद فرمाया : سफ़ाई نِسْفِ إِيمَان है और “الْحَمْدُ لِلَّهِ” مीज़ان को भर देती है और “سُبْحَانَ اللَّهِ وَلَا هُوَ كُبُرٌ” ج़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देते हैं और नमाज़ नूर है और سदक़ा दलील या'नी रहनुमा है, सब्र रोशनी है और कुरआन तेरे हक़ में या तेरे खिलाफ़ हुज्जत है ।

(صَحِيفَ مُسْلِم، كَتَابُ الطَّهَارَة، بَابُ فَضْلِ الْوَضُوءِ، ص ٦٠، حَدِيثٌ ٢٢٣)

شیخُوں کے حُدَیَّوں اُنْجِرَتے اُلَّامَاء مُسْلِمَانَ اُبُدُّوں مُسْتَفَاضَ آ'جَمِي نے इस्लामी बहनों के लिये नमाज़ की तरगीब पर मुश्तमिल मन्जूम कलाम लिखा है, فرمाते हैं :

دیوارے ہک دی�ا ائمہ ! نماجِ
دربارے مسٹفَہ میں تुہنے لے کے جائیں
یہ جنات کے ساتھ نوری لیباں اُچھے جے و رات
جنات میں نرم نرم بیٹھنے کے تکھ پر
خیلِ دم تُو مہاری کرے گی ہو رے اُد ب کے ساتھ
کاؤر کے سالس بیل کے شربت پیلائیں
سab یہ تو فُل ہونے گے نیشاوار پسینے پر
رہنمات کے شامیانوں میں خُشبو کے ساتھ ساتھ
باغے بیہیش ت رے جے ریجے بہارے خُلدا
ہو رے تر انے گا ایسے اُر اُر جُم جُم کر
پڑتی رہے نماجِ کی دوئیں جہان میں
فُکے سے سُوپیل سی سے جہنم کی آگ سے
پڑ کر نماجِ ساتھ لے سامانے آخیرت
بات ڈیا جمیں کی مانو ن ڈیا کبھی نماجِ

جنات تुہنے دیلائیں اے بی بی یو ! نماجِ
خُلکیک سے بخُشبو ایں اے بی بی یو ! نماجِ
سab کوچ تُوہنے پہنائیں اے بی بی یو ! نماجِ
آرام سے سُولائیں اے بی بی یو ! نماجِ
رُتبا بہت بڈائیں اے بی بی یو ! نماجِ
مے وے تُوہنے خیلائیں اے بی بی یو ! نماجِ
خُشبو میں جب بسائیں اے بی بی یو ! نماجِ
ٹندی ہوا چلائیں اے بی بی یو ! نماجِ
سab کوچ تُوہنے دیلائیں اے بی بی یو ! نماجِ
نگمے تُوہنے سُونائیں اے بی بی یو ! نماجِ
سab کوچ تُوہنے دیلائیں اے بی بی یو ! نماجِ
سab سے تُوہنے بچائیں اے بی بی یو ! نماجِ
مہشرا میں کام آئیں اے بی بی یو ! نماجِ
آل لالہ سے میلائیں اے بی بی یو ! نماجِ

(جناتی جے و رات، س. 658-659)

بے نماجی کو درجنات کو انعام

پ्यاری پ्यاری اسلامی بہنو ! اہمادیہ مُبخارکہ میں جہاں
نماجِ پڑنے کے اس کدر فُجہ ایل وارید ہے وہی نماجِ ن پڑنے کے
بے شومار دُنیو کی و عکس انا نا و ع اُجھا بات بھی بیان کیے
گئے ہے چونا نچے اس جیمن میں 5 فُرماں نے مُسٹفَہ جیک کیے جاتے ہے :

“مُعْذَبًا” کے پانچ ہुسْفَ کی نیکیت سے

تکہ نماجِ چھوٹیوں پر مُعْذَبًا

۵ فَرَامَيْنِ مُعْذَبًا

﴿۱﴾..... جس نے نماجِ چھوٹی تو وہ **اللّٰهُ** سے اس
ہاں میں میلے گا کہ وہ اس پر گزب فرمائے گا ।

(المعجم الكبير، عكرمه عن ابن عباس، ج ۵، ص ۳۸۱، الحديث ۱۱۶۱۷)

﴿۲﴾..... جو جان بُوझ کر نماجِ چھوٹے گا **اللّٰهُ** اس
کا نام جہنم کے اس دروازے پر لیکھ دے گا جس سے وہ اس
میں داخیل ہو گا ।

(كتاب الصلاة، الترغيب عن ترك الصلاة، ج ٤، الجزء السابع، ص ١٣٢، حديث ١٩٠٨٦)

﴿۳﴾..... جس نے نماجِ چھوٹی گویا اس کے اہلِ ایساں اور
مالوں دلیلت ڈھن گا ।

(ايضاً، حديث ۱۹۰۸۵)

﴿۴﴾..... جان بُوझ کر نماجِ ن چھوٹے کیونکی جس نے جان
بُوझ کر نماجِ چھوٹی **اللّٰهُ** اور اس کے رسلوں
کا جِیمما اس سے ٹھہر جائے گا ।

(مسند احمد، مسند القبايل، حديث ام این، ج ۱، ص ۲۷۱، الحديث ۲۸۱۲۶)

﴿۵﴾..... جس نے جان بُوझ کر نماجِ چھوٹے کی **اللّٰهُ**
اس کے اُمُول بارباد کر دے گا اور **اللّٰهُ** کا جِیمما
اس سے ٹھہر جائے گا جب تک کہ وہ توبہ کے جریئے **اللّٰهُ**
کی بارگاہ میں رُجُوع ن کرے ।

(الترغيب والترحيب، كتاب الصلاة، الترهيب من ترك الصلاة تعداً... الخ، ص ۱۸۵، الحديث ۱۸)

پرشکار : مراجیعی میں اول مذکور ترک **इलिया** (ڈاکٹر **इسلامی**)

हो गया तुझ से खुदा नाराज़ गर	कब्र सुन ले आग से जाएगी भर
बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी	कब्र की दीवार बस मिल जाएगी
तोड़ देगी कब्र तेरी पस्तियां	दोनों हाथों की मिलें जूँ उंगलियां
उम्र में छूटी है गर कोई नमाज़	जल्द अदा कर लेतू आ गफ्लत से बाज़
कर ले तौबा रब्ब की रहमत है बड़ी	कब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(vasail-e-bikhshash ajz amariye ahle sunnat s. 667 - 668) ذائقہ برگاتہم العالیہ

صَلُّو عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ الرَّبِّ

صَلُّو عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह

तआला इरशाद फरमाता है :

يَا يَهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِمُمْ
أَمْوَالُكُمْ وَلَا أُولَادُكُمْ عَنْ دُرْجَاتِ
اللَّهِ وَمَنْ يَفْعُلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ
هُمُ الْخَسِرُونَ ①

(بـ، المنافقون: ٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ इमान
वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी
अवलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह**
के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो
ऐसा करे तो वोही लोग नुक्सान में हैं।

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “नमाज़ के
अह़काम” सफ़हा 173 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुनत,

बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़्ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़न्तार क़ादिरी ذامت بِرَبِّكُمْ الْعَالِيَهُ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ नक़्ल फ़रमाते
हैं : मुफ़स्सरीने किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ फ़रमाते हैं कि इस आयते
मुबारका में **अल्लाह** तभ़ाला के ज़िक्र से पांच नमाज़े मुराद
हैं, पस जो शख्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख्त, मईषत
व रोज़गार, साज़ो सामान और अबलाद में मसरूफ़ रहे और
वक्त पर नमाज़ न पढ़े वोह नुक़सान उठाने वालों में से है ।

(الزواج عن اقتراف الكبائر، الكبيرة السابعة والسبعين تعمد تأخير الصلاة... الخ، ج ١، ص ٢٣٩)

शदीद जख्मी हालत में नमाज

जब हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رضي الله تعالى عنه पर कातिलाना हम्ला हुवा तो अर्जू की गई : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! नमाज़ (का वक़्त है)। फ़रमाया : जी हाँ, सुनिये ! जो शख्स नमाज़ को ज़ाएअ़ करता है, उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं। और हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رضي الله تعالى عنه ने शदीद ज़ख्मी होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फरमाई ।

बीमारी व कल्पक्त के बा वज़द मशगुले इबादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जनत, सर्विदा
फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की तबीअ़ते अ़ालिया हमा वक़्त इबादते
इलाही की तरफ मُतवज्जेह रहती थी, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا अपने

घرےلू کام-کاج کی انچاام دےہی کے ساتھ ساٹھ اپنے آپ کو
इبادتے ایلاہی مें بھی مशاغل رکھا کرتی थीं خواہ آپ
کیسی بھی کام مें हों آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हर وक्त
�ादे ایلاہی में مگن रहतीं और एक लम्हे के लिये भी यादे
ایلاہی से ग़ाफ़िل न होतीं और बीमारी और तकलीफ़ की हालत
में भी **अल्लाह** तभ़ाला की इबादत तर्क न करतीं। آپ ने
خاطونے جنات رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के जज्बए इबादत के मुतअَلِلک
مुलाहज़ा فَرمाया अब جौके तिलावत मुलाहज़ा कीजिये ।

مසرٰفِیٰ یت میں بھی جِکِرے ربو بِیٰ یت

ہجڑاتے سا یت دُنَا سالماں فَارسی فَرماتے
ہیں کی میں اک مراتبا ہجڑے پورنور، شاکِرے یُمُونُشُر
کے ہوکم سے سا یت دا فَاتِیما کی رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہ وَسَلَّمَ
خِدَمَت میں ہاجیر ہوا۔ میں نے دے�ا کی ہجڑاتے ہس نے کریمین
سو رہے�ے اور آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا این کو پانچا جنل
رہی थीं اور جبَان سے کلامے ایلاہی کی تیلَّاَوَت جاری ہی یہ
دے� کر مੁझ پر اک خاس ہالتے ریکھت تاری ہری ।

(سفینہ نوح، حضہ ذُؤم، ص ۳۵)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنے ! آپ نے مولاهج़ा فَرمाया
کی خاطونے جنات سا یت دا فَاتِیما کو تیلَّاَوَت
کرنے کا کیس کدر جاؤکھا کی اپنی گھرےلू مسروفِیٰ یت کے
دُرَانِ جبَان سے تیلَّاَوَت کو رآن کا ورد بھی جاری رکھتیں جب
کی ہماری مسروفِیٰ یت کے دُرَان گانوں باؤں اور موسیکی کا

شورے گول جاری رہتا ہے جس کی نہ سوت سے گوناہوں کا میٹر چلتا رہتا ہے । اے کاش ! سب اسلامی بہنوں کا یہ مدنی جہن بن جائے کی گھرلू کام-کاج میں مशاعلیت کے ساتھ ساتھ اپنی جہاں کو جیکروں اجڑکار سے تر رکھنے اس سے ن سرفہ اپنی نہکیوں میں ایجاد فہمہ ہوگا بلکہ ایوالاد بھی اس سے مُسْتَفِیَہ ہوگی، جیسا کی

شیکھو مادھر میں ہی 18 پارے یاد کر لیوے

دا'�تے اسلامی کے ایشاً عَزِیٰ ایدارے مکتبتوں مداریا کے متابوں 26 سفہاً پر مُسْتَمِل رسالے "مُنْهَ کی لَاش" سفہاً 5 پر شاخے تریکھت، امریکے اہل سُنّت، بانیوں دا'�تے اسلامی ہجڑتے اعلیٰ مسلمانوں میں اب بیلال مُحَمَّد ایلیاس عَزِیٰ کا دامَتْ برَ کَائِمُهُ الْعَالِیَہ تھریر فرماتے ہیں : (ہنوز گئے پاک پانچ بارس کی ڈپر میں جب پہلی بار پڑھنے کی رسماں کے لیے کسی بُرُوج کے پاس بیٹھے تو اُعُوذُ بِسُرِ اللہِ پڑھ کر سوئے فاتحہ اور اللہ سے لے کر 18 پارے پڑھ کر سुنا دیے । اس بُرُوج کے پاس میں اپنی مام کے پیٹ میں ثا اس وکٹ وہ پढھا کرتی ہیں । میں نے سुن کر یاد کر لیا ہے ।

کُوڑاً آنے پاک پڑھنے کا بواب

کُوڑاً آنے مُجید، فُوڑکاً آنے هُمید **اعلیٰ** رబُّل عَنَامَ عَزَّ وَجَلَ کا مُبَارک کلام ہے، اس کا پڑھنا-پڑھانا اور

سُنَّةٌ سُنَّةٌ سَبَقَهَا حِفْظٌ مِنَ الْقُرْآنِ، ص ٦٤٦، الحدیث: ١٠، (٢٩١)

سُنَّةٌ سُنَّةٌ سَبَقَهَا حِفْظٌ مِنَ الْقُرْآنِ، ص ٦٤٦، الحدیث: ١٠، (٢٩١)

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 868 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लाहे आ 'माल” जिल्द अब्वल सफ़्हा 277 पर आरिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मा हज़रते अल्लामा अब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी हनफी عليه رحمة الله الغنوي इस हडीषे पाक को नक़ल कर के फ़रमाते हैं : अगर हम इस الله के हर हर्फ़या'नी “اَفَ لَمْ يَرَ اَنَّ مَنْ يُنذِّرُ

तिलावत की तौफीक दे दे इलाही !

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बेहतरीन शख्स

नविय्ये मुकर्रम, नरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी

خَيْرٌ كُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلِمَهُ : **كَا فَرَسَانَةَ مُعَذَّبِّجَمَ حَدَّ** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या'नी तुम में बेहतरीन शख्स वोह है जिस ने कुरआन सीखा
और दूसरों को सिखाया ।

(مَحْيٌ الْبُخْلَى، كِتَابُ فَضَائِلِ الْقُرْآنِ، بَابُ خَيْرِكُمْ مِنْ تَعْلِمُ الْقُرْآنَ وَعِلْمَهُ، ص ١٢٩٩، الحَدِيث: ٥٠٢٧)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ هَجَرَتِهِ سَاهِيًّا دُنَانَهُ أَبُو أَبْدُرْ رَحْمَانَ سُلَمَى
كُرَآنَهُ مُبَارَكَةً فَرَمَاهُ فَرَمَاهُ هَدِيَّةً مُبَارَكَةً مُبَارَكَةً
(فَيَسْأَلُهُ الْمُؤْمِنُونَ حَرْفَ الْخَاءِ، جِئْنَاهُ مِنْ ٢١٨ تَحْمِيلَ الْحَدِيثِ: ٣٩٨٣)

अल्लाह मुझे हाफिजे कुरआन बना दे

कुरआन के अहंकाम पे भी मुझ को चला दे

(वसाइले बग्धिष्ठाश अजु अमीरे अहले सुन्नत دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ स. 101)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरआन शफाऊत कर के जन्मत में ले जाएगा

हज़रते सच्चिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है कि
रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख्स ने कुरआने पाक सीखा
और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है उस पर अ़मल
किया, कुरआन शरीफ़ उस की शफ़ाअत करेगा और जन्त में ले
जाएगा ।

(تاریخ دمشق، باب اعین، عقل بن احمد، ج ۲، ص ۳، المکتبة الشاملية)

(تاریخ دمشق، باب العین، عقیل بن احمد، ج ٢١، ص ٣، المکتبۃ الشاملۃ)

इलाही ! खूब दे दे शौकुं कुरआं की तिलावत का
शरफ़ दे गुम्बदे खज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمدٍ

اللَّهُ تَعَالَى كَيْفَ يَعْلَمُ مَا فِي الْأَوْرَاقِ

एक हृदीष शरीफ़ में है : जिस शख्स ने किताबुल्लाह की
एक आयत या इल्म का एक बाब सिखाया **اللَّهُ تَعَالَى**
क़ियामत तक उस का अज्ञ बढ़ाता रहेगा ।

(الجامع الصغير مع فيض القدير، حرف الميم، ج ٢، ص ٢٣٦، الحديث: ٨٨٦٣)

अ़त़ा हो शौकुं मौला मद्रसे में आने जाने का
खुदाया जौकुं दे कुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना
की मत्बूआ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत
जिल्द अब्बल” सफ़्हा 545 ता 546 पर सदरुशशरीआ बदरुत्तरीक़ा
मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عليه رحمة الله القوي नक़ल
फ़रमाते हैं : एक आयत का हिफ़ज़ करना हर मुसलमान मुकल्लफ़
(या'नी आकिल व बालिग) पर फ़र्ज़ ऐन है और पूरे कुरआने
मजीद का हिफ़ज़ करना फ़र्ज़ किफ़ाया और सूरए फ़ातिहा और
एक दूसरी छोटी सूरत या इस के मिष्ल मषलन तीन छोटी आयतें
या एक बड़ी आयत का हिफ़ज़, वाजिबे ऐन है ।

(الدُّرُّ المُختار، كتاب الصلاة، باب في صفة الصلاة، ويجهر الإمام، ج ٢، ص ١٥)

دا'�تے اسلامی کے جامی ایٹ و مداریش کی تاداد

پ्यारی پ्यारی اسلامی بہنو! آپ نے کورआنے پاک کی تادا'لیم و تبلیغ کے معتزلیلک مولانا حبیب فرمایا۔ تبلیغ کر رہیں ہیں کورआنے سونت کی اسلامیت گیر سیاسی تھریک دا'وتے اسلامی سے وابستگان اس سادگت سے کیس کدر فوجیاں ہو رہے ہیں، یہ بھی مولانا حبیب فرمایے، چنانچہ

دا'وتے اسلامی کے ایشانیتی ایدارے مکتبتوں مدنیا کی متابوں 616 سفہیات پر مشتمل کتاب فوجانے سونت جیل دعویٰ کے اک باب “نکی کی دا'وت ہیسے ایوال” سفہی 564 پر ہے: 14 رمذانی مubarک سی. 1432ھ. 15 اونٹ سی. 2011ء تک سرفہ پاکستان میں براۓ ہیفاظ ناجیا مدنی مونوں کے تکریب 766 اور مدنی مونیوں کے تکریب 316 مداری سوں مدنیا چلاۓ جا رہے ہیں جن میں مدنی مونوں اور مدنی مونیوں کی میلہ کر کوں تاداد تکریب 72,000 ہے۔ نیجی اسلامی بھائیوں کے مدرسات مدنیا باالیگان (ڈمومن وکٹ: بادے ایشانیا: تکریب 40 مینٹ) کی تاداد تکریب 3,316 ہے اور اسلامی بہنوں کے مدرسات مدنیا باالیگات (ڈمومن وکٹ سو ۸:۰۰ سے لے کر اس تک مुखالیف ایکٹا میں، دارانیا: 1 گنٹا 12 مینٹ) کی تاداد تکریب 12,000 ہے۔

ہجڑا نव سو اडھتیس (39, 938) ہے। نیج (10 رجب ہل مورجج باب سی. 1432 ہی. 12-6-2011 تک) اسلامیہ بائیوں کے درسے نیجامیہ کے جامی اٹاٹل مداری کی تا' داد تکریب نوبے (90) اور اسلامیہ بہنوں کے جامی اٹاٹل مداری کی تا' داد تکریب نبہتر (72) ہے، تلبہ کی تا' داد تکریب نہ ہجڑا ہے سو ایکھنتر (6671) اور تالیبہ کی تا' داد تکریب نہ دو ہجڑا آٹ سو ایکھنلیس (2841) ہے۔ ان تماام جامی اٹاٹل مداری (لیل بنیں و لیل بنیں) اور مداری سو لیل مداری (لیل بنیں و لیل بنیں) میں مفعلاً تا' لیم دی جاتی ہے اور ان کے اخیرا جات مुखییر (۶۴۹-۵۴۱) اسلامیہ بائیوں اور اسلامیہ بہنوں کے اٹیتھیاں سے پورے کیے جاتے ہیں۔ براہے کرم! آپ بھی اپنی جکات و ڈش اور سدکاٹ و خیراٹ دا' واتے اسلامیہ کو دئے کے ساتھ ساتھ اپنے ریشہ داروں، پڈو سیوں اور دوستوں پر بھی ان پیرا دی کوشش فرمائے کر دا' واتے اسلامیہ کو دئے کا جہن بنایے۔

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

نई ڈولہن ڈباڈت میں مثناں

دا' واتے اسلامیہ کے اشاعتی ڈارے مکتبہ تعلیم مداری کی متابو آ 649 سفہاٹ پر میشتمیل کتاب “ہیکایتہ اور نسیہتہ” سفہا 541 پر میں لیلگے اسلام ہجرتے سعید تونا شیخ شواعب ہری فیش نکل فرماتے ہیں: ہجرتے سعید تونا فاطمۃ تونا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی جب رکھ ستی ہری اور آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہجرتے سعید تونا اعلیٰ یوں مرتजا

کے بھر تشریف لے گئے تو ہجڑتے ساییدونا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا سے اپلیخوں مورجنہ آپ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا نے پوچھا : “ऐ تماماً اُترتوں کی سردار ! کیا آپ خوش نہیں کہ میں آپ کا شوہر ہوں اور آپ میری بیوی ہے ؟ ” کہنے لگے : “میں کیونکر راجی نہ ہوئیں، آپ تو میری ریضا بولکہ اس سے بھی بढ़ کر ہے، میں تو اپنی اس ہیلادت و معاشرے کے معتزلیک سوچ رہی ہوں کہ جب میری دُم پوری ہو جائے اور مुझے کُبڑے میں داخیل کر دیا جائے گا । آج میرا ڈیجٹ و فلک کے بیستار میں داخیل ہونا کل کُبڑے میں داخیل ہونے کی مانند ہے । آج رات ہم اپنے رک्षے کی بارگاہ میں خडے ہو کر ڈیباadt کر رہے کہ وہی ڈیباadt کی جیسا دھکر رکھتا ہے । ” اس کے باہم وہ دوسرے ڈیباadt کی جگہ خडے ہو کر رک्षے کی دار کی ڈیباadt کرنے لگے ।

(الرَّوْضَةُ الْفَائقَةُ، المجلس الثامن والرابعون في إزواج على بفاطمة... الخ، ص ٢٨، ملخصاً)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَسِيبِ !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! ماجکورا بالا اعلیٰ اعلیٰ
“آپ تو میری ریضا بولکہ اس سے بھی بढ़ کر ہے” بہت
احمیمیت کے ہامیل ہے । اس پر اسلامی بہنوں کو گیر کرنا
چاہیے کہ ان کے دل میں اپنے “بچوں کے ابُو” کا کیتنا
اہمیت رکھا ہے اور وہ اپنے “بچوں کے ابُو” کے کیتنے ہوکرکے

ادا کرتی اور ان کی ریضا کے لیے کیا کیا کوئی کوشش کرتی ہے । “فَتَاوَا رَجُلَيْنَ” میں سیفی آ’لہ هر جگہ اہل سمعت، شاہ امام احمد رضا خاں علیہ رحمۃ الرحمٰن کے بیان کردہ ہوکوک کا مفہوم پرے خدمت ہے : شوہر و بیوی کے معتزلیل کا تمور میں معتزلکن شوہر کی ایسا ابھی یہاں تک کہ ان تمور میں شوہر کی ایسا ابھی والیدن کی ایسا ابھی پر بھی مुکदم ہے، شوہر کی دفعجت اور مال کی ہی فاجعہ، ہر بات میں اس کی خیرخواہی، ہر وکٹ جائے کاموں میں اس کی ریضا کا تعلیم رہنا، اسے اپنا مولانا جاننا اور نام لے کر ن پوکارنا، کسی سے اس کی بے جا شیکایت ن کرنا اور خود تاویل دے تو دوسرست شیکایت سے بھی بچنا، اس کی ایجاد کے بیگنے آठوں دن سے پہلے والیدن یا سال بھر سے پہلے اور مہاریم کے یہاں ن جانا (یا’نی شوہر کی ایجاد کے بیگنے جانا پڑ جائے تو سرپر مہاریم یا’نی مان باب کے یہاں ہر آठوں دن اور وہ بھی سوہنے سے شام تک کے لیے اور بہن، بائی، بچا، ماموں، خالا، فوپی کے یہاں سال بھر با’د جا سکتی ہے اور بیلہ ایجاد سے شوہر رات کو کہنے بھی نہیں جا سکتی । (فَتَاوَا رَجُلَيْنَ، ج. 24، ص. 380 مولخبہ)

اور اگر وہ ناراج ہو تو اس کی اینتیہا ای خوشامد کر کے اسے مانا، اپنا ہاثر اس کے ہاثر میں رکھ کر کہنا کہ یہ میرا ہاثر تعمیرے ہاثر میں ہے یہاں تک کہ تुम راجی ہو، یا’نی میں تعمیری مملوکا ہوں جو چاہو کرو مگر راجی ہو جاؤ ।

(فَتَاوَا رَجُلَيْنَ، ج. 24، ص. 371 مولخبہ)

دا'वتے اسلامی کے ارشادی ادوارے مکتبتوں مداریا
کے متابوں ۸۶ سفہار پر مسٹر میل رسالے "سُنْتَ نِيكَاہٌ"
میں سے بھی اکھڑی سے مubarak مولانا حبیب فرمایا : "کسی میں ہے جس کی
دعا جو ایسا دعا کی علیہ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ نے ایسا دعا کی علیہ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ نے
کی جس کے کبھی کوئی درج میں میری جان ہے ! اگر کدم سے سار
تک شوہر کے تمام جسم میں جرخیز ہوں جن سے پیپ اور کچ
لہو بہتہ ہو فیر اورت اسے چاٹے تباہ بھی ہبکے شوہر آدا ن
کیا ।" (مسند احمد، مسند انس بن مالک، ج ۵، ص ۲۲۵، الحدیث: ۱۲۹۳۹)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

خانا پکراتے وکٹ بھی تیلابات

امیر اول موسیٰ بن عاصی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فرماتے ہیں کہ سیدنا خانہ پکانے کی حالت میں بھی کورانے پاک کی تیلابات جاری رکھتیں، نبی یحییٰ کریم علیہ افضل الصالوٰة والتأسلیم جب نماز کے لیے تشریف لاتے اور راستے میں سیدنا کے مکان پر سے گزرتے اور گھر سے چککی کے چلنے کی آواز سمعتے تو نیہایت دरدے مہبوبت کے ساتھ بارگاہ ربعہ ایجھ میں دعاؤں کرتے : یا ار-ہم راہیمیں !
فاطمہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) کو ریاضت و کنائت کی جزاں ایسے خیر اٹا فرمایا اور اسے حالتے فکر میں شاہزادہ کدم رہنے کی تاویلیں اٹا فرمایا । (سفید نوح، حصہ دوم، ص ۳۵)

خاتونے جنات کی دుआں

ہجڑتے ساییدوں امامے ہسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں :
 میں نے باؤ ج مراتباً اپنی والیدا ماجیدا ہجڑتے ساییدوں کو شام سے سبھ تک ڈبادت و
 ریا جنت اور **اللہ** تعلیٰ کے آگے گیرا و جاری اور
 نیھا یت امیتی سے یلٹجا و دعا کرتے دیکھا ہے مگر میں نے کبھی
 یہ نہیں دیکھا کہ دعا میں اپنے واسیتے کوئی دارخواست کی ہے
 بالکل آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تمام دعائیں ہوں
 کی عالمت کی بخشش اور بلالیں کے لیے ہوتیں । (المرجع السابق)

شیخ محدث کنکنی ہجڑتے ابلاما ابدول ہک محدث
 دہلی وی ”مداری جو نبوبت“ میں فرماتے ہیں :
 امامے ہسنے موجتب امامے ہجڑتے فرماتے ہیں کہ میں نے اپنی
 والیدا ماجیدا ساییدا فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو مسالمان
 مار्दیں اور اُترتوں کے ہک میں بہت جیسا دعا ائمہ کرتے دیکھا، انہوں
 نے اپنی جات کے لیے کوئی دعا نہ مانگی । میں نے ارج کیا :
 ”اے مادرے مہربان ! کیا سبب ہے کہ آپ اپنے لیے کوئی
 دعا نہیں مانگتیں ؟ فرمایا : اے فرج ند ! یا نی
 پہلو ہمسایا ہے فیر بھر ।

(مَدَارِجُ النُّبُوَّةِ (مترجم)، قسم پنجم، باب اول در ذکر اولاد کرام، ج ۲، ص ۱۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सीरते फ़ातिमा पर हमारे

दिलो जान कुरबान ! आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को उम्मते मुस्लिमा का किस क़दर दर्द था कि हम नातुवानों के लिये बा'ज़ अवक़ात सारी सारी रात दुआएं मांगती रहतीं और अपनी सहूलत व आसाइश के लिये रब्बे काएनात की बारगाह में कभी मुल्तजी न होतीं हालांकि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के घर में अक्षर व बेशतर फ़ाक़ा रहता, मुकम्मल तन ढांपने के लिये कपड़ा तक न होता लेकिन खुदा तअ़ाला की बारगाह में तवक्कुल इस दर्जे का था कि कभी भी दुन्या की फ़ानी ने 'मतों के मुतअल्लिक सुवाल तक न किया ।'

हमें भी अपने रब्बे करीम की बारगाह में मुसलमान भाइयों और बहनों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा दुआ करनी चाहिये कि मुसलमान की दुआ मुसलमान के लिये उस की गैर मौजूदगी में बहुत जल्द क़बूल होती है नीज़ दुआ की क़बूलिय्यत के सिलसिले में किसी के हक़ में दूसरों का दुआ करना खुद उस के अपने हक़ में दुआ करने से बेहतर है चुनान्वे मन्कूल है कि “हज़रते سَيِّدِنَا وَآلِهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ”^{عليهِ الصلوةُ وَالسلام} को ख़िताब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया । अऱ्ज़ की : इलाही ! वोह मुंह कहाँ से लाऊँ ? (येह अम्बियाए किराम की तवाज़ोअ^{عليهمِ الصلوةُ وَالسلام} है वरना वोह यक़ीन हर गुनाह से मा’सूम हैं) फ़रमाया : औरें से दुआ करवा, कि उन के मुंह से तू ने गुनाह न किया ।”

(مثنوی مولانا زوم (مترجم)، فقرت سوم، ص ۲۲۵)

اممی رول مومیں نے حجرا تے ساخی دُننا ڈمر فارسکے
آ' جم مادی نے مونبُر کے بچوں سے اپنے
لیے دُعاء کرتے کی دُعاء کرو ڈمر بخشا جائے । (فضائل دعاء، ص ۱۱۲)

دُعاء کے ۳ فَوَادِعَ

اللّٰهُ کے محبوب، داناءِ گویوب، مونجھوں
انیل ڈیوب، داناءِ گویوب، مونجھوں
باؤں سے خالی نہیں ہوتی :

- ﴿۱﴾ ٹسے دُنیا میں فَادِعَہا ہاسیل ہوتا ہے ।
- ﴿۲﴾ یا ٹس کے لیے آخیرت میں جمْعُ کی جاتی ہے ।
- ﴿۳﴾ یا ب کدرے دُعاء ٹس کے گناہ میٹاۓ جاتے ہے ।

(سنن ترمذی، احادیث شتی، باب فی الاستغاثة، ص ۸۲۳، الحدیث: ۳۶۰)

एक रिवायत में है मोमिन (कि जब आखिरत में अपनी दुआओं का षवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब [या'नी मक्कूल] न हुई थीं) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ क़ूल न होती (और सब यहीं [या'नी आखिरत] के वासिते जम्मू हो जातीं)

(المستدرک على الصحيحين للحاكم، كتاب الدعاء، والتكبير والتهليل... الخ،

باب يدعوا الله بالمؤمن يوم القيمة، ج ۲، ص ۴۲، الحدیث: ۱۸۲۲)

دُعاء میں ۴ سَدَاقَاتِ

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! دेखا آپ نے ! دُعاء
راہیں تو جاتی ही नहीं । इस का दुन्या में अगر अघر ج़ाहِر न
भी हो तो आखिरत में अज्ञो षवाब मिल ही जाएगा । لیہا ج़ا
دُعاء में سुस्ती करना मुनासिब नहीं ।

“خَا حَبْخَ”

کے چار ہुکم کی نিখبت سے 4 مادنی فول

مذینا 1 : پہلا فایدا یہ ہے کہ **اللّٰہ** کے ہुکم کی پریوری ہوتی ہے کہ اس کا ہुکم ہے مुझ سے دुआ مانگا کرو جیسا کہ کورآنے پاک میں ارشادے خودا اے پاک ہے :

أَدْعُونَّا سُتْجِبْ لَكُمْ تَرْجِمَةً كَنْجُلَ إِمَانًا : مुझ سے

(۱۰: ۲۳ پ، مؤمن:)

دُعَا کرو میں کبُول کر رہا ہے ।

مذینا 2 : دُعَا مانگنا سُننت ہے کہ ہمارے پ्यارے پ्यارے آکا، مککی مادنی مُسٹفَا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اکھر اکھر اکھر کا دُعَا مانگتا ہے । لیہا جا دُعَا مانگنے میں ایتیباۓ سُننت کا بھی شارف ہاسیل ہوگا ।

مذینا 3 : دُعَا مانگنے میں ایتھر رسلوں بھی ہے کہ آپ اپنے گولاموں کو دُعَا کی تاکید فرماتے رہتے ।

مذینا 4 : دُعَا مانگنے سے یا تو بندے کے گوناہ مُعااف کیے جاتے ہے یا دُنیا ہی میں اس کے مساواۃ ہل ہوتے ہے یا فیر وہ دُعَا اس کے لیے آخیرت کا جُنہیا بنا جاتی ہے ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

ن جانے کیون سا گُنَاح ہو گیا ہے

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! دेखا آپ نے ! دुआ مانگنے مें **اللٰہ** رَبُّکُلِّ اِنْجَاتِ عَزَّ وَجَلَّ اور ہس کے پ्यारے ہبीب، مہرے رسالات، مाहے نुबوٰۃت کی صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِّهُ وَسَلَّمَ ایسا ایسا ہے، دुਆ مانگنا سُننات ہی ہے، دुਆ مانگنے سے ہبادت کا پواباب ہی میلتا ہے، نیجِ دُنْیا و آخِیرت کے مُتعَذَّد فَوَّاِدِ حَاسِل ہوتے ہیں । با'جِ اسلامی بہنوں کو دेखا گیا ہے کہ وہ دُنْیا کی کبُولیٰ یت کے لیے بहت جلدی مچاتی بُلکِ مَعَاذَ اللَّهِ باتیں بناتی ہیں کہ میں تو اتنے اُرسے سے دُنْیا اُن مانگ رہی ہوں، بُوچوں سے ہی دُنْیا اُن کرवاتی رہی ہوں، کوئی پیار فُکر نہیں چوڑا، یہ وہ وجاہِ پढ़تی ہوں، وہ اوراد پढ़تی ہوں مگر **اللٰہ** رَبُّکُلِّ اِنْجَاتِ عَزَّ وَجَلَّ میری ہاجت پُوری کرتا ہی نہیں بُلکِ با'جِ یہ ہی کہتی سُونی جاتی ہیں :

“ن جانے اس کیون سا گُنَاح ہو گیا ہے جس کی مُझے سُجَّا میل رہی ہے ।”

نِمَاءْجُنْ نِ پَدَنَا تُو گُوْيَا

کُوْدَحْ خَتَا هُنْ نَهْرِنْ !!!

इस ترह کی “भड़اس” نिकालने वालियों से अगर दरयापूर किया जाए कि बहन ! आप नमाज़ तो पढ़ती ही होंगी ? तो शायद जवाब मिले, जी नहीं । देखा आप ने ! ज़बान पर तो

بے سا�ٹا جاری ہو رہا ہے، ن جانے ک्या خٹٹا ہم سے اسی ہرید
ہے؟ جس کی ہم کو سجڑا میل رہی ہے! اور نماج کے میں اُمَّا ملے
میں ان کی گُپلٹت تو انھے نجَر ہی نہیں آ رہی! گویا نماج
ن پढنا تو کوئی گुناہ ہی نہیں!

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْجَيْبِ
اسْتَغْفِرُ اللَّهِ	تُوَدُّوَا إِلَى اللَّهِ!
صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْجَيْبِ

کُبُولیتھیتے دُعاؤں مें جल्दी न करे !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! दुआ की क़बूलियत में
जल्दी नहीं मचानी चाहिये चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती
इदारे मक्तबतुल मदीना की मतभूआ 318 सफ़हात पर मुश्तमिल
किताब “फ़ज़ाइले دُعاؤ” सफ़हा 97 पर रईसुल मुतक़्लिमीन
हज़रत अल्लामा مُعْضُلی نک़ری اُली خَان علیْہ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ دुआ के
आदाब और क़बूलियत के अस्बाब ज़िक्र करते हुए 48 वां अदब
येह بयान ف़रमाते हैं: “दुआ की क़बूलियत में जल्दी न करे”
इस अदब के तहत सचिदी आ’ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
खَان علیْہ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं: सगाने दुन्या के उम्मीदवारों को
देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीदवारी में गुज़रते हैं,
सुब्हे शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं और वोह हैं कि रुख़ नहीं
मिलाते, दिल तंग होते हैं, नाक भौं चढ़ाते हैं, मगर येह न उम्मीद

تُو دُنے ن پیغام چو دُنے اور اہمکمُول ہاکیمیں، اکرمُول اک-رمیں
کے درواجے پر ابُل تو آتا ہی کوئی نہیں اور آئے بھی
تو عکتاتے، بھرگاتے، کل کا ہوتا آج ہو جائے، اکھ پختا کوئی
پढتے گujرا اور شیکایت ہونے لگی : ساہیب ! پढتا تو ٹھا کوئی
अघر ن ہو، یہ اہمک اپنے لیے ایجاد (کبُولیت) کا
درخواجہ خود بند کر لے رہے ہیں । رسمُل علیلہ احمد بن حنبل
فرماتے ہیں : “تُو مُحَمَّری دُعَاء کبُول ہوتی ہے جب تک جلدی ن کرو
کی میں نے دُعَاء کی ہے، کبُول ن ہوئے ।”

(سنن الترمذی، احادیث شنتی، باب فی الاستعاذه، ص ۸۲۳، الحدیث: ۳۶۰۸)

اور فیر بآج تے اس پر اسے جامے سے باہر ہو جاتے ہیں
کی آمال و ادیتیا (یا'نی بجزا ایف و دُعاء اُونوں) کے اघر سے
بے اتکا د بُلک البلاں عزوجل کے وادا و کرم سے بے
اتکا د و العیاذ بالله الکریم الجواد

اس سے کہا جائے کی اے بے ہیا ! بے شرما ! جڑا اپنے
گیرگان میں مُونڈالو، اگر کوئی تُمہارا برابر والا دوست تُو
سے ہجڑا بار کوئی کام اپنے کہے اور تُو اس کا اک کام ن
کرو، تو اپنا کام اس سے کہتے ہوئے ابُل تو آپ لجااؤ
(یا'نی شرما اُونوں) گے کی ہم نے تو اس کا کہنا کیا ہی نہیں اب
کیس مُونہ سے اس سے کام کو کہئے اور اگر “گرج دیوانی ہوتی
ہے” کہ بھی دیا اور اس نے ن کیا تو اسلام (یا'نی
بیلکل بھی) مہلکے شیکایت ن جانو گے کی ہم نے کب کیا ٹھا
جو ووہ کرتا ।

اب جانچو کی تु م مالیکے اُلّاللِ ایتھا کے
کیتنے اہکام بجا لاتے ہو । اس کا ہوکم بجا ن لانا اور
اپنی دارخواست کا خواہی ن خواہی (یا' نی جب راستی - ناچار)
کبُول چاہنا کیسی بے ہیرایہ ہے، اُو اہمک ! فیر فرک دے خ
اپنے سر سے پاٹ تک، نجڑے گئے کر، اک اک رُنے میں ہر وکٹ
ہر آن کیتنی کیتنی ہجڑا دار ہجڑا سد ہجڑا بے شومار
نے' متوں ہے، تو سوتا ہے اور اس کے ما' سوں بندے (یا' نی فیرشے)
تیری ہیفاہجت کو پھرا دے رہے ہے، تو گوناہ کر رہا ہے اور سر سے
پاٹ تک سیہوت و افییت، بالا اؤں سے ہیفاہجت، خانے کا
ہجس، فوجلہات کا دفعہ، خون کی روانی، آ' جا میں تاکت،
آنھوں میں روشنی، بے ہیسا ب کرم بے مانگے بے چاہے تੁڑ پر ڈر
رہے ہے، فیر اگر تیری بآ' ج خواہیشون اُتھا ن ہوں کیس میں سے
شکایت کرتا ہے، تو کیا جانے کی تیرے لیے بھلائی کاہے میں ہے،
تو کیا جانے کی کیسی ساخن بولا آنے والی ہی کی اس دعاؤ
نے دفعہ کی، تو کیا جانے کی اس دعاؤ کے ڈوچھ کیسا بھاہ تیرے
لیے جھیڑا ہو رہا ہے، اس کا وا' دا سچھا ہے، اور کبُول کی
یہ تینوں سوتے ہے (جو پیछے گujr چوکی) جن میں ہر پہلی
پیچلی سے آ' لہا ہے । ہاں ! بے ا' تیکا دی آئی تو یکھیں جان کی
ما را گیا اور یہی سے لرین نے تੁڑے اپنا سا کر لیا ।

والعياذ بالله سبحانه وتعالى

(فَجَاهَلَهُ دُعَاءُ، س. 100)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

پڈھوں سیخوں کی خیر خواہی

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! خواہوں جنگات کی سی رت سے ہم میں یہ مدنی فلول بھی چونے کو میلا کی اس کی حکمت اسی کے لیے جیسا دعا فرمایا کرتیں اور فرماتیں : پہلے ہمسایا ہے فیر بھر । اک ہم نادان ہے کہ ہمسایوں کا ہم میں خیال تک نہیں । ہم اپنے بھر میں ترہ ترہ کے خانے خاتے ہیں، ڈمدا ڈمدا ملبوسات پہنतے ہیں اور ہم میں سے با'جوں کے ہمسایوں کو یہ چیزوں میں سر نہیں ہوتیں اور ہم میں ان کا خیال تک نہیں آتا اور اگر وہ کسی چیز کا سووال کرے تو ہم فیر بھی نہیں دتے ।

مُفْسِسِ الرِّحْمَةِ، الْمُبْرَكُ الْمُبْرَكُ
نَدِيْمَيْ پارہ 30 سُورَتُ الْمُنْذُرِ مَا ذُنْنَ آیات نمبر 7
”تَرْجَمَةً كَنْجُولَ إِيمَانٍ“ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ“
کے تھوت ”تَفْسِيرِ نُورُلِ إِرْفَان“ میں جو کوئی فرماتے ہیں یہ اس کا خولاسا پہلو خیدمت ہے । ماؤں میں بھارت کی چیزوں کو ماؤں کہا جاتا ہے، جیسے سوئیں، نمک، آگ، پانی، وغیرہ یا نہیں میں کافی کیں کی یہ بادتوں بھی خیراب ہے اور میں اسلامیات بھی گندے کہ اپنے پڈھوں سیخوں کو ماؤں میں بھارت کی چیزوں آریتھن بھی نہیں دتے، آگ، پانی، نمک پر ان کی جان نیکلاتی ہے، یا یہ لوگ اپنی جڑھر سے بچی چیزوں جو

इन के लिये बेकार हैं, किसी को नहीं देते, अगर्चे ख़राब ही हो जावें, इस आयत से वोह ज़मीनदार इब्रत पकड़ें जो अपना फ़ालतू ग़ल्ला बाज़ार में नहीं लाते ।

पड़ोसियों के हुक्म़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि आरिय्यतन किसी को कोई चीज़ न देना मुनाफ़िकीन के काम है । मुसलमानों को तो अपने पड़ोसियों का ख़्याल रखना चाहिये, पड़ोसियों के हुक्म़ बहुत ज़ियादा हैं । चुनान्चे हज़रते सच्चियदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا سे मरवी है कि सरकारे मदीना का फ़रमाने वा करीना है : हज़रते जिब्रील مُعْذِنْ پड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान होने लगा कि वोह पड़ोसी को विराषत का हक़दार बना देंगे । (صحيح البخاري، كتاب الادب، باب الرصابة بالجار، ص ١٥٠٠، الحديث: ١٠١٥)

हज़रते سच्चियदुना अबू हुरैра رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है कि एक शख्स ने अर्ज़ किया, या रसूلल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फुलां औरत नमाज़ व रोज़ा, सदक़ा कषरत से करती है मगर अपने पड़ोसियों को ज़बान से तकलीफ़ भी पहुंचाती है । सरकारे मदीना نے صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरशाद फ़रमाया : वोह जहन्म में है ।

(سنن احمد، ج ٢، مسنونابی هریرہ، ص ٢٣٥، الحدیث: ٩٩٢٦)

10 چیजें جुल्म سے ہیں

ہجڑتے ساییدوں سعفیان بخاری علیہ رحمة الله القوي فرماتے ہیں : 10 چیजے جو عذاب میں سے ہیں ।

(1).... کوئی مرد یا اُورت اپنے لیے تو دعا مانگے مگر اپنے والیدن اور آم موسیٰ مسیحین کے لیے ن مانگے ।

(2).... جو روزانہ کو راہنما پاک پढے اور 100 آیات کی تبلیغات ن کرے ।

(3).... جو شاخہ مسجد میں داخیل ہو اور دو رکعت (تہییۃ تعلیم مسجد) پڑے بیگیر ہی باہر نیکل آए (جب کہ وہ وقت مکرہ ن ہو) ।

(4).... جو آدمی کبھی سلطان سے گزرے مگر ان پر سلام ن کرے اور نہیں ان کے لیے دعا مانگے ।

(5).... جو شاخہ جو ملک کے دن شہر آ� فیر جو ملک پڑے بیگیر ہی چلا جائے ।

(6).... جن لوگوں کے مہلکے میں کوئی اعلیٰ آدمی آئے اور ان کے پاس ایک سیخ نے کوئی بھی ن پہنچے ।

(7).... اسے دو آدمی جو اک دوسرے کے رفتار کرنے مگر کوئی بھی اپنے دوست کا نام ن پڑھے ।

(8).... اس آدمی جسے کوئی دا'vat پر بولائے مگر وہ ن پہنچے (کوئی مجبوری ہو تو مجبور کا نہیں) ।

(9).... وہ نوجوان جس نے اپنی جوانی بےکار جائے اور کر دی، ایسا ادبا کوچھ ن سیخا ।

(10).... اسے آدمی جو خود شکم سے رہا ہے اور اس کا ہمسایہ بھوکا ہے اور یہ اسے خانے کو کوچھ بھی نہیں دےتا ।

(تَبَيِّنَ الْغَافِلِينَ، بَابُ حَقِّ الْجَارِ، ص ۷۸)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

پڈھوئی کہ ہکھ کیا ہے ؟

نبی اکرم، رکو فرشتہ نے فرمایا : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے فرمایا : جس نے اپنے مال اور اہل پر خونک کرتے ہوئے پڈھوئی پر دارواجہ کو بند کیا تو وہ مومین نہیں اور وہ شاخہ بھی مومین نہیں جس کے فیتنے سے اس کا پڈھوئی امیں نہ ہو، جانتے ہو ہمسایہ کا کہا ہکھ ہے ؟ اگر وہ تुझ سے مدد تلب کرے تو اس کی مدد کرو، اگر وہ تुझ سے کرج مانگے تو اسے کرج دو، اگر وہ مဖیل س ہو جائے تو اس کی ہاجت رکاوی کرو، اگر وہ بیمار ہو جائے تو اس کی ہیاد کرو، اگر کوئی خوشی ہاسیل ہو تو اسے مبارک باد دو، اگر مسیبت پہنچے تو تا'جیت کرو، اگر مار جائے تو جنائے کے ساتھ جاؤ، اس کے مکان سے اپنا مکان ٹھانے ن بناؤ کی اس کی ہوا روک دو مگر یہ کہ وہ ہجا جاتا دے دے تو کوئی ہر ج نہیں، ہاندی کی خوشبو سے اپنے ہمسایہ کو ہجڑا ن دو مگر یہ کہ اک چوللہ اسے بھے ج دو، جب فل خیری د کر لاؤ تو اس کے گھر تھفہ بھے جو ورنہ خوفیا لے کر آاؤ اور تعمیری

अवलाद फल ले कर बाहर न निकले ताकि उन के बच्चे नाराज़ न हों। फिर फ़रमाया : क्या तुम जानते हो हमसाये का क्या हक् है ? उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! हमसाये के हक् को बहुत थोड़े लोग पूरा करते हैं जिन पर **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَ رहमत फ़रमाता है ।

रावी फ़रमाते हैं : रहमते आलम, नूरे मुजस्सम سहाबए ﷺ किराम को हमसाये के हक् की वसियत फ़रमाते रहे हत्ता कि उन्होंने ने ख़्याल किया कि अन करीब हमसाये को वारिष बना दिया जाएगा ।

(شعب لامیان للبیان، باب فی اکرام البارق، ج ۷، ص ۸۳، الحدیث: ۹۵۱۰)

کیتనے گر پڈوں میں داخیل ہیں ؟

ہज़رतے ساییدنوا امام جوہریؑ سے ماروی ہے کि اک شاہس نے ہujُر سرآپا رہمتوں و شافعیت کی خدیمتوں میں همسایے کی شیکایت کی تو نبی یہ اکرم، نور میں مسیح ام مسیحؑ کی مسیحیت کے دروازے پر خندے ہو کر اے' لانا کر دو کि ساٹھ کے 40 گر رہماسایگی میں داخیل ہیں । امام جوہریؑ فرماتے ہیں کि 40 گر، 40 گر، 40 گر، 40 گر اور چاروں تارف ایشان رہماتا ہے ।

(احیاء العلوم، کتاب ادب الالفہ والاخوة، حقوق الجوار، ج ۲، ص ۲۶۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! آپ نے ساخیدتُ نیں سا،
 بتوں لے جہرا کا جاؤ کے ابادت، نماج مें خوش اُ
 و خوچو اُ، خانا پکاتے بھی تیلاباتے کورआن اُر آپ
 کی دعاؤ اُن کے معتزل لیلک پढ़ا । آیہ ! آپ
 کی جِنْدگی سے اک درس هاسیل کرئے اُر اپنے
 اوپر گُئے کرئے کی کیا ہمارے اندر بھی ابادت و ریاجت کا
 جذبہ پا یا جاتا ہے یا نہیں ? کیا ہمارے دل مें بھی خوافے
 خود سے ریکھت پیدا ہوئے یا نہیں ? اگر آپ ابادت و ریاجت
 اُر خوافے خود کا جذبہ پانا چاہتی ہیں تو تبلیغ کورआن اُ
 سُونت کی اُلّامگیر گیر سیاسی تحریک دا'�تے اسلامی
 کے مہکے مہکے مدنی ماحول سے وابستہ ہو جائیے ।

إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ

آپ کو خوافے خود کی دلیلت میلے گی، جب دل مें خوافے
 خود پیدا ہو جائے گا تو نمازوں کی پابندی کرنے، سُونتوں کا
 پیکر بننے اُر با پردہ رہنے کا جذبہ میلے گا ।

اور إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ دوں میں بےڈا پار ہو جائے گا ।
 دا'വتے اسلامی کے مدنی ماحول کی برکتوں کے کیا کہنے !
 یکینن اُچھی سوہبत رنگ لَا کر رہتی ہے । جِنْدگی اپنی
 جگہ پر مگر با'ج اُمّوٰت بھی کabilے رشک ہو یا کرتی ہے،
 اسی ہی اک کabilے رشک مौت کا تجکیرا مولانا حسین فرمایہ
 اُر رشک کیجیے، چوناں نے اُٹھا را باد (جے کو باد، بابول اسلام
 سیندھ) کے مکیم اسلامی بھائی کے بیان کا خulasah ہے کی میری

شانے خواہیں نے جنمات کا ڈینک خواہیں

اممی جان گالیب ن سی. 2004ء میں کوادیریا رجھیا ایضاً ریا
سیل سیلے میں بے ایت ہو کر ایضاً ریا بئیں । دا 'वتے اسلامی کے
مدنی ماہول کی برکت سے ﷺ پنج وکھا نماج کی
پابندی کے ساتھ ساتھ نوافیل کی آدائیگی کا بھی ما' مول
بن گیا । 17 سفارل میڈف فر سی. 1430 ہی. 13 فروری سی.
2009ء کی سو بھی اممی جان نے میڈے نماجے فجرا کے لیے
بیدار کیا اور خود نماجے فجرا پढنے میں مशغول ہو گیا । میں
نماج پढ کر لایتا تو وہ ابھی میسالے ہی پر ہیں । کوچھ
در بآ'd ٹنھوں نے دوبارا کیا اور نماجے ایشراک کی
نیتیت بآندھ لی । جب پہلی رک ایت میں سجادا کیا تو سار
ن ٹھاٹا । گھر والے سمجھے کی شاید اممی جان کو دیوار نے
نماج نئی آ گیا ہے، جب بیدار کرنے کی گرج سے ٹنھے ہیلایا-
جیلایا تو وہ اک ترک لڑکا گیا، گبارا کر دیکھا تو ان کی
رہ کھسے ٹنسوئی سے پر واچ کر چکی ہی । ایا اللہ وَا ایا اللہ رَحْمَوْنَ
یون لگتا ہے کی میری اممی جان کو شاہنشاہے بگدا د ہجڑو رے
گائے آجھم کی نسبت اور دا 'वتے اسلامی
کے مدنی ماہول سے وابستگی کام آ گیا । خوش کیسمتی کی
اے ن سجادے کی ہالات میں ٹنھوں نے دا ڈیے اجے کو "لباک"
کہا । ماجھی د کرم بالا اے کرم یہ ہو کی اینٹکا ل کے
بآ'd ان کا چھرہ بھی بہت نورانی ہو گیا ۔ اینٹکا ل کے
تکریب ن 15 روچ کے بآ'd یا' نی 2 ربیع نور شاریف سی. 1430

हि. (28 फ़रवरी सि. 2009 ई.) बरोज़ हफ्ता उन की क़ब्र की सिल
गिर गई और क़ब्र में मिट्टी भर गई। दुरुस्ती के लिये जूँ ही क़ब्र
खोली गई तो हर तरफ़ गुलाब के फूलों की खुशबू फैल गई ! नीज़
येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर हम खुशी के मारे झूम उठे कि
अम्मी जान का कफ़न व बदन सलामत था। जब क़ब्र से
मिट्टी निकाल ली गई तो मेरे भाई ने अम्मी जान के क़दमों को
छुवा तो ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ﴾ उन का जिस्म ज़िन्दा इन्सानों की तरह नर्म
था, मेरे अब्बू जान का बयान है कि जब मैं ने चेहरे की तरफ़ से
कपड़ा हटा कर देखा तो चेहरा मज़ीद नूरानी हो चुका था।

इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है : हैरत अंगेज़ बात येह
थी कि जो सिलें क़ब्र में गिरी थीं, अम्मी जान का जिस्म उन की
चोट से महफूज़ रहा था वोह यूँ कि उन का मुबारक व तरो ताज़ा
लाशा क़ब्र की दीवार की सम्म खिसका हुवा था जैसे वोह खुद
उस तरफ़ हुई हों या किसी ने कर दिया हो हालांकि तदफ़ीन के
वक्त उन को क़ब्र के बीच में लिटाया गया था !

बहन मेला नहीं होता, बदन मेला नहीं होता

खुदा के पाक बन्दों का कफ़न मेला नहीं होता

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! खरबूज़े को देख कर
खरबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दीजिये
तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाएगा। इसी तरह
अल्लाह ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِّهُ وَسَلَّمَ﴾ और उस के प्यारे रसूल
मेहरबानी से तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी
तहरीक दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने वाला
बे वक़्बत पथर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ब जगमगाता

और بسا अवकात ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला इस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। इस आशिक़ ए रसूल की दुन्या से ईमान अफ़रोज़ रुख़स्ती और बा'दे दफ़्न जब मजबूरन क़ब्र खोली गई तो क़ब्र से गुलाब के फूलों की खुशबू का आना, कफ़्न व बदन का सलामत मिलना मस्लके हक़ अहले सुन्नत की सदाक़त की गैबी ताईद है। **अब्लाझ** ﷺ उस खुश नसीब इस्लामी बहन को पुल सिरात, ह़श और मीज़ान हर जगह सुर्ख़रू फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में सव्यिदा फ़ातिमतुज़ज़हरा امِين بِجَاهِ الْبَيْتِ الْأَمِينِ مَلِئَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبِهِ وَسَلَّمَ کा पड़ोस अ़त़ा फ़रमाए।

ज़ात आप की तो रहमत व शफ़्क़त है सर बसर
मैं गर्चे हूं तुम्हारा ख़तावार या रसूल !

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 107)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह पढ़ कर आप का भी ज़ेहन बन रहा होगा कि बे पर्दगी, नमाज़ों में सुस्ती, फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों वग़ैरा वग़ैरा तमाम गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये और राहे सुन्नत पर आ कर नमाज़ों की पाबन्दी, तहज्जुद, तिलावत और ज़िक्रो दुरूद में अपने शबो रोज़ सर्फ़ करने चाहियें। लेकिन जैसे ही येह किताब रखेंगी तो शैतान आप को येह सब कुछ भुलाने की कोशिश करेगा और (مَعَاذُ اللَّهُ) बा'ज़ नादान इस्लामी बहनें फिर गुनाहों में मुब्ला हो जाएंगी। अगर आप वाक़ेई नेक

بُنَانَا چاہتی ہے تو دا'ватےِ اسلامی کے مدنی ماحول سے ہر دم
وابستا رہیے । ہفتاوارِ اجتیماع میں ہر ہفتے شرکت کا جہن
بنائیے اور مکتبتوں مدنیا سے مدنی انسانیت کا رسالہ
ہاسیل فرمائیے اور روزانہ فیکے مدنیا کرتے ہوئے اپنی یہاں
کی جمیదار کو جامع کروانے کا ممکنہ بنا لیجیے،
ان شاء اللہ عزوجل جس کی برکت سے پابند سونت بننے، گناہوں سے نفرت کرنے اور
ایمان کی حفاظت کے لیے کुڈھنے کا جہن بنے گا । ہر اسلامی
باہن اپنا یہ مدنی جہن بنائے کہ “مुझے اپنی اور
ساری دنیا کے لوگوں کی اسلام کو شیش کرنی ہے ।”
اپنی اسلام کو شیش کے لیے مدنی انسانیت پر اعمال
اور ساری دنیا کے لوگوں کی اسلام کو شیش کے لیے اپنے
مہاریم کو مدنی کافیلوں میں سفار کروانا ہے،
ان شاء اللہ عزوجل

اللّٰهُ کرامہ اے توڑا پے جہاں میں

اے دا'ватےِ اسلامی تیری بُحُمَّ مچی ہو !

(واسیلہ بخشش ارجو امیر اہلہ سونت ۱۹۳) دامت برکاتہم العالیہ

صَلَوٰةُ عَلٰی الْحَبِّیْبِ ! صَلَوٰةُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

فُرْمَانِ مُسْتَفْعِلٍ : صَلَوٰةُ عَلٰی عَلِيٍّ وَالْوَسَلٰمُ : اچھی

نیتِ انسان کو جنات میں داخیل کرے گی ।

(جامع الصغیر، ص ۵۵، حدیث ۹۳۲)

ڈلماں کرامہ فرماتے ہیں : مُعْلِیْلِ اللّٰہ عزوجل

وہ ہے جو اپنی نہ کیا اے سے ہو پا جائے اپنی بُرائیاں

ہو پاتا ہے ।

(الزواجر عن اقتصاف الكبائر، ج ۱، ص ۱۰۲)

बयान नम्बर 4

ख़ातूने जन्नत

का

इश्क़े रसूल

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرْسَلِيْنَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ طَبِيسِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

خاتونے جنّت کا دُکھ کے رکھ

دُرુષદ શરીફ કવી ફર્જીલત

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतभूआ 308 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़्हा 11 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी نَكْلَةَ كَاتِبِهِ الْعَالِيَةِ ف़َرَمَاتे हैं : **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्ज़हुन अनिल उयूब का इरशादे मुश्कबार है : “जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि ये ह निफ़ाक और जहन्म की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े कियामत शुहदा के साथ रखेगा ।” (مُجْمُعُ الرَّوَايَاتِ حِجَّةُ الْأَوَّلِ 10، ص 253، الحدیث: ١٤٢٩٨)

صَلَوٰةً عَلٰى الْحَبِيبِ ! صَلَوٰةً عَلٰى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़वातीने जन्नत की सरदार, जिगर गोशए सरकार हज़रते सच्चिदा फ़तिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को हुज़र नबिय्ये रहमत سے और हुज़र नबिय्ये رहमत سے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को आप صَلَوٰةً عَلٰى مُحَمَّدٍ को आप صَلَوٰةً عَلٰى عَلِيٍّ وَإِلٰهٍ وَسَلَّمَ से बहुत महब्बत

थी और महब्बत की अलामात में से एक ये है कि जिस से महब्बत हो उस की हर अदा अपनाने की कोशिश की जाती है चुनान्चे हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने खुद को हर ए'तिबार से सुन्नते रसूल के सांचे में ढाल रखा था । आदात व अत़वार, सीरत व किरदार, निशस्त व बरखास्त, चलने के अन्दाज़, गुफ्तगू और सदाक़ते कलाम में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا सीरते मुस्तफ़ा का अ़क्स और नमूना थीं ।

ہم شکلے مُسْتَفَأ

سار سے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पाड़ तक हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की चाल ढाल, वज़अ़ कृतअ़ हुज़ूर के مुशाबेह थी । **अल्लाह** نے आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जीती जागती तस्वीर बनाया था । उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा سिद्दीक़ा त़थ्यिबा ت़ाहिरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से बढ़ कर किसी को आदात व अत़वार, सीरत व किरदार और निशस्त व बरखास्त में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा ।

रसूلुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा !

کیا نज़ाرا جिन आंखों ने تफ़्सीरے نुबُوبُوت (۱) کا

(۱).... या'नी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

خاطونے جنات، عالمیلہ سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ساییدتُونا فَاتِمَتُعْجَلَہ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهَا کی اُدھار اپنے بابا جان کی اُدھار جائیں ہیں । خاطونے جنات صَلَّی اللَّهُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کی سیرت، آکھ کی سیرت جائیں ہیں । آپ کا کیردار، مادینے کے تاجدار رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کی سُونَنَاتِنَّوْنَ کا آئینا دار ثا । آپ صَلَّی اللَّهُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کی گوفٹار رَسُولُلَّا حَسَنَ کی گوفٹار جائیں ہیں । آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کی نیشنست و بارخا سُنْنَتُ یا' نی ٹھنا - بیٹھنا رَسُولُلَّا حَسَنَ جائیں ہیں ।

مُفْتُتی احمد یار خان "میرآت" مें فرماتे ہیں : آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کے جسم سے جنات کی خुशبو آتی ہیں جسے ہужور سُونَحَا کرتے ہے । اس لیے آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا کا لکبہ جُھرا ہوا ।

(مرأۃ المُنَاجِح، ج ۸، ص ۳۵۳)

بتوں و فاطمہ جھرا لکبہ اس واسیتے پا یا
کی دُنیا میں رہنے اور دنے پتا جنات کی نیگاہ کا

(دیوانے سالیک احمد یار خان (علیہ رحمۃ الرَّحْمَن)

خیال رہے کی ہجرتے ساییدتُونا فَاتِمَتُعْجَلَہ احمد سر تا کدم بیلکل ہم شکلے مُسْتَفْفَیہ ہیں اور آپ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہُ کے ساہی بجادگان میں یہ مُعاشرہ تکسیم کر دی گई ہیں । ہجرتے ساییدتُونا ایمان میں ہسن سینے اور سر کے درمیان رَسُولُلَّا حَسَنَ سے بہت مُعاشرہ ہے

थे और हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ इस से नीचे के हिस्से में रसूलुल्लाह صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के बहुत मुशाबेह थे। हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की पिन्डली, क़दम शरीफ और एड़ी बिल्कुल हुज़ूर صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के मुशाबेह थी।

(مرآۃ الْمُعْتَاجِ، ج ۸، ص ۲۸۰)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

कुदरती मुशाबहत

हुज़ूर सय्यिदे आलम صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ से कुदरती मुशाबहत भी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नेमत है जो अपने किसी अमल को हुज़ूर صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के मुशाबेह कर दे तो उस की बख़िशाश हो जाती है जैसा कि हडीषे पाक में इरशाद हुवा : مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ जो किसी क़ौम से मुशाबहत करेगा तो वोह उन ही में से होगा। तो जिसे खुदा तभ़ाला अपने महबूब के मुशाबेह करे उस की महबूबिय्यत का क्या हाल होगा। (المراجع السابق)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिक्र कर्दा हडीषे पाक के तहत शारेह मिशकात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ القُوَى फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स दुन्या में कुफ़्कार, फ़ासिक़ व बदकार के से लिबास पहने, उन की सी शक्ल बनाए कल क़ियामत में उन के साथ उठेगा। और जो मुत्तक़ी मुसलमानों की सी शक्ल बनाए, उन का लिबास पहने वोह कल क़ियामत में إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ मुत्तकियों के जुमरे में

उठेगा । ख़्याल रहे कि किसी की सी सूरत बनाना तशब्बोह है और किसी की सी सीरत इख्तियार करना तख़्लुक है यहां तशब्बोह फ़रमाया गया है । (المرجع السابق، ج ٢، ص ١٠٩)

بہرہزپیयہ بچ گئیا !

ग़ر्के फ़िरअौन के दिन सारे फ़िरअौनी डूब गए । मगर फ़िरअौनियों का एक बहरूपिया (يَوْمَ الْفُرُّقَةِ) बच गया । हज़रते سय्यिदुना موساؑ نے बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : مौला عَزَّوَجَلَ يे ह क्यूं बच गया ? फ़रमाया : इस ने तुम्हारा रूप भरा हुवा था । हम महबूब की सूरत वाले को भी अ़ज़ाब नहीं देते । मुसलमान को चाहिये कि नमाज़ व रोज़ा वगैरा इबादात में भी अच्छों खुसूसन अच्छों से अच्छे या'नी مहबूب کी نक़्ल करने की नियत करे । दिल लगे या न लगे शक्ल तो हुज़ूर ﷺ की सी बन जाती है । اس्सल की برकत से खुदा हम नक़्क़ालों को भी बछ्ना देगा । (المرجع السابق، ج ٢، ص ١١٠)

اوڑतों को मर्दानी वज़़़ बनाना हराम है

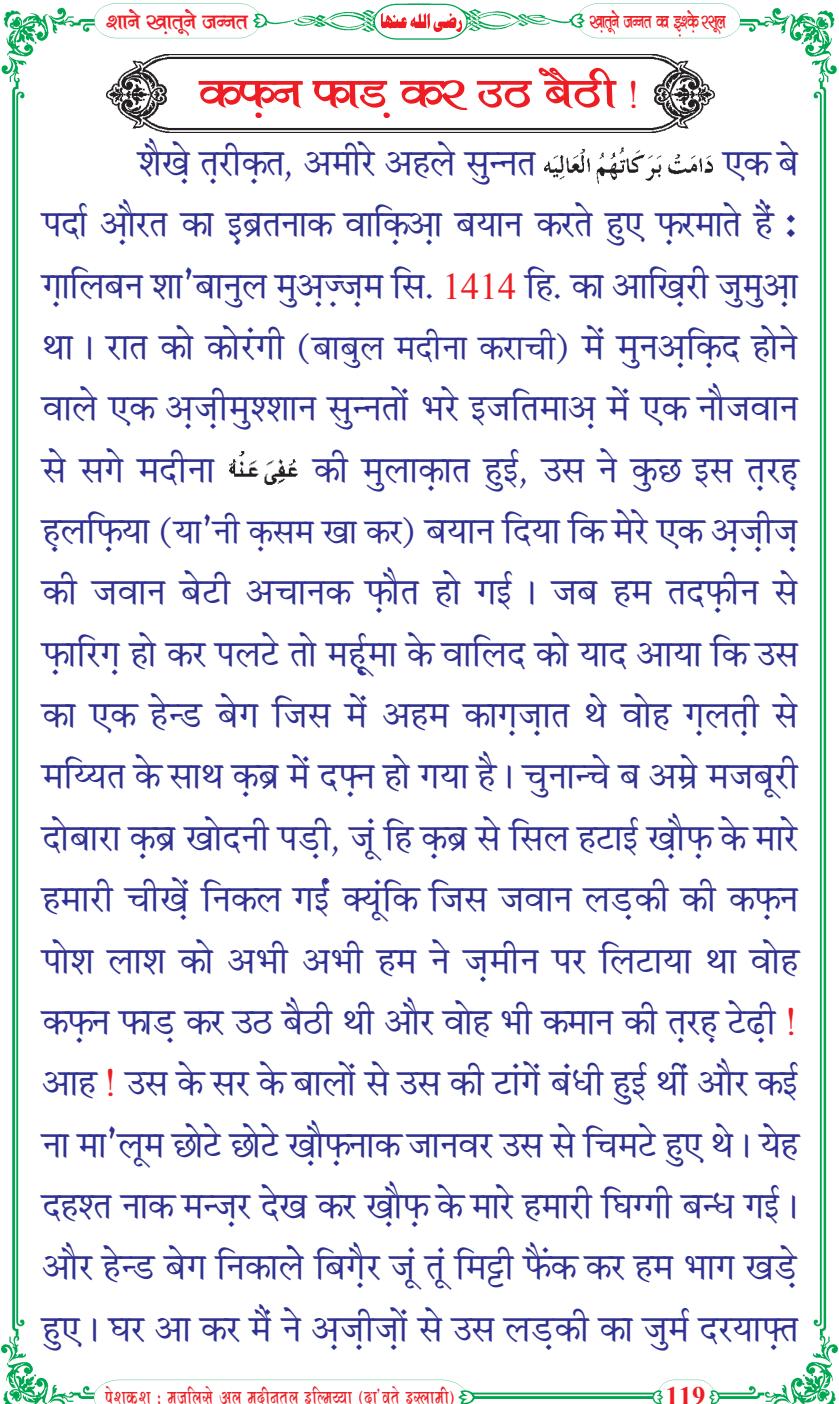
याद रखिये ! औरतों को मर्दानी वज़़़ बनाना या'नी मर्दों जैसा लिबास व जूते वगैरा पहनना इसी तरह बाल कटवा कर मर्दों की तरह छोटे छोटे कर देना हराम और जहन्म में ले जाने वाले काम है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 65 पर शैख़

تیریکت، امریکہ اہلے سونت، بانیے دا' وہے اسلامی ہجڑتے
اُلّامہ مولانا ابو بیلالم محدث دلیلیٰ اُنٹار کا دیری
دامت برکاتہم العالیہ نکل فرماتے ہیں : رحمتے اُلّامیتیان، سلطانے
دو جہاں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانے دبرت نیشن ہے : تین
شاخہ کبھی جنات میں داخیل نہ ہوئے دیوبندی اور مدارنی و جنگلی
بنانے والی اُرatt اور شراب نوشی کا آدمی ।

(مجمع الزوائد، ج ۲، ص ۵۹۹، الحدیث: ۷۷۲)

م杰ید فرماتے ہیں : مردی کی ترہ بال کٹوانے اور
مدارنہ لیباں پہننے والیاں اس ہدیتے پاک سے دبرت ہاسیل
کرئے، چوتی بچیوں کے لडکوں جیسے بال بنوانے اور انہیں
لڈکوں جیسے کپڈے اور ہٹ وغیرا پہنانے والے بھی اہمیتیاں
کرئے تاکہ بچی ایسی ٹپر سے اپنے آپ کو مردی سے معملاً
سمجنے اور ہوش سنبھالنے اور بالیگا ہونے کے با'د اس کو
اپنی آدمیت و اتروار شریعت کے مुتابک بنانے میں میکلایا
درپےش ن آئے । ہدیتے پاک میں یہ جو فرمایا گयا کہ “کبھی
جنات میں داخیل ن ہوئے ।” یہاں اس سے توبیل اُرسے تک جنات
میں داخیلے سے مہرمنی موراد ہے । کیونکہ جو بھی مسلمان اپنے
گناہوں کی پاداش میں دو جنگوں میں جائے گے وہ بیل آخیر
جنات میں جرور داخیل ہوئے । مگر یہ یاد رہے کہ اک لمحے
کا کروडوں ہیسسا بھی جہنم کا اُجرا کوئی برداشت نہیں کر
سکتا لیہا جا ہم میں ہر گناہ سے بچنے کی ہر دم کو شیش اور
جنات کی فرداں میں بے ہیساب داخیلے کی دعاء کرتے رہنا
چاہیے ।

(پردے کے بارے میں سووال جواب، ص 65-66)


 شاہزادے جنات کا ڈسکریٹر
 رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
 شاہزادے جنات کا ڈسکریٹر

کوپن فاڈ کر ڈال بیٹی !

شےخے تڑیکت، امیرے اہلے سुننات دامت برکاتہم العالیہ ع اک بے پردا اورت کا ڈبرتاناک واکیٰ بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں :
 گالیون شا' بانوں میں جم سی. 1414 ہی. کا آخیری جو میں ایک نوچوان سے سوچے مددینا ع کی مولانا کاٹ ہوئی، اس نے کوچھ اس ترہ ہلکیا (یا 'نی کسماں خوا کر) بیان دیا کی میرے اک اجڑی ج کی جوان بیٹی اچانک فٹاٹ ہو گئی । جب ہم تدفین سے فاریغ ہو کر پلٹے تو مہم کے والید کو یاد آیا کی اس کا اک ہنڈ بیگ جس میں اہم کاگڈا تھے وہ گلتوں سے میخت کے سا� کبھی میں دफن ہو گیا ہے । چنانچہ ب امیرے مجبوری دوبارا کبھی خودنی پڈی، جوں ہی کبھی سے سیل ہتائی خواف کے مارے ہماری چیزوں نیکل گئی کی جیسا لڈکی کی کفن پوش لاش کو ابھی ابھی ہم نے جنمیں پر لیتا یا ہاں وہ کوپن فاڈ کر ڈال بیٹی ہی اور وہ بھی کمان کی ترہ ہے ۔
 آہ ! اس کے سر کے بالوں سے اس کی تانگے بندھی ہوئی ہیں اور کہنا ماؤں ہم ڈوٹے ڈوٹے خواف ناک جانور اس سے چیختے ہوئے ہے । یہ دھشت ناک منجرا دیکھ کر خواف کے مارے ہماری بیگنی بندھ گئی । اور ہنڈ بیگ نیکالے بیگر جوں تونگی میٹی فیک کر ہم بھاگ چکے ہوئے । گھر آ کر میں نے اجڑیوں سے اس لڈکی کا جو مرد دار یا فٹ

किया तो बताया गया कि इस में फ़ी ज़माना मा'यूब समझा जाने वाला कोई जुर्म तो नहीं था, अलबत्ता आज कल की आम लड़कियों की तरह येह भी फैशनेबल थी और पर्दा नहीं करती थी, अभी इन्तिकाल से चन्द रोज़ पहले रिश्तेदारों में शादी थी तो इस ने फेन्सी बाल कटवा कर बन संवर कर आम औरतों की तरह शादी की तकरीब में बे पर्दा शिर्कत की थी ।

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो
वरना सुन लो कब्र में जब जाओगी तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
सांप बिछू देख कर चिल्लाओगी
(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 280)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !
 صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ
 تَوَبُوا إِلَى اللَّهِ !
 اسْتَغْفِرُ اللَّهِ
 صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

پ्यारੀ پ्यारੀ ਇਸਲਾਮੀ ਬਹਨੋ ! ਆਪ ਨੇ ਮੁਲਾਹੜਾ ਫਰਮਾਯਾ
ਕਿ ਫਿਰ ਔਨੀ ਬਹੁਵਿਧਿਆ (بے-رُو-بِ-بَا) ਯਾ'ਨੀ ਨਕਕਾਲ) ਕੋ
ਅਲਿਆਹ نੇ ਇਸ ਵਜ਼ਹ ਸੇ ਗੁਰੂ ਨਹੀਂ ਕਿਯਾ ਕਿ ਉਸ ਕਾ
ਜਾਹਿਰ **ਅਲਿਆਹ** ਕੇ ਪਾਰੇ ਰਸੂਲ ਹੁਝਰਤੇ ਸਥਿਤੁਨਾ ਮੂਸਾ
عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَامُ
ਜੈਸਾ ਥਾ। ਹਮ ਭੀ ਅਪਨੇ ਊਪਰ ਗੈਰ ਕਰ ਲੇਂਕਿ
ਹਮਾਰਾ ਜਾਹਿਰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਾ ਹੈ ? ਖੁਸ਼ ਕਿਸ੍ਮਤ ਹੈ ਵੋਹ ਇਸਲਾਮੀ
ਬਹਨੇਂ ਜਿਨ ਕੋ ਦਾ'ਵਤੇ ਇਸਲਾਮੀ ਕਾ ਮਦਨੀ ਮਾਹੌਲ ਮੁਹੱਈਅਤ ਆ
ਗਿਆ ਕਿ ਦਾ'ਵਤੇ ਇਸਲਾਮੀ ਨੇ ਉਨ੍ਹੋਂ ਨਮਾਜ਼ੋਂ ਪਢਨੇ ਕਾ ਜੇਹਨ ਦਿਯਾ,
ਹਥਾ ਕਾ ਦਰਸ ਦਿਯਾ, ਮਦਨੀ ਬੁਰਕਾਅ ਪਹਨਾਯਾ, ਇਸੀ ਮਾਹੌਲ ਕੀ

بُرکت سے ٹنھے تیلاباتے کو ر آن کا جہن میلا، دُرُود سلام کی تاریخ میلی، بھر درس کی سआدات نسیب ہوئی، میٹی کے برتان میں خانا خانا کا جہن میلا اور اس کے ایلابا اچھی اچھی نیتیں کرنے، اجڑاں کا جوابا دئے، توبا کے نوابیل ادا کرنے، سونت کے موتا بیک سونے، فوجوں سووالات سے بچنے، گوسے کا ایلاج کرنے، آنکھ، کان، جبائن کی ہیفا جڑ کرنے، با ووجوں رہنے، جھوٹ، گیبتو، چوغلی، ہساد، تکبُر، وا'دا خیلائی، مجاک مسخیری، تنج، دل آجڑا، نیفاک سے بچنے کا جہن اسی مدنی ماہول سے میلا । الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَ جَلَّ اسی مدنی ماہول کی بُرکت سے جاہیرو باتیں دُرست ہوں ।

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَبِيبِ !

ساییدا فاطمہ کے چلنے کا انداز

ہجرتے ساییدنا مسٹر کے سے ریوایت ہے کہ ہجرتے ساییدتuna آیشا سیدیکا نے فرمایا : ہم اُنبا کے رسول کی اجڑاے موت ہرگز رہا کے پاس جامِ ثری اور ہم میں سے کوئی اک بھی گئے ہاجیر نہ تھی، اتنا میں ہجرتے ساییدا فاطمۃ تجوہ رہا وہاں تشریف لائے، اپنے کا چلنے ہوئے اکرم رضی اللہ عنہ کا چلنے ہوئے اکرم رضی اللہ عنہ کے چلنے سے جریا بھر میکھلیا ।

(المُعجمُ الْكَبِيرُ، مَارِوَتْ عَائِشَهُ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ عَنْ فَاطِمَهَ، ج ۹، ص ۳۷۳، الحدیث: ۱۸۲۶۶)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! دेखا آپ نے! ہجڑتے

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے کہی مہبّت کی کہ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سونتے مسٹفٰ کے سانچے میں ڈلی ہری ہی۔ ابھی آپ نے مولانا ہجڑا فرمایا کہ ہجڑتے سیمیڈا فاتیمہ تجوہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے چلنے کا انداز ہجڑ نبی یہ اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے چلنے کے انداز کی ترہ ہے۔ ہم بھی اپنے اوپر گئے کار لےتی ہیں کہ ہم جب گھر سے نیکلتی ہیں تو ہمارا کیا انداز ہوتا ہے؟ جائز ہے نجیر بننے کے لیے ہم کیس کیس ترہ کے فیشن اپناتھی ہیں؟ ہمارے چلنے کا انداز کیا ہوتا ہے اور چلنے میں ہم کیس کی نکل کرتی ہیں؟ اسلامی بہنوں کو گھر سے نیکلتے وکٹ کین کین اہمیتیاں کی جرورت ہے مولانا ہجڑا فرمائیے۔ چنانچہ دا'ватے اسلامی کے ایسا اہمیتی ہدایت مکتب تعلیم مداری کی تباہ 397 سلفہات پر مسٹمیل کتاب “پردے کے بارے میں سووال جواب” سلفہ 268 تا 270 پر شیخہ تاریکت، امیر اہل سونت، بانی دا'ватے اسلامی ہجڑتے اہل علم مولانا ابو بیلالم محدث ایلیاس اہل انتہا کا دیری فرماتے ہیں:

اوہرات کا مੌکہ - اپ کوئن کیس؟

سوال : اوہرات کا بناو سینڈھار کرنا، چوست یا باریک لیبادس پہننا کیس؟

جواب : گھر کی چار دیواری میں سیف اپنے شوہر کی خاتمہ جاہیج تاریکے پر مੌکہ-اپ کر سکتی ہے۔ بے ایجادتے شاریٰ مسئلہ مہاریم رشته داروں کے یہاں جانے کے ماؤکے اپنے پر گھر سے

बाहर निकलने के लिये लाली पावडर और खुशबू वगैरा लगाना
और फैशन के कपड़े पहन कर مَعَاذُ اللَّهُ مِنْهَا गैर मर्दों के लिये जाजिबे
नज़र बनना जैसा कि आज कल आम रवाज है येह सख्त ना
जाइज़ व गुनाह है। बारीक दूपट्टा जिस से बालों की रंगत झलके
या बारीक कपड़े की जुराबें जिस से पाऊं की पिन्डलियां चमकें
या ऐसे चुस्त लिबास में मल्बूस जिस में जिस्म के किसी उँच्च
मषलन सीने वगैरा का उभार नुमायां हो गैर महरमों के सामने
आना जाना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

लिबास के बावजूद नंगी

हज़रते سعیید دُنَا ابُو حُرَيْرَةَ رضي الله تعالى عنه سे رি঵ايت है
कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्ज़हुन अ़निल
उयूब نے एक हृदीषे पाक में येह भी ف़रमाया :
दोज़खियों में दो किस्में ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अ़हदे
मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयन्दा पैदा होने वाली हैं) इन में
एक किस्म उन औरतों की है जो पहन कर नंगी होंगी, दूसरों को
(अपनी हरकतों के ज़रीए) बहकाने वालियां और खुद भी बहकी
हुईं, उन के सर बुख़ती ऊंटों की एक तरफ़ झुकी हुई कोहानों की
तरह होंगे, वोह जनत में दाखिल न होंगी और न उस की खुशबू
पाएंगी और उस की खुशबू इतनी इतनी दूरी से पाई जाती है।

(صحيح مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب النساء الكلاسيات……الخ، ص ٨٣٢، الحديث: ٢١٢٨، ملخصاً)

مُعْفَسِسِرِ شَاهِيرٍ، هُكْمِي مُولَّا تَمَمَتْ مُعْفَتِي أَهْمَدَ يَارَ خَانَ
جِبْرِيلُ رَحْمَةُ الْحَنَّانَ^{عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ} جِبْرِيلُ رَحْمَةُ الْحَنَّانَ^{عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ}
”جَوَابُ الْمُؤْمِنِ“ (ج ۲، ص ۵۵۵) (بِرَأْيِ الْمُؤْمِنِ)

(مِرْأَةُ الْمَنَاجِحُ، ج ٥، ص ٢٥٥)

عَلَى الْحَبِيبِ!

સયિદા ફાતિમા કા અન્દાજે શુફ્તગુ

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا فَرَمَّا تِبْيَانَ
هَجْرَتِهِ سَفِيلًا مُسْكِنًا مُسْكِنًا
وَلَمْ يَرَهُ إِلَّا مُسْكِنًا مُسْكِنًا
أَنْدَاجِهِ مُسْكِنًا مُسْكِنًا

(الآدَبُ المُفَرِّدُ، باب قيام الرجل لأخيه، ص ٢٧٨، الحديث: ٩٣٧)

سرکارے مदینا، راہتے کلبو سینا، فےجزے گنجینا
 کا اندازے گوپتگو بیان کرتے ہوئے تم مول
 مومینین ہجڑتے ساییدتُونا ایشان سیدیکا
 بیان فرماتی ہے: میرے سرتاب، ساہبِ ملک راج، سایہ افلاک
 (نہایت ہی وکار کے ساتھ) اس تراہ (ثہر
 ثہر کر) گوپتگو فرماتے ہے کہ اگر کوئی شاہس آپ
 کے جو ملوں کو گیننا چاہتا تو وہ گین سکتا
 ہے (صَحْيُّ الْبُخَارِيُّ، کتاب المناقب، باب صَفَةِ النَّبِيِّ، ص ۹۰۸، الحدیث: ۳۵۲۷)

آواजٰ کو پردہ

پ्यारी پ्यारی اسلامی بہنو! آپ نے مولانا ہجڑا فرمایا
 کہ ساییدا خاتونے جنات کا اندازے گوپتگو بھی
 ساییدے اعلیٰ اسلام سے مुशابحت رکھنے والा ہا
 اسلامی بہنوں میں سے با'جٰ تو چللا چللا کر باتے کرتی
 ہوئی ہے۔ با'جوں کی آواجٰ سے تو گھر والے کیا ہم سا یہ بھی
 پرے شان ہوتے ہوئے ہیں۔ آیہ ! اس بارے میں بھی ما'lūmat حاسیل
 کیجیے کہ اسلامی بہنوں کی گوپتگو کا اندازہ کیا ہے۔
 چنانچہ دا'वتے اسلامی کے اشاعتی ہدایت مکتبتوں مادینا
 کی متابوں 397 سفہریات پر مشریعی کتاب “پردے کے بارے
 میں سووال جواب” سفہریات 90 تا 92 اور 254 تا 260 پر
 شیخہ تریکت، امریکے اہلے سونت، بانی دا'വتے اسلامی
 ہجڑتے اعلیٰ اسلامی مولانا ابو بیلال مسیحی ایلیاس اعلیٰ اسرائیل
کا دیری فرماتے ہیں:

ڈُّرست پیار سے بات چیت کرے یا ن?

سُوَالٌ : ک्या اسلامی بہن نا مہرماں پیار یا دیگر لੋگوں سے بات کر سکتی ہے؟

جواب : سیرف جڑورت کے وکٹ کر سکتی ہے۔ اس کی سوڑتے بیان کرتے ہوئے میرے آکا آ'لا ہجڑت، امامہ اہلہ سعید، علیہ رحمۃ الرحمٰن فُرماتے ہیں: تماام مہاریم (سے گوپتگو کر سکتی ہے) اور (اگر) ہاجت ہو اور اندرشائی فیتنا ن ہو، ن خلwt (یا'نی تناہی) ہو تو پردے کے اندر سے با'ج نا مہرماں سے بھی (بات کر سکتی ہے)।

(فُتاویٰ رجُلیٰ، جि. 22، س. 243)

پیار ساہب سے یعنی **ڈُّرست** کے بیگیر بات چیت ن کی جائے نیجٰ یعنی کوئی گوپتگو کی لیے مجبور بھی ن کیا جائے، ہو سکتا ہے کہ یعنی کوئی گوپتگو ن کرنے ہی میں بہتری ہے۔

پیار ڈُّرست مُوریڈنی کی فُون پر بات چیت

سُوَالٌ : ک्या اسلامی بہن پیار سے ب جریاءت فون اپنی پرے شانی کے ہل کے لیے دُعا کی دارخواست کر سکتی ہے؟

جواب : کر تو سکتی ہے۔ مگر نا مہرماں پیار ساہب (یا کسی بھی گیر مرد سے جڑورت ن بھی بات کرنی پڑ جائے تو اس) سے لبتو لہذا کدرے روکھا سا ہو۔ آواز لोچدار و نرم اور انداز بے تکالل فونا ن ہو۔

(رُدُّ المُحتَار، کتاب الصلوٰۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ج ۲، ص ۷۷، مُلَخَّصًا)

चूंकि इस की रिआयत बहुत मुश्किल है लिहाजा बेहतर

ये है कि इन मसाइल को अपने महारिम के ज़रीए पीर साहिब तक पहुंचाए। नीज़ बिला हाजत ना महरम पीर साहिब से भी गुफ्तगू नहीं कर सकती। मषलन महज़ सलाम दुआ और मिजाज पुरसी वगैरा के लिये फ़ोन पर भी बात न करे कि ये हाजत में दाखिल नहीं।

इस्लामी बहनें ना'तें पढ़ें या नहीं ?

सुवाल : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में ना'तें पढ़ सकती हैं या नहीं ?

जवाब : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में बिगैर माईक के इस तरह ना'त शरीफ़ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी गैर मर्द तक न पहुंचे। माईक का इस लिये मन्त्र किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से गैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब ना मुमकिन है। कोई लाख दिल को मना ले कि आवाज़ सामियाने या मकान से बाहर नहीं जाती मगर तजरिबा येही है कि लाउड स्पीकर के ज़रीए औरत की आवाज़ उमूमन गैर मर्दों तक पहुंच जाती है बल्कि बड़ी महाफ़िल में माईक का निज़ाम भी तो अक्षर मर्द ही चलाते हैं ! सगे मटीना ﴿عَفْيٌ عَنْ﴾ को एक बार किसी ने बताया कि फुलां जगह महाफ़िल में एक साहिबा माईक पर

بیان فرمایا رہی थीं، بآج مردے کے کانोں میں جب اس نیسوانی آواز جن نے رس بھولایا تو ان میں سے ایک بے هیا بولایا : آہا ! کیتنی پیاری آواز جن है ! جب آواز جن اینی پور کشیش है تو خود کے سی होगی !!!

وَلَا حُوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

इस्लामी बहनें मार्दक इस्ति'माल न करें

याद रहे ! दा'वते इस्लामी की तरफ से होने वाले सुनतों भरे इजतिमाआत और इजतिमाए जिक्रो ना'त में इस्लामी बहनों के लिये लाउड स्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है। लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेहन बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाउड स्पीकर में बयान करना है और न ही इस में ना'त शरीफ पढ़नी है। याद रखिये ! गैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बे बाकी के साथ बयान फ़रमाने और ना'तें सुनाने वाली गुनाहगार और जवाब के बजाए अ़ज़ाबे नार की हक्कदार है।

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत عليه رحمة رب العزت की खिदमत में अर्ज़ की गई : चन्द औरतें एक साथ मिल कर घर में मीलाद शरीफ पढ़ती हैं और आवाज़ बाहर तक सुनाई देती है, यूंही मुहर्रम के महीने में किताबे शहादत वगैरा भी एक साथ आवाज़ मिला कर (या'नी कोरस में) पढ़ती हैं, येह जाइज़ है या नहीं ? मेरे आक़ा आ'ला हज़रत عليه رحمة رب العزت ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : ना जाइज़ है कि औरत की आवाज़ भी औरत (या'नी छुपाने की चीज़) है और औरत की खुश इलहानी कि अजनबी सुने महल्ले फ़ितنا है।

(फ़तावा रज़विया, جि. 22, س. 240)

ਔਰਤ ਕੇ ਰਾਗ ਕੀ ਆਵਾਜ਼

ਮੇਰੇ ਆਕਾ ਆ'ਲਾ ਹਜ਼ਰਤ عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرَبِ ਏਕ ਔਰ ਸੁਵਾਲ ਕੇ ਜਵਾਬ ਮੈਂ ਝਰਸਾਦ ਫੁਰਮਾਤੇ ਹਨੋਂ : ਔਰਤ ਕਾ (ਨਾ'ਤ ਵਗੈਰਾ) ਖੁਸ਼ ਝਲਾਨੀ ਸੇ ਬਾ ਆਵਾਜ਼ ਐਸਾ ਪਢਨਾ ਕਿ ਨਾ ਮਹਰਮਾਂ ਕੋ ਉਸ ਕੇ ਨਗਮੇ (ਯਾਨੀ ਰਾਗ ਵ ਤਰਨੁਮ) ਕੀ ਆਵਾਜ਼ ਜਾਏ ਹੁਕਾਮ ਹੈ। ਫਤਾਵਾ ਨਵਾਜ਼ਿਲ ਅਜ਼ ਫਕੀਹ ਅਬੁਲਲਾਈ ਸਮਰ ਕਨਦੀ (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ਮੈਂ ਹੈ, ਔਰਤ ਕਾ ਖੁਸ਼ ਆਵਾਜ਼ ਕਰ ਕੇ ਕੁਛ ਪਢਨਾ “ਔਰਤ” ਯਾਨੀ ਮਹਲਲੇ ਸਿਤਰ (ਛੁਪਾਨੇ ਕੀ ਚੀਜ਼) ਹੈ। “ਕਾਫ਼ੀ” (ਅਜ਼ ਇਮਾਮ ਅਬੁਲ ਬਰਕਾਤ ਨਸਫੀ) ਮੈਂ ਹੈ, ਔਰਤ ਬੁਲਨਦ ਆਵਾਜ਼ ਸੇ ਤਲਾਬਿਆ (ਯਾਨੀ ਲੱਭਿਕ لَيْكَ اللَّهُمَّ لَيْكَ) ਨ ਪਢੇ ਇਸ ਲਿਯੇ ਕਿ ਉਸ ਕੀ ਆਵਾਜ਼ ਕਾਬਿਲੇ ਸਿਤਰ (ਛੁਪਾਨੇ ਕੇ ਕਾਬਿਲ ਚੀਜ਼) ਹੈ। (ਫਤਾਵਾ ਰਜ਼ਵਿਯਾ, ਜਿ. 22, ਸ. 242)

ਅਲਲਾਮਾ ਸ਼ਾਮੀ فُدِيسٌ لِّلنَّاسِ ਫੁਰਮਾਤੇ ਹਨੋਂ : ਔਰਤਾਂ ਕੋ ਅਪਨੀ ਆਵਾਜ਼ ਬੁਲਨਦ ਕਰਨਾ, ਇਨ੍ਹੋਂ ਲਮਭਾ ਔਰ ਦਰਾਜ਼ (ਯਾਨੀ ਇਨ ਮੈਂ ਤਤਾਰ ਚਢਾਵ) ਕਰਨਾ, ਇਨ ਮੈਂ ਨਰਮ ਲਹਜੇ ਇਖ਼ਤਿਯਾਰ ਕਰਨਾ ਔਰ ਇਨ ਮੈਂ ਤਕਤੀਅ ਕਰਨਾ (ਕਾਟ ਕਾਟ ਕਰ ਤਹਲੀਲੀ ਅੱਖ਼ਜ਼ ਯਾਨੀ ਨਜ਼ਮ ਕੇ ਕਵਾਇਦ ਕੇ ਸੁਤਾਬਿਕ) ਅਥਅਾਰ ਕੀ ਤ੍ਰਹਹ ਆਵਾਜ਼ੋਂ ਨਿਕਾਲਨਾ, ਹਮ ਇਨ ਸਥ ਕਾਮੋਂ ਕੀ ਔਰਤਾਂ ਕੋ ਇਜਾਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਦੇਤੇ, ਇਸ ਲਿਯੇ ਕਿ ਇਨ ਸਥ ਬਾਤਾਂ ਮੈਂ ਮਰਦੀ ਕਾ ਇਨ ਕੀ ਤਰਫ ਮਾਇਲ ਹੋਨਾ ਪਾਧਾ ਜਾਏਗਾ ਔਰ ਉਨ ਮਰਦੀ ਮੈਂ ਜਜਬਾਤੇ ਸ਼ਹਵਾਨੀ ਕੀ ਤਹਹੀਕ ਪੈਦਾ ਹੋਗੀ ਇਸੀ ਵਜਹ ਸੇ ਔਰਤ ਕੋ ਯੇਹ ਇਜਾਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਿ ਵੋਹ ਅਜ਼ਾਨ ਦੇ। وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

(رَدُّ المُخْتَار، کتاب الصلوٰۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ج ۲، ص ۹۷، مُلْخَصًا)

بaramde se ukhdusari kyo pukarana kaisa?

سُوَالٌ : بارامدے مें से इस्लामी बहन का पड़ोसनों के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें करना, कैसा है ? इसी तरह इमारत में ऊपर नीचे रहने वालियां एक दूसरे को पुकारें, आपस में ज़ोर ज़ोर से गुफ्तगू करें तो क्या येह मुनासिब है ?

جواب : येह इन्तिहाई गैर मुनासिब है क्यूंकि इस तरह गुफ्तगू करने से गैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचने का क़वी इमकान है । अगर आस पास की इस्लामी बहनों से कोई ज़रूरी काम है तो इस के लिये एक दूसरे के घर टेलीफ़ोन या इन्टरकॉम के ज़रीए बात चीत कर ले ।

baachon kyo dantne krii aawajz

سُوَالٌ : अच्छा येह बताइये कि बच्चों को डांटते वक्त इस्लामी बहन का आवाज़ बुलन्द करना कैसा ?

جواب : इस्लामी बहन का इस तरह डांटना कि आवाज़ घर से बाहर निकले, इन्तिहाई ना मुनासिब और मुज़हिका खैज़ है । बच्चों पर बात बात पर चिल्लाते रहना हमाक़त भी है कि इस तरह बच्चे मज़ीद “आज़ाद” हो जाते हैं । लिहाज़ बार बार डांटने के बजाए ज़ियादा तर प्यार से काम लिया जाए । सब के सामने बच्चों को रुसवा करते रहने से रफ़ता रफ़ता उस का नन्हा सा दिल “बाग़ी” हो जाता है । बच्चे की मौजूदगी में किसी

مُعْجَزْ جُ شَخْصٍ سے ٹسی بچے کے بارے مें اس ترہ کی شیکایات کرنा مषل ن “اس کو سامنہ آओ، یہ تंگ بहت کرتا ہے، بہت شراری ہے، مां بाप کا کہنا نہीں مانتا وغیرا” اُکْلِمَنْدی نہीں، کیونکि اس سے بچے کی اسلامی ہونا دار کنار ٹلٹا جئے ہن یہ بنتا ہوگا کہ مुझے مां بाप نے فُلاؤں کے سامنے جُلیل کر دیا! آج کل اولاد کی نا فرمائیوں کی شیکایات آم ہیں! اس کی وجوہات مें بچپن में मां-بाप کا بات بات پر بے جا چیخو پوکار کرنा اور بچے کو دूسرों کے سامنے وکٹن فر وکٹن جُلیلو خوار کرنा بھی شامل ہو تو برد اج کیا س نہیں!

ہے فُلہاہو کامرانی نمریٰ و آسامانی مें

ہر بنا کام بیگड جاتا ہے نادانی مें

صلوٰۃ علیٰ مُحَمَّدٌ صلواتُ اللہِ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ!

سادا کرتے ساتھیدا جہرہ

उम्मुل مोअमिनीन हज़रते ساتھیدا آیشہ سیدھیکا
رسنی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہے کہ میں نے هجڑتے فرماتیما رسنی اللہ تعالیٰ عنہا
سے سچھا یعنی اس کے ولیم کے ایسا کو کسی اور کو نہیں دے دیا!

(مسنیٰ ابی یَعْلَمٰی، مسنیٰ عائشہ ح، ۶۵ ص، الحدیث: ۲۱۹۸)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जननत खुद सच्ची और सच्चे नबी की शहज़ादी हैं ।
सच की बहुत ज़ियादा बरकात हैं, आइये ! आप की ख़िदमत में
इस की चन्द बरकात पेश की जाती है चुनान्चे

सच की बरकतें

हज़रते सच्चिदुना अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन अबू
कुराद सुलमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम
नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर
की बारगाहे बे कस पनाह में हाजिर थे। आप
صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ ने वुजू के लिये पानी मंगवाया। फिर उस में
अपना हाथ डाला और वुजू फ़रमाया। हम ने रसूलुल्लाह
صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ के गुसाला मुबारका की जुस्तजू की और उसे
थोड़ा थोड़ा पी लिया तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया
कि तुम्हें इस काम पर किस चीज़ ने आमादा किया? हम ने अर्ज़
किया : **अल्लाह** ॲ और उस के रसूल **عَزَّ وَجَلَّ** की
महब्बत ने। इरशाद फ़रमाया : अगर तुम चाहते हो कि **अल्लाह**
और उस का रसूल **عَزَّ وَجَلَّ** भी तुम से महब्बत करें
तो जब अमानतें तुम्हारे सिपुर्द की जाएं तो उन्हें अदा कर दिया करो
और जब तुम बोलने लगो तो सच बोला करो और अपने पड़ोसियों
के साथ अच्छा सूलूक किया करो। (جُمِيع الرَّأْيُوَابِدُ، ج: ٨، ه: ٢٨٣، المُحَمَّدِيَّ: ١٢٠-١٢١)

प्रेशक्षण : राजलिंगे अल मुदीबतल इलिया (वा'वते डलासी)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا حَسْنَةٌ كُلُّ حَسْنَةٍ كُلُّ حَسْنَةٍ
 رَجُلٌ يَعْمَلُ حَسْنَةً فَيُؤْتَهُ أَحَدًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَمَنْ يَعْمَلُ حَسْنَةً فَلَا يَرَاهُ إِلَّا فِي أَحَدٍ

ہجڑتے سادیٰ دُنُوناً اَبْدُولَلَاهُ بْنُ اَبِي طَالِبٍ بْنِ اَبِي طَالِبٍ

سے روایت ہے کہ ہجڑور نبی یہ پاک، ساہیبے لاؤلماک، سادھاہے
 افکلماک صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نے فرمایا : “چار خُسلتوں پر اسی ہیں
 کہ اگر وہ تو میں ہوں تو تم ہم ہی دنیا کی کسی مہرلماں کا
 اہساس نہیں ہوگا :

- (1).... امامت کی ہیفاہت کرنا (2).... سچ بولنا
- (3).... ہونے اخْلَاقُ اور (4).... ہلال کمایا خانا !”

(مسند احمد، مسنی عبد اللہ بن عمر، ج ۳، ص ۵۸۲، الحدیث: ۱۸۱۲)

ہجڑتے سادیٰ دُنُوناً اَبْوَ عَمَّا مَرَّ سے مرکی ہے
 کہ سادیٰ دُنُوناً مُبَالِلَيْنَ، رَحْمَاتُ لِلِّلَّهِ اَلَّا مَمْنَانِ
 نے فرمایا : “جو ہک پر ہوتے ہوئے جنگڈا ختم
 کرے میں اس کے لیے جنات کے کنارے پر اک بھر کی جمانت دेतا
 (یا' نی جِمِیداری لےتا) ہوں، جنگٹ اگرچہ میجاہ کے توار پر ہی
 ہو، تک کرنے والے کو جنات کے وسٹ (یا' نی درمیان) میں اک
 بھر کی جمانت دेतا ہوں اور اचھے اخْلَاقُ والے کو جنات کے
 آلا درجے میں اک بھر کی جمانت دेतا ہوں ।”

(سنن أبي داؤد، كتاب الأدب، باب في حُسْنِ الْخُلُقِ، ص ۵۵۷ الحدیث: ۳۸۰۰)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ هَذِهِ الْجَمَاتِ

سے روایت ہے کہ ﷺ کے مہبوب، دانا اے گویو ب،
مونجھوں انیل ڈیو ب نے فرمایا : سچ
بولنا کرو اگرچہ تو میں اس میں حلما کت نجرا آئے کیونکی اسی
میں نجات ہے । (مکارم الاخلاق لابن أبي الثناء، ص ۱۱۱)

خودا ہم کو سچ بولنے کی دے تاؤفیک

تُر مُنْهُ سُوچ کر خوشنے کی دے تاؤفیک

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

झूٹ کی نुहُوساتें

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! جھوٹ اے سی بوری چیज ہے جو
تمام ادیان میں ہرام ہے اور ہر مجبوب والے اس کی بورائی
کرتے ہیں، اسلام نے اس سے بچنے کی بہت تاکید فرمائی،
کورآنے مజید میں کई مکاہات پر اس کی مذممت فرمائی
اور جھوٹ بولنے والوں پر خودا کی لا نت آئی । ہدیوں میں بھی
اس کی بورائی جیکر کی گئی، چنانچہ انبواللہ بین مسٹر
فرماتے ہیں : “سیدک کو لاجیم کر لے، کیونکی سچوای نے کی کی ترک
لے جاتی ہے اور نے کی جنمات کا راستا دیکھاتی ہے । آدمی

बराबर सच बोलता रहता और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** ﷺ के नज़दीक सिद्धीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फुजूर की तरफ़ ले जाता है और फुजूर जहन्म का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता और झूट बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि **अल्लाह** ﷺ के नज़दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है ।”

(صَحِّحُ مُسْلِمُ، كِتَابُ الْبَرِّ وَالصَّلَاةِ، بَابُ قُبْحِ الْكَذِبِ.....الخ، ص ١٠٠٨، الحدِيثُ ٢٦٠٧)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے हज़रत सच्चिदानन्द अनस बिन मालिक का रिवायत है कि रसूले करीम, رَأْسُ الْكَوَافِرِ حَمَّامٌ ﷺ इशादे अङ्गीम है : जो शख्स झूट बोलना छोड़ दे और वोह बातिल है (या'नी झूट छोड़ने की ही चीज़ है) उस के लिये जनत के कनारे में मकान बनाया जाएगा और जिस ने झगड़ा करना छोड़ा और वोह हक़ पर है (या'नी हक़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता) उस के लिये वस्ते जनत में मकान बनाया जाएगा और जिस ने अपने अख़लाक़ अच्छे किये, उस के लिये जनत के आ'ला दर्जे में मकान बनाया जाएगा ।

(جامع الترمذى، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فى البراء، ص ٣٨٣، الحديث: ١٩٩٣)

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا هُجْرَةِ سَبِيلٍ دُنَاهُ اَبْدُو لَلَّهِ اَبْدُو لَلَّهِ
سے ریوایت ہے کہ رسوئی لالہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلّمٰ نے فرمایا :
“جب بندا جھوٹ بولتا ہے، اس کی بادبُو سے فیریشنا اک میل
دُور ہو جاتا ہے ।” (جامع الترمذی، ماجہہ فی الحدق و الكذب، ص ۴۸۱، الحدیث: ۱۹۷۲)

ہجّر تے سایید دُنَا سُو فَرْيَان بِينَ عَسَدَ هجّر مَمِي

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں : میں نے رسلِ اللہ تعالیٰ کو یہ فرماتے سुنا کہ بडیٰ خیانت کی بات یہ ہے کہ تو اپنے بھائی سے کوئی بات کہے اور وہ تو نہیں اس بات میں سچھا جانا رہا ہے اور تو اس سے جھوٹ بول رہا ہے ।

(سنن أبي داؤد، كتاب الادب، باب في المغاريف، ص ٢٧٨، الحديث: ١٣٩)

ہجّر تے سایید دُنَا ابُو عَمَامَہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ریوایت ہے کہ نبی یحییٰ پاک، ساہیبِ لعلیٰ کا دیرشاد پاک ہے : “مومین کی تباہ میں خیانت اور جھوٹ کے دلایا تماام خسّل تھے ہو سکتی ہے ।” (مسند أحمد، ج ١، ص ٢٢٠٦، الحديث: ٩٢)

یا’ نی یہ دونوں چیزوںِ ایمان کے خلیفہ ہیں، مومین کو ان سے دور رہنے کی بहوت جیسا دا جریب رہت ہے ।

اللّٰهُمَّ! ہمے جھوٹ سے، گیبت سے بچانا مأیلہ ! ہم کہدی نہ جہنم کا بنانا اے پیارے خودا ! اج پا سو لٹانے جمانا جنات کے مہلکات میں تو ہم کو بسانا

صلوٰۃ علی الحبیب ! صلوا على الحبيب

توبو إلی اللہ ! استغفِرُ اللہ

صلوٰۃ علی الحبیب ! صلوا على الحبيب

پیاری پیاری اسلامی بہنہو ! ہجّر تے سایید دُنَا سے بہوت فاتیم تجوہ رہا کو ہجّر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاتھ میں لگا کر جیسا دا فاتیم تجوہ رہا آپ کو کیسی مشکل میں دے� کر برداشت نہ کر سکتی ہیں، چوناں چے

بaba�ان کی مشرک کو دے� کر رونا

بaba�ان کی مشرک کو دے� کر رونا سے رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ریawayat ہے : ہجوڑے اکڈس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم جب کبھی سافر سے واپس تشریف لاتے تو پہلے مسجد مें دो رکعت نمازِ ادا فرماتے । اس کے بآد پہلے ہجوڑتے ساییدا فاطمۃ تужہ رضا رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے گھر اور فیر اجڑا جے موتھرات رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے گھر تشریف لے جاتے، راوی فرماتے ہیں : اک مرتبہ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہجوڑتے ساییدا فاطمۃ تужہ رضا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے ہام تشریف لائے تو انہوں نے اپنا ہاث سرکار کے روختھ سارے پور انوار پر رخ دیا اور ارج گھڑا ہوئی : میرے مام بآپ آپ پر کوربان ! آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے کپڈے فٹے پورا نہ ہو چکے ہیں । آپ نے ارشاد فرمایا : اے فاطمہ ترے بآپ کو **اللہ** تھا لالا نے اک ایسے کام کے لیے بھیجا ہے کی روئے جمیں پر کوئی شاہری اور دہاتی گھر ن بچے گا مگر **اللہ** ترے بآپ کے جریا یہ کام (یا نی دینے اسلام) دلکش کے ساتھ پھونچا دے گا، یہ دین وہاں تک پھونچ کر رہے گا جہاں تک رات کی پھونچ ہے ।

(ابن القیم، عز و وجہ بن رؤوف، حج ۲۶۹، ۲۶۳، حدیث: ۱۸۰۳۲)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! آئیے ! جیمن کुछ

سफر کی سੁਨ्त恩 اور آداب مੁਲਾਹਜ਼ਾ ਫਰਮਾਇਧੇ, ਚੁਨਾਨਚੇ
ਦਾ'ਵਤੇ ਇਸਲਾਮੀ ਕੇ ਇਸਾਅਤੀ ਇਦਾਰੇ ਮਕਤਬਤੁਲ ਮਦੀਨਾ ਕੀ
ਮਤਬੂਆ 696 ਸਫ਼ਹਾਤ ਪਰ ਮੁਸ਼ਟਮਿਲ ਕਿਤਾਬ “ਨੇਕ ਬਨਨੇ
ਔਰ ਬਨਾਨੇ ਕੇ ਤ੍ਰੀਕੇ” ਸਫ਼ਹਾ 568 ਤਾ 576 ਪਰ ਹੈ: ਮੁਮਕਿਨ
ਹੋ ਤੋ ਜੁਮਾ'ਰਾਤ ਕੋ ਸਫਰ ਕੀ ਇਕਿਤਾ ਕੀ ਜਾਏ ਕਿ ਜੁਮਾ'ਰਾਤ ਕੋ
ਸਫਰ ਕੀ ਇਕਿਤਾ ਕਰਨਾ ਸੁਨਤ ਹੈ। (أشعأ اللئنفات، ج ۵، ص ۱۱)

ਚੁਨਾਨਚੇ ਹਜ਼ਰਤੇ ਸਥਿਦੁਨਾ ਕਾ'ਬ ਬਿਨ ਮਾਲਿਕ
صلੀ اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسَلَّمَ سੇ ਮਰਵੀ ਹੈ, ਹੁਜੂਰ ਨਭਿਯੇ ਕਰੀਮ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
ਗੁਜ਼ਰਾਤ ਤਬੂਕ ਕੇ ਲਿਯੇ ਜੁਮਾ'ਰਾਤ ਕੇ ਦਿਨ ਰਵਾਨਾ ਹੁਏ ਔਰ ਆਪ
صلੀ اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسَلَّمَ ਜੁਮਾ'ਰਾਤ ਕੋ ਰਵਾਨਾ ਹੋਨਾ ਪਸਨਦ ਫਰਮਾਤੇ ਥੇ।
(صَيْحَةُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ الْجَهَادِ وَالسَّيْرِ، بَابُ مَنْ أَرَادَ غَزْوَةً... الخ، ص ۲۰۷، الحدیث: ۲۹۵۰)

ਚਲਤੇ ਵਕਤ ਅੜੀਜ਼ਾਂ, ਦੋਸਤਾਂ ਸੇ ਮਿਲੇ ਔਰ ਅਪਨੇ ਕੁਸੂਰ
ਮੁਆਫ਼ ਕਰਵਾਏ ਔਰ ਜਿਨ ਸੇ ਮੁਆਫ਼ੀ ਤਲਬ ਕੀ ਜਾਏ ਉਨ ਪਰ
ਲਾਜ਼ਿਮ ਹੈ ਕਿ ਦਿਲ ਸੇ ਮੁਆਫ਼ ਕਰ ਦੇਂ।

(ਬਹਾਰੇ ਸ਼ਰੀਅਤ, ਜਿ. 1, ਹਿੱਸਾ 6, ਸ. 1052, ਮਫ਼ਹੂਮਨ)

ਹਜ਼ਰਤੇ ਸਥਿਦੁਨਾ ਅਬੂ ਹੁਰੈਰਾ سੇ ਮਰਵੀ ਹੈ ਕਿ
ਸਰਕਾਰੇ ਮਦੀਨਾ, ਰਾਹਤੇ ਕੁਲਬੋ ਸੀਨਾ ਕਾ ਫਰਮਾਨੇ
ਚੁਨਾਨਚੇ ਮਦੀਨਾ, ਰਾਹਤੇ ਕੁਲਬੋ ਸੀਨਾ ਕਾ ਫਰਮਾਨੇ
ਬਾ ਕੁਰੀਨਾ ਹੈ: ਜਿਸ ਕੇ ਪਾਸ ਉਸ ਕਾ ਭਾਈ ਮਾ'ਜ਼ਿਰਤ ਲੇ ਕਰ ਆਏ

تو وہہ عس کا ڈجھ کبھی کرے، خواہ ہک پر ہو یا باتیل پر،
جو اے سا ن کرے وہہ میرے ہائج پر نہیں آए گا ।

(المُسْتَدِرُ كِلْحَاكِمْ كِتَابُ الْبَرِّ وَالصَّلَاةِ، بِرُوَايَاتِ أَبَاءِكُمْ تَبَرُّكُمْ أَبْناؤكُمْ، ج٥، ص٢١٣، الحدیث: ٣٧٠ مُنْقَطَّا)

لیبا سے سफر پہن کر اگر وکٹے مکرھ ن ہو تو گھر مें
چار رکھڑت نپل " قُلْ " " الْحَمْدُ " اور " قُلْ " " الْحَمْدُ " سے پढ کر باہر نیکلئے،
وہہ رکھڑتے واپسی تک اہللو مال کی نیگہبوانی کرئے گی ।
سفر پر جانے والے کو چاہیے کی یہ ۵ سورتے پढ لیا کرو ।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفُتْحُ (۱) آخییر تک قُلْ یا یَهَا الْكُفَّارُونَ
آخییر تک (۲) قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ آخییر تک (۳) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ
آخییر تک (۴) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ آخییر تک (۵)

سراورے اُلّام، نورے مُujassem سے صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے ہجڑتے
ساییدونا جو بیر بین موتیم سے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فرمایا : " اے
جو بیر ! کیا تुم چاہتے ہو کی جب تुم سفر مें
جاओ تو اپنے سا�یوں مें بेहتر اور تو شاء سفر مें بढ کر
رہو (یا' نی سفر مें خوشحالی اور فاریغول بालی نسیب ہو) ? "

درشاد فرمایا : یہ ۵ سورتے پढ لیا کرو :

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفُتْحُ (۱) آخییر تک قُلْ یا یَهَا الْكُفَّارُونَ
آخییر تک (۲) قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ آخییر تک (۳) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ
آخییر تک (۴) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ آخییر تک (۵)

ہر سورت کو سے بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ شروع کرو اور اسی پر
ختم کرو (اس ترہ ان پانچ سورتوں میں ۶ بار پढی جائے گی)

ہجڑتے ساخیدُونا جُبَّاَرْ فَرَمَاتِهِ هُنَّ کِی مِنْ نَےِ اِنْ کَوْ پَدَنَا شُرُّعْ اَ کِیْ یَا تُو مِنْ پُورے سَفَرْ مِنْ وَآپسَیِ تَکْ اپنے رُوفَکَ مِنْ سَبْ سَےِ جِیْ یَا دَا خُوشَہَلْ اُورْ تَوْشَاَسَ فَرَمَاتِهِ هُنَّ فَارِیْ گُولْ بَالْ رَهَنے لَگَا ।

(كَنزُ الْعَمَالِ، كِتَابُ السَّفَرِ، مِنْ قَسْمِ الْأَفْعَالِ، ج ۳ الْجَزءُ السَّادِسُ، ص ۲۱۷، الْحَدِيثُ: ۱۴۲۵)

نُؤْٹ !!!

इस्लामी बहनें नापाकी के अय्याम में सूरए नस्र व सूरए काफिरून नहीं पढ़ सकतीं बाकी तीनों सूरतें लफजे कुल के बिगैर कुरआन की निय्यत के बिगैर ब निय्यते दुआ व षना पढ़ सकती हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को अपने महारिस्म को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने की तौफ़ीक अंता فَرमाए । राहे खुदा में सफ़र करने का षवाब सुनिये, चुनान्चे ہجड़تے ساخیدُونا अबू उमामَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है कि रसूلؐ अकरम, نُورِ مُعْجَسْسَمَ نَبِيُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ ने इरशाद फَرमाया : “जिस शख्स का चेहरा राहे खुदा में गर्द आलूद हो जाए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्म के धूएं से अमान अंता फَرमाएगा और जिस शख्स के क़दम राहे खुदा में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्म की आग से महफूज़ फَرमा देगा ।” (بُخَاجَلِيْر، ج ۲، ص ۲۵۰، الْحَدِيثُ: ۱۴۵۵)

مُسَافِرِ کو چاہیے کہ وہ دُعَا سے گُلپت ن کرے کی
یہ جب تک سفر میں ہے اس کی دُعَا کُبُول ہوتی ہے بلکہ جب
تاک گھر نہیں پہنچتا اس کے تک دُعَا مکُبُول ہے اسی ترہ
مَجْلُوم کی دُعَا اور مां بَاب کی اپنی اَوْلَاد کے ہَكَّ میں
دُعَا بھی کُبُول ہوتی ہے ।

هُجْرَةِ سَيِّدِنَا أَبْوَهُرَرَأْ سَيِّدِنَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
کی سرکارے مَدِینَا، سُرُورِ کَلْبِهِ سَيِّدِنَا نَعِيْدِنَاءِ الدِّينِ نَعِيْدِنَاءِ الدِّينِ
فَرَمَّا : تَيْنَ كِسْمَ کی دُعَا اَمْ مُسْتَجَاب (يَا'نی مکُبُول) ہے
اِن کی کُبُولیت میں کوئی شک نہیں : (۱).... مَجْلُوم کی دُعَا
(۲)... مُسَافِر کی دُعَا (۳)..... بَاب کی اپنے بَوْتے کے لیے
دُعَا । (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما نکر في دعوة المسافر، ص ۶۹۳، الحدیث: ۳۲۳۸)

جب کسی مُشکل میں مدد کی جُرُرَت پડے تو ہدیے
پاک میں ہے اس ترہ تین بار پوکاروں : يَا عَبَادَ اللَّهِ يَا عَيْنُونِي يَا عَيْنَكَ

اَللَّاَهُ کے بندو ! میری مدد کرو ।

(ابْنُ حُصَيْن، کتاب دعییۃ السفر، ص ۸۲، مُؤَخَّر)

سَفَر سے واپسی پر گھر والوں کے لیے کوئی توهن فراہم
آئے کی یہ سُنْتَ مُبَارَکا ہے । رَسُولُهُ اکرم، نُورِ مُجَسَّم
کا فَرَمَّانِ مُعْجَزِی ہے : “جَب سَفَر سے کوئی
واپس آئے تو (گھر والوں کے لیے) کُछ ن کُछ ہدیٰ لایا,
اگرچہ اپنی جُلُولی میں پُرثُر ہی ڈال لایا ।”

(کنزُ الْعِيَال، کتاب السفر، قسم الاقوال، ج ۳، الجزء السادس، ص ۳۰، الحدیث: ۱۷۵۰۲)

اُرط کو تنہا سافر کرننا کیسماں؟

پ्यारی پ्यारی اسلامی بہنو! اُرط کا شوہر یا مہرماں کے بیگیر تنہا تین دن کی مسافری پر واقعہ اُ کیسی جگہ جانا ہرام ہے، یہاں تک کہ اگر اُرط کے پاس سافر ہجت کے اسٹباب ہے مگر شوہر یا کوئی کا بیلے اسلامی نام مہرماں ساتھ نہیں تو ہجت کے لیے بھی نہیں جا سکتی اگر گردی تو گوناہ گار ہو گئی اگرچہ فرج ہجت آدا ہو جائے گا۔ اعلیٰ باتا فوکھا اے موت اخیبھریں (م-ش-آن-خ-م) نے اک دن کی مسافری پر اُرط کے بے مہرماں جانے کو بھی ممنوع کر رکھ دیا ہے۔

(مأخذ از رَدُّ الْمُخْتَار، کتاب الحج، مطلب فی قولهم يَقَدِّمُ حَقَّ الْعَيْدِ.....الخ ج ۳، ص ۵۳۳)

دا'वتے اسلامی کے ایسا اُتی ادارے مکتبتوں مداریا کی متابوں ۱۲۵۰ سافر ہات پر مشریعیت کیتاب ”بہارِ شاری اُت“ جیلڈ اول سافر ۷۵۲ پر ہے: اُرط کو بیگیر مہرماں کے تین دن یا جیسا دا کی راہ جانا، نا جایا جا ہے بلکہ اک دن کی راہ جانا بھی۔ نا بالیگ بچھا یا مبتُوہ کے ساتھ بھی سافر نہیں کر سکتی، ہمارا ہی میں بالیگ مہرماں یا شوہر کا ہونا جروری ہے۔

(فتاوی عالیگیری، کتاب الصلوٰۃ، الباب الخامس عشر فی صلوٰۃ المسافر، ج ۱، ص ۱۵۶، ۱۵۷)

بیان کردہ مسئلے میں ”تین دن کی مسافری“ کا جیکر ہے، خوشکی کے سافر میں تین دن کی مسافری سے مुراواد سادہ

57 मील का फ़ासिला है। (माखूज़ अज़्फ़तावा रज़्विय्या, (मुखर्रजा) जि. 8, स. 270) किलो मीटर के हिसाब से येह मिक़दार तक़रीबन **92** किलो मीटर बनती है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 163-164 बित्तसर्फ़िन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

खातूने जन्नत की नबिय्ये रहमत से महब्बत

(سیرت رسول عربی، ص ۶۳)

ॐ दनी का बच्चादान

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतभूआ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “बुद्धा पुजारी”

شانے خواہوں جنات (رضی اللہ عنہا) خواہوں جنات کا ڈکٹر رشاد

سفہا 28 پر شیخے تاریکت، امریروں اہلے سُنّت، بانیِ دا'�تے
 اسلامی ہجڑتے اُلّالاما مولانا ابو بیلالم مُحَمَّدِ ایلیاس
 اُٹھار کا دیری نکل فرماتے ہیں : اک دن ہujr
 سراپا نور زادہ اللہ شرفاً تعظیماً کا 'بے مُعْذِّبٍ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ
 کے کریب نماج پढ رہے�ے اور کوپھارے کوئی اک جگہ بیٹھے ہوئے
 تھے । ان میں سے اک نے کہا کی تو تم ان کو دेख رہے ہو ؟ فیر بولा :
 تو تم میں کون اے سا ہے جو فولان کبیلے سے جب کردہ ٹانٹنی کا
 بچواداں ٹھا لایا اور جب یہ سجدے میں جائے تو ان کے کندھوں
 پر رخ دے ؟ اس پر باد بخٹ ٹکبا بین ابی مسیت ٹھا کر
 چل دیا اور بچواداں (یا'نی وہ خال جس میں ٹانٹنی کا بچو
 لیپتا ہوا ہوتا ہے) لایا کر رہمت اُلّامیان صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ
 کے دو نوں مُبارک شانوں کے درمیان رخ دی । **اعلیاً** کے
 مہبوب اسی ہاں میں رہے اور سرے مُبارک سجدے
 سے ن ٹھا لایا اور وہ سب کے سب کھکھے مار کر ہنستے رہے، یہاں
 تک کی خواہوں جنات سیپیدا فُاتِیْمُتُوجہ رہا
 (جس کی ڈپر اس وکٹ ب مُشکل آٹھ سال تھی) آئی اور انہوں
 نے ہبیبے اکبر کی پوشتوں اتھر سے اس گندگی
 کو ٹھا کر فیکا । تب **سرکار نامدار** نے
 اپنا سرے اکڈس ٹھا لایا اور اپنے پرور دگار کے
 دربار میں ارج گھڑا ہوئے : یا **اعلیاً** اس کوئی شیوں کو

پکड़ । या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू अबू जहल बिन हि�श्शाम, उत्तबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्तबा, उमय्या बिन ख़लफ़ और उक्बा बिन अबी मुईत को पकड़ । इस हृदीषे पाक के رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ف़رमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक़तूल (या'नी क़त्ल शुदा) देखा । वोह बद्र के कुंवें में आँधे मुंह गिरे हुए थे ।

(صَحِّينُ الْبَخَارِيُّ كِتَابُ الصَّلَاةِ، بَابُ الْمَرَأَةِ تَطْلُعُ عَنِ الْمُحَصَّلِ شَيْئًا مِنَ الْآذِي، ص ١٩٨، الحدیث: ٥٢٠)

نَّا ثُلَّ سَكَّنَاهُ كِيَامَتَ تَلَكَّ خُدَّا كَيْ كَسَّمَ
جِيَسَ كَوْ تُومَ نَّا نَجَّرَ سَمَّا غِيرَاهُ كَيْ دِيَا
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

بَارَثَاهُ مُعْسَتَفَّا مِنْ مَهْبُوبِيَّت

एक मरतबा रसूलुल्लाह صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने हज़रते अलियुल मुर्तजा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सचियदा फ़ातिमतुज़ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को एक फ़र्श पर बिठा कर उन की दिलजोई फ़रमाई । हज़रते अलियुल मुर्तजा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूلुल्लाह صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ आप को वोह मुझ से ज़ियादा प्यारी हैं या मैं ? हुज़रे अकरम صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : वोह मुझे तुम से ज़ियादा और तुम उस से ज़ियादा प्यारे हो ।

एक और ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये ! हज़रते सच्चिदतुना जमीअ़ बिन उमैर तमीमी رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं, मैं अपनी फूफी के साथ उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضي الله تعالى عنها की खिदमत में हाजिर हुवा तो उन से अर्ज़ की गई : हुज़ूर अकदस صلى الله تعالى عليه وسلم को कौन ज़ियादा महबूब था ? फ़रमाया : फ़ातिमा (رضي الله تعالى عنها), फिर अर्ज़ की गई : मर्दों में से ? फ़रमाया : उन के शोहर, जहां तक मुझे मा'लूम है वोह बहुत रोज़े रखने वाले और कषरत से कियाम करने वाले हैं।

(سُنْنَة التِّرْمِذِيِّ، أَبْوَابُ الْمَنَاقِبِ.....الخ، بَابُ فَضْلِ نَافِعَةٍ، ص ٨٧٢، الحدیث: ٣٨٧٧)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी رحمه اللہ الغنی इस हडीषे पाक के तहوت फ़रमाते हैं : येह है हज़रते आइशा سिद्दीक़ा رضي الله تعالى عنها की हक्क गोई कि आप صلى الله تعالى عليه وسلم ने येह न फ़रमाया कि हुज़ूर رضي الله تعالى عنها को सब से ज़ियादा प्यारी “मैं” थी और मेरे बा’द मेरे वालिद बल्कि जो आप के इल्म में हक्क था वोह साफ़ साफ़ कह दिया अगर येह ही सुवाल हज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा رضي الله تعالى عنها से होता तो आप फ़रमातीं कि हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم को ज़ियादा प्यारी जनाबे आइशा رضي الله تعالى عنها थीं फिर इन के वालिद। मा’लूम हुवा कि इन के दिल बिल्कुल पाक व साफ़ थे। अफ़सोस उन पर जो इन हज़रात को एक दूसरे का दुश्मन कहते हैं। ख़्याल रहे कि महब्बत बहुत किस्म की है और महबूबिय्यत की नोइय्यतें मुख्तलिफ़ हैं।

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا اَبْلَاد में सब से ज़ियादा प्यारी जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हैं, भाइयों में सब से ज़ियादा प्यारे अ़्लियुल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ है। अज़्वाजे पाक में बहुत प्यारी जनाबे आइशा سिद्दीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हैं, गरज़ कि एक महब्बत के सिलसिले में जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत प्यारी, दूसरे सिलसिले में हज़रते आइशा سिद्दीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत प्यारी। मुकाबला एक सिलसिले के अफ़राद में होता है।

(بِرَأْهُ الْمُنَاجِحِ، أَهْلُ بَيْتٍ كَيْفَيَّاتِ جَمِيعِهِ، ص ٢١٩)

जिशर गोशाउ रसूल

अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्ज़हुन अनिल उऱ्यूब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का इरशाद है : “फ़ातिमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम अहले जनत या मोअमिनीन की औरतों की सरदार है।” मज़ीद फ़रमाया : “फ़ातिमा मेरे बदन का एक टुकड़ा है जिस ने फ़ातिमा को नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।”

(مشكوة المصائب، كتاب المناقب، باب مناقب أهل بيته النبوي ﷺ، ج ٢، ص ٣٣٥ - ٣٣٦، الحديث: ٢١٣٨ - ٢١٣٩)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
صَلُّوْا عَلَى الْحَسِيبِ!

सफ़ेर मुस्तफ़ा की इब्तिदा व इन्तिहा

रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो सब से आखिर में हज़रते सय्यिदतुना

फ़ातِिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुलाक़ात फ़रमाते और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सब से पहले आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुलाक़ात फ़रमाते ।

(**الْمُسْتَدِرُكُ لِلْحَاكِمِ**، كتاب معرفة الصحابة، اذا سافر النبي الخ، ج ٣١، من ٣٧٢، الحديث: ٣٧٢)

આમદે મુસ્તફા પર અન્દાજે ઇરિટક્બાલ

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीका,
तथ्यिबा, ताहिरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ف़रमाती हैं कि जब हुज़रे पुरनूर,
शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ हज़रते सच्चिदतुना
फ़اتिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप
की ता'ज़ीम के लिये कियाम
हुज़रूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुबारक हाथों को थाम कर
फ़रमातीं, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं।

(سنن الترمذى، ج ١، ص ٨٧، الحديث: ٣٨ ملتقطاً)

ਅਮੀਰੇ ਅਹਲੇ ਸੁਨਤ ਔਰੇ ਝੁਤਿਬਾਤੁ ਸੁਨਤ

अमीरे अहले सुन्नत ذامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةِ का अन्दाज़े सफ़र भी कुछ इस तरह से है कि जब आप सफ़र के लिये बैरूने मुल्क तशरीफ़ ले जाते हैं तो अपनी शहज़ादी से मुलाक़ात कर के जाते हैं और जब वापस तशरीफ़ लाते हैं तो अक्षर सब से पहले अपनी शहज़ादी के घर तशरीफ़ ले जाते हैं। अहादीषे मुबारका में बेटी के बहुत जियादा फजाइल वारिद हैं, चुनान्वे

“بُنْتَیٰ”

کے چار ہوشِ فَرَّاجِ نِسْبَت سے ۴ فَرَّاجِ مِنْهَا نے مُعْتَدِل

(۱).... جب لڈکی پیدا ہوتی ہے تو رਬِ جہاں جلال لڈکی کی تھرِ فَرَّاجِ اُنکی فیریشتو کو بھجتا ہے جو اسے خوب بارکت پہنچاتا ہے اور کہتا ہے : کمजُور سی مخْلُوقُ کمजُور سے پیدا ہوئی، اس کی نیگہداشت کرنے والے کی کیامت تک مدد کی جائے گی ।

(الْمُنْجَدُ الْمُؤْسَطُ، باب الْبَاء، مِنْ أَسْكِنْ، ج ۲، ص ۲۲۹، الحدیث: ۳۱۰)

(۲)..... جس نے اپنی تین بُنْتَیٰ کی پرورش کی وہ جننات میں جائے گا اور اسے راہے خودا میں اس زیارت کرنے والے کی میل اُنہوں نے اسے ملے گا جس نے دُورانے زیارت روزے رکھے اور نمازِ کُفَّار کا ایام کی । (التَّرْغِيبُ وَالْتَّرْهِيبُ، کتاب البر والصلة، الترغيب في كتابة اليمين..... الخ من، ص ۸۱، الحدیث: ۲)

(۳).... جس کی تین بُنْتَیٰ یا تین بہنوں ہوں اور ان کے ساتھ اُنہوں نے سُلُوك کرے تو داخیلے جننات ہوگا ।

(جَامِعُ التَّرمِذِيُّ، کتاب البر والصلة، باب ما جآءَ فِي النَّفَقَةِ..... الخ، ص ۲۷۰، الحدیث: ۱۹۱۳)

(۴)..... جو شاخِس تین بُنْتَیٰ یا بہنوں کی اس تھرِ فَرَّاجِ پرورش کرے کہ ان کو ادب سیخاۓ اور ان پر مہربانی کا برتاؤ کرے یہاں تک کہ **آلِ بَلَاغَةٍ** عَزَّ وَجَلَ عَزَّ وَجَلَ نے نیا جُ کر دے (یا' نی ہوہ بَالِیگٍ ہو جائے یا ان کا نیکا ہو جائے یا وہ ساہِبِ مال ہو جائے ।) (أشِفَعُ الْمُعَافَاتِ، ج ۲، ص ۱۳۲) تو **آلِ بَلَاغَةٍ** عَزَّ وَجَلَ عَزَّ وَجَلَ اس کے لیے جننات واجب فَرما دےتا ہے । یہ ارشاد نبవی سُن کر سہابے کیرام **علیہم الرَّضوان** نے اُرجُ کی : اگر کوئی شاخِس دے

لड़कियों की परवरिश करे ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस के लिये भी येही अज्ञो घवाब है यहां तक कि अगर लोग एक का ज़िक्र करते तो आप ﷺ उस के बारे में भी येही फ़रमाते ।

(شرح السنّة للبغوي، ج ٢، ص ٣٥٢، الحديث: ٣٣٥ مُلَخَّصًا)

आत्म शहजादी क्वे नमाज के लिये बेदार करते

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ هज़रते सथियदुना अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं : छे महीने तक नबिय्ये अकरम ﷺ का येह मा'मूल रहा कि नमाजे फ़ज्ज के लिये जाते हुए हज़रते सथियदा ف़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर के पास से गुज़रते तो फ़रमाते : “ऐ अहले बैत ! नमाज !!!! اَللّٰهُ اَكْبَرُ” तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के खूब सुथरा कर दे ।”

(سُنَّتُ التِّرْمِذِيُّ، كتاب تفسير القرآن، باب ومن من سورة الأحزاب، ص ٤٧٢، الحديث: ٣٢٠٢)

पारह 16, सूरए त़ाहा, आयत नम्बर 132 में इरशादे रब्बुल उला है :

وَأَمْرُ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا

तर्जमए कन्जुल ईमान : और अपने घर वालों को नमाज का हुक्म दे और खुद इस पर षाबित रह ।

मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी “تَفْسِير نُورُولِّ إِرْفَان” में इस

આयتے مубارکا کے تھٹ فرماتے ہیں : اس سے تین مسالے ما'لُم ہوئے : اک یہ کہ گھر میں رہنے والے تمام لوگ انسان کے اہل کھلاتے ہیں । بیویاں، اولاد، بائی، برادار وغیرا । دوسرے یہ کہ نمازی کامیل وہ نہیں جو سرفہ خود نماز پढ़ لیتا کہ بولک وہ ہے جو خود بھی نمازی ہو اور اپنے سارے گھر والوں کو نمازی بنانا دے । تیسرا یہ کہ ہوکم نماز کی نویں جو داگانا ہیں । چوتے بچوں اور بیوی کو مار کر نماز پढ़ائے । بائی-برادار کو جوانی ہوکم دے ।

(تفسیر نور العرفان، پ ۱۶، ط، تحت الآية: ۱۳۲، ص ۳۸۶)

سداعِ مددینا

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! نبی یہ پاک، ساہبِ
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا رَوْجُانَا خاطونے جنات کے
گھر جاتے اور انہیں نماز کے لیے ٹھاکرے । اسلامیت کا
بھی یہی ما'مول ثابت ہے । آپ بھی کوشش کیجیے کہ نمازوں فرج
میں خود بے دار ہو کر اپنے مہاریم کو بھی بے دار فرمایا کرئے،
اگر آپ سے چوتے نمازوں میں سُستی کرتے ما'لُم ہوں تو انہیں ہسپے
ماؤک اور ڈانٹ کر نماز پڑائے اور بडیں کو ادب کے دائرے میں رہ
کر اُرجُع کرئے ।

میں نمازوں نہیں پڑتی تھی

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! دا'ватے اسلامی کی
برکتوں کے کیا کہنے ! اس سُننتوں برے مدنی ماحول نے لاخوں
بے نمازیوں کو نمازی بنانا دیا، فیشن کے متوالوں کو

شانے خواہیں جنمات (رضی اللہ عنہما) سخاوت کے لذت کے سخا

سुनنたों पर अमल का ज़ेहन दिया, लन्दन-पेरिस के सपने देखने वालों को मदीने का दीवाना बनाया और न जाने कैसे कैसे बिगड़ों को राहे रास्त पर लाया, ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) में मुकीम इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि मेरे घर का माहोल यूं तो मज़हबी था कि मेरे अब्बूजान मस्जिद में मुअज्जिन और बड़ी बहन और भाईजान दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता थे, मगर मेरा ज़ेहन दुन्यावी लज़्ज़तों में बदमस्त और नफ़्स गुनाहों पर दिलेर था । नमाज़ें क़ज़ा कर डालना मेरी आदत थी । एक दिन चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ लाईं । उन के महब्बत भरे अन्दाज़ से मेरा दिल पसीज गया और मैं ने इजतिमाअ़ में शिर्कत की नियत कर ली । जब वहां गई तो एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी ने “बे नमाज़ी की सज़ाएं” के मौजूद़ उपर दिल हिला देने वाला बयान किया जिसे सुन कर मैं थर्दा उठी और मैं ने पक्की नियत की, कि اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी । फिर माहे रबीउन्नूर शरीफ़ का मौसिमे बहार आया तो मैं इस्लामी बहनों के इजतिमाए़ मीलाद में शरीक हुई जहां एक इस्लामी बहन ने “**TV** की तबाह कारियां” बयान की । इस बयान को सुन कर मेरे रौंगटे खड़े हो गए और मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई । वोह दिन और आज का

दिन मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर अपनी इस्लाह की कोशिशों में मसरूफ हूँ।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 17)

صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! फैशन की मतवाली का हफ्तावार सुन्तों भरे इजतिमाअ में दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्त की राह पर आ गई और उन इस्लामी बहनों के लिये घवाबे जारिया का ज़रीआ बन गई जिन्होंने उसे इजतिमाअ की दा'वत दी थी कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम या'नी नेकी पर रहनुमाई करने वाला नेकी करने वाले ही की तरह है।

(سُنْنَة التَّرِيْدِيِّ، ابواب الْعِلْمِ، مَا جَاءَ الدَّالُ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلُهُ، ص ٢٨، الحدیث: ٢٦٧٠)

आप भी इस फ़रमाने आली पर अ़मल की नियत फ़रमा लीजिये कि अगर आप के दा'वत देने से किसी इस्लामी बहन का दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्त की राह पर आ गई तो आप का भी सीना मदीना होगा और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्त बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी इन्झ़ामात” पर अ़मल और सारी दुन्या

کے لوگوں کی اسلام کی کوشش کے لیے اپنے مہاریم کو،
جس کی تھی 22 سال یا اس سے زیادا ہے، “مدنی کافیلوں”
میں سफیر کرવانا ہے ।

اللّٰهُ کرامہ اے سا کرے تुڑ پے جہاں میں
اے دا'वتے اسلامی تیری بھوم مچی ہو !

(واسیلہ بخشش ابج امری اہلے سونت س. 107) دامت برکاتہم العالیہ

صلوٰۃ علیٰ محمد ﷺ ! صلوا علی الحبیب !

آپ بھی مدنی ماحول سے وابستہ ہو جائیے

پھری پھری اسلامی بہنو ! تلبیگ کورانو سونت کی آٹالماں گیر گیر سیاسی تحریک دا'�تے اسلامی کے مدنی ماحول سے وابستہ ہونے کی برکت سے **اللّٰهُ** اور اس کے رسل ﷺ کی مہربانی سے بے وکعت پ�ر بھی انمول ہیرا بن جاتا، خوب جگ-مگاتا اور اسی شان سے پہکے اجل کو لبکھ کہتا ہے کہ دیکھنے سوننے والی اس پر رشک کرتا اور جینے کے بجائے اسی مaut کی آرزو کرنے لگتا ہے । آپ بھی دا'�تے اسلامی کے مدنی ماحول سے وابستہ ہو جائیے । اپنے شاہر میں ہونے والے دا'�تے اسلامی کے اسلامی بہنوں کے ہفتاوار سونتوں برے احتمام اور میں شرکت کیجیے اور شیخ تریکت، امری اہلے سونت کے اہم کارڈ مدنی انسانیت پر اہمیت کیجیے این شاء اللہ عزوجل دامت برکاتہم العالیہ آپ کو دوں جہاں کی دروں بلالیاں نسیب ہونگی ।

مکبول جہاں بھر میں ہو دا'�تے اسلامی
سدکا تujھے اے رਬے گرفکار مدارے کا

बयान नम्बर ५

ख्रातूने जन्नत

का

ईषार व सखावत

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرُّسَلِيْنَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ طَبِيسِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

خاتونے جنمات کا ڈرشاں و سکھاوات

دُوڑھ د شاریف کی فوجیلات

سماہیکے مارవیयا تے کਬیرا هجڑتے ساییدو نا ابू ہوئرا

سے مارکی ہے کی سرکارے مداریا، سुرورے کلبو سینا
کا ایرشادے با کرینا ہے : **اَللٰهُمَّ** عَزَّ وَ جَلَّ کے
کوچ سایہا (یا' نی سیر کرنے والے) فیریشتے ہیں، جو جیک کی
مہا فیل تلاش کرتے ہیں جب وہ مہا فیلے جیک کے پاس سے
گujratے ہیں تو اک دوسرو سے کہتے ہیں : (یہاں) بیٹو । جب جاکریں
(یا' نی جیک کرنے والے) دعا مانگتے ہیں تو فیریشتے ان کی دعا
پر آمین (یا' نی "ऐسا ہی ہو") کہتے ہیں । جب وہ نبی پر
دُوڑھ بھجتے ہیں تو وہ فیریشتے بھی ان کے ساتھ میل کر دُوڑھ
بھجتے ہیں ہتھا کی وہ فاریغ ہو جاتے ہیں، فیر فیریشتے اک دوسرو
کو کہتے ہیں کی ان خوش نسیبوں کے لیے خوش خبری ہے کی یہ
ماغ فیرت کے ساتھ واپس جا رہے ہیں ।

(جُمُعُ الْجَوَاعِ لِلسُّيُّوطِي، قسم الاقوال، تتمة حرف الهمزة مع النون ج ۳، ص ۱۲۵، الحديث: ۷۷۵۰)

وہ سلامت رہا کیا مات میں

پढ لیے جیس نے دل سے چار سلام

میرے پ्यارے پے میرے آکا پر

مری جانیب سے لाख بار سلام

پڑکش : جنگیں سے اتل ماریتھاں دیلیخوا (ڈاً واتے ایسلامی)

میری بیگڈی بنا نے والے پر

بھجے اے میرے کیر دگار سلام

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

پ्यारी پ्यारी **इस्लामी** **बहनो !** کौन नहीं जानता कि
सव्यिदा **फ़اطِمَة** **उस** **फ़क़ीदुल** **मिषाल** (बे मिषाल)
अ़ज़मत के मालिक बाप की लख्ते जिगर हैं जिन के क़दमों में दुन्या
भर के ख़ज़ाने बिछे रहते थे और इस्लाम के उस माया नाज़ **फ़रज़न्द**
की अहलिया थीं जिन की शमशीरे जोहर दार ने सफ़हए हस्ती पर
अनमिट (न मिटने वाले) नुक़ूश षब्ल कर के दुन्या को वर्तेए हैरत
(या'नी इन्तिहाई हैरानी) में डाल दिया था, दुन्या उस
घराने के तक़दुस की क़सम खाती थी, लेकिन इस के बा वुजूद
दुख्तरे खैरुल अनाम की ज़िन्दगी इस ह़ालत में गुज़री कि
कभी पेट भर कर दो वक़्त का खाना न खाया, जो मिलता उस
को दूसरों पर निछावर कर देतीं और खुद फ़क्रों फ़ाक़ा से
ज़िन्दगी बसर करतीं और जिस मकान में रहतीं वहां आराइश
व जैबाइश का नामो निशान तक न था कीमती और खूब सूरत
बिस्तर वगैरा का ज़िक्र ही क्या वहां तो बा'ज़ अबक़ात मा'मूली
सा बिस्तर भी ब मुश्किल मुयस्सर आता । एक दफ़आ रसूले
अन्वर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपनी महबूब नूरे नज़र से मिलने तशरीफ़
लाए तो देखा कि इस क़दर छोटी चादर ओढ़ रखी है कि सर ढांपती
हैं तो पाऊं खुल जाते हैं और पाऊं छुपाती हैं तो सर खुल जाता है ।

(ماخوذ از مکاشفة القلوب، باب فی فضل الفقرا من ۱۸۰)

इस नादारी और अफ़लास की वजह येह न थी कि दुन्या की दौलत इन्हें मिल न सकती थी बल्कि येह ख़ानदाने नुबुव्वत का वोह इम्तियाज़ है जिस ने फ़क़रों इस्तिग़ाना का आखिरी तसव्वुर क़ाइम कर के येह षाबित कर दिया कि जो **اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** के लिये जीते और मरते हैं दुन्या की जैबाइश व आराम और अषाषा व दौलत इन के लिये ख़ाके पा से भी कमतर हैषिय्यत रखती है वोह दुन्या को देने के आदी होते हैं, लेने के नहीं और नामवरी इस वक़्त मज़ीद उर्घज व दवाम पा लेती है जब बन्दा अफ़आले महमूद पर कारबन्द और अख्लाक़े हऱ्सना से मुत्तसिफ़ हो जाता है। बिन्ते रसूल رضي الله تعالى عنها की नामवरी और नेक नामी से कौन मुसलमान ना वाकिफ़ है? हऱ्सबो नसब की बरतरी और मज़हबो मिल्लत की तरफ़ से मिलने वाली बड़ाई तो है ही मज़ीद नेक अफ़आल व हुस्ने अख्लाक़ ने सोने पर सुहागे का काम किया और आप رضي الله تعالى عنها का नाम हमेशा के लिये अवराके तारीख़ में सुन्हरी हुरूफ़ से मक्तूब और अज़हाने मोअमिनीन में मन्कूश हो गया।

سَاڈُولِيُونَ كَرِيْهُ حَاجَتَ حَوَارِدَ

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फैज़ाने सुन्नत” जिल्द अब्बल सफ़हा 1442 पर “तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” के हऱ्वाले से नक़ल फ़रमाते हैं: हज़राते हऱ्सनैने करीमैन

بچپن مें एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़्लियुल मुर्तज़ा, शेरे खुदा व हज़रते सच्चिदतुना बीबी फ़ातिमा और खादिमा हज़रते सच्चिदतुना फ़िज़ा (ने इन शहज़ादों की सिह़त याबी के लिये तीन रोज़ों की मन्त मानी। **अल्लाह** तभ़ाला ने सिह़त दी, नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया। सब साहिबों ने रोज़े रखे, हज़रते सच्चिदुना मौला अ़ली ख़ातूने जन्त ने एक एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम और एक दिन क़ैदी दरवाजे पर हाजिर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ़ पानी से इफ़तार कर के अगला रोज़ा रख लिया।

(خَرَائِئُ الْعَرْفَانِ، ب٢٩، الدَّهْرُ تَحْتَ الْآيَةِ: ٨ ص٣٧، ١٠، ملخصاً)

भक्ते रह के खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे महम्मद के घराने वाले !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

“हुथैन” के चार हृस्फ़ की निश्चत से
जिंक्र कर्दा हिकायत के 4 मदनी पूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सथियदतुन्निसा,

فَاتِمَتُوْجْجُهْرَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ज़िक्र कर्दा हिकायत से हमें

نज़्ر, سخ़اَوَات, إِشَارَةٍ وَخَانَةٍ کے مُتَأْلِلِكَ чанд مادنی فُول چونے کو میلے । آئیے ! کुछِ این مادنی فُولوں کے بارے میں مُلَاہِ جا فَرَمَا لَیْجِیے :

پہلا مادنی فُول..... نج़्ر :

نجُّزِ کیسے کہتے ہیں ?

شَاعِرُ الْحُلُولِ الْحَدِيثِ حَاجِرَتِي أَبْلَلَامَا أَبْدُولِ مُوسَى فَرَمَا تَهْبِيْنَ : نجُّزُ وَ مَنْتَ شَرِيْعَتَ مِنْ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيْ

کام کو کہتے ہیں جو بندہ خُود اپنے اوپر لایزم کر لے مسائلن یہ کہا کی اگر میرا فُلائیں مکساد پورا ہو گیا تو میں اینی رکاوتوں نفل پढ़وں گا یا اینے رہے رکھوں گا یا اینے میسکینوں کو خُدا کی ریضا کے لیے خانا خیلائوں گا یا کوئی بھی نیک کام کرूں گا । (مساٹلول کورآن، ماننے کا بیان، ص 197)

صَلَوَاتُ اللهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

نجُّزِ کے بارے میں احمد ماں لُومَات

شَارِهِ مِشْكَاتِ، هُكْمِيْلِ عَمَّاتِ مُفْتَتِي اَهْمَدِ يَارِ
خَانِ نَرْمِيْ "مِيرِ آتُولِ مَنَاجِيْہ" جِلْد 5
سَفَہ 202 پر فرماتے ہیں : گئے واجیبِ ایجاد کو اپنے پر
واجب کر لئا نجُّز ہے، نجُّزِ شارِیْ میں یہ شرط ہے کہ اسی چیز
کی نجُّز مانی جائے جو کہیں ن کہیں واجیب ہو، جو چیز کہیں
واجب نہ ہو اس کی نجُّزِ شارِیْ دُرُسْت ن ہوگی، دوسرے یہ کہ وہ
کام ایجاد ہو، تیسرا یہ کہ خالیس اَبْلَلَامَا کے

लिये हो किसी बन्दे के लिये न हो क्यूंकि नज़ेरे शरई इबादत है और इबादत सिर्फ़ रब्ब तआला की ही हो सकती है, हाँ ! नज़ेरे लुग़वी ब मा'ने नज़राना बन्दों की हो सकती है मगर इस का पूरा करना शरअ्वन वाजिब नहीं फ़ातिहए बुजुर्गान, ग्यारहवीं शरीफ़ की नज़ेरे मानना शरई नज़ेरे नहीं । लुग़वी नज़ेरे है ।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيَّ، بَابُ فِي النِّذُورِ الْفَصْلُ الْأَوَّلُ، ج٥، ص٢٠٢)

سدارششراپیا، بدرکھڑکیا، هجڑتے اعلیٰ مسلمان
مُفْتی مُحَمَّدِ امجدِ اُلیٰ آجِمی ایس کی
مجزیٰ د وجاہت کرتے ہوئے فرماتے ہیں : مسجد میں چراغِ جلانے یا
تُکھ بھرنے^(۱) یا فولان بُرُوج کے مجاہر پر چادر چढانے یا
گیارہوں کی نیا ج دلانا یا گائے آجِم کا
تُوشہ^(۲) یا شاہ ابُدُلِ ہک کا تُوشہ کرنے یا
ہجڑتے جلال بُخاری کا کونڈا کرنے یا مُہررم کی نیا ج یا
شربت یا سبیل لگانے یا میلاد شریف کرنے کی مनن مانی
تو یہ شارع مُنن نہیں مگر یہ کام مُنخ نہیں ہے، کرے تو اچھا
ہے । ہاں ! اعلیٰ بنتا ایس کا خیال رہے کہ کوئی بات خیل افے
شارع ایس کے ساتھ ن میلائے । مسٹلن تُکھ بھرنے میں رت- جگا
ہوتا ہے (یا 'نی رات بھر جاگتے ہیں) جس میں کُمبا (یا 'نی خاندان)
اور ریشے کی اورتے ڈکٹا ہو کر گاتی بجااتی ہے کہ یہ ہرام

(1) मस्जिद या मज़ार के ताक़ में चराग़ जला कर फूल वगैरा चढ़ाना ।

(2) या'नी किसी वली या बुजुर्ग की फ़तिहा का खाना जो उस वगैरा के दिन तक्सीम किया जाता है।

है या चादर चढ़ाने के लिये बा'ज़ लोग ताशे⁽¹⁾ बाजे के साथ जाते हैं येह ना जाइज़ है या मस्जिद में चराग़ जलाने में बा'ज़ लोग आटे का चराग़ जलाते हैं येह ख़्वाह मख़्वाह माल ज़ाएअ़ करना है और ना जाइज़ है। मिट्टी का चराग़ काफ़ी है और घी की भी ज़रूरत नहीं मक्सूद रोशनी है वोह तेल से हासिल है। रहा येह कि मीलाद शरीफ में फर्श व रोशनी का अच्छा इन्तिज़ाम करना और मिठाई तक्सीम करना या लोगों को बुलावा देना और इस के लिये तारीख़ मुक़र्रर करना और पढ़ने वालों का खुश इल्हानी से पढ़ना येह सब बातें जाइज़ हैं अलबत्ता ग़्लत़ और झूटी रिवायतों का पढ़ना मन्अ है। पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों गुनहगार होंगे।

(बहारे शरीअत, मन्नत का बयान जि. 2, हिस्सा नहुम, स. 317)

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

मन्नत के बारे में फ़रमाने रब्बुल इज़ज़त

पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 270 में मन्नत के बारे में इरशादे रब्बुल इज़ज़त है :

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفْقَةٍ أَوْ نَلْهَمْتُ مِنْ

ثُدُّرِ قَلَّ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّلَمِينَ

مِنْ أَنْصَاصٍ

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम जो खर्च करो या मन्नत मानो अल्लाह को इस की खबर है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(1)..... एक किस्म के दफ़ का नाम जिसे गले में डाल कर बजाते हैं।

ख़لीفَةِ آ‘لَّا هُجْرَةِ سَدَرَلِ اَفْعَلِ سَيِّدِ
 هَافِيْجِ مُوْفَتِيْ مُوْهَمَّدِ نَبِيْرِ مُوْدَّيِنِ مُوْرَادَبَادِيِّ
 “تَفَكِّرِيْنِيْرِ خَلَّاجَانِيْلِ إِرْفَانِ” مِنْ إِسَّ اَيَّاتِ مُوْبَارَكِ
 تَهْتَ تَهْرِيرِ فَرَمَاتِيْنِ هُنْ : شَارَعِ مِنْ نَبْرِ إِبَادَتِ اَوْرِ كُورْبَتِ مَكْسُودَا
 هُنْ إِسَّ لِيْهِ اَغَارِ كِيسِيْنِ نَعْنَاهِ كَرَنِيْنِ كِنْبَرِ كِنْ تَوْهِ
 سَهْيِهِنْ نَهْيِنْ هُرْيِنْ । نَبْرِ خَلَّاسِ **الْأَلْلَاهُ** تَأَلَّا كَهِ لِيْهِ هَوْتَيِنْ هُنْ
 اَوْرِ يَهِ جَاهِيْزِ هُنْ كِيْ **الْأَلْلَاهُ** كِيْ لِيْهِ نَبْرِ كَرِيْزِ اَوْرِ كِيسِيْنِ
 وَلَيِّنِ كَهِ اَسْتَانِنِ كِيْ فُوكَرِا كِيْ نَبْرِ كِيْ سَفَرِ كِيْ مَهْلِ مُوْكَرَرِ كَرِيْزِ
 مَسْلَنِ كِيسِيْنِ نَهِيْزِ يَهِ كَهِنْ : يَا رَبِّ ! مَنْ نَبْرِ مَانِيِّ كِيْ اَغَارِ تُوْ
 مَرِيْ فُولَانِ مَكْسَدِ پُورِا كَرِيْزِ دِيْ كِيْ فُولَانِ بَيِّمَارِ كِيْ تَمْدُرُسَتِ كَرِيْزِ دِيْ تُوْ
 مَنْ فُولَانِ وَلَيِّنِ كَهِ اَسْتَانِنِ كِيْ فُوكَرِا كِيْ خَانِا خِيلَاعِ يَا وَهَانِ كَهِ
 خُوْدَامِ كِيْ رَلِيْپِيَا پَيْسَا دُونِ يَا تَنِ كِيْ مَسْجِدِ كِيْ لِيْهِ تَلِيْزِ يَا
 بَوْرِيْيَا هَاجِيْرِ كَرِيْزِ تَوْهِ نَبْرِ جَاهِيْزِ هُنْ ।

(تفسير خزان العرفان، پ ۳، البقرة، تحت الآية: ۲۴۰، ص ۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

مَنْتَ پُورِيِّ كَرِنِيْنِ وَلَيِّنِ كَهِ مَدْهُ سَرَدِ

अपनी मन्त को पूरा करना क़ाबिले ता'रीफ और घवाब
 का काम है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए
 काएनात, **अَلِيَّبُوْلِ مُرْتَج़ा**, शेरे खुदा,
 हज़रते सच्चिदतुना बीबी फ़ातिमा और खादिमा हज़रते

سَيِّدُنَا فِي جَنَّةٍ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) نے هِجَرَاتِ حَسَنَی نے کریمَنَی
کی شِفَاعَیَابِی پر رَوْزَوں کی مُنْتَهیَی پر رَحْمَانِ عَلَیْهِ الْكَبَرَیْ نے کیا
تو اِن کی مَدَدِ مَدَد میں **آلِلَّا تَعَالَى** رَبِّ الْعَالَمَینَ نے پارہ 29
سُورَتُ الدَّهْرَ کی آیَت نَمْبَر 7 میں اِرشَادِ فَرِمَانِیا :

يُوْفُونَ بِالثَّدْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا

گان شر ک م س ت ط پ ر ا ⑧

(٢٩، الدهر:)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपनी
मन्त्रों पूरी करते हैं और उस दिन से
डरते हैं जिस की बराई फैली हड्डी है।

صلوا على الحبيب!

ਸਹਾਬਤ ਕਿਰਾਮ ਕਾ ਮੁੰਨਤ ਮਾਨਨਾ

ख़्लीفَةُ آٰلِّا هَجَرَةَ، سَدَرَلَ اَفْأَجِيلَ سَيِّدَ
هَافِيجُ مُعْسِتَي مُهَمَّدَ نَبِيِّ مُهَمَّدَ مُرَادَبَادَي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي
“تَفْسِيرَ خَجَّالِنُولِ إِرْفَانَ” مِنْ فَرَمَاتَهُ هُنَّ هَجَرَتَ سَيِّدَ
ذُشَمَانَهُ غَنِيَهُ اَوْرَ هَجَرَتَ سَيِّدَ نَهَشَ اَوْرَ هَجَرَتَ سَيِّدَ
سَبِّدَ بِنَ جَدَهُ اَوْرَ هَجَرَتَ سَيِّدَ هَمَّجَهُ اَوْرَ هَجَرَتَ سَيِّدَ
مُسَبَّبَ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) وَغَرِبَهُ نَهَشَ مَانَيَهُ ثَيَهُ كِيَ وَهَجَبَ
رَسُولَهُ كَرِيمَهُ عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ كِي سَادَتَ جِهَادَ كَمَكَبُّهُ پَارَهُنَجَهُ تَوَ
بَابِتَ رَهَنَجَهُ يَهَنَّ تَكَ كِي شَهِيدَ هُنَّ جَاءَنَهُ، إِنَّ كَي نِسْبَتَ إِلَيْهِ
آيَتَ مِنْ إِرْشَادَ هَوَهُ كِي إِنَّهُنَّ نَهَنَهُ اَوْنَهُ دَاهَ سَچَهُ كَرِيَهُ دِيَهُ ।

(खुजाइनुल इरफान, पारह. 21, तहतुल आयत : 23 स. 777)

और हज़रते सच्चिदुना हम्ज़ा व मुसअ्ब (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)।

शहीद हो गए, चुनान्वे

پارہ 21، سُورٰتُ الْأَحْزَابِ، آیت نمر 23 مें اِرشاد
ہوتا ہے :

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رَجَالٌ صَدِقُوا مَا
عَاهَدُوا اللَّهُ عَلَيْهِ فَمِمَّنْ مَنَعَ
لَهُجَّةٌ وَمِنْهُمْ مَنْ يَتَسْعَطُ وَمَا يَدْلُو
ثَبَّيْلًا

(پارہ ۲۱، الأحزاب: ۲۳)

تَرْجِمَةٌ كَلْجُولِ إِيمَانٍ : مُسْلِمُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رَجَالٌ صَدِقُوا مَا
مَنَعَهُمْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ فَمِمَّنْ مَنَعَ
كَيْفَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُمْ مُنْهَمُونَ
مَنْ يَتَسْعَطُ وَمَا يَدْلُو
ثَبَّيْلًا

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

کौन سੀ مُنْتَاجِ مَانِي جَائِعٌ ؟

پ्यारी پ्यारी اِسْلَامी بहنो ! مَا'لُوم हुवा कि مनत
ماننا جاઇج़ है और جाइज़ मनत पूरी करने पर मदहू से भी
नवाज़ा गया है जैसा कि आप ने ज़िक्र कर्दा आयते मुबारका में
मुलाहज़ा फ़रमाया । येह भी याद रहे कि अगर किसी गुनाह की
मनत मानी हो तो उसे हरगिज़ हरगिज़ पूरा न किया जाए,
दा'वते اِسْلَامी के इशाअُती इदारे مکتبतुल मदीना की मतबूआ
1182 سफ़हात पर मुश्तमिल किताब “بَهَارَ الشَّرِيفَ” जिल्द
दुवुम सफ़हा 318 पर سदरुशशरीआ, بَدْرُتَرीक़ा हज़रते اَللَّامَاء
مौलाना مُफ़्ती مُحَمَّد اَمْجَاد اَلْلَامَاء اَمْجَاد اَلْلَامَاء
مनत کے مُتَأْلِلِکَ بहت هی اہم مسٹلہ بیان کرتے ہوئے^{علیہ رحمۃ اللہ القوی}
فَرما تے ہیں : بَا'جُ جَاهِلِ اُوْرَتِ لَڈَکُوں کے کان ناک چیدوانے
اوے بچوں کی چوٹیا رخنے کی مनत مانتی ہیں یا اوے ترہ
ترہ کی اے سی مनتے مانتی ہیں جین کا جوابِ کیسی ترہ

प्राबित नहीं अव्वलन ऐसी वाहियात मनतों से बचें और मानी हो तो पूरी न करें और शरीअत के मुआमले में अपने लग्व (या'नी फुज्जूल) ख़्यालात को दख़्ल न दें न येह की हमारे बड़े बूढ़े यूहीं करते चले आए हैं और येह कि पूरी न करेंगे तो बच्चा मर जाएगा, बच्चा मरने वाला होगा तो येह ना जाइज़ मनतों बचा न लेंगी। मनत माना करो तो नेक काम नमाज़, रोज़ा, खैरात, दुरूद शरीफ़, कलिमा शरीफ़, कुरआने मजीद पढ़ने, फ़कीरों को खाना देने, कपड़ा पहनाने वगैरा की मनत मानो और अपने यहां के किसी सुन्नी आलिम से दरयाप्त भी कर लो कि येह मनत ठीक है या नहीं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : “अल्लम और ता’ज़िया बनाने और पैक बनने और मुहर्रम में बच्चों को फ़क़ीर बनाने और (मनत की) बध्धी (या’नी पटका या फूलों का हार या गले में पहनने का एक ज़ेवर) पहनाने और मरषिया की मजलिस⁽¹⁾ करने और ता’ज़ियों पर नियाज़ दिलवाने वगैरा खुराफ़ात (या’नी बेहूदा रस्मों) की मनत सख्त जहालत है ऐसी मनत माननी न चाहिये और मानी हो तो पूरी न करे ।”

(बहारे शरीअत, मन्त का बयान, जि. 2, हिस्सा. 9, स. 318)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

ਹਜ਼ਰਤੇ ਜੈਨਬ ਬਿਨਤੇ ਜਾਹਿਸ਼ ਕੀ ਨਕਾਰ

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतभूआ 59 सफहात पर मुश्तमिल उम्महातुल मोअमिनीन

(1).... वोह मजलिस जिस में शुहदाएँ करबला के मसाइब व शहादत का नोहा ख्वानी के साथ जिक्र होता है।

के فُجَّاِیل و ماناکِبِ پار مُعْتَمِلِ ایمان افْرَوْجُ کیتاب
”تمہارا تسلیم میں“ سفہ 43-44 میں جِنْکَر کردہ کلام
کا خولاسا ہے : جب تمہارا میں ہے جِنْکَر کے سرکارے ابادے کرار، شافیٰ روزے شومار
سے نیکاہ کے معتزلیک کو روانے پاک کی
یہ آیتے مubaraka ناجیل ہے :

فَلَمَّا قُضِيَ رَبِيعُ مِنْهَا وَكَرِئَ
رَوْجُنْكَهَا (ب٢، الأحزاب: ٣٧)

تَرْجِمَةِ کanjul ایمان : فیر جب
جید کی گرجی اس سے نیکل گئی تو
ہم نے وہ تو مہارے نیکاہ میں دے دی ।

تو ہو جو پورنور شافیٰ یا مونو شرور نے
معسکراتے ہوئے فرمایا کہ کون ہے جو جِنْکَر کے پاس جائے اور
उس کو یہ خوش خبری سुنا اے کہ **اللہ** تھالا نے مera
نیکاہ ہے اس کے ساتھ فرمایا ہے । یہ سुن کر آپ
کی خادیما ہو جراتے ساییدتھا سلاما
دیوتی ہوئے جِنْکَر کے ساییدتھا ساییدتھا
پاس پہنچیں اور یہ آیت سुنا کہ خوش خبری دی । ہو جراتے
ساییدتھا جِنْکَر اس بیشتر سے اس کدر خوش ہوئے
کہ اپنا جے ور عتار کر اس خادیما کو انعام میں دے دیا،
سجدہ شوک بجا لائیں اور نجی مانی کی 2 ماہ روزا دار رہنگی ।

(مَدَارِجُ النُّبُوٰت (مترجم)، باب دوم ذکر امهات المؤمنین... الخ، ج ۲، ص ۲۵)

صَلُوٰعَلَى الْحَمِيدِ !

“बाला” के तीन हुख्फ़ की निखत से
नज़्र के मुतभिलक़ ३ अहादीषे मुबारक

﴿١﴾.... उम्मुल मोअमिनीन जौजए सय्यिदुल मुरसलीन, सय्यिदा
आलिमा हज़रते आइशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से مرحबी है कि नूर
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم के पैकर, अम्बिया के सरवर, दो आलम के दिलबर
का इशादे रुह परवर है : ”مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلَيُطِيعَهُ وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلَا يَعْصِيهُ“
या'नी जो शख्स **अल्लाह** की इत्ताअत की नज़्र माने वोह
उस की इत्ताअत करे और जो उस की ना फ़रमानी की नज़्र माने,
वोह ना फ़रमानी न करे ।

(صَحِيفَةُ الْبَخَارِيِّ، كِتَابُ الْأَيْمَانِ وَالنَّذُورِ، بَابُ النَّذْرِ فِي الطَّاعَةِ، صِ ١٢٣٥، الْحَدِيثُ: ٢٦٩٦)

شَارِهٗ مِسْكَاتٍ، هُكَمَّيْ مُولَّا عَمَّا تَرَكَهُ اللَّهُ عَزَّ ذَلِكَ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيٌّ ”مِير آتُول مَنَاجِي هُ“ جِيلَد 5، سَفَرَهَا 203 پَرِّ إِسْ هَدِيَّهِ پَاکِ کِی شَارِهٗ مِسْكَاتٍ مِنْ فَرَمَاتِهِ هُنْ کُوْنِکِی
اللَّا حُكْمُ لِلَّهِ تَعَالَى کِی ڈِبَادَتٍ تو وَسِے بَھِی کَرَنِی چَاہِیَے اُور
جَب نَجْرُ مَانَ لَیْ تَوْ بَ دَرْجَ اُولَاءِ کَرَنِی چَاہِیَے । خَيْرَال رَّهِی
کِی جُو کَامَ بَ جَاتِی خُودَ غُنَاهَ هُو، عَسَ کِی نَجْرُ دُرُسْتَ هَیْ نَہِی
جَائِسِ شَرَابَ پَیْ نِے، جُوْ آخَلَنِے، کِیسِی مُسَلَّمَانَ کَوْ نَاهِکَ کُتْلَ
کَرَنِے کِی نَجْرُ کِی اِسِی نَجْرِ بَاتِلِی هُنْ اِن کَا پُورا کَرَنَا هَرَامَ،

मगर इन पर कफ़्कारा वाजिब है कि येह काम हरगिज़ न करे और कफ़्कारा अदा करे⁽¹⁾ इस का कफ़्कारा क़सम का कफ़्कारा है⁽²⁾ कि उस ने रब्ब तअ़ाला के नाम की बे हुरमती की, मगर जो काम किसी आरिज़े की वजह से मनूअ़ हों उन की नज़्र दुरुस्त है, या उन की क़ज़ा करे या कफ़्कारा दे जैसे ईद के दिन के रोज़े या तुलूए आफ़ताब के वक्त नपल पढ़ने की मन्त्र कि येह मन्त्र दुरुस्त है।

(مرآة المناجح،كتاب الایمان والنذور،باب فی النذور،الفصل الاول،ج٥،ص٢٠٣)

﴿٢﴾ हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا سे مارवी है कि नबिये करीम عليهما الصلاة والسلام खुत्बा पढ़ रहे थे कि एक शख्स खड़ा हुवा देखा, हुज्जूर نے उस के मुतअल्लिक पूछा। लोगों ने बताया कि येह अबू इसराईल है इस ने नज़र मानी है कि खड़ा रहेगा, न बैठेगा, न साया लेगा, न

(1).... चुनान्वे “दुर्रेमुखार” में है “जिस ने कोई गुनाह करने की क़सम खाई मषलन वालिदैन से कलाम नहीं करेगा या आज फुलां को क़त्ल करेगा तो इस पर वाजिब है कि कसम तोड़ दे और इस का कफ्कार अदा करे।”

(الدُّرُّ المُخْتَار، كِتَابُ الْأَيْمَانِ، ص ٢٨٣)

(۲).... जैसा कि हडीषे पाक में है, या 'नी नज़्र का कफ़्कारा^{۱۲۳} कहारَةُ النَّذْرِ كَهارَةُ الْبَوْبِينَ (صحيح مسلم،كتاب النذر،باب كفارنة النذر،ص ۲۰۳،الحديث: ۱۲۵)

और कसम का कपड़ारा तीन तरह का है। गुलाम आज़ाद करना.....
 या 10 मिस्कीनों को खाना खिलाना या फिर 10 मिस्कीनों को कपड़े
 पहनाना। या'नी येह इस्थितयार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे ।
 (تَبَيَّنَ الْحَقَائِقُ كِتَابُ الْإِيمَانِ، ج ٣٠، ص ٢٣٠) और अगर गुलाम आज़ाद करने या दस मिस्कीन
 को खाना या कपड़े देने पर कादिर न हो तो पै दर पै तीन रोजे रखे ।

^{٨٦} (الفتاوى الهندية، كتاب الإيمان، الباب الثاني، الخ، الفصل الثاني، في الكفارة، ج ٢، ص ٨٦)

کلمات کرے گا اور روزے رخے گا، تو **ہujr** نے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم **इसے** **ہujr** کی کلمات کے حکم و ارشاد کی کلمات کرے، ساہیا لے لے اور بیٹھ جائے اور اپنا روزا پورا کرے ।

(صَلَحُ الْبَخَارِيُّ، كِتَابُ الْإِيمَانِ وَالنَّذُورِ، بَابُ النَّذْرِ إِنَّمَا لِيَمْلِكُ وَفِي مُعْصِيَةِ، ص ۱۲۳۶، الحدیث: ۲۷۰)

شانے میشکات, **ہکیمیل** **تمم** **مُفْتَنی** **احماد** **یار** **خان** **نرمی** “**میر آتول مناجیہ**” **جیلد 5** **سफہا** **204** **par** **اس** **ہدیہ** **پاک** **کی** **شہر** **میں** **فرما** **تے** **ہے** : **سب** **لोگ** **بیٹھ** **کر** **خوبی** **سون** **رہے** **थے** **مگر** **یہ** **ساحب** **ہujr** **انوار** **کے** **سامنے** **خडے** **ہو** **کر** **سون** **رہے** **थے**، **اس** **سے** **ما**’**لُوم** **ہوا** **کی** **خوبی** **پڑنا** **خڈے** **ہو** **کر** **سونت** **ہے** اور **سونا** **بیٹھ** **کر** **سونت**، **اسی** **لیے** **تو** **ہujr** **انوار** **نے** **اس** **کے** **خڈے** **ہونے** **پر** **تاجزیب** **فرما** ।

مُفْتَنی **ساحب** **مجزید** **فرما** **تے** **ہے** : **خاموش** **راہنا**، **سایہ** **میں** **ن** **بیٹھنا** **کوئی** **یبادت** **نہیں** **बالک** **ہرام** **ہے** **کیونکی** **نماج** **میں** **کیڑا** **ات** **فکر** **ہے** اور **اتھی** **یات** **میں** **بیٹھنا** **واجیب** **بھی** **ہے** **فکر** **بھی**، **اس** **تارہ** **ہمسہ** **خڈا** **راہنا** **تک** **تے** **انسانی** **سے** **باہر** **ہے** **یہ** **نچڑ** **تڈ** **دے** **مگر** **روزہ** **چونکی** **یبادت** **ہے** **اس** **لیے** **اسے** **پورا** **کرے** । **خیال** **راہے** **کی** **ابو** **یسرائیل** **نے** **ہمسہ** **خڈے** **راہنے**، **ہمسہ** **خاموش** **راہنے**، **سایہ** **میں** **ن** **بیٹھنے** **ہمسہ** **روزہ** **رخنے** **کی** **نچڑ** **مانی** **�ی**، **ہujr** **نے** **پہلی** **نچڑ** **تڈنے** **کا** **ہکم** **دیا**

मगर रोज़े की नज़्र पूरी करने की ताकीद फ़रमाई जो कोई हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र माने वोह साल में पांच (5) हुराम रोज़ों या'नी ईदुल फ़ित्र और 4 ईदुल अज़हा (या'नी 10, 11, 12, 13 ज़िल हिज्जा) के सिवा तमाम दिन रोज़े रखे और इन पांच दिन रोजे न रखने की वजह से कफ़ारा दे ।

﴿٣﴾ ﴿رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا﴾ हज़रते सच्चिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह हैं
से रिवायत है कि एक शख्स ने (फ़त्हे मक्का के दिन) हुज़रे
अक़दस ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ﴾ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की,
या रसूलल्लाह ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ﴾ मैं ने मन्त्र मानी थी कि अगर
अल्लाह तआला आप के लिये मक्का फ़त्ह करेगा तो मैं बैतुल
मुक़द्दस में दो रक़अत नमाज़ पढ़ूँगा । मदीने के सुल्तान, रहमते
आलमिय्यान ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ﴾ ने इरशाद फ़रमाया : “यहीं पढ़
लो ।” दोबारा फिर उस ने वोही सुवाल किया, फ़रमाया : यहीं
पढ़ लो । फिर सुवाल का इआदा किया तो हुज़र
ने जवाब दिया : “अब तुम जो चाहो करो ।”

(مشكوة المصابيح، كتاب اليمان والنذور، باب في النذور، الفصل الثاني، ج ١، ص ٢٣٠، الحديث: ٣٢٣٠)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार
 खान नईमी ﷺ फ़रमाते हैं : ख़्याल रहे कि मक्कए
 मुअ़ज़्ज़मा की मस्जिद का षवाब बैतुल मुक़द्दस से दो गुना है कि
 वहां एक का षवाब पचास हज़ार है और हरम शरीफ में एक लाख

और مسجدے نبవی کا پھواب بُتُل مُکْدَس کے برابر، مگر مسجدے نبవی مें نماجٰ کا درجٰ جِیٰادا ہے کہ یہاں ہужُور سے کُربہ ہے اور چونکہ نجڑی بُتُل مُکْدَس کی اور یہ ساہِبِ ادا کرتے مسجدے ہرام یا مسجدے نبవی مें جو وہاں سے آ'لا ہے لیہاجا بہر ہاں نجڑی پوری ہو جاتی । مساجید مें آ'لا مسجدے ہرام ہے فیر مسجدے نبవی فیر مسجدے کو دسی فیر اپنے شہر کی جامع مسجد فیر مہاللہ کی مسجد فیر گھر کی مسجد (جاء نماجٰ) ।

(مراة المناجح،كتاب الایمان والنذور،باب في النذور،الفصل الثاني،ج ۵،ص ۲۱۰،ملقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

بہارے شاریۃ کے مُتَّالِبَات کیجیے !

نجڑی کے بارے مें فیکھی مسائل جानने के لिये دا'वतے اسلامی کے ایسا اُतیٰ ادارے مکتب بُتُل مدنیا کی متابوٰۃ کیتاب ”بہارے شاریۃ“ جلد 2 سफہا 311 تا 318 کا مُتَّالِبَات کیجیے ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

دُوسِرَا مَدْنَी فُول : سخاوات

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! مال کم ہے یا جِیٰادا ہر سُورت مें سخاوات کرنی چاہیے اور بُخَل نہیں کرنا چاہیے کہ سच्चے مُسالمان سخبی اور پैکرے ہستے ہیں اور مُسلمانोں کی تکالیف دُور کرنے کی خاتمیہ اپنی مُشکلات

की जरा बराबर परवाह नहीं करते जैसा कि आप ने हदीषे
फ़तिमा में मुलाहज़ा फ़रमाया कि वक्ते इफ़्तार के लिये जो तीन
साअ़ जब लाए वोह बजाए इस में कुछ रखने के सब के सब
साइलीन पर यके बा'द दीगरे खैरत कर दिये और अपने लिये
कुछ भी न रखा येह आ'ला किस्म की सख़ावत थी और फिर इन
को जिस इनआम से नवाज़ा गया वोह भी कम नहीं कि ता
कि यामत पढ़ी जाने वाली किताब में **अल्लाह** रब्बुल उल्ला
عَزَّوَجَلَّ ने इन का तज़्किरा फ़रमा दिया जो कि आप इब्तिदाई
सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमा चुकी हैं। अब यहां सख़ावत के
मुतअल्लिक कुछ मदनी फूल और अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام
के इरशादात व वाकिअ़ात नक़्ल किये जाएंगे ताकि इन की
सख़ावत से हमें भी कुछ हिस्सा मिल जाए। येह बात हमेशा पेशे
नज़र रखनी चाहिये कि सख़ावत करने से हमेशा फ़ाइदा ही होता
है और माल भी घटता नहीं बल्कि बढ़ता है। दीने इस्लाम की
तब्लीغ भी सख़ावत व हुस्ने अख़लाक़ पर मुन्हसिर है, जैसा कि

दीने इस्लाम की इस्लाह किस पर मुन्हसिर है

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार का फ़रमाने खुशबूदार है : “येह वोह दीन है जिसे **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ ने अपने लिये चुन लिया और तुम्हरे दीन की इस्लाह
सख़ावत और हुस्ने अख़लाक़ ही पर मुन्हसिर है, पस इन
दोनों के साथ अपने दीन को आरास्ता करो।”

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، ج ۲، ص ۲۳۲، الحديث: ۵۲۵۳)

دا'वتے اسلامی کے ایسا اُتیٰ ادھارے مکتبتوں مداریا
کی متابوں ۴۱۷ سفہار پر مُعْتَمِل کتابِ **ઇہدیا** علیٰ مُحَمَّد
کا خُلُّا سا سفہار ۲۶۵ پر ہُجَّتُوں اسلام ہجڑاتے ساییدونا
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِی
ہدیہ پاک نکلنے کے لئے فرماتے ہیں : فَأَكْرِمُوهُ بِهِمَا مَا صَحِبْتُمُوهُ
تَرْجِمَةٌ : جب تک اس دین پر رہوں ان دونوں چیزوں کے جریए اس
کا اہمیتی رام کرو।

(ابن الاوی، من اسمہ قدم، ج ۲، ص ۳۲۳، الحدیث: ۸۹۰)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

سخاوت کیسے کہتے ہیں؟

ہجڑاتے ساییدونا امامے ہسن بصریؑ سے
پूछا گیا کہ سخاوت کیا ہے؟ آپ نے فرمایا : سخاوت یہ
ہے کہ تو اپنا مال **اعلیٰ مُحَمَّد** تعلیما کے راستے میں خُرچ کر دے۔

(احیاء غُلُومِ اللَّذِينَ، کتابِ ذمِ البخل و ذمِ حبِّ المَال، بیانِ فضیلۃ السخاوت، ج ۳، ص ۴۰)

थेलीयां भर भर कर तक्सीम फ़रमा दीं

ہجڑاتے ساییدونا سُوفَیان بن عُثَیْنَا سے
پूछا گیا کہ سخاوت کیسے کہتے ہیں؟ آپ نے
فرمایا : (مُسْلِم) بَاهِیوں سے نکلی کا سُلُوك کرنا اور
مال اُٹانا کرنا سخاوت ہے۔ فرمایا : میرے والیدے ماجید کو
ویراست میں **50,000** دیرہم میلے تو انہوں نے ثلیلیयां بھر بھر کر
انہیوں کو تکسیم کر دیں اور فرمایا کہ میں نماج میں

अल्लाह तआला से अपने भाइयों के लिये जनत का सुवाल किया करता था तो माल में इन से बुख़ल क्यूं करूँ ?

(المرجع السابق، ص ٣٠٥)

سخاوت کی خُلّتِ ایناً يَرَى رَبَّ !

دے جبّا بھی إِشَارَةَ كَوْنَى إِلَاهِي !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

बेहतरीन सखावत

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 324 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “**152 رहمات भरी हिकायात**” सफ़हा 163 पर है : हज़रते सच्चिदुना अबू سुलैमान अब्दुर्रहमान बिन अहमद बिन अतिथ्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ سَلَامٌ فरमाते हैं : बेहतरीन सखावत वोह है जो हाजत के मुताबिक़ व मुवाफ़िक़ हो (कि सामने वाले को जिस चीज़ की हाजत हो वोह दी जाए) ।

(شعب الإيمان، الرابع والسبعون من شعب الإيمان، باب في الجود والسداء، ج ٢، ص ٣٢٧، الحديث: ١٠٩٣٨)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

जूदो कर्म ईमान का हिस्सा

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 415 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “**ज़ियाए सदक़ात**” सफ़हा 219 पर है : हज़रते सच्चिदुना इमाम जा'फ़र

سادیکٰ فرماتے ہیں : اُکل سے جیسا مددگار کوئی مال نہیں، جہالت سے بढ़ کر کوئی گناہ نہیں، مشرے سے بढ़ کر کوئی پوشت پناہ نہیں । سونو ! **اعلماً** تاala نے فرمایا : مैں جوادو کریم ہوں کیسی بخوبی کے لیے مुझ سے رہے فرار نہیں اور بخوبی کوئی (نا شکری) سے ہے اور کوئی فرمان (نا فرمائی) جہنم میں جائے جب کہ جو دو کرمِ ایمان کا ہیسمہ ہے اور اہلِ ایمان جہنم میں جائے ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل و ذم حبِّ المل، بیان فضیلۃ السخاء، ج ۳، ص ۳۰۰)
ایمان پے دے مaut مدارے کی گلی میں مادرن میرا مہربوں کے کدموں میں بنا دے ہو بہرے جیسا نجرو کرم سوئ گونہگار جہنم میں پڈھوں میرے آکھا کا بنا دے

(کراسائلے بخشش ارجُ امریکے اہلے سوچ س 100) ذامث برکاتہم العالیہ

صلواتُ اللہِ عَلَیْکَ الْحَبِیبِ ! صلواتُ اللہِ عَلَیْکَ الْحَبِیبِ !

انوکھا اندازے سخاوت

ہجڑتے ساخیدوں اور وہ بین جو بے کے جو دو سخاوت کا یہ اعلیٰ مثہل تھا کہ جب باغ میں فل پک کر تیار ہو جاتے تو اس کی دیوار میں شیگاٹ فرماتے دیتے فیر لوگوں کو اجازت دیتے کہ وہ آ کر خاہی اور ٹھاکر بھی لے جائے । دہراتی لوگ باغ کے گرد آتے، پس وہ اس میں داخیل ہو کر

फल खाते और उठा कर भी ले जाते । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब अपने बाग में तशरीफ़ ले जाते तो पारह 15 सूरतुल कहफ़ की आयत नम्बर 39 की तकरार करते हृता कि बाग से बाहर तशरीफ़ ले जाते ।

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا

شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

(٣٩: ١، الْكَهْفُ)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का ।

(حلية الاولياء، عروه بن زبیر، ج ٢، ص ٢٠٥ الرقم ١٩٥)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

سخावत ईमान के लिये बाहुषे तक़वियत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्रबूआ 680 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “मुकाशफ़तुल कुलूब” सफ़हा 571 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِيٌّ हडीषे पाक नक़ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को येह फ़रमाते सुना कि सब से पहले मीज़ाने अ़मल में हुस्ने खुल्क़ और सखावत रखी जाएगी, जब अल्लाह तअ़ाला ने ईमान को पैदा फ़रमाया तो उस ने अर्ज़ की : ऐ अल्लाह عَرَجَ مुझे कुव्वत अ़ता फ़रमा तो अल्लाह तअ़ाला ने उसे हुस्ने खुल्क़

और سخھاوت سے تکھیت بخھڑی और जब **अल्लाह** तभ़ाला ने कुफ्र को पैदा करमाया तो उसने अर्जु किया : ऐ **अल्लाह** ! मुझे कुव्वत बख़ा, तो **अल्लाह** तभ़ाला ने उसे बुख़ल और बद खुल्की से तकھित बख़ड़ी । (مکاشفۃ القلوب، باب فی فضل حسن الخلق، ص ۸۰، کوئٹہ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इब्राहीम बिन अदहम की सख़ावत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मकतबतुल मदीना की मतबूआ 412 सफ्हात पर मुश्तमिल किताब “उयूनुल हिकायात” हिस्से अब्ल सफ्हा 110 पर ज़िक्र कर्दा हिकायत का खुलासा है : हज़रते सच्चिदुना यहया बिन असवद किलाबी फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सच्चिदुना इब्राहीम बिन अदहम को अपने बाग की देख-भाल के लिये अजीर (या'नी गुलाम) रखा, तक़रीबन एक साल बा'द मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बाग में गया । एक शख़्स उम्दा ऊंट पर सुवार हो कर हमारे पास आया और उसने हज़रते सच्चिदुना इब्राहीम बिन अदहम के बारे में पूछा । मैं ने उसे बताया कि “आप फुलां जगह मौजूद हैं ।” वोह शख़्स आप के पास आया, दस्तबोसी की और निहायत मोअद्विबाना अन्दाज़ में खड़ा हो गया । हज़रते सच्चिदुना इब्राहीम बिन अदहम ने आने की वजह पूछी तो कहने लगा : “मैं बल्ख़ शहर से आया हूं, आप गुलामों का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं इन का माल ले कर आप की

खिदमत مें हाजिर हुवा हूं। ये ही तीस हज़ार (30,000) दिरहम आप के हैं इन्हें कबूल फ़रमा लें।”

हज़रत सच्चिदानन्द इब्राहीम बिन अदहम علیه رحمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ نे उस माल के तीन हिस्से करते हुए फ़रमाया : एक तुम्हारे लिये क्यूंकि तुम सफ़र की सऊँबतें और मुश्किलात बर्दाशत कर के यहां पहुंचे हो, दूसरा हिस्सा ले जाओ और इसे बल्ख़ के गुरबा व मसाकीन में तक़सीम कर देना ।

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रत सच्चिदानन्द यहूया की तरफ़ मुतवज्जे हुए जिन के बाग में आप बढ़ाये अजीर (मुलाज़िम) काम करते थे, उन से फ़रमाया : “ये ही एक हिस्सा तुम ले लो और इसे “अ़स्क़लान” के गुरबा व फुक़रा में तक़सीम कर देना ।” इतना कहने के बाद आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वहां से तशरीफ़ ले गए और उन तीस हज़ार (30,000) दराहिम में से एक दिरहम भी खुद न लिया

(उद्यनुल हिकायात, स. 71 मुलख़्बसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

سخ्ती का खाना दवा है !

शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हड़बीबे परवर दगार ने इरशाद फ़रमाया : “सख्ती का खाना दवा और बख़ील का खाना बीमारी है ।”

(جمع الجوامع، حرف الطاء، الطاء مع العين، ج ۵، ص ۱۱۸، الحديث: ۱۳۸۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

میرے آکھ کی سخاوات

एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रते सथियदुना موسा عليه السلام की سखावत का बयान किया और इस में इस हृद तक मुबालगा किया कि हुजूर सथिदे आलम पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रते सथियदुना موسा عليه الصلوة والسلام की سखावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरियात के इलावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेगे न फ़रमाते, ये ह बात मुसलमान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्होंने कहा कि अम्बिया عليهم الصلوة والسلام सब साहिबे ف़ज़्लो कमाल हैं, हज़रते सथियदुना موسा عليه الصلوة والسلام के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं लेकिन سथिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ का मर्तबा सब से आ'ला है और ये ह कह कर उन्होंने चाहा कि यहूदिया को हज़रते सथिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ के जूदो करम की आज़माइश करा दी जाए, चुनान्वे उन्होंने अपनी छोटी बच्ची को हुजूर عليه أفضُّ الصَّلَاةُ وَالْتَّسْلِيمُ की ख़िदमत में भेजा कि हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ से क़मीस मांग लाए, उस वक्त हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ैबेतन थी वो ही उतार कर अ़ता फ़रमा दी।

(تفسیر حزائن العزفان، پ ۱۵، بنی اسرائیل، تحت الایه: ۲۹، ص ۱)

सख़्वात तेरे घर की है इनायत तेरे घर की है
तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

(वसाइले बख्खिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برَ كَاهُمُ الْعَالِيَه س. 312)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सख़ावत के बारे में अह़ादीषे मुबारका और अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام के वाक़िआत और आखिर में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَوةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَامٌ की सख़ावत के मुतअल्लिक भी मुलाहज़ा फ़रमाया । सख़ावत करते वक़्त येह बात ज़ेहन नशीन रहे कि इतना माल ख़र्च न करे कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाकी न रहे और लोगों से सुवाल करना पड़े । लिहाज़ा ख़र्च करने और माल रोकने दोनों में ए'तिदाल और मियाना-रवी से काम लेना चाहिये ।

पारा 15 सूरे बनी इसराईल आयत नम्बर 29 में इरशादे
रखे जलील है :

तर्जमए कन्जुल ईमान : और
अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा
हुवा न रख और न पूरा खोल दे
कि तू बैठ रहे मलामत किया
हुवा थका हुवा ।

ख़लीफ़ा आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सन्धिद
 हाफ़िज़ मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي
 “तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयते मुबारका के

تھات تھریر فرماتے ہیں : یہ تمسیل ہے جس سے انفکا کے یا' نی خرچ کرنے میں اے' تیadal ملہوج رکھنے کی ہدایت مञّعہ ہے اور یہ باتا یا جاتا ہے کہ ن تو اس تھرہ ہا� رکو کی بلکہ کل خرچ ہی ن کرو اور یہ ما' لوم ہو گویا کہ ہاٹھ گلے سے باندھ دیا گیا ہے، دنے کے لیے ہیل ہی نہیں سکتا । اس کرنا تو سببے ملائم ہوتا ہے کہ بخیل کنجز کو سب بُرا کھاتے ہیں اور ن اس کا ہاٹھ خولو کی اپنی جڑیاٹ کے لیے بھی کوچ بآکی ن رہے । (تفسیر خزانہ العرفان، پ ۵، بنی اسرائیل، تحت الایہ ۲۹)

एक اور جگہ ارشاد باری تआلا ہے :

وَالْذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا مِمْبَرٍ فُؤَادُهُمْ يَقْتُرُونَ أَوْ كَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوْامًا

تَرْجَمَةِ کنجز ایمان : اور وہ
کی جب خرچ کرتے ہیں نہ ہد سے بढ़
اور ن تंگی کرے اور ان دونوں کے
بیچ اے' تیadal پر رہے ।

(پ ۹ । الفرقان: ۲۷)

ہدیے پاک میں بھی اے' تیadal میں رہنے کی تارگیب ارشاد فرمائی گई، چنانچہ فکریہ ہے ہم تو مہبوب ہجڑتے ساییدونا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ماروی ہے کہ رسولؐ کریم، ساہبِ خولکے ابی جمیل نے صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ ارشاد فرمایا : لَمْ يَأْتِ بَشَرٌ مَّا عَالَ مَنِ افْتَصَدَ نہیں ہوگا । (معجم البیان، باب التصاویف الحقة۔۔۔ ج ۵، ۲۵۵، حدیث: ۲۵۱۹)

एक और रिवायत में रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार

مَنْ أَقْصَدَ أَغْنَاهُ اللَّهُ، وَمَنْ بَذَرَ أَفْقَرَهُ اللَّهُ : نَهَا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ يَا'نِي جो शख्स (अख़राजात में) ए'तिदाल क़ाइम रखता है,
अल्लाह तआला उसे मालदार बना देता है और जो आदमी ज़रूरत से ज़ाइद ख़र्च करता है **अल्लाह** तआला उसे फ़कीर कर देता है ।

(كتاب العمال، كتاب الأخلاق، الاقتصاد والرفق في المعيشة، ج ٢ الجزء الثالث، من ٢٢، الحديث ٥٣٣)

ज़रूरत से ज़ियादा मालों दौलत का नहीं तालिब
रहे बस आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख्शाश अज़ अमीरे अहले سुन्नत س. 186) صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !
हाँ ! जो शख्स तवक्कुल के आ'ला दर्जे पर फ़ाइज़ हो वोह राहे खुदा में सारा माल ख़र्च कर सकता है, जैसा कि

यारे वार कर माली ईषार

(ग़ज़वए तबूक के मौक़अ़ पर) नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम عليه أفضل الصلوة والتسليم ने राहे खुदा में माल ख़र्च करने की तरगीब इरशाद फ़रमाई । (महबूबे रहमान, शाहे कौनो मकान के इस फ़रमाने रग्बत निशान की तामील करते हुए) सहाबए किराम عليهم الرضوان अपना कषीर माल राहे खुदा में लाए । सब से पहले सहाबी इब्ने सहाबी, आशिके अकबर हज़रते सच्चिदुना सिद्दीके अकबर अपना رضي الله تعالى عنه

सारा माल (चार हज़ार दिरहम) ले कर हाजिरे बारगाह हो गए,
नबिय्ये मुख्तार, दो आलम के ताजदार, शहनशाहे अबरार
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نे (इस ईशार को देख कर) इस्तिफ़सार फ़रमाया :
क्या अपने घरबार के लिये भी कुछ छोड़ा ? अर्ज़ गुज़ार हुए :
“उन के लिये मैं **अल्लाह** और उस के रसूल को छोड़
आया हूँ ।” (मतलब येह कि मेरे और मेरे अहलो इयाल के
लिये **अल्लाह** व रसूल काफ़ी हैं) ।

(سبيل الهدى والرشاد في سيرة خير العباد، الباب الثلاثون في غزوة التبوك - الخ، ج ٥، ص ٢٣٥)

शाइर ने इस जज्बए जां निषारी को यूं नज़्म किया है :	
इतने में वोह रफ़ीके नुबुव्वत भी आ गया	जिस से बिनाए इश्को महब्बत है उस्तुवार
ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ा सरिश्त	हर चीज़ जिस से चश्मे जहां में हो ए' तिबार
बोले हुज़ूर, चाहिये फ़िक्रे इयाल भी	कहने लगा वोह इश्को महब्बत का राज़दार
है तुझ से दीदए मह व अन्जुम फ़रेग़ गीर (1)	है तेरी ज़ात बाड़धे तकवीने रोज़गार
परवाने को चराग है बलबल को फ़ल बस	

صَلُّوا عَلَى الْعَبِيبِ !

(1) ऐं वोह ज़ात कि जिस से चांद और तारों की आंखें रोशनी हासिल करती हैं।

کنجوں سی باتیں کو روئے

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! یہ بات پے شے نجڑ رہے کی دੁਨیوں مالو مतا ابھی اس وکٹ تک آخیڑت کا سامان نہیں بنتا جب تک اسے آخیڑت کے ایرادے سے خرچ ن کیا جائے اور کنجوں آدمی ن بندوں میں نک نام اور نہیں **اللہ عزیز** تھا لہا کے ہاں مکبوبول و ابھی جو ہوتا ہے، کنجوں سی باتیں کا روئے ہے جو لگ جانے کے باہم کبھی نہیں جاتا اور کنجوں مال کو کیسی نک کام کے لیے بھی خرچ نہیں کرتا ہالانکی **اللہ عزیز** تھا لہا کی دی ہرید نے مرتیوں سے خود بھی فاٹدا ٹھانا چاہیے اور دوسروں کو بھی فاٹدا دینا چاہیے یا نہیں خود بھی خانا چاہیے اور فوکرہ و گوربا پر خرچ کر کے آخیڑت کے لیے نکیوں کا جو خیراً ایکٹھا کرنا چاہیے ।

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! خاتونے جننات رضي الله تعالى عنها کی سخاوت پر مुशتمیل ریوایت سے یہ بھی ماں لوم ہوا کی اللہ عزیز والوں کو مالو دلائل کی لالچ نہیں ہوتی جب کی دنیا والوں کو مالو دلائل کی ہر سر ہوتی ہے । جو جاہید مالو دلائل کو پسند کرے وہ ہکیکت میں جاہید نہیں । **اللہ عزیز** تھا لہا کے نک بندے خانے پینے اور مالو ماتا ابھی کے شہدائی نہیں ہوتے، سخاوت کی اسلامت بولند اخڈلاکھ کی سند ہے، سخاوت کرنے سے دushman بھی سر جوکا کر گولام بن جاتے ہیں ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

تیسرا ڈاؤر چوتھا مددنی فلول :

ईشार ڈاؤر خانا خیلانا

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! آپ نے ایک دن میں خواہوں
جنگت کے ایشار و سخاوات کو مولاہجا کیا
اور اس جنم میں اخراج اس و ریاکاری، نجروں میں اور سخاوات
کے بارے میں اہمیت تھیں اور اکٹھاں و افسوس اعلیٰ سہابا
و تابعین سے مددنی فلول چونے کی خوب کوشش بھی کی । آئیے !
اب ایشار اور خانا خیلانے کے معتزلیں کو کچھ مددنی فلول
پیش کیے جاتے ہیں، چنانچہ

ईشار کی تاریخ

دا'�تے اسلامی کے ایشان اعلیٰ ادارے مکتبہ تعلیم مداریا
کے متابوں 44 سفہریت پر مشرک میل رسالے ”مداری کی مछلنی“
سفہری 3 پر شاعر تیریکت، امریکے اہل سمع و سلیمانی دا'�تے
اسلامی ہجرت اعلیٰ مولانا ابوبکر بیل عالم محدث ایلیاس
اعظز اور کادیر رجیبیہ دامت برکاتہم العالیہ ایشار کی تاریخ بیان
کرتے ہوئے فرماتے ہیں : ایشار کا ما'نا ہے : دوسرے کی خواہش
اور حاجت کو اپنی خواہش و حاجت پر ترجیح دینا ।

صلوٰۃ علی الْحَبِیْبِ ! صَلَوٰۃ علیٰ تَعَالٰی علی مُحَمَّدٍ

ایشار کا بحث کے حیثیت جنگت

ہجت اعلیٰ اسلامی ہجرت سیمینا امام محدث ایلیاس
محدث گزالی علیہ رحمۃ اللہ الولی ”ایہ اعلیٰ اسلامی“ میں نکل
پیشکش : مذکور میں اعلیٰ اسلامی ہجرت ایلیاس (دا'�تے اسلامی)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिगर गोशाए रसूल हज़रते
सच्चिदतुना فَتِمْتُعْجَّلِي عَنْهَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की हऱ्याते मुबारका
और सीरते तथ्यिबा का हर पहलू बेश बहा कमालात और अनमिट
खुसूसियात का मज़हर है । दीने इस्लाम की बेलौष खिदमत,
नसबी व इज़िदवाजी व दीनी रिश्तों से बे पनाह महब्बत और
अवलाद की बेहतरीन तरबियत आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के बेहतरीन
अख्लाक का एक हिस्सा है । आ'ला अक़दारे इन्सानी का तहफ़ुज़,
ख़ल्के खुदा की खैर ख़्वाही, बे कसों और बेचारों की चारागरी
आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के नुमायां अवसाफ़ में से है । इस खैर ख़्वाही,
चारा-गरी और फ़रियाद-रसी की एक झलक बयान के इब्तिदाई
वाकिए में आप मुलाहजा फरमा चुकी हैं ।

ईषार व सखावत दो वस्फ़ हैं : अपनी ज़रूरत के सिवा
को ख़ैरात करना “सखावत” और ज़रूरत का भी ख़ैरात
कर देना “ईषार” कहलाता है। दीगर अवसाफ़े हमीदा के साथ

ساتھِ ایشار و سخاوات جیسی خوبیوں مें بھی ہجڑتے ساییدتُونا فَاتِیْمَا نے اکِ ایمیتیا جی شانو مکام پا�ا اور جب بھی ان دو خوبیوں کے ایجھار کا ماؤکھ ا آयا اپنی جڑھر کا سامان سائلوں کو اٹھا کیا، مگتوں کا دامن برا اور بھوکوں کو خانا خیلایا، جیسا کی

ईشار و سخاواتے فَاتِیْمَا

خُتَّیبِ پاکستان، واڈجے شیریٰ بیان ہجڑتے اُلّاما مولانا مُحَمَّد شافیٰ اُوكاڈھی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں : “سफینے نوہ” ہیسے دُوپُم، سفہ 33 پر نکل فرماتے ہیں : ہجڑتے ساییدتُونا اُبُدُللاہ اینے اُبُواس رضی اللہ عنہما فرماتے ہیں : بنی سُلَیْم میں سے اک شاخہ نے بارگاہِ رسالت مآب میں آ کر یون گوستاخی کی : اے مُحَمَّد (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کیا تو وہی جادوگار ہے جس کے معتزلیک مسحور ہے کیا اس کا سایا جمین پر نہیں پڑتا، خودا کی کسما ! اگر یہ خیال نہوتا کی میری کیم مُذکوہ سے ناراج ہو جائی تو میں اس تلواہ سے تera سر ٹڈا دےتا । یہ گوستاخنا کلام سुن کر امیرسل مومینین ہجڑتے ساییدتُونا ڈمر فارُک رضی اللہ عنہ نے آگے بढ کر اس گوستاخ کو سبک سیخانا چاہا مگر ہنوز رہم تعلیل اُلّامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے روک دیا اور اس شاخہ سے فرمایا : تُو آخیزت کے اُجھا سے ڈر اور دوچھا

شانے خواہوں کا جنمات ﴿ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ﴾ ۚ ۝ خواہوں کا جنمات کا فیض و ارشاد

سے خوبی کھا، بُوتون کی پूजा چوڈ دے اور خुداए وہ-دہو
 لा-شاری-ک کی ڈبادت کر، میں جاؤگر نہیں ہوں بلکہ **اللٰہ**
 کے ہوسنے اخْلَاقُ اور مُؤمِنَہ کلام سے مُتَأْمِنَہ ہو کر وہ
 بُوت پرستی ہے اسی وکٹ مُسلمان ہو گیا، اب سرکارے مداری
 نے فرمایا : تیرے پاس کیتا مال ہے ؟ اس
 نے ارجمند کی : یا رسم و رسم خود کی کسی مال !
 بنو سُلَیْمَ میں 4000 آدمی ہیں لے کین اس کبیلے میں مُذکوٰہ سے
 جیسا گریبو میسکین کوئی نہیں ہے । اس نے سہابہ کرام کی ترکی دے کر فرمایا : تیرمیں میں
 سے کوئی اسے ہے جو اسے اک ٹانگ خرید کر دے دے ؟ ہجرتے
 سیمیون سا'د بین ڈبادا نے ارجمند کی : میرے پاس
 اک ٹانگی ہے وہ میں اسے دے دےتا ہوں । فرمایا : کیون ہے جو
 اس کا سر ڈانپ دے ؟ امریکی مُسلمان مولیا مُشیکل کوشہ،
 ہجرتے اُلیٰ یعُلُوم مُرتضیا نے اپنا مُبارک
 یہ ماما ہتھ کر اس کے سر پر رخ دیا । ہجڑا
 نے فرمایا : کیون ہے جو اس کے خانے کا اس وکٹ انٹیجا م کر
 دے ؟ ہجرتے سیمیون فارسی نے اسے دے دیا اور
 چند مکانوں پر گئے لے کین اسی سے کوئی نہ میلا । فرمایا :
 مُسْتَفْعِلٌ ہجرتے سیمیون فاتح مُتужہ رہا کے
 مکان پر ہاجیر ہو کر دروازا خٹ-خٹایا । اس نے

ने पूछा : कौन है ? अर्ज़ की : सलमान (رضي الله تعالى عنه) हूं ।
 फ़रमाया : कैसे आए हो ? आप (رضي الله تعالى عنه) ने सारा माजिरा सुना दिया । येह सुन कर आप (رضي الله تعالى عنه) आबदीदा हो गई और फ़रमाया : ऐ सलमान (رضي الله تعالى عنه) ! उस खुदा की क़स्म जिस ने मेरे बाप को रसूल बना कर भेजा ! आज तीसरा दिन है, घर में सब फ़ाके से हैं मगर तुम दरवाजे पर आ गए हो, खाली कैसे वापस करूँ ? येह चादर ले जाओ और शमऊ़न (رضي الله تعالى عنها) की चादर रख लो और थोड़े से जब कर्ज़ दे दो ।

इस चादर (رضي الله تعالى عنها) को ले कर उस के पास गए और सारा माजिरा बयान किया । शमऊ़न कुछ देर इस रिदाए मुबारका को देखता रहा उसी वक्त उस पर एक कैफ़ियत तारी हो गई और कहने लगा :

ऐ सलमान (رضي الله تعالى عنه) ! वल्लाह येह वोही मुक़द्दस लोग हैं जिन की ख़बर **अल्लाह** तआला ने अपने پैग़म्बर مूसा عليه السلام को तौरेत में दी है, मैं सिद्के दिल से हज़रते सच्चिदतुना **फ़اطिमा** رضي الله تعالى عنها के बाप **مُحَمَّدُرَسُولُلَّا** صلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान लाता हूं ।

येह कह कर उस ने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया । इस के बाद उस ने हज़रते सच्चिदतुना सलमान (رضي الله تعالى عنه) को जब दिये और निहायत अदबो एहतिराम से रिदाए मुबारका वापस कर दी । ख़ातूने जनत (رضي الله تعالى عنها) ने शमऊ़न को दुआए खैर दी और जब पीस कर खाना तय्यार कर के हज़रते سच्चिदतुना

شانے خاطونے جنات (رضي الله عنها) خاطونے جنات کہ ایسا وہ انسان

سالماں فارسی کو دے دی�ا । آپ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ نے اُرجُ کی : اس مें سے کुछ گر کے لیے رخ لیجیے । فرمایا : بس راہے خودا مें دेनے کی نیت سے مانگवाया اور پکाया ہے اب اس مें سے لेना دُرست نहीں । هجرتے ساییدتُونا سالماں اُنہُ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ خانا لے کر بارگاہِ رسالت مें ہاجیر ہو گए اور تمام کیسماں بھی اُرجُ کر دی�ا । آپ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے وہ رُوتی نہ مُسیلم کو اُतا فرمائی اور اپنی نور نجرا ہجرتے ساییدتُونا فاتیما رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا کے پاس تشریف لے گए تو دेखا کہ بُوك سے ان کا چہرہ جرد ہو رہا ہے اور جو ف کے آشام نومایاں ہیں । آپ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے اپنی بُوتی فاتیما رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا کو بیٹا کر تسلی دی اور دعا فرمائی : اے **آلِلٰہ** (غُر وَجَل) فاتیما رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا تیری بندی ہے، تو اس سے راجی رہنا ।

ہمے بُوك رہنے کا اُرائے کی خاتمیر
اُتھا کر دے جبکہ اُتھا یا ایلاہی !

صلوٰعَلیِ الْحَبِیبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

**ساحل کی اُرجُ اُور ساییدتُونا
فاتیما کو سخاوات برآ جواب
پ्यاری پ्यاری اسلامی بہنو ! خاتونے جنات ہجرتے
ساییدتُونا فاتیما رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا کا ایسا وہ انسان**

मुलाहज़ा फ़रमाया कि खुद फ़ाके से हैं, घर में भी खाने को कुछ नहीं मगर सख्तवत व ईषार का ऐसा ज़बरदस्त जज्बा कि ग़रीब नौ मुस्लिम की हाजत रवाई की ख़ातिर क़र्ज़ लेने के लिये अपनी मुबारक चादर गिरवी रखवा रही हैं और जब हज़रते सच्चिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने खाने में से कुछ घर के लिये रखने की अर्ज़ की तो फ़रमाने लगीं : मैं ने येह खाना राहे खुदा में खैरात करने की नियत से पकाया है। एक तरफ़ खातूने जन्नत का पाकीज़ा अमल और दूसरी तरफ़ हमारी हालत। **अल्लाह** अब्बर ! वोह खुद फ़क्रो फ़ाके में रह कर ग़रीबों की हाजतों को पूरा करतीं और हम अपने ही पेट भरने और जो बाकी बच जाए उसे बजाए ग़रीबों फ़कीरों पर खर्च करने के आने वाले वक्त के लिये रख लेती हैं। ऐ काश ! हमें भी ग़रीबों फ़कीरों की हाजत रवाई करने का जज्बा नसीब हो जाए। सच्चिदा फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अगर्चे खुद फ़ाके से रहती थीं, लेकिन इस तंगी व उसरत के आलम में भी अपने पड़ोसियों से ग़ाफ़िل न रहती थीं, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मा'मूल था कि हमसायों की खुबर गीरी करतीं कि कोई भूका तो नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपनी ज़रूरत को भी
ख़ल्के खुदा पर ख़र्च कर देना बल्कि खुद फ़ाके से रह कर भी

भूकों को सैर करना बतूली ईषार की वोह شानदार मिषाल है जिस की हम-सरी तो दर कनार पैरवी करना भी हम जैसों के लिये मुश्किल है, मख्लूक में ईषार व سख़ावत के ह़वाले से बुलन्द तरीन नाम سच्चिदुल असफ़िया, महबूबे खुदा, अहमदे मुज्जबा (صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ) , इन के बा'द नबी की सोह़बत में रहने वालों और नबी के घर वालों का है ।

भूके रह के खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद के घराने वाले !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

ڈمर بین خڑکاب کوہ ہمسار

امीरुल مोअमिनीन حجَّرَتِ سَقِيقَةِ دُمَّرَ بِنِ خَرْكَاب

فَرَمَّا تَهْبِيْكِ نَبِيِّكَرِيمَ، رَسُولَكَرِيمَعليه الأفضل الصلاة والتسليم مُعْذِنَةً اَتِيَّةً دَنَا صَاهِنَةَ تَهْبِيْكِ نَبِيِّكَرِيمَ، رَسُولَكَرِيمَعليه الأفضل الصلاة والتسليم مُعْذِنَةً اَتِيَّةً دَنَا

हाजत मन्द को अःता फ़रमाइये । तो आप फ़रमाते : ये हुद ले कर ग़नी हो जाओ और फिर सदक़ा कर दो, तुम्हें जो माल बिगैर त़म्भ और बिगैर मांगे मिले उसे ले लिया करो और जो न मिले उस के पीछे हुद को न लगाओ ।

(مشکوٰۃ المصالیح، کتاب الزکاۃ، باب من لا تحل له المسألة... الخ، ج ۱، ص ۳۵، الحدیث: ۱۸۲۵)

شَارِهِ مِشْكَاتٍ، هُكَمُولَ عَمَّاتٍ مُعْفَتٍ اَهْمَدَ يَارَ خَنَانَ
نَدِّمِي عليه رحمة الله الغنى “مِرَآتُلَ مَنَاجِيِّهِ” جِلْد ۳ سَفَهَا

60 पर इस हृदीषे पाक की शहर में फ़रमाते हैं : सोहबते पाके मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की येह ताषीर थी कि हज़रते सभ्यिदुना उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सिर्फ़ ग़नी नहीं बल्कि ग़नी तर, ग़नी गर हो गए। मांगना तो क्या बिगैर मांगे आती हुई चीज़ में भी ईशार ही करते हैं और दूसरों को अपने पर तरजीह देते हैं। अपने दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ारस और रूम के ख़ज़ाने मदीना में लाते हैं, तो उस वक्त भी खुद एक क़मीस ही धो धो कर पहनते हैं।

मुफ्ती سाहिब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं :

क्या बे मिषाल ता'लीम है। मक्सद येह है कि जो बिगैर मांगे और बिगैर त़म्भ के मिले वोह रब्ब तआला का अ़तिथ्या है इसे न लेना गोया इस अ़तिथ्ये की बे क़दरी है। दुन्या वालों से इस्तिगूना अच्छा और **अल्लाह** व रसूल का हमेशा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मोहताज रहना अच्छा। मशाइख़े किराम (رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ) मा'मूली नज़राने भी क़बूल कर लेते हैं, इन का माख़ज़ येह हृदीष है फिर क्या ख़ूब फ़रमाया कि तुम खुद ले कर सदका कर दो ताकि तुम्हें लेने का भी षवाब मिले और देने का भी।

صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

سَلَمَانٌ فَارَسِيٌّ كَإِشَّارَةٍ

हज़रते सभ्यिदुना سलमान फ़ारसी का (मदाइन की गवर्नरी में) वज़ीफ़ा 5000 दिरहम था और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ प्रशंकश : नज़रियों अल मदीनतुल इलिया (दाँवते इस्लामी)

تکریبی 30,000 مुسالمانوں کے امیر (گورنر) تھے । آپ کو گھر میں لے گئے لوگوں کو خوبصورت دے کر ایک چوگا پہنھتے (جو کپڑوں پر پہننا جاتا ہے) اس کا کوچھ ہیسسا نیچے بیٹھاتے اور کوچھ اوپر آؤڈ لے تے تھے । جب آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو گھر میں لے کر سدک کا کر دے تو اور خود جنمیل (یا' نی ٹوکریاں) بنانا کر گujara کرتے । (جیلیۃ الازلیاء، ذکر الصحابة من المهاجرين، سلمان الفارسی، ج ۱، ص ۲۵۵، رقم: ۱۲۲)

ہم میں اپنے فوجیوں کو کام سے تُو کر دے

سخاوت کی نے میں اُتھا یا ایسا ہی !

صلوٰۃ اللہ تعالیٰ علیٰ محمد وآلہ وحابیب !

ابو علی دککان کو جذب ایسا رکھا

ہجرا تے ساییدونا ابو علی دککان کو علیہ رحمۃ اللہ الرزاق کو کیسی نے “مرد” میں دا’ват پر بولایا، راستے میں جاتے ہوئے ایک بودھیا کی آواج کو سुنا جو اپنے مکان میں کہ رہی تھی کہ اے **ابوالناج** تُو نے مुझے کषیر اولاد ہونے کے باہم بوجوں فکر کو فکر کا میں مубکلا رکھا ہے آخیز اس میں تیری کیا مسلسل ہوتا ہے؟ آپ اس کے یہ جو ملے سوچنے کے باہم دخانی سے چلے گئے اور جب “مرد” میں اپنے میڈیا کے ہاں پہنچے، تو آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا کہ ایک تباک میں بہت سا خانا بھر کے لے آؤ، یہ سوچ کر ووہ شاخہ بہت خوش ہو گیا اور یہ خیال کیا کہ شاید آپ گھر پر لے جا کر خانا چاہتے ہیں کیونکہ آپ کے گھر پر کوچھ بھی نہ تھا اور جب ووہ میڈیا کے بھر کر

لے آ�ا تو آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ علیہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ اس کو سر پر رکھے ہوئے بُعدِیا کے مکان کی ترکیب چل دیے اور تمام خانا اس کو دے آ� ।

(تذکرۃ الاؤلیاء مترجم)، ابو علی دقاق کے حالات، ص ۳۹۱

ہو مہماں نوازی کا جذبہِ انعام

ہو پاسے شریعتِ اُنہا یاِللہ الہی !

صلی اللہ تعالیٰ علیٰ مُحَمَّدٌ صَلَوَاتُ اللہِ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَلَیِ الْحَبِیْبِ !

ईشार کی ڈالا میسال

سہا بیوی سرکار ہجڑتے ساییدونا سہل بین سا'د
فرماتے ہیں : اک خاتون ہجڑوں اనوار، شفیع رے
مہشار کی بارگاہِ اکڈس میں اک بُردہ لے کر
ہاجیر ہوئی । ہجڑتے ساییدونا سہل بین سا'د نے (ابو ہاجرم سے)
کہا : کیا تुم جانتے ہو، یہ بُردہ کیا ہے؟ ٹھنڈے نے کہا : جی ہاں !
یہ اک چادر ہے جس میں ہاشمی بُنے ہوئے ہیں । ٹھنڈے نے اُرجن
کی : یا رسُولِ اللہ صَلَوَاتُ اللہِ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ میں نے اس کو اپنے ہا�
سے بُنا ہے تاکہ میں آپ کو پہناؤں । آپ صَلَوَاتُ اللہِ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ نے
تسے کبُول فرمایا کہ آپ کو اس کی ہاجت ہے । آپ
ہمارے پاس تشریف لائے تو وہ چادر آپ
کا تہبند ہے اک شکھ نے اس کو تٹولہ
اور اُرجن کی : یا رسُولِ اللہ صَلَوَاتُ اللہِ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یہ چادر مُسٹے

پہننا دیجیے । آپ ﷺ نے فرمایا : हाँ ! (تужھے پہننا ऊँगा) آپ ﷺ जितनी देर **अल्लाह** ने चाहा मजलिस में तशरीफ़ फरमा रहे फिर वापस तशरीफ़ लाए, उस चादर को लपेटा और उस (तलब करने वाले) की तरफ़ भेज दी । लोगों ने उस को कहा : जब तुम जानते हो कि आप किसी साइल को वापस नहीं लौटाते तो तुम ने चादर का सुवाल कर के अच्छा नहीं किया । उस ने जवाब दिया : ﷺ وَاللَّهِ مَا سَأَلْتُهُ إِلَّا لِتُكُونَ كَفِيْ يَوْمَ أُمُّثُ الْعَرْوَجَ كी क़सम ! मैं ने येह मुबारक चादर फ़क़त् इस लिये मांगी है ताकि येह मेरा कफ़न बने । हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द फरमाते हैं : येही मुबारक चादर बा'द में उस शख्स का कफ़ن बनी ।

(صَحِّحُ البُخَارِيُّ، كِتَابُ الْبَلَاسِ، بَابُ الْبَرُودِ وَالْحِبْرَةِ وَالشَّمْلَةِ، مِنْ ۱۲۶۵، الْحَدِيثُ: ۵۸۱۰)

मुझ पर करम हो दावर, इतना बरोज़े महशर
साया फ़िगन हो सर पर, मीठे नबी की चादर
क्या खौफ़ आसियों को, महशर की अब तपश का
साया करेगी सर पर, मीठे नबी की चादर
मुज्दा हो आसियों को, बुशरा हो आसियों को
आई शफ़ीअ़ बन कर, मीठे नबी की चादर

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! ابھی اس سُنْتَفَہ پر بھی
کوئی بہانہ کی خود کو جڑھرتا ہونے کے باہم بوجو دینے کی آ'lā
میسال کا ایسا کرتا ہے سہابی رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُ کو چادر ابھی
فرما دی اور یہ بھی مامُلُم ہوا کی سہابے کیراام عَلَیْہِ الرُّضُوان
کا کیتنا پ्यارا ابکیدا تھا کہ وہ نبی یہ رحمت، شفایہ اور عظمت
سے نیسبت رکھنے والی چیز کو اپنے ساتھ
کبھی میں لے جانے کو اپنے سعادت سماں تھے۔ یہ کیا ان **اعلیٰ اعلیٰ**
کی راہ میں ایسا کہ بے شمار ہے، ایسا کہ فرجیلٹ کے
معاذ اعلیٰ سرکرے جیشان، رحمت اعلیٰ میان کا
کہ فرمائے مگر فیرت نشان ہے: “جو شاخہ کیسی چیز کی
خواہیش رکھتا ہے، فیر اس خواہیش کو روک کر اپنے
ऊپر (کسی اور کو) ترجیح دے، تو **اعلیٰ اعلیٰ** اسے
بکھر دےتا ہے ।”

(كتب العمال،كتاب الموعظ والرقائق والخطب والحكم،الباب الاول في الموعظ والرغبات،ج: ٢،ص: ٣٣٢،الحديث: ٥٠١٣)

واہ ک्या جूदो کرم है शहे बतहा तेरा

“नहीं” सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوَادِتِ بَرِّ الْمَاءِ اہلِ سُنْتِ اَبْلَغَ اِيمَانَهُ اِلَيْهِ اَنْتَ اَنْتَ

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

ایسا رکھی مددگاری بھاڑ

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! ہر نے کی کی ترہ ایسا
کہ بھاڑ بھی **اعلیٰ اعلیٰ** چاہے تو اخیرت میں ابھی فرمائے گا
مگر بآج اکھیاں دنیا کے اندر بھی اینہاں میل جاتا ہے،

شانے خواہیں جنگات (رضی اللہ عنہما) ۳۔ خواہیں جنگات کے ایک دوست و مددگار

मषलन कोई मुश्किल आसान हो गई, अच्छा ख़बाब नज़र आ गया, मदीने शरीफ़ का वीज़ा मिल गया। एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली इसी तरह की एक मदनी बहार मुख्तसरन पेशे ख़िदमत है, चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 28 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “पुर अस्मार भिकारी” सफ़हा 28 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा مولانا अबू بिलाल, مُحَمَّدِ اِلْيَاسِ اَتْتَارِ كَادِيرِ رَجُلِيِّ دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّ نक़्ल फ़रमाते हैं : बम्बई के एक अलाके में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की तरफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ (पीर शरीफ़ 22 सफ़रुल मुज़फ़र सि. 1428 हि. ब मुताबिक़ 12- 3- 2007) के इख़िताम पर एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुमशुदगी की शिकायत की। ज़िम्मेदार इस्लामी बहन ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की। वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को मदनी माहोल से वाबस्ता हुए अभी तक़रीबन सात ही माह हुए थे, उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि “**क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी कुरबानी भी नहीं दे सकती !**” ब इस्रार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और खुद पा बरहना (या’नी नंगे पाऊं) घर चली गई। रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी !

پیشکش : مراجیعی میں اعلیٰ مذکور تعلیمی (دا'वتے اسلامی)

ک्या دेखती है कि سرकारे नामदार, मदीने के ताजदार
 اپना चांद सा चेहरा चमकाते हुए جलवा फ़रमा
 हैं, नीज़ एक मुअम्मर मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी सर पर सब्ज़
 सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए क़दमों में हाज़िर हैं। सरकारे मदीना
 के लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई रहमत के
 फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईषार
 करते वक्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ “क्या दा'वते
 इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी कुरबानी भी नहीं दे सकती !”
 हमें बहुत पसन्द आए। (इलावा अर्ज़ी भी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ये ह भी याद रहे ऐसी
 चीज़ ईषार करना ज़ियादा अफ़ज़ल है कि जो हमें खुद पसन्द हो।
 जैसा कि पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 92 में
 इरशादे खुदाए रहमान है :

لَنْ تَأْلُوا الْبَرَّ حَتَّىٰ تُتْقِنُوا مِمَّا
 تَرْجِمَ إِنْجِيلَ إِيمَانَكُمْ : تُمْ
 هَرَغِيْزِ بَلَائِيْزِ كَوْ نَ يَهُونْ^{٩٢} (١٠، عِمْرَنْ :)

हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब
 तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़
 न ख़ेर्च करो ।

आयते मुबारक वरी तफ़्सीर

سدارل اف़اج़िل हज़रते अल्लामा مौलाना سعید
 हाफ़िज़ मुफ़्ती مُحَمَّد نَبِيْرِ مُحَمَّدِ نَبِيْرِ مُحَمَّدِ
 ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत नक़ल फ़रमाते
 हैं : (हज़रते سعیدुना) हसन (बसरी) का कौल

है : जो माल मुसलमानों को महबूब हो और उसे रिजाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाखिल है ख़्वाह एक खजूर ही हो । (تفسیرِ کبیر، پ ۲، ج ۳، ص ۲۸۹، اآل عمران، تحت الآیة: ۹۲)

दे ज़ज्बा तू ऐसा तेरे नाम पर दूं
पसन्दीदा चीज़ें लुटा या इलाही !
صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

अस्लाफे उम्मत आईनाँ कुरआनो सुन्नत थे

हमारे अस्लाफे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ لِلنَّاسِ कुरआनो सुन्नत पर किस क़दर अ़मल पैरा थे कि एक चीज़ की खुद को त़लब होने और तलाशे बिस्यार (या'नी काफ़ी ढूँडने) के बा'द मिलने के बावूजूद दूसरे को ईषार कर देने की आ'ला मिषाल क़ाइम फ़रमाते । अपने अन्दर ईषार का ज़ज्बा बेदार करने के लिये शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी 44 دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ का سफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला “मदीने की मछली” का मुतालआ कीजिये । तरगीब के लिये इसी रिसाले से एक रिवायत पेशे ख़िदमत है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ बीमार थे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को भुनी हुई मछली खाने की ख़्वाहिश हुई । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ फ़रमाते हैं : तलाशे बिस्यार (या'नी बहुत ज़ियादा तलाश करने) के बा'द मुझे

ڈدھ دیرہم کی ایک مछلی مداری نے مونہوا میں مل گई، میں نے اسے بھون کر خیدمتے سارا پا سخاوات میں پेश کر دی، اس نے میں ایک سائل آگئا، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا : نافع ! یہ مछلی سائل کو دے دو । میں نے ارجمند کی : آپ کو اس کی بडی خواہش تھی اس لیے کوشش کر کے یہ مداری کی مछلی میں نے خریدی ہے، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اسے تناول فرمایا لیجیے، میں اس مछلی کی کمیت سائل کو دے دتا ہوں । فرمایا : نہیں، تुम یہ مछلی ہی اس کو دے دو । چنانچہ میں نے وہ مداری کی مछلی سائل کو دے دی اور فیر پیچے جا کر اس سے خرید لی اور آ کر ہاجیر کر دی، ارشاد فرمایا : یہ مछلی اسی سائل کو دے دو اور جو کمیت اس کو ادا کی ہے وہ بھی اسی کے پاس رہنے دو । میں نے سرکاری مداری سے سुنا ہے : جو شاخ کیسی چیز کی خواہش رکھتا ہے، فیر اس خواہش کو روک کر اپنے اوپر (کیسی اور کو) ترجیح دے، تو **اعوجَلَ** اسے بخواہ دeta ہے ।

(احیاء الغلوّم، کتاب کسر الشهوتین بیان طریق الیاضہ فی کسر شهوت البطن، ج ۳، ص ۱۱۵)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلٰى الْحَبِيبِ !

رَبِّيَّا الْأَدْبَرِيَّا كَوْنِيَّا

دا'ватے اسلامی کے ارشادی ادارے مکتبتوں مداری کی متابوں 649 سفہاً پر مुشتمیل کتاب “ہیکایتے اور نسیہتے” سفہا 119 پر مубالیگے اسلام ہجرتے

ساییدتُونا شیخ شوئےب هریفیش رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرما تے ہے : ہجڑتے ساییدتُونا رابیا ادِ دِ ولیا نے ننگے پاٹ پیدل بیتللہاہ شریف کا ہج کیا । **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَ عَنْهُ ۔ اُن کو جو بھی خانا اٹا فرماتا اُس کو ایشار کر دئیں । کا'بَہ مُرشَّفَہ پہنچتے ہی بہوشا ہو کر گیر پڈیں । ہوشا میں آنے کے با'د اپنے رُخْسَار کو بیتللہاہ شریف پر رکھ کر اُرجُہ کی : “ یہ ترے بندوں کی پناہ گاہ ہے اور تو اُن سے مہبّت کرتا ہے اب تو آنکھوں میں آنسو ختم ہے گاہ ہے । ”

(اَنْوَنِ الْفَاقِعِ، اجْلِسُ الثَّمَنِ فِي ذِكْرِ حَجَّ بَيْتِ اللَّهِ الْعَرَمِ، ص ۶۰)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

ایشار کرنے والی مام

دا'वتے اسلامی کے ایسا اُتی ادارے مکتبتوں مداریا کی متابوں 188 سफھات پر مُشرتمیل کتاب “ تاریخیتے اکوالاد سفہا 61 پر ہے : اُنمُول مُوامِنِنِ ہجڑتے ساییدتُونا اُس ایسا سیدھیکا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فرماتی ہے کہ میرے پاس اک میسکین اُئر ر آئی جس کے ساتھ اُس کی دو بُنیاں بھی ہیں । میں نے اُسے تین خجروں دیں । اُس نے ہر اک کو اک خجور دی اور اک خجور خود خانے کے لیے اپنے مُون کی ترکھ ٹھائی تو اُس کی دوں بُنیاں اُس کی بھی خواہیش کرنے لگیں تو اُس نے وہ خجور بھی دو ٹوکڈے کر کے اپنی دوں بُنیاں کے درمیان تکسیم کر دی ।

مुझے اس واکٹے سے بہت تاًجِ جُوب ہو، میں نے رسمیت
اکرام، نورِ مُوجِ سسماں ﴿ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ ﴾ کی بارگاہ میں اس اُورت
کے ایشارہ کا بیان کیا تو آپ ﴿ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ ﴾ نے فرمایا :
“**‘اَللَّا حُكْمُ لِلَّهِ الرَّحِيمِ’** تاًلَّا نے اس (ایشارہ) کی وجہ سے اس اُورت
کے لیے جنات کو واجب کر دیا ।”

(صَحِيفَةِ مُسْلِمٍ، کتاب البر والصلة بباب فضل الاحسان الى البنات، ص ۱۰۲، الحدیث: ۲۶۳۰)

صَلَّوَا عَلَى الْحَمِيرِ !

اپنا خانا کوٹے پر ایشارہ کر دیا !

ہذا رتے ساییدونا امام ابُو کاسیم اُبُدُل کریم بین
ہوا جُون کوشاہی فرماتے ہیں : ہذا رتے ساییدونا
اُبُدُللاہ بین جا'فَر عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِی اپنی کیسی جُمیں کو
دے�نے نیکلے اور اپنائے راہ (یا 'نی راستے میں) کیسی باغ میں
उترے، وہاں اک گولام کو کام کرتے دेखا، جب اس کے پاس
خانا آیا تو کہیں سے اک کوٹا بھی آ پہنچا، گولام نے اک
اک کر کے ۳ روٹیاں اس کے آگے دالیں، وہ خا گیا । ہذا رتے
ساییدونا اُبُدُللاہ بین جا'فَر عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر نے گولام سے
پूछا : آپ کو دین میں کیتنा خانا میلتا ہے ؟ اُرْجُ کی :
وہی جو آپ نے دेखا : پूछا : تو آپ نے کوٹے پر کیوں ایشارہ کر
دیا ؟ اُرْجُ کی : اس اُلَّا کے میں کوٹے نہیں ہوتے، یہ کہیں دُر سے
آ نیکلتا ہے، گریب بُوکا ثا، مुझے یہ گوارا ن ہو، کی میں سے
ہو کر خاک اور یہ بے چارا بے جِبَان جانور بُوکا رہے ।
فرمایا : آپ آج کیا خا اے ؟ اُرْجُ کی : فُکا کر رہا ।

ہجڑتے ساییڈونا ابُدُلّلٰہ بین جا'فِر علیہ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَكْبَرِ ۖ اُس گولام کے ایشار سے بے ہد موت ایشور ہوئے، چوناں باغ کے مالیک سے وہ باغ، گولام اور بکھری سامان و گیرا خرید لیا، گولام کو آزاد کر کے وہ باغ و گیرا سب کو ٹسی کو بخش دیا ।

(الرسالۃ الفشنیریۃ، باب الجود والاسخ، ص ۲۸۳، ملخصاً)

صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰی الْحَسِيبِ !

ईشार کا یقاب مुफ्त لूटنے کے نुसخے

کاش ! ہمें بھی ایشار کا جذبہ نسیب ہو جائے، اگر خُرچ کرنے کو جی نہیں چاہتا تو بیگیر خُرچ کے بھی ایشار کے کई موارکے اُ میل سکتے ہیں । مثالن کہیں دا'ват پر جانا ہو، سب کے لیے خانا لگایا گیا تو ہم ڈمدا بُوٹیاں و گیرا اس نیت سے ن ٹھاٹے کی ہماری دوسری اسلامی بہنےں ان کو خا لئے । گاری میں کمرے کے اندر کرہی اسلامی بہنےں سونا چاہتی ہیں، خود پانچے کے نیچے کبجہ جمانے کے بجائے دوسری اسلامی بہنےں کو ماؤکہ اُ دے کر ایشار کا یقاب کما سکتی ہیں । اسی ترہ بس یا ریل گاڑی کے اندر بھی ڈکی سورت میں دوسری اسلامی بہن کو ب اسرا ر اپنی نیست پر بیٹا کر اور خود خडے رہ کر، کار میں سافر کا ماؤکہ میسرا ہونے کے باعث ڈمدا دوسری اسلامی بہن کے لیے کوئی بنا دے کر اسے کار میں بیٹا کر اور خود پیدل یا بس و گیرا میں سافر کر کے، سونتوں بھرے ایجتیمیا اُ و گیرا میں آرام دے جگہ میل جائے تو دوسری اسلامی بہن کے لیے جگہ کوشادا کر کے یا اسے وہ جگہ پیش کر کے، خانا

कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो खुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी तरह के बे शुमार मवाकेअ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तकलीफ़ दे कर मुफ़्त में ईषार का षवाब कमाया जा सकता है ।

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَبِيبِ !
صَلَوةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

خیلानے پیلانا نے کہ اُج़ری مُعْذشان ۷۷

پ्यारी پ्यारी इस्लामी बहनो ! سਹਿਯਦਾ ਖਾਤੂਨੇ ਜਨਤ ਫਾਕੋਂ ਕੇ ਬਾ ਵੁਜੂਦ ਅਪਨਾ ਖਾਨਾ ਈਧਾਰ ਫਰਮਾ ਦੇਤੀ ਥੀਂ ! ਮਗਰ ਅਪਸੋਸ ! ਅਹਲੇ ਬੈਤੇ ਨੁਭੁਵਤ ਕੀ ਮਹਬਵਤ ਕਾ ਦਮ ਭਰਨੇ ਕੇ ਬਾ ਵੁਜੂਦ ਹਮ ਅਪਨੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਕਾ ਕੁਜਾ, ਬਚਾ ਖੁਚਾ ਖਾਨਾ ਭੀ ਕਿਸੀ ਕੋ ਪੇਸ਼ ਕਰਨੇ ਕੇ ਬਜਾਏ ਆਧੁਨਦਾ ਕੇ ਲਿਯੇ ਫ੍ਰੀਜ਼ ਮੌਨ ਮੌਨ ਰਖ ਛੋਡਤੇ ਹਨ । ਯਕੀਨ ਮਾਨਿਯੇ ! ਭੂਕਾਂ ਕੋ ਖਾਨਾ ਖਿਲਾਨਾ ਔਰ ਪਾਸਾਂ ਕੋ ਪਾਨੀ ਪਿਲਾਨਾ ਬਡੇ ਷ਵਾਬ ਕਾ ਕਾਮ ਹੈ । ਇਸ ਜਿੰਮ ਮੌਨ ਮੌਨ ਦੇ ਫਰਾਮੈਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ (صَلَوةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰيْہِ وَآلِہِ وَسَلَّمَ) ਮੁਲਾਹਜ਼ਾ ਹੋਂ :

﴿1﴾.... ਜੋ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕਿਸੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੋ ਭੂਕ ਮੌਨ ਖਾਨਾ ਖਿਲਾਏ, ਤੋ **اَللّٰهُ** عَزٌّ وَجَلٌ ਉਸੇ ਬਰੋਜੇ ਕਿਧਾਮਤ ਜਨਤ ਕੇ ਫਲ ਖਿਲਾਏਗਾ ਔਰ ਜੋ ਕਿਸੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੋ ਪਾਸ ਮੌਨ ਪਾਨੀ ਪਿਲਾਏ, ਤੋ **اَللّٰهُ** عَزٌّ وَجَلٌ ਉਸੇ ਬਰੋਜੇ ਕਿਧਾਮਤ ਮੋਹਰ ਵਾਲੀ ਪਾਕ ਵ ਸਾਫ਼ ਸ਼ਰਾਬ ਪਿਲਾਏਗਾ ਔਰ ਜੋ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕਿਸੀ ਬੇ ਲਿਬਾਸ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੋ ਕਪਡਾ ਪਹਨਾਏ, ਤੋ **اَللّٰهُ** عَزٌّ وَجَلٌ ਉਸੇ ਜਨਤ ਕੇ ਸਬਜ਼ ਕਪਡੇ ਪਹਨਾਏਗਾ ।

(جامع الترمذی، کتاب صفة القيامة والرقائق والورع، ص ۱، الحدیث: ۲۲۳۹)

﴿٢﴾.... जो किसी मुसलमान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो ﴿اللّٰهُمَّ إِنِّي عَوْجَلٌ عَوْجَلٌ﴾ उसे जनत में उस दरवाजे से दाखिल फूर्माएगा जिस में से उस जैसे लोग ही दाखिल होंगे ।

(**النَّعْجُمُ الْكَبِيرُ الْلَّطِيْرَانِيُّ**، باب الميم، معاذ بن جبل الانصارى الخ، ج ٨، ص ٢١٨، الحديث: ١٦٥٨٩)

खिलाने पिलाने की तौफीक दे दे

पए शाहे कर्बो बला या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

ੴ ਰਹਮਤੇ ਫੁਲਾਹੀ ਕਰੇ ਵਾਜਿਬ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਭ੍ਰਾਮਲ

(**المَعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلْطَّيْرَانِيِّ**، كتاب الصدقات، الترغيب في اطعام الطعام ورسق الماء... الخ، ص ٣٢٠، الحديث: ٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

जरा गौर कीजिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाकिअ़ात के तनाजुर में अगर हम अपनी हालत पर गौर करें तो अगर्चें अश्याए ज़रूरत को भी खैरात कर देना और बारे कर्ज तले दब कर हाजत मन्दों

کی ہاجت رવائی کرنا ہم پر لاجیم نہیں لے کिन ک्यا ہم جڑھت سے جاید اشیا کو سدکا و خیرات کرنے کا جہن رختے ہیں یا مजید کے ہی چککار میں رہتے ہیں، بچ جانے والा خانا پڑیج کرتے ہیں یا خیرات؟ مسٹھنک کو مال سے نواجتے ہیں یا ڈینکیوں سے؟

سہابا و اہلے بیتے اتھار بیل خوسوس ہجڑتے سایدتوں فاتیما رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے ہنگامہ و سخاوت کی ترکیب نجڑ کیجیے اور اپنی ہاں لاتے جاں کو بھی دیکھیے۔ خود ہی باجہ ہو جائے کہ اسلامکے ڈممات سے مہبوبت کے ہمارے دا'وے میں کیتنی جان ہے؟ سیف خیرات ن کرنے کی ہی بات نہیں، افسوس بالا افسوس تو یہ ہے کہ ہمارے معاشرے میں افساد کی اک ایسی تا'داد میڈود ہے جو دوسروں کے سامنے دستے سووال دراج کرنے میں ثکتے ہیں ن شرماتے ہیں۔ بے مروجعیتی اس ہدایتک بندی ہے کہ ما'مولی سی چیز بھی مانگ مانگ کر اسی مال کرتے اور سووال کر کر کے گزرا کرتے ہیں۔

شنبے ترکت، امریکے اہلے سونت، بانیوے دا'وے اسی ہجڑتے اعلیٰ مولانا ابوبکر بیل محدث ایلیاس اعلیٰ کاری رجیب داماٹ برکاتہمُ العالیہ نے اس پور فیضن دائر میں آسانی سے نئکیاں کرنے اور گناہوں سے بچنے کے ترکیوں پر مسٹھنک شریعت و ترکت کا جامع مجموعاً (اسلامی بہنوں کے لیے) ب نام “63 مدنی انسانیت” ب سورتے سووالات اعلیٰ فرمایا ہے،

चुनान्वे मदनी इन्द्राम नम्बर 22 में है : क्या आज आप
ने घर के अफ़राद के इलावा (कपड़े, फोन, ज़ेवरात वगैरा) चीजें
दूसरों से मांग कर तो इस्त'माल नहीं कीं ? ” यक़ीनन दूसरों से
सुवाल करने से बचने वाले लोग हर एक की निगाह में क़ाबिले
क़द्र ठहरते हैं जैसा कि शैखُ مُسَلِّمُوْدीन سا'दी शीराज़ी
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي نे एक हिकायत नक़्ल की है कि अ़रब के मशहूर
और बहुत बड़े सख़ी हातिम ताई से किसी ने पूछा : क्या तूने
अपने से ज़ियादा किसी को हिम्मत व हौसले वाला देखा है ?
जवाब दिया : हाँ ! एक दिन मैं ने 40 ऊंट ज़ब्द कर के अ़रब के
मालदारों को मदऊ़ किया । इस दौरान मेरा गुज़र एक जंगल की
तरफ़ से हुवा तो देखा कि एक ग़रीब व मुफ़िलस शख़स जो मुझे
नहीं जानता था लकड़ियां जम्म़ करने में मशगूल था, मैं ने उसे
मुख़ातब करते हुए कहा : ऐ भले इन्सान ! हातिम ताई के घर
शहर भर के लोग जम्म़ हैं और दा'वत खा रहे हैं, तुम अपनी
रोटी के लिये यहां मेहनत व मज़दूरी कर रहे हो ? उस ग़रीब
लेकिन क़ानेअ़ व मुअ़ज़ज़ शख़स ने जवाब दिया : जो अपनी
मेहनत से रोटी कमाता है उसे हातिम ताई जैसे उमरा की मिन्त
नहीं करनी पड़ती । हातिम ताई ने कहा : “हक़ येह है कि मैं ने
इसे अपने से ज़ियादा बा हिम्मत व जवां मर्द देखा ।”

(حکایاتِ سعدی (مُتَرَجَّمٌ)، ص ۱۵۶)

صَلَّوَ عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमारे सामने खुली किताब की तरह है कि इस मदनी माहोल के पैग़ाम को लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी कबूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआशरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दल दल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी ف़ातِिमा (رضي الله تعالى عنها) की दीवानियां बन गईं और अपनी साबिक़ा गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर न सिर्फ़ खुद नेकियां करने वाली बल्कि दूसरों को भी नेकियों की तरगीब देने में मशगूल हो गईं। तरगीब के लिये एक ऐसी ही मदनी बहार मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे

बेटी की इस्लाह का राज़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़हा 281 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले سुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ एक मदनी बहार तहरीर फ़रमाते हैं : पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब (खुलासा) है कि मेरी बेटी फ़िल्मों-डिरामों और बे पर्दगियों वगैरा गुनाहों की आलूदगियों

मैं अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हों को बरबाद कर रही थी, मैं उस की हरकतों से बेहद परेशान थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देती। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ्तावार सुन्तों भरे इजतिमाअः में शिर्कत करती थी और इजतिमाअः में मांगी जाने वाली दुआओं की क़बूलिय्यत के वाक़िआत भी सुना करती थी। चुनान्चे एक मरतबा मैं ने दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले ग्यारहवीं शरीफ के इजतिमाएँ ज़िक्रो ना'त में अपनी बेटी की इस्लाह के लिये गिड़-गिड़ा कर दुआ मांगी। मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी दा'वते इस्लामी की मुबलिलगा बने। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मेरी दुआ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी तरह इस्लामी बहनों के हफ्तावार सुन्तों भरे इजतिमाअः में शारीक होने पर रिजामन्द हो गई। उस ने जब शिर्कत की तो इतनी मुतअष्विर हुई कि बस दा'वते इस्लामी ही की हो कर रह गई। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** तरक़क़ी की मंज़िलें तै करते करते (ता दमे तहरीर) मेरी बेटी हल्क़ा ज़िम्मेदार की हैषिय्यत से सुन्तों की ख़िदमतों में मशगूल है।

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया

छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(سَامَانَ بَرِخِيشَ اَبْرَجَ مُفْتِنَيْ اَبْرَجَ هِنْدَ)

صَلُوَاعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

پ्यारी پ्यारी इस्लामी बहनो ! دا'वते इस्लामी के سुन्नतों
 भरे इज्तिमा आत में रहमतें क्यूँ नाज़िल न होंगी कि इन आशिकाते
 रसूल और आक़ा की दीवानियों में न जाने कितनी **अल्लाह**
 ﷺ की मुक़र्रब बन्दियां होती होंगी । मेरे आक़ा आ'ला हज़रत
 ﷺ عَزَّوَجَلَّ فُतावा رज़िविय्या جिल्द 24 سफ़हा 184 पर فُرمाते
 हैं : जमाअत में बरकत है और दुआए मज्मा॑ मुस्लिमीन अक़्बर ब
 क़बूल (या'नी मुसलमानों के मजमउ में दुआ मांगना क़बूलिय्यत के
 क़रीब तर है) । उँ-लما फُرمाते हैं : जहां चालीस मुसलमान
 سालेह (या'नी नेक) जम्म होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह
 ج़रूर होता है । (الْتَّيْسِيرُ شَرْحُ جَامِعِ الصَّفِيرِ حِرْفُ الْهَمَزَةِ، ج ۱، ص ۱۱۰)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

پانی پीनے के 13 مددगاری فूल

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा :-

❖ ऊंट की तरह एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल पढ़ो और फ़राग़त पर कहा करो (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) (تirmidzi, ج ۳، ص ۳۵۲، الحدیث: ۱۸۹۲)

❖ नबिय्ये अकरम نے बरतन में सांस लेने या इस में फूँकने से मन्थ फ़रमाया है । (ابوداؤد، ج ۳، ص ۳۷۲۸، الحدیث: ۳۷۲۸)

मुफ़सिसरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान इस हडीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो (या'नी सांस लेते वक्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूँकों से

شانے خواہوں کا جنمات | رَبُّ الْمُنْتَهٰ | ۳۔ یعنی جنمات کے فیض و انسانیات

ठंडا ن کرو بलک کुਛ ٹھہرے، کہدے ٹंڈی ہو جائے فیر پیو ।

(میرآت ج. 6 ص. 77) اولबत्तا دُرُلَدِ پاک وَغَرَ پَدَ کر بَنِيَتَ شِفَاءَ پانی پار دم کرنے میں ہرج نہیں ﴿ پینے سے پہلے بِسْمِ اللَّهِ پادھ لیجیے ﴾ چوس کر چوتے چوتے ہنگٹ پیو، بادھ بادھ ہنگٹ پینے سے جیگر کی بیماری پیدا ہوتی ہے ﴿ پانی تین سانس میں پیو ﴾ بیٹھ کر اور سیधے ہاث سے پانی نوش کیجیے ﴿ لوتے وَغَرَ سے وَعْدَ کیا ہو تو اس کا بچا ہووا پانی پینا 70 مرج سے شیفَاءَ ہے کیا یہ آبے جم جم شریف کی مुشاہدہ رخبتا ہے، ان دو (یا'نی وعده کا بچا ہووا پانی اور جم جم شریف) کے ایلاوا کوئی سا بھی پانی خدھے خدھے پینا مکرلہ ہے । (ماخوذ از فتویٰ رجیلیہ، ج. 4 ص. 575، ج. 21 ص. 669)

یہ دوں پانی کیبلہ رہ ہو کر خدھے خدھے پیو ﴿ پینے سے پہلے دेख لیجیے کیا پینے کی شے میں کوئی نुکسان دے چیز وَغَرَ تو نہیں ہے ﴾ (اتحاف السادة للریبی، ج. ۵، ص ۵۹۲) ﴿ پی چونے کے با'د الحمد لله کہیے ﴾ ہنچتول اسلام ہجرت سیمیڈنہ امام مسیح بن مسیح بین مسیح بن مسیح گذالی علیہ رحمۃ اللہ العالیٰ فرماتے ہیں : پادھ کر پینا شوراً کرے پہلی سانس کے آخیر میں ﴿ دوسرے کے با'د الحمد لله رب العالمین ﴾ اور تیسرا سانس کے با'د الحمد لله رب العالمین ﴾ । (احیاء العلوم، ج ۲، ص ۸) پادھ ﴿ ﴾

﴿ گلاس میں بچے ہوئے مسلمان کے ساپ سوثرے ڈوٹے پانی کو کابیلے ایسٹ مال ہونے کے باعث ڈھوڈھا مخواہ فیکنا نہ چاہیے ﴾ منكول ہے ﴿ یا'نی مسلمان کے ڈوٹے میں شفاءَ سُورُ المؤمن شفاءَ ﴾ (کشف الخفاء، ج ۱ - ص ۳۸۳) ﴿ پی لئے کے چند لامبے کے با'د گذالی گلاس کو دेखو گے تو اس کی دیواروں سے بھ کر چند کھڑے پہنچے میں جمٹھے ہو چکے ہوئے ٹھنڈے بھی پی لیجیے ।

बयान नम्बर ६

ख़ातूने जन्मत

का

निकाह् व जहेज़्

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعُلَمٰءِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلٰامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرُسٰلِيْنَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ طَبِسِمُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ط

خواں نے جاناتا کہ نیکاہ و جاہز

دُوسرہ شریف کرنی فرجیلٹ

دا'वتے اسلامی کے ایشاؤتی ادارے مکتبتوں میں دینا
 کی متابوں 397 سفہات پر مسٹر میل کتاب “پردے کے بارے
 میں سوال جواب” سفہ 1 پر شیخ ترمذی، امام ریاضی اہل
 سمعن، بانی دین دا'�تے اسلامی حضرت ابوبکر صلی اللہ علیہ وسلم
 بیلال، مسیح مسیح ایضاً ابوزار کا دری رجیبی
 دوسرے پاک کی فرجیلٹ نکل فرماتے ہیں : حضرتے عبادتیں
 کا 'ب' نے ارجی کی، کی میں (سارے ورد، وجوہ، دعاء،
 چوڈ دوں اور) اپنا سارا وکٹ دوسرد خوانی میں سرفہ کر رہا
 سرکارے میں دینا نے فرمایا : “یہ تو مسٹری
 فیکر کو دو کرنے کے لیے کافی ہوگا اور تو مسٹری
 مسٹر کو دیے جائے । ”

(سنن الترمذی، ابواب صفة القيامة والرقائق والورع، باب ما جاء في صفة اولى الحوض، من ۵۸۳، الحديث رقم ۲۲۵۷)

صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ ! صلوا علی الحَبِيبِ !

بَرَكَاتُهُ دُعْنَدُو سَلَامٌ

शारे हे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी “عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ” मिरआतुल मनाजीह² जिल्द 2, सफ़हा 103 पर इस हडीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : या’नी (हज़रते सच्चिदुना उबय्य बिन का’ब^{رضي الله تعالى عنه} ने अर्ज़ की, कि मैं) सारे वज़ीफे दुआएँ छोड़ दूँगा सब की बजाए दुरुद ही पढ़ूँगा क्यूंकि अपने लिये दुआएँ मांगने से बेहतर येह है कि हर वक्त आप^{صلى الله تعالى عليه وسلم} को दुआएँ दिया करूँ (जिस के जवाब में सरवरे काएनात^{صلى الله تعالى عليه وسلم} ने कैसी प्यारी बिशारत से नवाज़ा) या’नी अगर तुम ने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी दीन व दुन्या दोनों संभल जाएंगी, दुन्या में रंजो ग़म दफ़अ होंगे, आखिरत में गुनाहों की मुआफ़ी होगी ।

इसी बिना पर ड़-लमा फ़रमाते हैं कि जो तमाम दुआएँ वज़ीफे छोड़ कर हमेशा कषरत से दुरुद शरीफ पढ़ा करे तो उसे बिग़ेर मांगे सब कुछ मिलेगा और दीनो दुन्या की मुश्किलें खुद ब खुद हल होंगी । पता लगा कि हुज़ूर^{صلى الله تعالى عليه وسلم} पर दुरुद पढ़ना दर हक़ीक़त रब्ब^{عز وجل} से अपने लिये भीक मांगना है । हमारे भिकारी हमारे बच्चों को दुआएँ दे कर हम से मांगते हैं हम रब्ब^{عز وجل} के भिकारी हैं, उस के हबीब^{صلى الله تعالى عليه وسلم} को दुआएँ दे कर उस से भीक मांगें, हमारे दुरुद से हुज़ूर^{صلى الله تعالى عليه وسلم} का भला नहीं होता बल्कि हमारा अपना भला होता है, इस तक़रीर से ये ह^{صلى الله تعالى عليه وسلم} पर हर

वक्त रहमतों की बारिश हो रही है तो इन के लिये दुआए रहमत करने से फ़ाइदा क्या ? शैख़ अब्दुल हक़ (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) फ़रमाते हैं कि मुझे अब्दुल वहाब मुत्तकी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيِ) जब भी मदीना (رَأْدَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا) से वदाअ़ करते तो फ़रमाते कि सफ़ेरे हज़ में फ़राइज़ के बा'द दुर्लद से बढ़ कर कोई दुआ नहीं, अपने सारे अवकाश दुर्लद में घेरो और अपने को दुर्लद के रंग में रंग लो ।

(مرأة المناجح، كتاب الصلاة، باب الصلوة على النبي ﷺ وفضلها، الفصل الثاني، ج ٢، ص ١٠٣، ملتقاً)

ਵਿਰੇਂ ਲਕ ਹਰ ਦਮ ਦੁਰਲਦੇ ਪਾਕ ਹੋ

या शहे अरबो अजम ! चश्मे करम

(वसाइले बख्खिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत س. 229 دامت بر کافم العالیه)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सव्यदा फ्रातिमा का निकाह

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ فَرَمَاتِهِ هُنَّا سَبَقَتْهُمْ حِلَالُهُمْ
 हृज़रते सच्चिदुना शोऐब हरीफीश १५
 جب آسمانے رسالت پر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) १६
 فُرْتِی‌مَا का आफत्ताबे हुस्नो जमाल चमका और उफुके
 अञ्जमतो जलाल पर आप (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) का बदरे कमाल तुलूअ़
 हुवा, तो नेक ख़स्लत ज़ेहनों में आप (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) का ख़याल
 आया, मुहाजिरीन व अन्सार के मुअज्ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह
 दिया। लेकिन रिज़ाए इलाही व क़ज़ाए खुदावन्दी के साथ मख्सूस
 ज़ाते अक़दस (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) ने जवाबन इरशाद फ़रमाया :
 “मैं खुदाई फैसले का मुन्तज़िर हूं।”

और हज़रते رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سَلَّمَ سَلَّمَ اسْتَدِعَ دُنَانَ الْأَبْرَارِ وَأَنْجَاهُمْ مِنْ أَنْ يَرَوُنَ الْمَنَاطِقَ الْمُنْكَرِ وَأَنْ يَرَوُنَ الْمَنَاطِقَ الْمُنْكَرِ وَأَنْ يَرَوُنَ الْمَنَاطِقَ الْمُنْكَرِ وَأَنْ يَرَوُنَ الْمَنَاطِقَ الْمُنْكَرِ

ਅਬੂ ਬਕਰ ਵਾਲਾ ਤੁਮਹਾਰੀ ਸਥਿਤੀ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਜਾਣਗੀ

एक दिन हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ، और हज़रते رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उमर फ़ारूक़ के आ'ज़म सच्चिदुना साद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिदे नबवी शरीफ मस्जिदे नबवी الصَّلَاةُ وَالسَّلَامٌ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامٌ में तशरीफ़ फ़रमा थे कि हज़रते सच्चिदुना फ़तिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का ज़िक्रे खैर चल निकला तो हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “तमाम मुअ़ज़ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया और आप ने इन्कार करते हुए येही इरशाद फ़रमाया : येह मुअ्मला **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَ के सिपुर्द है।” लेकिन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ नहीं किया और न ही इस का तज़किरा किया। इस की वजह मेरे ख़याल में उन की गुर्बत हो सकती है। हमें हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास चल कर उन से शहज़ादिये रसूल (رضي الله تعالى عنه) का मुअ्मला ज़िक्र करना चाहिये और अगर वोह तंगदस्ती को वजह बनाएं तो उन की मदद करनी चाहिये। फिर येह सब हज़रते वाला इज़ज़त

हज़रते सच्चिदुना अलियुल मुर्तजा^{كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ} की तलाश में चल दिये, पता चला कि वोह इस वक्त किसी अन्सारी के बाग में उजरत पर ऊंटों के ज़रीए पानी निकालने में मसरूफ हैं। वहां जब मुलाक़ात हुई तो हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ} ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! (बात ये है कि) कुरैश के मुअज्ज़ज़ीन ने बिन्ते रसूल के लिये पैग़ामे निकाह दिया लेकिन हुज़ूर ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ} ने ये ह कह कर लौटा दिया कि “ये ह मुआमला **अल्लाह** ^{غَرَّ حَلَّ} के सिपुर्द है ।” और (हम देखते हैं कि) आप हर अच्छी आदत से कामिल तौर पर मुत्तसिफ़ हैं और हुज़ूर सच्चिदे अलम ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ} के क़राबत दार भी हैं, मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** ^{غَرَّ حَلَّ} व रसूल ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ} ने इन का मुआमला आप के लिये रोका हुवा है। रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सच्चिदुना अलियुल मुर्तजा^{كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ} की आंखें अश्कबार हो गईं और फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र ! ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ} गुर्बत ने मुझे इस से रोक रखा है ।” हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ} ने फ़रमाया : ऐ अली ! ऐसा न कहो ! **अल्लाह** ^{غَرَّ حَلَّ} और उस के रसूल ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ} के नज़्दीक दुन्या और जो कुछ इस में है, उड़ते गुबार की मानिन्द है ।

(الرُّؤُوصُ الْفَائقُ، المجلس الثامن والرابعون في زواج على ابن أبي طالب بفاطمة... الخ، ص ٢٧٥، ملخصاً)

अस्लाफे किराम का मुबारक शिअ़ार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने मुसलमान बहन भाई की ज़रूरत का एहसास करना और इस ज़रूरत की तक्मील के लिये हत्तल इमकान दामे दरमे क़दमे सुख़ने (या'नी रूपिये पैसे जान और ज़बान हर तरह से) मदद करना और मदद की नियत करना हमारे अस्लाफे किराम का मुबारक शिअ़ार है। और इन मुबारक हस्तियों का वतीरा रहा है कि दीनी व नसबी तौर पर ख़्वाह कितना ही फ़ज़लो शरफ़ अ़त़ा हो जाए अपना बोझ खुद ही उठाया जाए और मेहनते शाक़क़ा की तकलीफ़ गवारा कर के खुद अपनी दुन्यावी ज़रूरिय्यात पूरी करने का सामान किया जाए। बारगाहे रिसालत के तरबियत याफ़तगान के कुलूब व अज़हान में येह बात रासिख़ हो चुकी थी कि दीने इस्लाम दुन्या और अस्बाबे दुन्या को अहमिय्यत नहीं देता बल्कि रिज़ाए इलाही और क़ज़ाए खुदावन्दी के आगे सरनिगूँ होना (या'नी सर झुकाना) सिखाता है और बताता है कि दुन्यावी जाहो हश्मत (या'नी इज़ज़त व शौकत) और सीमो ज़र (या'नी मालो दौलत) की हैषिय्यत ढलती छाऊँ और उड़ते गुबार की सी है। निगाहे इस्लाम में इज़ज़तो क़बूलिय्यत का मदार तक़वा व इख़लास पर है। इसी बिना पर इन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ने हज़रते सच्चिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ का हौसला बढ़ाया और बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अपना मुद्दआ पेश करने का मश्वरा दिया।

سخی دُونا اُلیٰ کی بارشًا ہے رسالت میں حاجی ری

حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا أُلِيلِيَّ يُولَ مُورْتَجَا^{کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم}
 اپنے کام سے واپس آ کر حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا عَمَمْ سَلَمَا
 حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا عَمَمْ سَلَمَا رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا کے گھر کی ترکھنی چل دیئے، دروازا خٹ-خٹایا،
 حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا عَمَمْ سَلَمَا رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا نے پُوچھا : کیا نے تو
 سرکارے اُلیٰ وَاللهُ وَسَلَّمَ نے صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کے تاجدار
 ایرشاد فرمایا : “उठो اور دروازا خوں, یہاں کوہ ہے جن سے **अल्लाह** اور **उस کا رसूل** عَزَّ وَجَلَ مہبbat کرتے ہیں اور یہ بھی **उन سے مہبbat کرتے ہیں ।**”
 حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا عَمَمْ سَلَمَا رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا نے اُرجُح کیا : “میرے
 مامان بابا اپا پر کوربانا ! یہ کیا ہے ؟” تو اپا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ نے ایرشاد فرمایا : “یہ میرا بارڈ ہے اور مुझے ساری مخملک سے بढ کر پیارا ہے ।” حَمْرَةِ جَرَتْ سَخِيَّ دُونَا عَمَمْ سَلَمَا فرماتی ہے : “میں اس تے جڑی سے **उठی** کی چادر میں **उلیخانے** لگی�ی ہیں । میں نے دروازا خوں
 تو دیکھا کہ حَمْرَةِ جَرَتْ اُلیٰ رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ہے، آپ رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ہے، اپا کیا اور سامنے بیٹھ گئے اور جمین کوئندنے لگے گویا کوئی کہنا چاہتے ہیں لیکن ہی کا پردہ **ہائیل** ہے ।”

سراکارے مداری، راہتے کلبو سینا، فیجِ گنجیں
 نے ایاد فرمایا : “**اے اُلیٰ!** (رضی اللہ تعالیٰ عنہ)
 کوئی کام ہے تو بتاؤ، ہمارے ہم تھاڑی ہر ہاجت پوری
 ہوگی !” ہجرتے سیمیون اُلیٰ علیہ وآلہ وسلم کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم
 نے اُرج کی : “**یا رسُولِ اللہ!** (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرے مام بآپ
 آپ پر کوربان ! آپ جانتے ہیں کہ آپ نے
 مुझے اپنے چچا اور چچی فاطمہ بنتے اس سد سے لیا، میں اس
 وکٹ اک نا سماں بچھا ہا۔ آپ نے میری رہنوماہ فرمائی،
 مुझے ادب سیخا ہا، مुझے شایستہ (شیخ) یا نبی با اخلاق کا
 بنایا !” آپ نے مुझ پر مام بآپ سے بند کر
 شافع کت و اہسان فرمایا، **اللہ** نے آپ
 کے جریءے مुझے ہدایت بخشی ہا۔ **یا رسُولِ اللہ!**
 آپ ہی دنیا و آخیرت میں میرا وسیلہ
 اور جگہی رہے، اور میں یہ پسند کرتا ہوں کہ **اللہ**
 آپ کے جریءے میری پوشت پناہی اس ترہ فرمائے کہ میرا
 بھی اک بھر اور بیوی ہو، میں جس میں چنہ ہاسیل کرں۔ لیہا جا
 میں آپ کی بارگاہ میں آپ کی شہزادی فاطمہ
 کے لیے نیکاہ کا پیغام لے کر ہاجیر ہو گا ہوں ।

(الرؤُضُ الفائق، المجلس الثامن والأربعون في زواج على ابن أبي طالب بفاطمة... الغ، ص ۲۵، ملخصاً)

ਸ਼ਾਨੇ ਮੁਖਤਫ਼ਾ ਵ ਅੜਜਮਤੇ ਮੁਰਤਜਾ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत से शाने मुस्तफ़ा, इल्मे गैबे मुस्तफ़ा, शफ़्क़त व एहसाने मुस्तफ़ा और अ़ज़मते अ़लियुल मुर्तज़ा के मुअ़त्तर व मुअ़म्बर मदनी फूल चुनने को मिलते हैं। **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब को दरो दीवार के पीछे का भी इल्म था कि वहां कौन है ? अमीरुल मोअमिनीन, मौला अ़ली मुश्किल कुशा हज़रते सच्चिदुना अ़लियुल मुर्तज़ा ^{صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} ने हाजिर हो कर अपने करीम, मोहसिन व मुरब्बी⁽¹⁾ आक़ा ^{صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} के एहसानात और शफ़्क़तों का तज़किरा किया। नबवी तरबियत से हमें येह मदनी फूल चुनने को मिला कि सिलए रेहमी, हुस्ने सुलूक और अच्छी ता'लीमो तरबियत का एहतिमाम महबूबे रख्वुल इज़ज़त की मुबारक सुन्नत है। और एहसान लेने वाला अपने मोहसिन के एहसानात को याद रखे और उस का वफ़ादार व शुक्र गुज़ार रहे। मज़ीद बरआं⁽²⁾ महबूबे रहमतुल्लिल आलमीन, अमीरुल मोअमिनीन, मौला अ़ली मुश्किल कुशा हज़रते सच्चिदुना अ़लियुल मुर्तज़ा ^{صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} की शाने अ़ज़मत निशान कि महबूबे खुदा, हबीबे किब्रिया ^{صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} ने इन को अपना महबूब क़रार दिया। इस्लाम व सहाबिय्यत का शरफ़ ही बहुत बड़ी नेमत है, इस के साथ अगर बारगाहे रिसालत में मक्कूलिय्यत व महबूबिय्यत का मुज्द ए जांफिज़ा⁽³⁾ मिल जाए तो उस मुकद्दर के सिकन्दर के क्या कहने !!!

(1)..... या'नी तरबियत फूमाने वाले (2).... या'नी इस से बढ़ कर

(۳) یا' نی جان کو خوش کرنے والی خوش خبری

مُرْتَज़ा شेरे हक्‌, اشْجَعُ الْأَشْجَعِين्	سماکیے شیرے شربت پے لاخوں سلام
اس्तلے نسلے سफا, बजहے وسلے खुदा	बابے فوجلے ولایت پے لاخوں سلام
شےरے شمشیرے جن, शाहे खैबर शिकन	پرتવے دستے کुदرات پے لاخوں سلام

(हदाइके बखिराश अज़ इमामे अहले سُنْنَةٍ)

शहें कलामे रज़ा : हज़रते सथियदुना अ़्लियुल मुर्तज़ा

كَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ **अल्लाह** के शेर और बहादुरों में सब से बड़े बहादुर हैं, दूध और शरबत से मेहमान नवाज़ी करने वाले हैं दरे करार पर लाखों سلام हों। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ालिस पाक सादात की बुन्याद हैं, वासिले बिल्लाह (या'नी **अल्लाह** का मुकर्रब) होने का सबब और फ़ज़ाइले विलायत मिलने का दरवाज़ा हैं, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर लाखों سلام नाज़िल हों। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तलवार चलाने वाले बहादुरी में शेर की मिल, खैबर का दरवाज़ा तोड़ने वाले और **अल्लाह** के यदे कुदरत का पर्तव हैं, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर लाखों سلام का नुजूल हो।

(सुखने रज़ा, स. 373 ता 376, मुलख़्बसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आस्मान पर निकबह और फ़िरिश्तों की बारात

हज़रते सथियदुना उम्मे سالمा فَرَمَّاتِي رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का चेहरए अन्वर खुशी रहमतुल्लिल आलमीन का चेहरए अन्वर खुशी व मसरत से खिल उठा। फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ हज़रते

شانے خواہوں کا جنگل (رضی اللہ عنہا) خواہوں کا جنگل کا ویکھاہد جوہر

अलियुल मुर्तजा को देख कर मुस्कुराए और इस्तप्सार (या'नी दरयापत) फ़रमाया : “ऐ अली ! (رضي الله تعالى عنه) ! क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जिस से तुम फ़ातिमा का हक्के महर अदा कर सको ?” हज़रते सभ्यिदुना अलियुल मुर्तजा ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! आप पर मेरी हालत पोशीदा नहीं, मेरे पास मेरी ज़िरह⁽¹⁾ तलवार और पानी भरने के लिये एक ऊंट के सिवा कुछ नहीं । तो दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल ने इरशाद फ़रमाया : “अपनी तलवार से तो तुम **अल्लाह** की राह में जिहाद करोगे लिहाज़ा इस के बिगैर गुज़ारा नहीं और ऊंट से अपने घर वालों के लिये पानी भर कर लाओगे और सफ़र में भी इस पर अपना सामान लादोगे, लेकिन ज़िरह के बदले में, मैं अपनी बेटी का निकाह तुम से करता हूं और मैं तुम से खुश हूं और ऐ अली ! तुम्हें मुबारक हो कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ज़मीन पर फ़ातिमा (رضي الله تعالى عنها) से तुम्हारा निकाह करने से पहले आस्मान में तुम दोनों का निकाह कर दिया है और तुम्हारे आने से पहले आस्मानी फ़िरिश्ता मेरे पास हाजिर हुवा जिस को मैं ने पहले कभी न देखा था । उस के कई चेहरे और पर थे, उस ने आ कर कहा : आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَسْلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ! को मुबारक मिलन और पाकीज़ा नस्ल की बिशारत हो ।”

(1)... फ़ैलाद का जालीदार कुर्ता जो लड़ाई में पहनते थे । (फ़िरेजुलुग़ात, स. 789)

پیشکش : مراجیعی میں اعلیٰ محدثین کی ترجیح دیلیکتیا (ڈاً واتے ایمسانی)

فیر ہجڑتے ساخیدنوا جیبریل نے آ کر سلام

اُرجُّ کیا اور مुझے بتایا کि “�ا رسول اللہ علیہ السلام
اللہ عزوجل نے دُنیا پر نجڑے رہمات فرمائی اور آپ
 کے لیے اک ہبیب، بھائی اور دوست مُنْتَخَبٌ
 رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرمایا کہ اس کے ساتھ آپ کی بُنیٰ ہجڑتے فاتیما
 کا نیکاہ فرمایا ہے۔ اور **اللہ عزوجل** نے ساری جناتوں
 اور ہُرِوں کو آرائتا و پیرائتا ہونے، شاجرے تُوبا کو جے‌وارات سے
 مُعْجَّل ہونے اور ملائکا کو چُوٹے آسمان میں بُنیٰ مُور
 کے پاس جمیع ہونے کا ہُوكم دیا ہے اور ریجِوانے جنات
 نے **اللہ عزوجل** کے ہُوكم سے بُنیٰ مُور کے
 دروازے پر میمبارے کرامت رخ دیا ہے۔ یہ وہی میمبار ہے
 جب **اللہ عزوجل** نے ہجڑتے آدم کو تمام
 اشیا کے نام سیخا ائے تو ہُرِوں نے اس پر خُوبیا دیا تھا ।”

فیر **اللہ عزوجل** کے ہُوكم سے اس میمبار پر راہیل
 نامی فیرشتو نے **اللہ عزوجل** کے شاپنے شان عس کی ہندو
 پنا کی تو آسمان فرہت و سُرور سے ڈھونڈ ٹھا۔ ہجڑتے
 جیبریل نے ماجد یہ بھی بتایا کि **اللہ عزوجل**
 نے مुझے وہی فرمائی کि “میں نے اپنے مہبوب باندے
 اُلیٰ کا نیکاہ اپنی مہبوب باندی اور
 اپنے رسول کی بُنیٰ فاتیما (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) سے کر دیا
 ہے، تُو اس کا اُکدے نیکاہ کر دو ।” پس میں نے اُکدے
 نیکاہ کر دیا اور اس پر فیرشتو کو گواہ بنایا اور

اللٰہ نے شاجرے تُبَا کو ہُکم دیا کہ وہ اپنے جِو رَجَلْ کے ساتھ ملائکا اور ہُرُونَ نے سب جِو رَجَلْ کی چُن لیتے اور وہ کیا مات تک یہ جِو رَجَلْ اک دُوسرے کو توہفے میں دتے رہنگے اور **اللٰہ** نے مُذکوہ ہُکم دیا ہے کہ بارگاہے رسالات میں یہ پئی گا م پھونچا دُون کی جِنمیان پر ہُجَّرَتے فَاتِیْمَا کی شادی ہُجَّرَتے اُلیٰ یُولِ مُرْتَجَا سے کر دیجیے اور ہُجَّرَتے فَاتِیْمَا کو دو اُسے شاہزادوں کی بیشاپت بھی اُٹھا کر دیجیے جو انْتِیْهَای سُوْثَرَے، عَمْدَہ خَسَّاَیْلَ (یا' نی اُدَادَت) و فَجَّاَیْلَ کے ہَامِیْلَ، پاکیجَا فِتَرَت اور دُو نوں جہاں میں بھلائی وَالے ہوں گے ।

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! اسلام پر نیکاہ کی تکریب اور بُتُل مَا' مُرُ⁽¹⁾ میں فِریشتوں کی بارات فَاتِیْمَا بُتُل اور مَحْبُوبَ اَر سُوْلَ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) کا ہی خَسَّاَسَا (یا' نی خَسَّاَسَ وَسَفَ) ہے ।

فیر مککی مدنی سُلطان، رہمتے اُلِمِ ایمان، سرکرے دو جہاں نے ایسا د فرمایا : “اے اُلیٰ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) میں تु مہارے مُوت اُلیٰ کو ہُکمے ایلاہی نافیج کر رہا ہے، تु م مسجد میں پھونچ جاؤ، میں بھی آ رہا ہے । میں لوگوں کی مُؤْجودگی میں تु مہارا نیکاہ کر سکتا تھا اور وہ فَجَّاَیْلَ بیان کر سکتا تھا جیسے تھا اُنھوں نے دُنیا کے

(۱) بُتُل مَا' مُرُ فِریشتوں کا کیبلہ ہے । کا' بے مُعْجَزَّمَا کے سُکَابِل ساتھیں اسلام کے اوپر ہے । ” (مرا جانی، کتاب الفہاری، بصریح کا بیان، ج ۸، ص ۱۳۲) ”

حَمْرَةٌ سَبِيلٌ مُرْتَجٰاً
عَلَى صَاحِبِها الصَّلوةُ وَالسَّلامُ

كَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ
سے
इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं बारगाहे रिसालत से
जल्दी से निकला और मैं खुशी की शिद्दत की वजह से खुद-रफ़्ता
हो गया । जब रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ
लाए तो उन का चेहरा खुशी से दमक रहा था । आप
ने (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) को हुक्म
फ़रमाया की वोह मुहाजिरीन व अन्सार को बुलाएं । जब सब
लोग जम्मु हो गए तो आप نे (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّمَ) मिस्बरे अक़दस
पर जलवा अफ़रोज़ हो कर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हम्दो षना की
और इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानो ! अभी अभी हज़रते जिब्रीले
अमीन मेरे पास आए और येह ख़बर दी कि **अल्लाह**
ने बैतुल मा'मूर के पास मलाइका को गवाह बना कर मेरी
बेटी फ़तिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का निकाह अळी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)
से कर दिया है ।” और मुझे भी हुक्म फ़रमाया है कि मैं ज़मीन पर
इन का निकाह कर दूँ । मैं तुम सब को गवाह बनाता हूँ कि मैं ने
अपनी बेटी का निकाह अळी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) से कर दिया है । फिर
हुज़र नबिये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम
ने (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) हज़रते सच्चिदुना अळी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّمَ)
खुत्बा निकाह पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।

خُوتْبَةُ نِكَاحٍ

حَمْرَةٌ سَبِيلٌ مُرْتَجٰاً
عَلَى صَاحِبِها الصَّلوةُ وَالسَّلامُ

كَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ
ने खड़े हो कर येह खुत्बा पढ़ा :

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَشُكْرًا لِنَعْمٰهِ وَأَيَادِيهِ أَشْهَدُ أَنَّ لَا إِلٰهَ إِلٰهٌ مِّنْهُ وَهُدًى لَا شَرِيكَ لَهُ
وَلَا شَبِيهَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ نَبِيُّهُ الْبَيْتُ وَرَسُولُهُ الْوَجْهُ وَصَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَعَلَى الٰٰهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَبَنِيهِ صَلَادَةً دَائِمَةً تُرْضِيهِ
تَرْجِمَا : सब ता'रीफे **अल्लाह** के लिये हैं और उस के इनआमात
व एहसानात पर उस का शुक्र है, मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** उर्ग़ و جل
के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह यक्ता (अकेला) है, उस
का कोई शरीक व मिष्ल (या'नी उस जैसा) नहीं और गवाही देता हूँ
कि (हज़रते सच्चिदुना) **मुहम्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के ख़ास बन्दे
और रसूल हैं, उस के मोअ़ज़ज़ नबी और अज़्यीमुशशان रसूल हैं, इन
पर और इन के आल व अस्हाब, अज़्वाजे मुत्हहरात और अवलादे
अतःहार **अल्लाह** رَبُّ الْعَالَمِينَ عَلَيْهِمُ الْأَمْرُ पर **अल्लाह** की ऐसी दाइमी
रहमत हो जो हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को खुश कर दे (आमीन) ।

इस के बाद फ़रमाया : “निकाह **अल्लाह** ﷺ के عَزَّ وَجْلَ^{عَزَّ وَجْلَ} हुक्म पर अमल है और उस ने इस की इजाजत दी है, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी शहजादी हज़रते फ़तिमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का निकाह मुझ से कर दिया है और मेरी इस, ज़िरह को ब तौरे हक़्के महर⁽¹⁾ मुक़र्रर फ़रमाया है। हाजिरीन ने मुबारक बाद देते हुए कहा : “**अल्लाह** ﷺ आप के जोड़े में बरकत व इन्तिफ़ाक अंता फ़रमाए ।”

(1) खातूने जनत हज़रते सम्बिदतुना फ़ातिमतुज़्हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हक़्के महर के मुतअल्लिक मुख्तलिफ़ अक़वाल हैं। तमाम अक़वाल में नफीस तत्बीक देते हुए आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान فَرِمाते हैं : “अस्ल महरे करीम जिस पर अ़क़दे अक़दस वाकेअ हुवा चार सो मिष्क़ाल (तक़्रीबन 150 तोले) चांदी थी व लिहाज़ा उ-लमाए सियर ने इस पर जज्म फरमाया ।” (फतवा रज़िविया, जि. 12, स. 155)

سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﷺ

सत्यिदुना कानूनात का जहेज़

हज़रते सत्यिदुना अलियुल मुर्तज़ा
 करम اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم
 इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी ज़िरह ली और बाज़ार में हज़रते
 सत्यिदुना उषमाने ग़नी رضي الله تعالى عنه को 400 दिरहम में फ़रोख़त
 कर दी । जब मैं ने दिरहमों पर और उन्होंने ज़िरह पर क़ब्ज़ा कर
 लिया तो मुझ से फ़रमाने लगे : “ऐ अली (رضي الله تعالى عنه) क्या
 अब मैं ज़िरह का और आप दराहिम के हक़दार नहीं ?” मैं ने
 कहा : क्यूं नहीं । तो कहने लगे : “फिर ये हज़रते सत्यिदुना
 अलियुल मुर्तज़ा फ़रमाते हैं : मैं ने ज़िरह
 और दराहिम लिये और रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلّم की ख़िदमते
 अक़दस में हाज़िर हो कर हज़रते सत्यिदुना उषमान رضي الله تعالى عنه
 के हुस्ने सुलूक की ख़बर दी तो आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلّم ने उन्हें
 दुआए ख़ैरो बरकत से नवाज़ा । फिर हज़रते सत्यिदुना अबू बक्र
 सिद्दीक़ رضي الله تعالى عنه को बुला कर उन्हें (मुट्ठी भर) दिरहम दिये
 और फ़रमाया : “इन दराहिम के इवज़ फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها के
 लिये मुनासिब अश्या ख़रीद लाओ ।” हज़रते सत्यिदुना सलमान
 फ़ारसी और हज़रते सत्यिदुना बिलाल رضي الله تعالى عنه को ख़रीदी
 हुई अश्या उठाने में मदद के लिये साथ भेजा । हज़रते सत्यिदुना

ابو بکر سیدیکؑ ایرشاد فرماتے ہیں : مुझے ہужور نبیyyے پاک ﷺ نے 63 دیرہم اُتھا فرمائے، میں نے رُدّ سے برا ہوا موتے کپڈے کا بیسٹر، چمڈے کا دسٹر خُوان، چمڈے کا تکیا جس مें خجूر کے پत्तے برے ہوئے، پانی کے لیے اک ماشکیڑا اور کوڑا (یا'نی مٹی کا آبکھُرَا) اور نرم ٹن کا اک پردہ خُریدا । فیر میں، ہجرتے سلمان اور ہجرتے بیلال (رضي الله تعالى عنهم) نے ٹوڈا ٹوڈا کر کے وہ سامان ٹھا لیا اور آپ ﷺ نے دेखا تو رونے لگے اور آسمان کی جانیب نیگاہ ٹھا کر اُرْجُ کی : “**اے البلاح** عَزَّوَجَلَّ اسے لوگوں کو اپنی رحمت سے نوازِ جن کا شیआں (یا'نی تریکا) ہی تੁڑ سے ڈرنا ہے ।”

(الرؤُصُ الفَالِقُ، المجلس الثامن والاربعون في زواج على... الخ، ص ٢٧٥ ت ٢٧٦، ملخصاً)

صلوٰ عَلَى الْحَبِيبِ !
صلوٰ عَلَى الْحَبِيبِ !

خاتونے جنات کی جہوچ کی مञ्जूم ⁽¹⁾ تفسیل

مُفْسِسِ الرَّحْمَةِ شَهِيرٌ، هُكْمِيُّ مُولَى عَمَّا يَعْمَلُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ نے شاہزادیے کوئین، والیدانہ هسنائے خان نईمی کے جہوچ کی تفسیل نج़م مें لیखی ہے، مولانا ہجا فرمایا اور تاریخیں ہاسیل کیجیے ।

(1).... اشآر مें لیخا ہوا کلام ।

फ़ातिमा ज़हरा का जिस दिन अ़क्द था
एक चादर सतरह पैवन्द की
एक तौशक ⁽¹⁾ जिस का चमड़े का गिलाफ़
जिस के अन्दर ऊन, न रेशम, रुई
एक चक्की पीसने के वासिते
एक लकड़ी का प्याला साथ में
और गले में हार हाथी दांत का
शाहजादी सच्चिदुल कौनैन की
वासिते जिन के बने दोनों जहां
उस जहेजे पाक पर लाखों सलाम
सुन लो ! उन के साथ क्या क्या नक्द था
मुस्तफ़ा ने अपनी दुख्तर को जो दी
एक तकिया, एक ऐसा ही लिहाफ़
बल्कि इस में छाल खुर्म ⁽²⁾ की भरी
एक मशकीज़ा था पानी के लिये
नुकरई कंगन ⁽³⁾ की जोड़ी हाथ में
एक जोड़ा भी खड़ाऊं ⁽⁴⁾ का दिया
बे सुवारी ही अली के घर गई
उन के घर थीं सीधी सादी शादियां
साहिबे लौलाक पर लाखों सलाम

(علیه رحمةُ اللہِ عَلَيْہِ وَسَلَّمَ) (دیوارے سالیک ارجوں کی مولیٰ حضرت مسیح موعود صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ ! کرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَخَيْرُهُ الْكَرِيمُ هِجَرَتْ سَفِيْدُنَا اَلْلِيْغُولْ مُرْتَاجَا

इरशाद फ़रमाते हैं : आप ﷺ ने बक़िया दिरहम हज़रते सच्चिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हवाले कर दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन दराहिम को अपने पास रखो ।” फिर एक महीने तक शर्मों हऱ्या के बाइष में आप ﷺ की ख़िदमत में हाजिर न हुवा । जब कभी अकेले में आप سे मुलाकात होती तो आप ﷺ

(1) रुई दार बिस्तर (2) खजूर के दरखत का छिलका

(3) कलाई में पहनने वाला चांदी का जेवर (4) लकड़ी की जूती ।

इरशाद फ़रमाते : ऐ अळी (رضي الله تعالى عنه) मैं ने तुम्हारा निकाह
उस के साथ किया है जो तमाम जहानों की औरतों की
सरदार है । (الرؤُصُ الْفَالِقُ، المجلس الثامن والاربعون فِي زواج عَلَى—الخ، ص ٢٧٧)

जहेज़ कैसा और कितना हो ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मछ्डूमए काएनात
जहेज़ का जहेज़ क़दर सादा और मुख्तासर था, और
जो दिया गया मौलाए काएनात की तरफ़ से इस का
भी मुतालबा न था, इस में उम्मत के लिये दर्स व रग्बत है कि
कषीर और पुर तकल्लुफ़ जहेज़ का एहतिमाम ज़रूरी नहीं और
न ही लड़के वाले इस का मुतालबा करें, येह सुन्नत जिस क़दर
सादगी से अदा की जाए बेहतर है, जैसा कि दा'वते इस्लामी के
इशाअती इदरे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर
मुश्तमिल किताब “जनती ज़ेवर” सफ़हा 153 पर शैखुल
हडीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी
तहरीर फ़रमाते हैं : “मां-बाप कुछ कपड़े, कुछ
ज़ेवरात, कुछ सामान, बरतन, पलंग, बिस्तर, मेज-कुरसी, तख़ा,
जाए नमाज़, कुरआने मजीद, दीनी किताबें वगैरा लड़की को दे
कर सुसराल भेजते हैं येह लड़की का जहेज़ कहलाता है । बिला
शुबा येह जाइज़ बल्कि सुन्नत है क्यूंकि हमारे हुज़ूर
ने भी अपनी प्यारी बेटी हज़रते बीबी फ़तिमा
जहेज़ में कुछ सामान दे कर रुख़सत फ़रमाया था लेकिन याद रखो
कि जहेज़ में सामान का देना येह मां-बाप की महब्बत व

शपकृत की निशानी है और उन की खुशी की बात है। मां-बाप पर लड़की को जहेज़ देना येह फ़र्ज़ी वाजिब नहीं है। लड़की और दामाद के लिये हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं कि वोह ज़बरदस्ती मां-बाप को मजबूर कर के अपनी पसन्द का सामान जहेज़ में वुसूल करें, मां-बाप की हैषिय्यत इस क़ाबिल हो या न हो मगर जहेज़ में अपनी पसन्द की चीज़ों का तक़ाज़ा करना और उन को मजबूर करना कि वोह क़र्ज़ ले कर बेटी-दामाद की ख़्वाहिश पूरी करें, येह ख़िलाफ़े शरीअत बात हैं बल्कि आज कल तिलक जैसी रस्म मुसलमानों में भी चल पड़ी है कि शादी तै करते वक्त ही येह शर्त लगा देते हैं कि जहेज़ में फुलां फुलां सामान और इतनी इतनी रक्म देनी पड़ेगी, चुनान्चे बहुत से ग्राहीबों की लड़कियां इसी लिये बियाही नहीं जा रहीं हैं कि इन के मां बाप लड़की के जहेज़ की मांग पूरी करने की ताक़त नहीं रखते येह रस्म यक़ीनन ख़िलाफ़े शरीअत है और जब्रन क़हरन (या'नी बज़ेर) मां बाप को मजबूर कर के ज़बरदस्ती जहेज़ लेना येह ना जाइज़ है। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दें।” (जन्नती ज़ेवर, रुसूमात, स. 153 ता 154)

صَلُّوا عَلَى الْحُسَيْبِ !

بِينَتِهِ اَعْتَادَ كَوْ جَاهِزْ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो शादी-बियाह के मौक़अ पर होने वाली इन ना जाइज़ रुसूमात से इजतिनाब करते हैं : इन में

نومایاں نام شیخے تریکھت، امریروں اہلے سُنّت، بانیے دا' کتے
 اسلامیٰ حجرا رتے اُلّالاما مولانا ابو بیلالم مُحَمَّدِ ایلیاس
 اُٹھار کا دیری دامت برکاتہم العالیہ کا ہے: آپ شادی
 بیوہ کی خوشی میں ہونے والی بہوہ تکریبًا ت و رسمات کو
 ن سیف خود نا پسند کرتے ہیں بلکہ دیگر مسلمانوں کو بھی
 ان گوناہوں برے مُعاً ملماں سے ایجادناہ کی شافعیت آمدے
 تاکہ د فرماتے رہتے ہیں: امریروں اہلے سُنّت نے
 اپنی اکلائی بیٹی کی شادی بھی سادگی کو ملحوظ رکھتے ہوئے
 ان سُنّت کے مُتعابیک کرنے کی کوشش فرمائی تھی۔ امریروں
 اہلے سُنّت نے اک مدانی مُزاجا کرے میں کوچھ یون
 ارشاد فرمایا: میں نے پوری کوشش کی، کہ حجرا رتے ساییدتُونا
 فاطمہ صَلَّى اللہُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ کو رَضِيَ اللہُ تَعَالَى عَنْہَا نے جو جو
 انایت فرمایا اس کی پرکی کی جائے ।

واسیتے جن کے بنے دوئوں جہاں

عن کے گھر ثُریٰ سیधی سادی شادیاں

उس جھے جے پاک پر لاخوں سلام

ساحبے لعلک پر لاخوں سلام

(دیوانے سالیک اجڑی ہکیمیل عتمت مُفسی احمدیہ یار خان (علیہ رحمۃ الرحمٰن)

محلن مشكیجڑی، گھوں پیس نے والی ہا� کی چکری،
 نوکری (یا' نی چاندی کے) کنگان پے ش کیے، اسی ترہ کی
 دیگر چیزوں کیتابوں سے دेख کر جو جو میوسر ایسا ہے: چڑائی،
 میٹی کے برتان اور خجور کی چال برا چمڈے کا تکیا گیرا

(सुनते निकाह, क्रिस्त. 3, स. 44)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

सत्यिदा प्रातिमा की लख्सती

سے ہجڑتے فاتحہ کے مुتاثلیک رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہَا صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ سے ہجڑتے فاتحہ کے مارے جانے والے اور اُنہوں کی بات کرتی ہے کہ (یہ معاشر میں) مردی کی نیکتت ڈیورتوں کی باتیں جیسا دا معاشر ہوتی ہے । ” وہ واپس معد کر ہجڑتے ساییدتُونا ۱۷ میں سلمان رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہَا کے پاس گई اور انہوں اور فیر دوسری اجڑا جے مُتَّھرہ رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُنَّ کو ساری بات بتائی تو سب ۱۸ مہاتُول مُؤمِنین رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُنَّ کے پاس ہجڑتے ساییدتُونا آیا اشنا سیہی کا رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہَا کے ہجڑا مُعاشر کا میں ہاجیر ہریں اور آپ کے چاروں ترک بیٹ کر ارج گُجا ر ہریں : ” یا رسُولُ اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ہمارے ماں - باپ آپ پر کُربا ان ! ۱۹ ہم اک اہم معاشر میں آپ کے پاس ہاجیر ہریں ہے، وہ یہ کہ آپ کے چچا جادا اور دینی بھائی ہجڑتے اُلیٰ رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُنَّ اپنی بیوی ہجڑتے فاتحہ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ کی رُخْسَتی چاہتے ہے । ” تو آپ رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہَا نے ہجڑتے اُلیٰ رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُنَّ کو بولا بے جا ।

کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ہجڑتے ساییدتُونا اُلیٰ یُھُل مُرتَجَا فرماتے ہے : ” میں بارا گاہے رسالات میں ہاجیر ہو کر سار ڈیکا کر بیٹ گیا تو آپ نے ۲۰ اسی فرمادا فرمایا : کیا تum اپنی جو جا کی رُخْسَتی چاہتے ہو ؟ ” میں نے ارج کی : ” جی ہاں ! ۲۱ یا رسُولُ اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ! اسرا د فرمایا : ” بडی مہبتو ۲۲ ایجڑت سے آج رات سے ۲۳ تum اپنی جو جا کے ساتھ رہا کرو گے । ”

دَا' وَتَهْ تَذَمَّ

अल्लाह ﷺ के रसूल, रसूले मक़बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यदतुना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को आरास्ता करने का हुक्म दिया और हज़रते सय्यदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास रखे हुए दराहिम में से 10 दिरहम हज़रते अली كَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ को दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन से खजूर, धी और पनीर ख़रीद लो ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं येह चीज़ें ख़रीद कर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाजिर हो गया । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने चमड़े का एक दस्तरख़वान मंगवाया और आस्तीनें चढ़ा कर खजूरों को धी में मसलने लगे और फिर पनीर के साथ इस तरह मिलाया कि वोह ह़लवा बन गया । फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) जिसे चाहो बुला लाओ ।” मैं मस्जिद गया और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के सहाबए किराम से कहा : “आप رَضِوانُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ की दा'वत क़बूल करें ।” सब लोग उठ कर चल दिये । जब मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्जु की, कि लोग बहुत ज़ियादा हैं तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने चमड़े के दस्तरख़वान को एक रूमाल से ढांप दिया और इरशाद फ़रमाया : “दस दस अफ़्राद को दाखिल करते जाओ ।” मैं ने ऐसा ही किया । सब सहाबए

کیرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم نے خانا خیاہا لے کین خانا میں بیلکول کمی نہ ہریں یہاں تک کی آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارکت سے 700 افسردار نے وہ حلقہ تناویل فرمایا ।

ایس کے با'د آپ نے ہجڑتے فاتیما اور ہجڑتے ابھی (رضی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو اپنے پاس بولایا اور ہجڑتے ابھی کو اپنے دا ان اور ہجڑتے فاتیما کو اپنے بائیں ترکھ بیٹا کر سینے سے لگایا اور دونوں کی آنکھوں کے درمیان پے شانی پر بوسا دیا اور ہجڑتے ابھی سے فرمایا : “ऐ ابھی میں نے کیتنی اچھی جوہرا سے تera نیکاہ کی�ا ہے ।” فیر ان دونوں کے ساتھ ان کے گھر تک پیدل چلے । فیر گھر سے باہر نیکل کر دروازے کے کیواڈ پکडے اور یہ دعاؤ فرمائی : “**اللّٰہُ عَزٌّ وَجَلٌ** تुم دونوں کو **اللّٰہُ عَزٌّ وَجَلٌ** کے سिपور کرتا ہوں اور تुم دونوں کو اس کی **حِفْظَةٍ** میں دےتا ہوں ।” (الرؤوش الفائق، المجلس الثاني والأربعون في زواج على بفاطمة... الخ، ص ۲۷۸ تا ۲۷۷، ملخصاً)

شہزادی کوئین، والیڈے ہسنے کے نیکاہ کے مुتابر لیکھ مفسس سے شاہیر، ہکیمی مول عالمت مسٹر احمد یار خاں نرمی کا منجوم کلام مولانا حسین فرمایا اور نسیہت کے مددگار فول چونیے :

شانے خواہ نے جنات (رضی اللہ عنہ) خواہ نے جنات کا تکمیل حذف کر دیا

गोशे दिल से मोमिनो ! सुन लो ज़रा है ये ह किस्सा फ़ातिमा के अ़क्द का
 पन्दरह सालह नबी की लाडली और थी बाईस साल उम्रे अ़ली
 अ़क्द का पैग़ाम हैंदर ने दिया मुस्तफ़ा ने मरहबा अहलन कहा
 पीर का दिन सतरह माहे रजब दूसरा सिने हिजरत शाहे अ़रब
 फिर मदीने में हुवा ए'लाने आम ज़ोहर के वक्त आएं सारे ख़ासो आम
 इस ख़बर से शोर बरपा हो गया कूचा व बाज़ार में गुल सा मचा
 आज है मौला की दुख़्तर का निकाह आज है उस नेक अख़्तर का निकाह
 आज है उस पाक व सच्ची का निकाह मस्जिदे नबवी में मज्मअ हो गया
 ख़ैर से जब वक्त आया ज़ोहर का एक तरफ़ उषमान भी हैं जलवा गर
 एक जानिब हैं अबू बक्रो उमर दरमियां में अहमदे मुख़ार हैं
 हर तरफ़ अस्हाबो अन्सार हैं हैंदरे करार शाहे ला फ़ता
 सामने नौशा अलियुल मुर्तज़ा या कि कुदसी आ गए हैं फ़र्श पर
 आज गोया अर्श आया है उत्तर वज्ञ जिस का डेढ़ सो तोला हुवा
 चार सो मिष्क़ाल चांदी महर था मा सिवा इस के न था कोई त़आम
 बा'द में खुर्मे लूटाए ला कलाम और हर एक ने मुबारक बाद दी
 उन के हक़ में फिर दुआए ख़ैर की वालिदा की याद में रोने लगीं
 घर से रुख़स्त जिस घड़ी ज़हरा हुई और फ़रमाया शहे अबरार ने
 दी तसल्ली अहमदे मुख़ार ने

مے کے و سوسراں میں آ'لہا ہو تुم فُاتِیْمَا ہر ترہ سے بالا ہو تुم
 اور شوہر اُلیٰ کے پے شوا باپ تومھارے ایما مول اُمیبیا
 تب اُلیٰ کے گھر میں اک دا'ват ہوئے مارہ جیل ہیججا میں جب رُخْسات ہوئے
 کوچ پنیر اور ٹوڈے خومیں بے گوماں جس میں ٹھیں دس سارے جو کی روئیاں
 اور یہ دا'ват سونتے اسلام ہے اس جیسا کات (۱) کا والیما (۲) نام ہے
 اور بُری رسمیں سے بچنا چاہیے سب کو ان کی راہ چلنا چاہیے

(دیوانے سالیک اجڑیکی مول عتمت مُضطی احمد یار خاں علیہ الرحمۃ الحنان)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

پ्यारی پ्यारی اسلامی بہنو! شادیاں تو بہوت ہوئے ہیں،
 ہو رہی ہیں اور ہوتی رہنگی لے کین اے سی سادا مگر اُجڑی مُششان
 رسمی نیکاہ و بیوہ سیف مہبوبی نے خودا اور مُکرّبی نے
 مُسٹفی کا ہیسسا ہے، تک للُوپ (یا'نی جاہیداری) نام کا
 نہیں لے کین رشک ہر مُسالمان کو آتا ہے، دُبُم دُبام کا کوئی
 اتا پتا نہیں لے کین چرچا آج بھی ہو رہا ہے ।

(۱) دا'ват

(۲) نیکاہ کے بآ'd کی دا'ват جو دُلہا کی ترکی سے دی جاتی ہے ।

(فیروز جل لعاظ، ص ۱۴۸۲)

نامवरी का कोई इरादा नहीं लेकिन डंके चार दांगे
 आलम⁽¹⁾ बज रहे हैं। ये ह बात बिल्कुल नहीं कि ये ह शादी धूम
 धाम से नहीं हो सकती थी बल्कि अगर सरवरे का एनात, शाहे
 मौजूदात खुद भी नहीं बल्कि सिर्फ़ अपने गुलामों
 को ही इशारा कर देते तो इस की मिष्ठ व हमसरी करना किसी
 के बस की बात न रहती। लेकिन वालिये उम्मत, महबूबे रब्बुल
 इज़ज़त ने سादगी और बे तकल्लुफ़ी को सुन्नत
 बनाया, ताकि उम्मत परेशानी और क़र्ज़ों के बोझ तले न दबे।
 इसी जानिब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान
 ने भी तवज्जोह दिलाई, चुनान्चे

शादी बियाह की इस्लामी रस्में

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
 की मतबूआ 170 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी
 ज़िन्दगी” सफ़हा 54 पर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार
 खान नईमी تहْرِيرِ رَحْمَةِ اللَّهِ الْغَنِيِّ के तहरीर फ़रमाते हैं : सब से बेहतर तो
 ये ह होगा कि अपनी अवलाद के निकाह के लिये हज़रते खातूने
 जनत, शाहज़ादिये इस्लाम, ف़तिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها के निकाहे पाक को नुमूना बनाओ। यक़ीन करो कि हमारी अवलाद
 इन के क़दमे पाक पर कुरबान ! और ये ह भी समझ लो कि अगर
 हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की मरज़ी होती कि मेरी
 लख्ते जिगर की शादी बड़ी धूम धाम से हो और सहाबए किराम

(1) दुन्या की चारों तरफ़

سے اس کے لیے چند وغیرہ کے لیے ہو کم فرمایا دیا جاتا تو ڈسپانے گئی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا خبڑانا مौजود تھا۔ جو ایک جنگ کے لیے نو نو سو ٹانٹ اور نو نو سو اشراقیاں ہاجیر کر دتے تھے۔ لیکن چونکی منسا (یا' نی مکسدا) یہ تھا کہ کیا مات تک یہ شادی مسلمانوں کے لیے نعمونا بن جائے۔ اس لیے نیہا یہ سادگی سے یہ اسلامی رسمیں ادا کی گईں۔

لیہا جا مسلمانو! ابوالن تے اپنی بیویاہ باراٹ سے ساری ہرام رسمیں نیکال دالو، باجے، آتاش بآجی، اُرتوں کے گانے، میرا پی، ڈوم وغیرہ کے گیت، رنڈیوں، اُرتوں کے ناچ، اُرتوں اور مردیوں کا ملے جو ل، فول پتی کا لوتانا اک دم **اعلیاً** کا نام لے کر میتا دو۔ اب رہی فوجوں خرچی کی رسمیں ان کو یا تو بند ہی کر دو اگر بند ن کر سکو تو ان کے لیے اسی ہد مुکرر کر دو جیسے فوجوں خرچی ن رہے اور گھر کی بربادی ن ہو۔ جنہے امیر بگیریں سب بے تکالیف پورا کر سکے۔ لیہا جا ہماری را یہ ہے کہ اس تریکے سے نیکاہ کی رسم ادا ہونی چاہیے۔

دُلْهَنِ، دُلْهَنِ نیکاہ سے پہلے ٹبٹن یا خوشبو کا ایسی مال کرے مگر مہندی اور تل لگانے اور ٹبٹن کی رسم بند کر دی جائے یا' نی گانا باجا اُرتوں کا جماعت ہونا بند کر دو۔ اب اگر باراٹ شاہر کی شاہر میں ہے تو جوہر کی نمائی پढ کر باراٹ کا مجماعت دُلْهَنِ کے گھر جماعت ہو اور دُلْهَنِ والے لوگ دُلْهَنِ کے گھر جماعت ہوں۔ دُلْهَنِ کے یہاں اس وکٹ

‘ना’त ख़्वानी या वा’ज़ या दुरूद शरीफ़ की मजलिस गर्म हो । उधर दुल्हा को ले कर पैदल या सुवार कर के इस तरह बरात का जुलूस रवाना हो, आगे आगे उम्दा ना’त ख़्वानी होती जावे, तमाम बाज़ारों में येह जुलूस निकाला जाए । जब येह बरात दुल्हन के घर पहुंचे तो दुल्हन वाले इस बरात को किसी किस्म की रोटी या खाना हरगिज़ न दें क्यूंकि हड्डियाँ उन्हें रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُمْ निकाह में हुजूर عَلَيْهِ السَّلَامُ ने कोई खाना न दिया । ग्रज़ येह कि लड़की वाले के घर खाना न हो । बल्कि पान या ख़ाली चाय से तवाज़ोअ़ कर दी जाए । फिर उम्दा तरीके से खुत्बा निकाह पढ़ कर निकाह हो जाए । अगर निकाह मस्जिद में हो तो और भी अच्छा है । निकाह का मस्जिद में होना मुस्तहब है और अगर लड़की के घर हो तब भी कोई हरज़ नहीं । निकाह होते ही बाराती लोग वापस हो जाएं । येह तमाम काम अस्स से पहले हो जाएं और बा’दे मगरिब को दुल्हन को रुख़सत कर दिया जाए ख़्वाह रुख़सत टांगे में हो या डोली वगैरा में । मगर इस पर किसी किस्म का निछावर और बिखेर बिल्कुल न हो कि बिखेर करने में पैसे गुम हो जाते हैं । हां ! निकाह के वक्त खुर्मे (या’नी खजूरें या छूहारे) लुटाना सून्त है ।

(इस्लामी जिन्दगी, फ़स्ले षानी : निकाह और रुख़्मत की रसमें, स. 54 ता 55)

صَلَوٰةٌ عَلٰى الْحَمِيْدِ !

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शैखे तरीकृत, अमीरे
अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
मुहम्मद इल्यास अंत्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ हर मुआमले में
मीठे मीठे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा की صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى هٰذِ الْوَسِيْمِ

प्रशंककश : ग़ज़ालिये अल मधीनतल इलिया (दा'वते इज़लामी) 246

سुनتोں پر اُمّل کی کوشش فرماتے ہیں، چنانچہ آپ نے اپنی اولیٰ ایجاد کی شادیاں بھی فوجوں سے دور رہ کر اور آکار کی سونتیں پر اُمّل کر کے سار انچام دینے جیسا کہ دا'�تے اسلامی کے ایضاً ایجاد ادارے مکتب بتوں مداری کے متبوءاً 86 سفہات پر مُشتمل رسالے ”سونتے نیکاہ“ سفہاً 32 سے 41 تک آپ کے بडے ساہب جادے کی شادی کا جیکر مُجود ہے مُعْذَّس رن پے سے خیدمت ہے مُلاہِ جا فرمائیے :

شہزادِ اُنّا ر مَدْعُولُهُ کی شادی

جہاں امریکے اہل سونت نے اپنی شادی خانا آبادی میں ہر مُؤکِّد پر شارع اہکام کی پاسداری کی، وہی آپ نے اپنے شہزادِ ایضاً خوش-لکھا، ڈرل سے دل رلبا، اعلیٰ ایجاد مولانا ابوبکر عسید احمد دburjia کا دیری رجُوی اُنّا ری اعلیٰ ایجاد مدنی کی ”شادی“ کے پور مُسررت لامہات میں تمام مُعاً ملاؤ شری اُنّت کے ائے ن مُتابیک رخنے پر بھی بحرپور تواضیہ فرمائی ہے۔ جس کے نتیجے میں الحمد للہ عزوجل یہ شادی مُبارک بھی اینتیہا ای سادگی کا مजہب اور دائرہ حاجیر کی میہالی شادی کرار پائی ہے ।

مَرْهُبَا اُنّا ر کا لاخوں جیگر دُلھا بننا

خوش نوما سے ہر ڈبے دیری کے سار سجا

صَلَوٌ عَلَى الْحَبِيبِ !

تکریبے نیکاہ

شہزادِ اُنّا ر مَدْعُولُهُ کے نیکاہ کی تکریب بركتی کو مکومن سے جگمگاٹے شادی ہول کے بجائے مداری نتول اعلیٰ

مُلْتَانِ شَارِفَ مِنْ هُونَهُ وَالدَّا' وَتَهُ إِسْلَامِيَّةِ تَهُ تَهُ سُونَتَوْنَهُ
بَرَهُ بَنَلِ اكْبَارِيَّةِ إِجْتِمَاعِيَّهُ مِنْ ۱۸ اکْتُوبَرِ سِ. ۲۰۰۳ءِ۔
کَوَ شَبَّهِ إِتَّوَارِ بَدْهِ سَادَغَيِّیَّہِ کَےِ سَاتِھِ انْجَامِ پَارِیٰ ।

بَرَاتِیٰ ہُنْ تَمَامِیَّہِ اهْلَلِ سُونَتِ

عَبْدِهِ کَادِرِیَّہِ دُلْلَہِ بَنَانِ

تِلَاقَتِ کَےِ بَا'دِ پُورِسُوْجِ نَاهِیْتِ پَدْھِ گَارِیْ، رِیْکَرِتِ اَنْجَوِیْ
سَمَانِ ٹَھَا، خُوْتَبَہِ نِیکَاهِ پَدْھِ کَرِ اَمَمِیِّہِ اهْلَلِ سُونَتِ
ہَیْ نَےِ نِیکَاهِ پَدْھَیَا فِیْرَ چُوْھَرَےِ لُوتَاهِ گَارِ جَوِ مَنْچِ (سْتَجِ) کَےِ
کَرِیْبِ مَاؤْجُودِ مَخْسُوسِ اِسْلَامِیَّہِ بَهَایَوْنَهُ نَےِ لُوتَهِ । نِیکَاهِ کَےِ بَا'دِ
چُوْھَرَےِ لُوتَانَےِ کَےِ بَارَےِ مَنْ آ'لَہِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ فَرَمَأَتِ ہُنْ
کِیْ "ہَدَیَّہِ شَارِفَ مِنْ لُوتَنَےِ کَا ہُوكَمْ ہُنْ اُوْرَ لُوتَانَےِ مَنْ بَھِ کَوَیدِ
ہَرَجِ نَہِیْنِ ।" (اَخْکَامُ شَرِیْعَتِ، بَلْ مَفْرُظَاتُ اَعْلَیِ حَضَرَتِ، حَصَہِ دُومِ، صِ ۲۲۵)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْ مُحَمَّدٍ ! صَلَوَاتُ عَلَیْ الْحَسِيبِ !

مَكْوَنَ پَرِ سَجَادَت

اِسِ مَاؤْکَوِیْہِ پَرِ دَےِخَنَےِ وَالَّهِ ہَرِتَ جَدَادِیْہِ کَیِ دُونَیَاِ
اَهْلَلِ سُونَتِ کَےِ اَمَمِیِّہِ، بَانِیِّیَّہِ دَاهِیْتِ اِسْلَامِیَّہِ
کَےِ شَہِجَادَہِ کَیِ شَادِیِّیَّہِ کَےِ مَاؤْکَوِیْہِ پَرِ بَھَرِ پَرِ مُرُوْبَجَہِ سَجَادَتِ
یَا بَرَکَتِیَّہِ کُوْمَکُوْمَوْنِ وَگَرِیْرَہِ کَیِ کَوَیدِ تَرَکَیْبِ ہُنْ نَہِیْنِ ٹَھِیْ ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْ مُحَمَّدٍ ! صَلَوَاتُ عَلَیْ الْحَسِيبِ !

پور تکللوپ جھے ج لئے سے ڈنگر

ہاجی احمد ڈبید رجہ کی شادی میں جب لڈکی والوں نے پور تکللوپ جھے ج دینا چاہا تو امریre اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ نے انہے سادگی اپنانے کی تلاکیں کی । دوسرا ترک شاہزادے اخڑا دامت برکاتہم العالیہ بھی پلٹنگ کوئر کے بجائے چٹائی کبوول کرنے پر ریضا مدند ہوئ ।

صلوٰ علیٰ الحبیب ! صَلَوٰ عَلٰی الْحَبِیْبِ !

ઇڄٿٽِمٽاڍُ ڄڀڪو نا'ت

شاہزادے اخڑا کی شادی کی خوشی میں دا'वتے اسلامی کی بابوں مدنیا (کراچی) کی مజالیسے مुشکار نے اسلامی مدنی مركب ج فیوجانے مدنیا (بابوں مدنیا کراچی) میں اڄٿٽِمٽاڍُ ڄڀڪو نا'ت کا اہتمام کیا । جس میں ہجڑاں اسلامی بائیوں نے شرکت کی । اڄٿٽِمٽاڍُ ڄڀڪو نا'ت کا آگاہ ج تیلابتے کو رآنے ھکیم سے ہو، فیر سرکار مدنیا، سुرور کلبو سینا صلوٰ اللہُ تَعَالٰی عَلٰیْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ کی بارگاہ میں گلہا اد اخڑیدت نا'ت شریف کی سوت میں پेश کیے گا । اس کے با'د شیخ تریکت، امریre اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ نے اس ماؤ اپ پر مدنی مزاجاکرے میں اسلامی بائیوں کے سووالات کے جوابات دیے । فیر امریre اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ کا لیخا ہو، مجنوں دعا ایسا سہرا شریف پढہ گیا اور سلاتا تو سلام پر اس اڄٿٽِمٽاڍُ ڄڀڪو نا'ت کا اخشتاتا ہو ।

صلوٰ علیٰ الحبیب ! صَلَوٰ عَلٰی الْحَبِیْبِ !

۲۳۴۔ رُخْسَتِیٰ

امیرے اہلے سُنّت ڈامت برکاتہم العالیہ نے پہلے ही سے تاکید کر دی थी कि کिसी سूرت में कोई गैर شارई رسم या مुआमला न होने पाए बल्कि वक्ते रुख़सती भी तमाम मुआमलात ऐन शरीअत के दाइरे में रहते हुए होने चाहियें ।

آپ کی اس رُخْسَتِیٰ کو اُمَّلیٰ جاما پہنانaya گयا اور آخیर تک هر هر مُعاَمَلَة ائےn شریअत کے مُوتَابِکِ رَخْنَے کی ही कोशिश की गई । हत्ता कि رُخْسَتِیٰ के वक्त जो ख़वَاتीن دُلْهَن को छोड़ने के لिये رسم के तौर पर आती हैं इस سے پेशगी مन्अ कर دिया گया कि سِرْفِ دُلْهَن का سगا भाई شارई پर्दे के سाथ دُلْهَن को ले آए । اس شادی में امیرے اہلے سُنّت ڈامت برکاتہم العالیہ کے घर वालों की تَرَفُّ سے भी اسلامی بहنوں के لिये कोई تکریب نहीं رखी गई थी ।

مَرِيٰ جِيسَ كُدرَاءٰ هِيَ بَهْنَنِ سَبَھِ كَاشَ بُرْكَانِ پَهْنَنِ
هُوَ كَرَمَ شَاهِ جَمَانَا مَدَنِيَ مَدَنِيَ وَالَّا
صَلَوَاعَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاعَلَى الْعَبِيبِ !

دُمَدَامَ سے والیما کرنے والے مُوتَالَبَا

امیرے اہلے سُنّت ڈامت برکاتہم العالیہ نے مदनی مُجاکرے کے دौरान کुछ यूँ इरशाद فرمाया : دُمَدَامَ سے والیما का भी बहुत इسرا رहा । किसी ने ओफ़र भी की, कि 200 देंगे बिला उजरत पका देंगे, बस दो लाख रूपے का सामान आएगा । मैं ने कहा : दो लाख रूपे तो मेरे पास नहीं हैं, मगर मेरे लिये दो लाख रूपे जम्मू करना मुश्किल भी नहीं है, बस येही होगा कि जिस

سے کہہنگا اُس کے دل میں میری جو ایجھت ہو گی وہ ختم ہو جائے گی، دو چار سے ٹوں کو فون کر دੂ گا، بُوڈی سی خوشامد کرننا پडے گی جو کی میرے میجاں میں نہیں ہے، 200 کی جگہ 1200 دے گے ہے جائے گی، یوں میرے بے تے کا والیما تو بُوم بُام سے ہو گا اور آپ لوگ بھی خوش ہو جائے گے مگر مुझے اس کے لیے اپنی خُدرا ری کا سوئدا کرننا پڑے گا । فیر آپ نے بتاؤ رے ترگیب اک واکیبھی بھی سُنایا :

एक پीर ساہب کے ہاں لंگر خُانا چل رہا�ا । एक ساہبے بَرَّवَتْ مُرِيَدْ پَسِ دَنِ کی ترکیب کر رہا�ا । لंگر خُانے کے مُنْتَجِیْم نے اُرْجُ کی : **ہُجُور !** अब महंगाई बढ़ गई है, बहुत दिक्कत हो रही है, अगर आप इस लंगर خُانे का खर्चा देने वाले मुरीद को इशारा कर देंगे कि वोह रकम दुगनी कर दे तो अपना लंगर خُانا ज़रा आसानी से चलेगा । पीर ساہب इस पर राजी हो गए और उस मुरीद को फ़रमाया कि **अَلْلَاهُ** तआلا نے تुझے बहुत दिया है, तुम माहाना चन्दा दुगना कर दो । उस मुरीद ने सआदت مन्दी سے जवाब दिया : **مُرشِد !** आप का हुक्म सर आंखों पर । कुछ अर्से के बाद लंगर خُانے के مُنْتَجِیْم ने پूछा : **ہُجُور !** आप ने रकम में इजाफे के لिये कहा या नहीं ? पीर ساہب ने फ़रमाया कि मैं ने उस से कह दिया था और उस ने दुगना कर भी दिया है मगर फ़र्क येह है कि पहले बड़ी اُक्तीदत سے آ کर पेश कرتा था, अब खुद नहीं آتا भिजवा देता है ।

(فِرَّ اَمْرِيْرَ اَهْلَ سُونْتَ نَ نَ فَرَمَاهَا) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهِ
 مेरا بےٹا (يَا'نِي) ہاجی اہماد ڈبید رجھا اُنٹاری
 خود والیمے کی سونت ادا کرے گا । دھومِ�ام سے ن
 سہی مگر والیما ہوگا ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

دَا' وَتَهْ وَلَيْمَاء

شہزادے اُنٹار نے مَدْئُلَةُ الْعَالَى دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهِ کی ہرسے خواہیشہ اینٹیہاری سادگی سے دا' وَتَهْ والیما کا اہتمام فرمایا جس میں سیفِ دا' وَتَهْ اسلامی کی مکanjی مجالیسے شورا کے تمام اراکین اور تین یا چار دوسروں اسلامی بائیوں کو مدد کیا لیکن خانے کے وکٹ بھر کے باہر جمیں ہونے والے دیگر اُنکی دست مند اسلامی بائیوں کو بھی اندر بولوا لیا گیا । دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهِ بھی والیمے میں شاریک تھے । دا' وَتَهْ والیما میں دال اور چاول پےش کیے گئے । امریرے اہلے سونت دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهِ نے بتایا کہ “خانا بھر میں پکایا گیا ہے، دال پانی میں پکاہی گئی ہے اور اس میں تل کا اک کٹڑا بھی نہیں ڈالا گیا ।” مگر خانے والوں کا کہنا ہے کہ دال- چاول ہر تانگے جس تانگے پر اینٹیہاری لجڑیج تھے । (سونتے نیکاہ، کیسٹ. 3 ص. 32 تا 41 مولٹکٹن)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादी के मौक़अ़ पर रुख़स्ती के वक़्त क़ब्र की तरफ़ रुख़स्ती को पेशे नज़र रखना चाहिये। अकषर नमाज़ की पाबन्द इस्लामी बहनें भी इस मौक़अ़ पर फ़र्ज़ नमाज़ तक छोड़ देती हैं। देखिये ! ख़ातूने जननत رضي الله تعالى عنها ने शादी की पहली रात कैसे गुज़ारी आप رضي الله تعالى عنها को शादी की पहली रात भी फ़िक्रे क़ब्रो आखिरत ने बेचैन कर रखा था चुनान्चे मन्कूल है कि

शादी की पहली रात श्री इबादत

सच्चिदण्ड काएनात⁽¹⁾ हज़रते सच्चिदतुना ف़ातिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها की रुख़स्ती के बा'द जब रात का अन्धेरा छाया तो आप رضي الله تعالى عنها रोने लगीं। हज़रते सच्चिदतुना अ़लियुल मुर्तज़ा رضي الله تعالى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ने पूछा : “ऐ तमाम औरतों की सरदार ! क्या तुम इस बात से खुश नहीं कि मैं तुम्हारा शोहर और तुम मेरी जौजा हो ?” कहने लगीं : “मैं क्यूं कर राजी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं, मैं तो अपनी उस हालत व मुआमले के मुतअल्लिक सोच रही हूँ कि जब मेरी उम्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाखिल कर दिया जाएगा। आज मेरा इज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाखिल होना कल क़ब्र में दाखिल होने की मानिन्द है। आज रात हम अपने रब्ब غَنْوَجَل की बारगाह में खड़े हो कर इबादत करेंगे कि वोही इबादत का ज़ियादा हक़ रखता है। इस के बा'द वोह दोनों इबादत की जगह खड़े हो कर पूरी रात रब्बे क़दीर غَنْوَجَل की इबादत में मसरूफ़ रहे।”

(الرؤوش الفائق، المجلس، الثامن والاربعون في زواج على بفاطمة... الخ، ص ٢٧٨)

(1) या'नी काएनात की सरदार।

इबादत हो तो ऐसी हो !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ये हैं ऐसे लोग हैं कि जिन का पुख्ता अज्ञम, ख्वाहिशात और मक्सूद न तो दुन्या और इस की लज्जात थीं और न ही नफ़्س की राहत व ख्वाहिशात । बल्कि इन की बुलन्द हिम्मतों की परवाज़ हमेशा बाकी रहने वाले ठिकाने की तरफ़ थीं । यक़ीनन इन का ज़िक्र कुरआने पाक में लिख दिया गया और इन को बिशारत दे दी गई :

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمْ

الرِّجَسُ أَهْلُ الْبَيْتِ وَيُظْهِرُ كُمْ

نَظِهِيرًا

(۳۳، ۲۲ پ، الاحزاب)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अल्लाह

तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालों कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे । (1)

(1) मुफ़स्सरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल हाफिज़ मुफ़्ती सय्यद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी “तप्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयए मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो । इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत धावित होती है और अहले बैत में नविय्ये करीम के अज़्वाजे مुत्हरात और हज़रते ख़तूने जनत फ़तिमा ज़हरा और अलिय्युल मर्तज़ा और हसनैने करीमैन رضي الله تعالى عنهم सब दाखिल हैं । आयात व अहादीष को जम्मु करने से येही नतीजा निकलता है और येही हज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رضي الله تعالى عنه से मन्कूल है । इन आयत में अहले बैते रसूले करीम صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم को नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचे और तक़वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें ।” (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22. अल अहज़ाब, तहतुल आयत, 33)

इन दोनों मुबारक हस्तियों ने अपनी लज़्ज़ात के बिस्तर को छोड़ दिया और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत में मसरूफ हो गए, रात कियाम में तो दिन रोज़े की हालत में बसर होता है कि तीन रोज़े इसी तरह गुज़र गए। फिर वोह दोनों अपने बिस्तर पर आराम फ़रमा हुए। चौथे दिन हज़रते सच्चिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ आप की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की : “**अल्लाह** तआला आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि **अली** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और **फ़اطिमा** (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इबादत और रोज़ों में मसरूफ हैं, तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी वजह से मलाइका पर फ़ख़ फ़रमा रहा है और ये ह कि तुम दोनों बरोज़े कियामत गुनहगारों की शफ़ाअत करेगे।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ फौरन उन के घर तशरीफ लाए तो वहां हज़रते सच्चिदुना अस्मा बिन्ते उमैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को पाया तो इस्तफ़सार फ़रमाया : “किस चीज़ ने तुझे यहां ठहराया है ? हालांकि घर में एक मर्द भी मौजूद है।” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! मैं हज़रते सच्चिदुना **फ़اطिमा** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत के लिये हाज़िर हुई थी। इस पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की चशमाने मुबारक

नमनाक (या'नी आंसूओं से तर-बतर) हो गई और दुआ़ा फ़रमाई :
 “ऐ अस्मा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَ تेरी दुन्या व
 आखिरत की तमाम हाजात पूरी फ़रमाए ।”

(الرؤُصُ الفائق، الثامن والاربعون في زواج علي بفاطمة... الخ، ص ٢٧٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब्लाहु रब्बुल इज़ज़त

खातूने जन्नत की अवलादे पाक

॥१॥.... सव्यद्वना इमामे हसन की विलादते बा सआदत

ख़ातूने जन्नत के बड़े शहज़ादे हज़रते सच्चिदुना इमामे
 हसन मुज्जबा हैं, आप का इस्मे गिरामी हसन, कुन्यत अबू
 मुहम्मद और अल्क़ाब सच्चिदे शबाबे अहले जन्नत, सब्जो रैहाने
 रसूल हैं। आप की विलादते बा सआदत 15 रमज़ानुल मुबारक
 3 हि. में हई। **हज़र** ﷺ ने आप का नाम हसन रखा

3 हि. में हुई। हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम हसन रखा

फिर پैदाइश के ساتवें दिन आप का अ़कीक़ा किया, बाल उतरवाए
और हुक्म फ़रमाया कि बालों के वज्ञ के बराबर चांदी सदक़ा की

जाए। (اسُدُ الْفَاغِيَةُ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَّابَةِ، بَابُ الْحَلَاءِ وَالسَّيْنِ، حَسْنُ بْنُ عَلَى، ج٢، ص١٣-١٤، ملخصاً)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

سَيِّدِ الدُّنْوَنَا إِيمَامُهُ حُسْنُ الْجَوَادِ وَالْأَوْلَادِ

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन की अज़्वाज व अवलाद
90 शादियां कीं। (تاریخ الخلفاء، ص ۱۲۲) ने

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की चन्द बीवियों के नाम दर्जे जैल हैं:

(1).... हज़रते सय्यिदुना उम्मे बशीर बिन्ते अबू मसऊद
अन्सारी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا)

(2)... हज़रते सय्यिदुना खौला बिन्ते मन्जूर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا)

(3)... हज़रते सय्यिदुना रमला बिन्ते सईद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا)

(4).... हज़रते सय्यिदुना उम्मे इस्हाक़ बिन्ते तल्हा बिन उब्दुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا)

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के चन्द शहज़ादों और शहज़ादियों के नाम दर्जे जैल हैं: (1).... हज़रते सay्यidुnā ज़ेद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)

(2).... हज़रते सay्यidुnā हसन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) (3).... हज़रते सay्यidुnā तल्हा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) (4).... हज़रते सay्यidुnā अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)

(5).... हज़रते सay्यidुnā अब्दुर्रह्मान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) (6).... हज़रते सay्यidुnā कासिम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)

पेशकश : ग्रन्तीवासे अल मदीनतुल इलिया (दावते इस्लामी)

(7).... ہجڑتے ساییدونا ابوبکر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) (8).... ہجڑتے ساییدونا ہوسین ایشراں (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) (9).... ہجڑتے ساییدونا امیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ (10)..... ہجڑتے ساییدوتونا عالمولہ حسن (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) (11).... ہجڑتے ساییدوتونا عالمہ عبداللہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ)

(انسانب الائسراف، ج ۳، ص ۳۰۲ تا ۳۰۳، ملخصاً)

ساییدونا ہمما مہ حسن کی شہادت

فکریہ میللت مUFATI جلال الدین احمد امجدی اپنی کتاب “خوبتا مورم” سفارہ 278 پر نکل فرماتے ہیں کہ ہجڑتے ساییدونا حسن (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے پہنچالیس (45) سال چھ ماہ چند روئے کی ڈپر میں ب مکامے مدنیتے تھیں 5 ربیعہ اول ابوالیس 49 ہی میں جہار خواہی سے شہادت نسیب پاہی اور جننعتل بکاری میں اپنی پیاری امیمی جان خواہونے جننت جیگر گوشے رسوی ہجڑتے ساییدوتونا فاطمہ بتوں کے پہلے میں مددوں ہوئے । اَللّٰهُ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَجُعُونَ ۝

وہ حسنے میڈیا ساییدونا اسی خواہی را کیوں دو شوے یعنی جنگل پے لاخوں سلام شاہد خواہی لے آبے جب نے نبی چاہنی گیر یعنی جنگل پے لاخوں سلام

صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ

صلوٰ علی الحَبِيبِ !

(2).... سعید الدُّنَانِ امامِ حُسَيْنؑ کی ویلادت بآ سعید الدُّنَانِ

આپ کا اس سے گیرا می ہوسن، کونیت ابوبکر ابودلفلہ اور
اللکھاب سعید دے شبابے اہلے جنات، سبتو رہنے رسویں ہیں । آپ
کی ویلادت بآ سعید الدُّنَانِ ۵ شا' بان سی. ۴ ہی میں
ہوئی । ہujr نبی یہ کریم نے پیارے شہزادے کے کان میں اجڑاں
اسرشاراد فرمائی اور ساتوں دین آپ کا ابکھ کیا گیا ।

(اسد الغابة، باب الحاء، والسين، حسين بن على، ج ۲، ص ۲۵-۲۷، ملخصاً)

آپ کی ویلادت پر ہجرا تے رہوں امین
ب ہوکم رہبیل اآل میں تہنیتی ویلادت (یا' نی پیدائش کی
مبارک باد) کے ساتھ تا' جیعت بھی لایا । اس وکٹ ہujr آپ
کے گولوں ناچ کو چومن رہے ہیں । رہوں امین نے آبادیا ہو کر
اُرج کیا کہ اس بوساگاہ پر چوری چلے گی اور یہ کرپتول
این خودا کی راہ میں شہید ہو گا । (اوراق غم، ص ۲۷۰)

مرہبہ سارکرے اآل م کے پیسر آئے ہیں سعید فاتحہ کے لخڑے جیگر آئے ہیں
وہ کیسمت کے چراغے ہر میں آئے ہیں اے مسلمانو ! مبارک کی ہوسن آئے ہیں
صلوٰ علی الحبیب !

سعید الدُّنَانِ امامِ حُسَيْنؑ کی ارجوں و ایجاد

ہجرا تے سعید الدُّنَانِ امامِ حُسَيْنؑ نے کہہ
شادیاں کیں، آپ کی چند بیویوں کے نام دوئے
جڑے ہیں :

(1).... ہجڑتے ساییدتوں لے لیا بینتے ابھی مورہ ڈرفا بین
مسکوڈ پکھ فی (2) رضی اللہ تعالیٰ عنہا (2).... ہجڑتے ساییدتوں ڈمے
اسٹھاک (3).... ہجڑتے ساییدتوں رو باہ بینتے
ڈمروٹل کیس (1) رضی اللہ تعالیٰ عنہا | یہا مامہ آلبی مکام ہجڑتے ساییدتوں
یہا مامہ ہوسن کے چند شاہزادوں اور شاہزادیوں کے
نام دجئے جائیں : (1)... ہجڑتے ساییدتوں ابلی اکبر
رضی اللہ تعالیٰ عنہ (2)... ہجڑتے ساییدتوں ابلی اسگر اس
رضی اللہ تعالیٰ عنہ (3) (Anṣāb al-ashrāf, ج, ۳، ص ۳۶۲، ۳۶۱) (4)... ہجڑتے ساییدتوں
مومد (4) (ایضاً، ج, ۲، ص ۳۲۲) رضی اللہ تعالیٰ عنہ (5)... ہجڑتے ساییدتوں فاتیما
رضی اللہ تعالیٰ عنہا (5) رضی اللہ تعالیٰ عنہا (Anṣāb al-ashrāf, ج, ۳، ص ۳۶۱ ملخصاً)

ساییدتوں ہوسن کی شہادت

ساییدتوں شہادت، یہا مامہ آلبی مکام ہجڑتے ساییدتوں یہا مامہ
ہوسن کی پیدائش کے ساتھ ہی آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت کی بھی شوہرت آبام ہو گई تھی । ہجڑتے ساییدتوں
یہا مامہ ہوسن دس مورہ مول ہرام سی. 61 ہی. ب روچے جو ابتوں ملک میں کاربلا میں مرتباً شہادت پر فائز ہو کر ساییدتوں شہادت
کے لکھ سے مولکھ کر ہے । شہادت یہا مامہ آلبی مکام کی تفصیل درکار ہو تو سوانح کاربلا، آئینے کی یامات، کاربلا
کا خونی منجرا وغیرہ کوتوب کی ترکیب رکھو اکرے ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

॥३-४॥ ...सत्यिदुना मोहरिन व सत्यिदतुना ३क्ष्या

हज़रते सय्यिदुना मोहसिन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते سय्यिदुना रुक्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का इन्तिकाल तो बचपन में ही हो गया था इस लिये तारीखों सीरत की किताबों में इन का तज़किरा न होने के बराबर है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

॥५॥..... सय्यिद्वत्ना जैनब कव जिक्रे खैर

हज़रते सय्यिदा जैनब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते सय्यिदतुना
फ़اطِمَتُ بَوْبَرَهْ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की बड़ी शाहज़ादी हैं। इन की
कुन्यत उम्मल हसन थी और वाकिअए करबला के बा'द इन की
कुन्यत उम्मल मसाइब मशहूर हो गई थी।

सत्यिदा जैनब का निकाह

हज़रते सच्चिदनान अलियुल मुर्तजा^{رضي الله تعالى عنه} ने अपनी लग्जे जिगर हज़रते सच्चिदनान जैनब^{رضي الله تعالى عنه} का निकाह हज़रते सच्चिदनान जा'फ़र^{رضي الله تعالى عنه} के साहिब ज़ादे हज़रते सच्चिदनान अब्दुल्लाह^{رضي الله تعالى عنه} से फ़रमाया ।

(أَسْدُ الْغَايَةِ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، حِرْفُ الزَّائِي، زَيْنُبُ بْنَتُ عَلَى، جَ ٧، صَ ١٣٢)

سخیدہ جنوب کی اولاد

ہجرتے سخیدتوں جنوب کے چار ساہبزادے
थے جن کے نام درجے جائیں : (1) ہجرتے سخیدتوں اعلیٰ
رضی اللہ تعالیٰ عنہ (2) ہجرتے سخیدتوں اون اکابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ
(3) ہجرتے سخیدتوں ابساں (4) ہجرتے سخیدتوں جنوب
رضی اللہ تعالیٰ عنہ محدث اور ہجرتے سخیدتوں جنوب
کی اک ساہبزادی تھیں جن کا نام ہجرتے
سخیدتوں اتمم کلشوم رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے । (ایجن)

6..... سخیدہ اتمم کلشوم

خاٹوںے جننات کی سب سے بڑی ساہبزادی ہجرتے
سخیدتوں اتمم کلشوم رضی اللہ تعالیٰ عنہا اپنی بडی همسیرا
ہجرتے سخیدتوں جنوب کے معاشرہ تھیں ।

سخیدتوں اتمم کلشوم کا نیکاہ

ہجرتے سخیدتوں اتمر فارس کے آ'جم نے
ہجرتے سخیدتوں اتمم کلشوم سے نیکاہ
فارسیا اور حکم کے مہر میں 40,000 دیرہم دیے । جیسا کि
ریوایت میں ہے کि ہجرتے سخیدتوں اتمر فارس کے آ'جم
رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے ہجرتے سخیدتوں اتمم کلشوم رضی اللہ تعالیٰ عنہا
کے مہر میں 40,000 دیرہم دیے ।

(اسد الغایۃ فی معرفۃ الصحابة، ج ۷، حرف الکاف، م کلثوم بنت علی، ص ۳۷۸)

سخییدتُونا ڈمِ کُلپُوم کی ڈولالاد

ہجڑتے سخییدتُونا ڈمِ کُلپُوم کے باتنے مُبَارک سے ہجڑتے سخییدتُونا فارُکے آ'جِم کا اک بےٰجا جِد بین ڈمر اکبر اور اک بےٰجا رُکھیا پیدا ہوئی ।

(آئد الغاییہ فی معرفۃ الصحابة، ج ۷، حرف الکاف، ام کلثوم بنت علی، ص ۲۸۸)

ہجڑتے سخییدتُونا ڈمر فارُکے آ'جِم کے انٹکا ل کے با'د آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا نیکا ہے شانی ہجڑتے سخییدتُونا اُون بین جا'فُر سے ہووا اور ہجڑتے سخییدتُونا اُون بین جا'فُر کے انٹکا ل کے با'د ان کے باری ہجڑتے سخییدتُونا مُہمَّد بین جا'فُر سے ہووا اور ہجڑتے سخییدتُونا مُہمَّد بین جا'فُر کے انٹکا ل کے با'د ان کے باری ہجڑتے سخییدتُونا اُبُدُلَلَہ بین جا'فُر سے ہووا ।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، تسمیۃ النساء اللوانی الخ، ام کلثوم بنت علی، ج ۸، ص ۳۳۸)

سخییدتُونا ڈمِ کُلپُوم کا انٹکا لے پور ملال

ہجڑتے سخییدتُونا ڈمِ کُلپُوم کا انٹکا ل ہجڑتے سخییدتُونا اُبُدُلَلَہ بین جا'فُر کے نیکا ہے میں ہووا । ہجڑتے سخییدتُونا ڈمِ کُلپُوم رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ان کے بےٰجا جِد ہجڑتے سخییدتُونا جِد بین ڈمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) کا انٹکا ل اک ہی ساًبُت میں ہووا ।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، القسم الرابع، ام کلثوم بنت علی، ج ۸، ص ۳۶)

صلوٰعَلیِ الحَبِیْبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़िताम की तरफ लाते हुए सच्चिदैना अ़ली व फ़ातिमा के हुस्ने मुआशरत पर मुश्तमिल एक रिवायत पेश की जाती है :

अळ्ली व फ़ातिमा कभी नाराज़् न हुउ

گرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ
ہے جو راتے سا یحیدونا اُلیٰ یوں مُرْتَجَا
فُرماتے ہیں : “Ek In-ti-ha-ई ٹانڈی اور شادی د سار्द سوہنے رسوں لے خُودا,
مُحَمَّدِ مُسْتَفَضاً صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
ہمارے ہاں تشریف لایا । آپ
نے ہمے دُعا اے خیر سے نوازا اور فیر ہے جرته
فَاتِیْمَا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
سے تناہی میں پوچھا : اے میری بیوی ! تو نے
اپنے شوہر کو کیسا پایا ? ” جواب دیا : “وہ بہترین
شوہر ہے । ” فیر آپ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
نے ہے جرته اُلیٰ
کو بُولًا کر ایرشاد فُرمایا : “اپنی جُو جا سے
نہیں سے پےش آنا، بے شک فَاتِیْمَا رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہَا^{میرے} جیسم کا
ٹوکڑا ہے، جو چیز اسے دُخ بے گی مُझے بھی دُخ بے گی اور جو اسے
خُوش کرے گی مُझے بھی خُوش کرے گی، میں تُم دوں کو **اعلیٰ**^{عز و جل}
کے سی پورے کرتا ہوں اور تُم دوں کو اس کی ہیفا جڑت میں دےتا
ہوں । اس نے تُم سے ناپاکی دُور کر دی اور تُمہے پاک کر کے خوب
سُوپھرا کر دیا । ”

हज़रते सय्यिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** की क़सम ! इस हुक्मे मुस्तफ़ा के बा’द मैं ने न तो कभी हज़रते फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर गुस्सा किया न ही किसी बात पर उन्हें ना पसन्द किया यहां तक कि **अल्लाह** ने उन को अपने पास बुला लिया, बल्कि वोह भी कभी मुझ से नाराज़ न हुई और न ही किसी बात में मेरी ना फ़रमानी की और जब भी मैं उन को देखता तो वोह मेरे दुख-दर्द दूर करती दिखाई देती ।”

(الرؤوس الفائق، المجلس الثامن والاربعون في زواج على بفاطمة.....الخ، ص ٢٧٨، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस से अब्लाह व
रसूल ﷺ महब्बत करें उस को अज़िय्यत
व तक्लीफ़ से बचाना और हर दम उस को खुश रखने की
कोशिश करना हर सहीहुल अ़क़ीदा कामिल मुसलमान अपने
ऊपर लाज़िम गरदानता (या'नी लाज़िम मानता) है, जैसे हज़रते
सच्चिदुना अ़लियुल मुर्तज़ा گَرَمُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَبِيرُ ने नसीहते
मुस्त़फ़ा पर कारबन्द रहते हुए अपने ऊपर लाज़िम कर लिया था
कि बिन्ते रसूल हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर
गुस्से और ना पसन्दीदगी का इज़हार नहीं करना । और इस खुश
गवार माहोल को मज़ीद तक़विय्यत हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा
रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के तर्ज़े अ़मल ने दी कि अपने शोहरे नामदार,

महबूबे हड्डीबे परवर दगार के दुख-दर्द दूर करने और उन को खुश रखने की कोशिश की, अगर बीवी सच्चिदात का एनात और शोहर मौलाए का एनात (رضي الله تعالى عنهم) के तर्जे अमल को अपना लें तो घर ज़रूर अम्न का गहवारा बन जाएंगे।⁽¹⁾ क्यूंकि इन नुफूसे कुदसिय्या (या'नी पाकबाज़ लोगों) की हयाते तथ्यिबा (या'नी पाकीज़ा ज़िन्दगी) का हर हर पहलू तमाम मुसलमानों के लिये मशअले राह (या'नी रहनुमा) है। आप से गुज़ारिश है कि तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल को अपना कर इन हज़रते वाला इज़्ज़त के नक़शे क़दम पर चलते हुए ज़िन्दगी गुज़ारना सीखें कि दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल बुराइयों से बचने और नेकियों पर कारबन्द रहने का ज़ेहन देता है। इस मदनी माहोल को अपना कर मुआशरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद सुधरने में काम्याब हो गए, जैसा कि

मैं ने मदनी बुर्क़़़ञ्च कैसे अपनाया ?

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतभूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़हा 273 पर है: बाबुल मदीना (कराची) की एक

(1) अपने घरों को अम्न का गहवारा बनाने के लिये शैख़े तरीक़त, अमरी अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دامت برکاتہم اللہ علیہ की VCD “घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?” खुद भी देखिये और घर वालों को भी दिखाइये।

شانے خواہ نے جنگت (رضی اللہ عنہ) خواہ نے جنگت کا تکمیل حذف کر دیا

इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा फैशनेबल थी, फ़ोन के ज़रीए गैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत़फ़ आता, पड़ोस की शादियों में रस्मे मेहंदी वगैरा के मौक़अ़ पर मुझे ख़ास तौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ खुद रक्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी डांड़िया रास सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अक्षर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं। बद क़िस्मती से घर में **T.V** बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था। रबीउन्नूर शरीफ़ की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन केसिटें थीं, इन में से एक बयान का नाम “क़ब्र की पहली रात” था खुश क़िस्मती से मैं ने येह केसेट सुनने की सआदत हासिल की, क़ब्र का मर्हला किस क़दर कठिन है, इस का एहसास मुझे येह बयान सुन कर हुवा। मगर अफ़सोस ! मेरे दिल पर गुनाहों की लज्ज़त का इस क़दर ग़्लबा था कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई। हाँ ! इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एहसास होने लगा। कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में दा'वते इस्लामी की ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिलसिला “ग्यारहवीं शरीफ़” इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया। मुझे भी

शिर्कत की दा'वत दी गई। “क़ब्र की पहली रात” सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्चे मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार इजतिमाएँ ज़िक्रो ना'त में जाने का इरादा किया। मगर मेरी हमाकृत कि ख़ूब मैक-अप कर के जदीद फ़ैशन का लिबास पहन कर इजतिमाअ़ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत “या गौष बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ” पढ़ी गई। इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूँ मैं दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात में शरीक होने लगी। मदनी आक़ा की दीवानियों की सोहबतों की बरकत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हुई, तौबा की सआदत मिली। और الْحَمْدُ لِلّهِ عَزُورٌ جَلٌ मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फ़ैशन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दूपट्टा भी ठीक तरह से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अर्से में मदनी बुर्क़अ़ पहनने की सआदत पाने लगी। الْحَمْدُ لِلّهِ عَزُورٌ جَلٌ आज मैं दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूँ।

अल्बाह करम ऐसा करे तज्ज पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धम मची हो !

(वसाइले बख्खाश अज अमीरे अहले सुनत ذامَتْ بِرَبِّكُمُ الْعَالِيَّ س. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

बयान नम्बर 7

ख्रातूने जन्नत

और

उमूरे ख्रानादारी

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبَرَسِيلِينَ
اَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيْمِ طَبِّسَ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ط

खातूने जन्नत और उम्रे खानादारी

ਦੁਖਦ ਸ਼ਾਰੀਫ਼ ਕੀ ਫੁਜ਼ੀਲਤ

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़हा 170 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं कि ख़ातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउल मुज़नीबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मण्डिरित निशान है : जब जुमा'रत का दिन आता है **अल्लाह** फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वो ह लिखते हैं कौन यौमे जुमा'रत और शबे जुमआ मुझ पर कपरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।

(**كنز العمال**، كتاب الاذكار، الباب السادس في الصلاة عليه وعلى الله...الخ، ج ١، ص ٢٥٠، الحديث: ٢١٤٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इज़िद्वाजी जिन्दगी

जिगर गोशए रसूल, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल
निकाह के बा'द जब हज़रते सय्यिदुना अलियुल
मुर्तज़ा, शेरे खुदा के दौलत खाने में तशरीफ़ लाई तो
घर के तमाम कामों की ज़िम्मेदारी आप पर आ पड़ी । आप
ने इस ज़िम्मेदारी को बड़े अहसन अन्दाज़ में निभाया
और हर त्रह के हालात में अपने अज़ीमुल मर्तबत शोहर का
साथ दिया, चुनान्वे

घरेलू कामों की तक्सीम

हज़रते सय्यिदुना ज़मरा बिन हबीब رضي الله تعالى عنه फ़रमाते
हैं, रसूلुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسَلَّمَ ने उम्मेरे खानादारी (मषलन चक्की
पीसने, झाड़ू देने, खाना पकाने के काम वगैरा) अपनी शहज़ादी
हज़रते सay्�yidatunā fātīmatu 'z-zuhra رضي الله تعالى عنها के सिपुर्द फ़रमाए
और घर से बाहर के काम (मषलन बाज़ार से सौदा सलफ़ लाना,
ऊंट को पानी पिलाना वगैरा) हज़रते سay्�yidunā رضي الله تعالى عنها मुर्तज़ा
رضي الله تعالى عنها के ज़िम्मे लगा दिये ।

(المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الزهد، حديث رقم ١٥٧، الحديث: ١٢)

एक रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना अलियुल मुर्तज़ा
ने अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना
फ़ातिमा बिन्ते असद (رضي الله تعالى عنها) की खिदमत में अर्ज़ की :
“फ़ातिमतु 'z-zuhra (رضي الله تعالى عنها) आप की खिदमत और घर के
काम-काज किया करेंगी ।” (الإِصَابَةُ فِي تَبْيَنِ الصَّحَابَةِ، ج ٨، ص ٢٩٧)

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा^{رضي الله تعالى عنها} की सीरत
का मुतालआ करने से पता चलता है कि आप^{رضي الله تعالى عنها} खानादारी के कामों की अन्जाम देही के लिये कभी किसी
रिश्तेदार या हमसाई को अपनी मदद के लिये नहीं बुलाती
थीं। न काम की कषरत और न किसी किस्म की मेहनत व
मशकूत से घबराती थीं। सारी उम्र शोहर के सामने हर्फ़े
शिकायत ज़बान पर न लाई और न उन से किसी चीज़ की
फ़रमाइश की। खाने का उसूल यह था कि चाहे खुद फ़ाके से
हों जब तक शोहर और बच्चों को न खिला लेतीं खुद एक
लुक़मा भी मुंह में न डालतीं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया
कि हैदरे करार, शेरे खुदा हज़रते सय्यिदुना अ़लियुल मुर्तज़ा
और رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ^{رضي الله تعالى عنها} की शहज़ादी,
जनती औरतों की सरदार हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा
ने घर में काम के लिये ख़ादिम नहीं रखा बल्कि
अपने घर के काम खुद किया करती थीं। हो सकता है कि किसी के
ज़ेहन में आए कि वोह और दौर था अब और ज़माना है। तो सुनिये
कि इस दौर की अ़ज़ीम रूहानी शख़्सियत शैख़े त़रीक़त, अमीरे
अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार
क़ादिरी^{دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ} के घर में कभी कोई काम करने वाली नहीं
रखी गई, इस में हर इस्लामी बहन, बिल खुसूस अमीरे अहले
سunnat^{دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ} की मुरीद, ت़ालिब या मुहिब्ब इस्लामी बहनों

के सीखने के लिये बहुत कुछ है। याद रहे ! फ़ारिग़ दिमाग़ शैतान का कारखाना होता है तो ज़ियादा मुनासिब येही है कि घर के काम-काज में लगी रहें, अमीरे अहले सुन्नत دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّهُ फ़रमाते हैं : करने के काम करो, वरना न करने के कामों में पड़ जाओगे ।

घर के काम-काज करने के फ़ाइदे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रिज़ाए खुदा व मुस्तफ़ा की ख़ातिर घर का काम-काज खुद किया करें । घर के काम करने के भी बहुत से फ़ाइदे हैं और इस से भी बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का कुर्ब हासिल करता है, चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदरे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ 75 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले “सीरते سच्यिदुना अबू दरदा” सफ़्हा 62 पर है : हज़रते سच्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते سच्यिदुना سलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में येह भी था कि ऐ मेरे भाई ! मुझे मा’लूम हुवा है कि तूने एक ख़ादिम ख़रीदा है । मैं ने **अल्लाह** के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना है कि “बन्दा जब तक किसी ख़ादिम से मदद नहीं लेता **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के करीब होता रहता है और जब वोह किसी ख़ादिम से ख़िदमत लेता है तो इस पर उस का हिसाब लाज़िम हो जाता है ।” मेरी ज़ौजा ने मुझ से एक ख़ादिम रखने का मुतालबा किया था लेकिन हिसाब के खैफ़ से मैं ने उसे ना पसन्द जाना, हालांकि मैं उन दिनों मालदार था ।

(حلية الاولى، ابو الدرداء، ج ١، ص ٢٧٣، رقم ٢٠٢)

ज़रा हम अपना मुहासबा भी कर लें कि हमारी कैफियत क्या है ? और याद रखिये कि खातूने जन्नत हज़रत सन्धिदा फ़ातِि मतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का घर का काम खुद करना शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मरज़ी व मन्शा के मुताबिक़ था । यक़ीनन जो काम शाहे खैरुल अनाम, महबूबे रब्बुल अनाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पसन्द फ़रमाएं वोह रब्ब की बारगाह में भी पसन्दीदा और महबूब है । अब ज़रा ग़ैर फ़रमाइये कि जिस काम में खुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा व खुशनूदी हो उस से जी चुराना, जान छुड़ाना, सुस्ती करना कैसा ? घर में काम-काज की बरकत से भाई बहनों और माँ बाप की मन्ज़ूरे नज़र बन जाएंगी । शादीशुदा हैं तो शोहर, नन्द और सास के दिलों में जगह बन जाएंगी । अगर पहले से ही काम करने की आदत पड़ेंगी तो शादी के बा'द घर संभालना आसान होगा और घर अम्न का गहवारा बन जाएगा, कई नादान वालिदैन अपनी बच्चियों को काम नहीं करने देते । नतीजतन उन्हें खाना पकाने, बरतन धोने, कपड़े धोने, कपड़े सीने की तरबियत नहीं होती और शादी के बा'द आज़माइश होती है ।

घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?

अब येह भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये कि घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के

इशाअूती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 161 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते अ़्ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियार्द دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ फ़तावा रज़विय्या के हवाले से फ़रमाते हैं :

सुवाल : घर में “काम वाली” रख सकते हैं ?

जवाब : रख तो सकते हैं मगर 5 शराइत के साथ

(1).... कपड़े बारीक न हों जिन से सर के बाल या कलाई वगैरा सित्र का कोई हिस्सा चमके । (2).... कपड़े तंगो चुस्त न हों जो बदन की हैअत (या’नी सीने का उभार या पिन्डली वगैरा की गोलाई वगैरा) ज़ाहिर करें । (3).... बालों या गले या पेट या कलाई या पिन्डली का कोई हिस्सा ज़ाहिर न होता हो । (4).... कभी ना महरम के साथ ख़फ़ीफ़ (या’नी मा’मूली सी) देर के लिये भी तन्हाई न होती हो । (5).... उस के वहां रहने या बाहर आने जाने में कोई मज़िन्नए फ़ितना (फ़ितने का गुमान) न हो । येह पांचों शर्तें अगर ज़म्मु हैं तो हरज नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 248)

(1) किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” पर्दे के मुतअ़्लिक बेहतरीन किताब है, अपने मौजूअ पर जामेअ और बहुत आम फ़हम है, हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद है, अपने शहर के मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कीजिये या फिर दा’वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से पढ़ लीजिये या प्रिन्ट आऊट कर लीजिये ।

ਮگر ان پانچ شاراٹت پر اُمّل فی جِمَانَا مُعْشِكَل
تَرَيْنَ هُنْ | اگر بے پردگی کرنے والی ہوئی تو گھر کے مردیں کا بद
نیگاہیوں مें لے جानے والی حرکتوں سے بچنا سخت دشوار ہوگا
بُلْكَ گھر کی پردا نشین خُواتین کے اخْلَاقُ بھی
تباہ کر دے گی । گیر اُرط کے ساتھ مرد کی خفیہ یا' نی
ما' مُولیٰ سی تہاراً ہی ہرام ہے اور گھر مें رہنے والے مرد کا
آج کل اس سے بچنا تکریب نا ممکن ہوتا ہے । لیہا جا
گھر مें کام والی ن رکھنے ही में اُफ़ियत है ।

بَا'جُ کام کرنے والیاں اُسی ہی ہوتی ہیں کہ گھروں مें
چُریاں کرتی ہیں، موبائل لے جاتی ہیں، گھروں مें ناچاکیयोں کا
سबب بناتی ہیں، بے پردگی کا سبب بناتی ہیں، بسا ایکاٹ گھروں
में ڈکے تیयोں کا بائیش بناتی ہیں، گھر والی کو نشا آوار چیज़
پیلا کر سونے کے جے وراثت لے ڈلتی ہیں، اگرچہ ساری اُسی نہीं
ہوتی، مگر اُسی ہی ہوتی ہیں، تو کام والیयों یا کام والوں
سے بچنے में ही اُف़ियत है ।

خالیک کی نا فِرمانی میں کیسی کی ڈھنڈت جاؤ ج نہیں

امیروں میں اُمّنیں ہجڑتے مولائے کائنات، اُلیٰ یُعل
مُرْتَجَا، شے رے خودا کریم سے رسیا یت ہے، سرکارے مداریا،
سُلْطَانے بَا کرینا، کرارے کلبو سینا، فے جے گنجینا، ساہبے

مُعْتَرٰ پسی نا، بَاذِیْہ نُجُولے سکی نا **کا فرمانے**
بَا کری نا ہے : يَا' نَیْ لَا طَاعَةٌ فِی مَعْصِیَةِ اللَّهِ إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِی الْمَعْرُوفِ“
آلہ حمد کی نا فرمانی میں کیسی کی **غَرْوَحَ** ایت اُتھے جا ایج نہیں، ایت اُتھے تو سیر نے کی کاموں میں ہے । ”

(صحیح مسلم، کتاب الامارہ، باب وجوب طاعة الامراء في غير...الخ، ص ۷۳، الحدیث: ۱۸۲۰)

ایسے ہدیہ پاک میں ارشاد فرمودا لفظ ”ما’ روپ“ کی تاریف بیان کرتے ہوئے مفسس سے شاہیر، ہر کی مول عالمت مufatی احمد مادیار خان نیزمی علیہ رحمۃ اللہ العزیز فرماتے ہیں : ما’ روپ وہ کام ہے جیسے شریعت مدنظر ن کرے، ما’ سیفیت وہ کام ہے جیسے شریعت مدنظر فرمائے دے ।

(مراء المذاق شرح مقلوٹ المصالح، کتاب الامارہ والقضاء، ج ۵، ص ۳۲۰)

اگر آپ کا گھر سے نیکلنا جڑھ رہا ہے تو شراری ایسا جھٹ کی سوچت میں گھر سے نیکلتا وکھت اسلامی بہن گئی جا جیبے نجیر کپڈے کا ڈیلا ڈالا مدنی بُرکھ اُوڈے، ہاثوں میں دستانے اور پاؤں میں جु راہے پہنے । مگر دستانوں اور جو راہوں کا کپڈا ایسا باریک نہ ہے کہ خال کی رنگت جنگل کے । جہاں کہیں گئی مردی کی نجیر پڈنے کا ایم کان ہے وہاں چہرے سے نیکا ب ن ٹھاٹے مسلسل وہاں ہے । نیچے کی ترکھ سے بھی ایسے ترکھ بُرکھ نہ ٹھاٹے کہ بدن کے رنگ بیرون کپڈوں پر گئی مردی کی نجیر پڈے । واژہ رہے کہ اُورت کے سارے لے کر پاؤں کے گیڈوں کے نیچے تک جیسم کا کوئی بھی ہیسپا مسلسل سارے کے بال یا باجوں یا کلارے یا

गला या पेट या पिन्डली वगैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये हराम न हो) पर बिला इजाज़ते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झालके या ऐसा चुस्त है कि किसी उँच की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वगैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्ठा इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आलिमे शरीअ़त, पीरे तरीक़त, बाइषे ख़ेरो बरकत हज़रते अल्लामा मौलाना अलह़اج अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ : जो वज़ाءु लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व तरीक़ए पौशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औरात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाजू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई हिस्सा खुला हो यूं तो सिवा ख़ास महारिम के जिन से निकाह हमेशा को हराम है किसी के सामने होना सख्त हरामे कर्तई है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 217)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْعَبِيْبِ !

जहन्नम में औरतों की क्षणत

आह ! औरतों में बे पर्दगी और गुनाहों की कषरत होना इनतिहाई तशवीशनाक है, खुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब बर्दाश्त नहीं हो सकेगा। “सहीह मुस्लिम” में है : हुज़र नबिय्ये

کریم کا ایک شاہزادہ جنگل میں نے جہنم میں مولانا ہجڑا فرمایا کہ اُرتوں جہنم میں جیسا دادا ہے ।

(صحیح مسلم، کتاب الرقلق، باب اکثر اہل الجنۃ الفقراء...الخ، ص ۲۲۸، الحدیث: ۲۷۳۷)

یہ شہر آیا اے ایسماں ہے جو ہے بے شنا کم دیلوں نجیر کی تباہی ہے کوئے نا مہرمان
ہی ہے آنکھ میں باؤکی ن دیل میں خاؤکے خودا بہت دینوں سے نیجا مہیا ہے برہمن
یہ سرگاہوں کی مکاتل ہے شامیں گئر کے یہ ماں سیست کے منازیر ہے جن نے ایلام
یہ نیم باج سا بُرکت ہے یہ دیدا جے ب نیکاب جلالک رہا ہے جلال۔ جلال کمیس کا رشام
ن دیکھ رشک سے تھجیب کی نعمادیش کو کی سارے فلٹ یہ کاغذ کے ہے خودا کی کسماں !
وہی ہے راہ ترے ای جموں شاؤک کی مانجیل جہاں ہے ای ایشہ و فاتیما کے نکشوں کو
تیری ہیات ہے کیردارے را بیا بسری

تیرے فساد کا ماؤچوں ایسماں ماری

صلوٰ علیٰ الْحَبِّیْبِ ! صلوا علی الحبیب !

اسْتَغْفِرُ اللّٰهِ توبو ای اللہ !

صلوٰ علیٰ الْحَبِّیْبِ ! صلوا علی الحبیب !

घر خوشیوں کا گھووارا کہے کرنے ؟

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! گھر کو خوشیوں کا گھووارا بنانے اور مہبbat برا ماحول کا ایم کرنے کا اک تریکا یہ ہے کہ گھر کے تمام افساد اپنے سیپورڈ کاموں کو

سر انچاہم دے اگر اے سا ہو جائے تو کسی کو بھی شکایت نہیں ہوگی اور گھر کا نیچاہم اچھے تریکے سے چلتا رہے گا اور گھر میں مددنی ماحول بھی بن جائے گا । لگے ہا�وں گھر میں مددنی ماحول بنانے کے مددنی فلک بھی مولانا حسین فرمادیجیے، چوناں ڈا' واتے اسلامی کے ایضاً ابتدی ادارات مکتبتوں مددنیا کے متابوں اسیلے ”خماموش شاہزاد“ سفہ 39 پر شاعر تریکت، امیر اہل سنت، بانی ڈا' واتے اسلامی ہجرتے اعلیٰ مسلمان ابوبکر بیلال مسیح ایضاً اخراج کاری رجیوں جیسا ایں فرماتے ہیں :

**”خا رکھو کریم ! ہمنے مुٹکی بنا“
کے ڈنیس ہوسپ کی نیکت سے
گھر میں مددنی ماحول بنانے کے 19 مددنی فلک**

- (1)..... گھر میں آتے جاتے بولند آواز سے سلام کیجیے ।
- (2)..... والید یا والید ساہب کو آتے دیکھ کر تا' جیمان خدھے ہو جائیے ।
- (3)..... دن میں کم اجڑ کم اک بار اسلامی بارے والید ساہب کے اور اسلامی بھنے مام کے ہا� اور پاؤں چوما کروں ।
- (4)..... والید نے سامنے آواز ڈیمی رکھیے، ان سے آنکھے ہرگیز ن میلا جائیے، نیچی نیچاہے رکھ کر ہی بات کیجیے ।
- (5)..... ان کا سونپا ہو گا ہر ووہ کام جو خیلائیں شرط ن ہو فوراً کر ڈالیے ।
- (6).... سنجیدگی اپناییے । گھر میں توتکار، ابے تبے، اور مجاہک

شانے خواہیں جاہنات ﷺ ﴿ ﷺ شانے خواہیں جاہنات ﷺ ﴾ ﴿ ﷺ شانے خواہیں جاہنات ﷺ ﴾

मस्खरी करने, बात-बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहशें करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रविय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये ।

(7).... घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ घर के अन्दर (और बाहर) भी ज़रूर इस की बरकतें ज़ाहिर होंगी ।

(8).... मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुख़ातिब हों ।

(9).... अपने महल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअत के वक्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए । वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़्र में बा जमाअत) मुयस्सर आए और फिर काम-काज में भी सुस्ती न हो ।

(10).... घर के अफ़्राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गानों बाजों का सिलसिला हो और आप अगर सरपरस्त नहीं हैं, नीज़ ज़ने ग़ालिब हैं कि आप की नहीं सुनी जाएंगी तो बार बार टोका-टोक के बजाए सब को नर्मी के साथ मक्तबतुल मदीना से जारी शुदा सुनतों भरे बयानात की ओडियो केसिटें सुनाइये, विडियो सीडीज़ दिखाइये, मदनी चैनल दिखाइये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ “मदनी नताइज़” बर आमद होंगे ।

(11).... घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े सब्र सब्र और सब्र कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “मदनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता

ہے کہ بے جا سکھتی کرنے سے بسا اور کھاتا شہزادیوں کو جیہی بننا دےتا ہے ।

(12).... مدنی ماحول بنانے کا ایک بہترین جریا یہ بھی ہے کہ گھر میں روچانا فےوجانے سੁننت کا درس جرکر، جرکر، جرکر دیجیے یا سੁنیے ।

(13).... اپنے گھر والوں کی دنیا و آخریت کی بہتری کے لیے دل سوچی کے ساتھ دعاء بھی کرتے رہیے کہ فرمائے مُسْتَفْأٰ يَا سَلَّمُ الْمُؤْمِنِ حَسَنَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ (الْمُسْتَدِرُكُ لِلْحَاكِمِ، کتاب الدعاء والتکبیر والتهليل... الخ، باب الدعاء، سلاح المؤمن..... الخ، ج ۲، ص ۱۲۲، الحدیث: ۱۸۵۵)

(14).... سوسراں میں رہنے والیاں جہاں گھر کا جیکر ہے وہاں سوسراں اور جہاں والیدن کا جیکر ہے وہاں ساس اور سوسراں کے ساتھ وہی ہو سو سلک بجا لایں جب کہ کوئی مانے اے شارہ نہ ہو । ہاں ! یہ اہمیتیاں جرکر ہیں کہ بہو سوسراں کے ہاث پاٹن ن چوڑے، یونہی داماد ساس کے ।

(15).... ”مسائل کو رآن“ میں ہے ہر نماز کے باہم یہ دعاء ابوال و آخری دو رکعہ کے ساتھ ایک بار پढ़ لیجیے اسے اللہ عزوجل (اللَّهُمَّ رَبَّاهُبُّنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَرِبُّنَا فَرَّقْنَا عَيْنَ وَاجْعَنْنَا لِمُسْتَقِيْنَ إِمَاماً) (پ ۱۹، الفرقان: ۲۷)

پیشکش : جذبیت میں اعلیٰ مدد و نعمت دلیلیت (ڈاکٹر احمد علی)

(اللّٰهُمَّ اَيُّتْهِمْ اَيُّتْهِمْ) آیاتے کوئا انہی کا ہیسسا نہیں) یا' نی اے ہمارے رجھ ! ہمے دے ہماری بیبیوں اور ہماری اکلاد سے آنکھوں کی ٹنڈک اور ہمے پرہے جگاروں کا پے شوا بننا ।

(مسائل القرآن، جلد قرآنی اعمال، ص ۲۸۲)

(16).... نا فرمان بچھا یا بड़ा جب سویا ہو تو 11 یا 21 دن تک اس کے سیرہانے خड़ے ہو کر یہ آیاتے مبارکا سرپر اک بار اینی آواز سے پڑھیے کہ اس کی آنکھ ن خولے

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ طَبَعَ مُؤْقَنٌ مَّجِيدٌ فِي لَوْجٍ مَّخْفُوْطٍ (ب، ۳، البروج: ۲۲۲)

تَرْجِمَةِ كَنْجُولِ إِيمَان : **अल्लाह** کے نام سے شوکتؐ جو نیہایت مہربان رہم وala / بالکل وہ کمالے شرف وala کوئا ان ہے لاؤہ مہفوظؐ میں ।

(ابواللہ و آخیر اک مرتبہ دوڑد شریف) یاد رہے ! بड़ا نا فرمان ہو تو سوتے سوتے سیرہانے کوچھ پढھے میں اس کے جانے کا اندرے شاہ ہے خوسوسان جب کہ اس کی نئی د گھری ن ہو، یہ پتا چلنا مुشکل ہے کہ سرپر آنکھے بند ہیں، یا سو رہا ہے لیہا جا جہاں فیتنے کا خواف ہو وہاں یہ املا ن کیا جائے، خاس کر بیوی اپنے شوہر پر یہ املا ن کرے ।

(17).... نیجے نا فرمان اکلاد کو فرمائی بردار بنانے کے لیے تا ہوسوں میاد نماجے فجرا کے با'د آسمان کی ترک رکھ کر کے ”یا شہید“ 21 بار پڑھیے (ابواللہ و آخیر اک بار دوڑد شریف)

(18).... مدنی اینامات کے معتابیک املا کی آدات بنائیے اور گھر کے جن افساد کے اندر نرم گوشہ پاےں ۔ ہن میں، اور آپ اگر باپ ہیں تو اکلاد میں نرمی اور ہیکمتوں املا کے

ساتھ مدنیِ انعامات کا نیفکا ج کیجیے، **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ کی رہمات سے گھر میں مدنیِ انکلاب بارپا ہو جائے ।

(19).... پاہنڈی سے ہر ماہ کم اج کم تین دن کے مدنی کا فیلے میں آشیکا نے رسول کے ساتھ سونتؤں برا سफر کر کے گھر والوں کے لیے بھی دعاؤں کیجیے । مدنی کا فیلے میں سفیر کی بارکت سے بھی گھر میں مدنی ماحول بننے کی "مدنی بھارے" سुننے کو میلتی ہے ।

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَمِيدِ !
صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَمِيدِ !

خادیم کے لیے درخواست

ہجڑتے سدیدوں اعلیٰ مرتजٰ رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمْ سے ریوایت ہے کہ جنابے سدیدوں فاطمہ نبیو کی خدمت میں ہاجیر ہر یہ دس تکلیف کی شکایت کرنے جو ان کے ہاتھ کو چککی سے پہنچاتی تھی انہوں جب خبر میلی تھی کہ ہجڑوں کے پاس گولام آئے ہیں । انہوں نے ہجڑوں کی خدمت کرنے کو ن پایا تو ہجڑتے سدیدوں آیشا سیدیکہ سے یہ کہسنا ارجو کیا । مجبود فرماتے ہیں کہ ہجڑوں کی خدمت کیا جائے । تکلیف لائے جب کہ ہم بیس تر پکडھو کرے تو ہم اٹھنے لگے تو فرمایا : اپنی جگہ رہو । تکلیف لائے میرے اور فاطمہ متوужہ رہا (رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) کے درمیان بیٹھا کیا

मैं ने हुजूर صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के क़दम की ठंडक अपने पेट पर महसूस की। फ़रमाया : “मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज़ न बता दूँ ? जब तुम अपने बिस्तर लो तो 33 बार سُبْحَنَ اللَّهِ 33 बार أَكْبَرَ اللَّهُ أَكْبَرَ और 34 बार أَكْبَرَ اللَّهُ أَكْبَرَ पढ़ लो, ये ह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है ।”

(مشکوٰۃ المصالیبیح، کتاب الدعوات، باب ما یقول عند الصباح والمساء والمنام، ج ۱، ص ۳۴۱، الحدیث: ۲۳۸۷)

شारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي “میرआٹول مناجیہ” جیلڈ 4 سफ़ہا 7 پर इस हृदीषे पाक की शहर में फ़रमाते हैं : हज़रते सच्चिदतुना ف़اطِمَتُوْज़ْج़هरا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हुजूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सब से छोटी प्यारी-चहीती साहिबज़ादी थीं, शादी से पहले काम-काज न किया था। हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाँ आ कर तमाम काम करने पड़े, काम से कपड़े काले और चक्की से हाथों में छाले पड़े गए थे जो फूट कर ज़ख्म बन गए थे ।

(जब हज़रते सच्चिदतुना ف़اطِمَة رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाजिर हुई) उस दिन हुजूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कियाम हज़रते उम्मुल मोअमिनीन أَمْرَيَا سिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर था, इस लिये ख़ातूने जनत उन्हीं के घर तशरीफ लाई, मगर इत्तिफ़ाक़न हुजूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बाहर थे। दौलत ख़ाने में न थे इस लिये वालिदए माजिदा से अर्ज़ कर के वापस हो गईं ।

पर न थे दौलत कदे में शाहे दीं

वालिदा से अर्ज़ कर के आ गई

खुद हज़रते सच्चिदुना अलीؑ ने हज़रते
 खाटूने जननतؑ को बताया था कि आज कैदी गुलाम
 हुज़र के हां आए हैं, हुज़र से
 गुलाम बांट रहे हैं एक लौंडी तुम भी हुज़र से
 मांग लो जो घर का काम-काज करे।

घर में जब आए हबीबे किब्रिया वालिदा ने माजरा सारा कहा

फ़ातिमा छाले दिखाने आई थीं घर की तकलीफ़े सुनाने आई थीं

एक लौंडी आप अगर इन को भी दें चक्की और चूलहे के दुख से वोह बचें

हुज़रे अन्वर, शाफ़ेए महशर ने न तो
 हज़रते सच्चिदुना आइशाؑ को कुछ जवाब दिया न
 दिन में हज़रते सच्चिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा के हां
 तशरीफ़ लाए, रात को सोते वक्त तशरीफ़ लाए तो बिस्तरे
 फ़ातिमतुज्ज़हरा पर इस तरह तशरीफ़ फ़रमा हुए कि एक क़दम
 हज़रते सच्चिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा पर था दूसरा जनाबे
 अलीؑ के सीनए पुर अन्वार पर, उस सीने के
 कुरबान जो क़दमे रसूल चूमे। मुफ्ती साहिब हृदीषे मुबारक के
 इस हिस्से “मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज़ न बता दूँ?”
 के तहत फ़रमाते हैं : “‘या’नी लौंडी ख़ादिम का फ़ाइदा तुम को
 सिर्फ़ दुन्या में पहुंचे मगर इस दुआ का फ़ाइदा दुन्या, क़ब्र, हशर

हर जगह पाओगी, हुँजूर ने इन्हें खादिम क्यूं
न अँता फ़रमाया ।”

शब को आए मुस्तफ़ा ज़हरा के घर
हैं येह ख़ादिम उन यतीमों के लिये
तुम पे साया है रसूलुल्लाह का
मुफ़्ती साहिब हदीषे मुबारक के इस हिस्से जब तुम
अपने बिस्तर लो तो 33 बार سُبْحَنَ اللَّهِ 33 बार اَللَّهُ اَكْبَر
34 बार اَللَّهُ اَكْبَر पढ़ लो, येह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर
है। के तहत फ़रमाते हैं : इस का नाम तस्बीहे फ़ातिमा है जो
तमाम सिलसिलों में खुसूसन सिलसिलए क़ादिरिया में बहुत
मा'मूल है, इस तस्बीहे के लिये आम तस्बीहों में हर 33 दाने
पर छोटा इमाम पड़ा होता है।

(مرأة المناقح، كتاب الدعوات، باب ما يقول عند الصباح..... الخ، ج ٣، ص ٨)

سیخاऊں جیس سے تुم آگے والوں کو پکड़ لो اور پیछے والوں سے آگے بढ़ جاؤ اور تुम مें से کोई اپنजल ن हो उस کے سिवा جो تुम्हारे से کाम करे ? بولे : हाँ ! या रसूلल्लाह ﷺ ! فرمाया : हर नमाज़ के बा'द 33-33 बार رضي الله تعالى عنه تسبیح, تکبیر और हम्द करो । हज़रते अबू سालेह رضي الله تعالى عنه कहते हैं कि फिर मुहाजिर फुक़रा हुज़ूरे अन्वर की खिदमत में लौटे और अर्जُ किया : हमारे इस अमल को हमारे मालदार भाइयों ने सुन लिया तो उन्होंने भी यूं ही किया तब रसूلल्लाह ﷺ ने फرمाया कि ये ह **अज्ञाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे ।

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب الترغيب في مكث المصلى……الخ، ج ٢، ص ٣٠٢٢، ٢٢٥، ملقطاً)

हज़रते मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ "میرک़ات شارھے میشکات" مें फ़رمाते हैं : सरवरे काएनात जो तस्बीहात पढ़ने की तालीम फ़رمाई इस में ये ह हिक्मत भी है कि सोते वक्त इन तस्बीहात के पढ़ने से दिन के काम-काज की थक्कन और दर्दों आलाम दूर हो जाते हैं ।

(برقة التفاصي شرح مشكاة المصليج، كتاب الدعوات، باب ما يقول عند الصباح والمساء والمنام، ج ٥، ص ٣٠٠)

شیخِ تریکت، امریرو اہلے سُنّت نے دامت برکاتہم العالیہ میں بہنوں کے لیے جو 63 مدنی انعامات اُतا فرمائے ہیں ان میں مدنی انعام نمبر 3 میں ہے : "ک्या آج آپ نے نماजے پंजگانा के बा'द नीज़ सोते वक्त कम अज़ कम

एक एक बार आयतुल कुर्सी, सूरए इख्लास और तस्बीहे
फ़ातिमा पढ़ी ? नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?”

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर आज से पहले
तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ने में सुस्ती थी तो अभी से नियत फ़रमा
लीजिये और न सिर्फ़ तस्बीहे फ़ातिमा की बल्कि अमीरे अहले
सुन्नत के अ़त़ा कर्दा तमाम मदनी इन्झामात पर अ़मल की नियत
कीजिये और मक्तबतुल मदीना के बस्ते से मदनी इन्झामात का
रिसाला ह़ासिल कीजिये इस के मुताबिक़ अपना मुहासबा फ़रमाइये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَرْكِيَّتُ وَ تَأْلِيمُ كَوْخَجَارَانَا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिक्र कर्दा हृदीषे पाक
में आप ने सुना कि सच्चिदा फ़ातिमा ने ख़ादिम की दरख़्वास्त
की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें प्यारे प्यारे मदनी
फूल अ़त़ा फ़रमाए । शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती
अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيٌّ मिरआतुल मनाजीह
जिल्द 4 सफ़हा 8 पर हृदीषे पाक की शहर में फ़रमाते हैं : मां
बाप को चाहिये कि अपनी अवलाद को मेहनती, आबिद,
ज़ाहिद, मुत्तकी बनाएं, उन्हें सिर्फ़ मालदार करने की कोशिश न
करें । लड़की के लिये बेहतरीन जहेज़ आ'माले सालेहा हैं न
कि सिर्फ़ माल ।

(مرأة التناجيح شرح مشكلة المصائب، كتاب الدعوات، باب مليقول عند الصباح.....الخ، ج 4، ص 8)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

خواہوں جنگت اور گھرلے کام-کوچ

ہجڑتے ساییدونا اُلیٰ یعیل مُرتَّجَا نے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہُ فُرمایا : ہجڑتے ساییدا فَاتِیْمُتُوْجَہْرَا میرے پاس اپنے ہاث سے چککی پیساتی ہیں جس کی وچھ سے ہاث میں نیشان پڈ گا اور خود پانی کی مشک بھر کر لاتی ہیں جس کی وچھ سے سینے پر مشک کی رسمی کے نیشان پڈ گا اور گھر میں جاؤ گے خود ہی دتی ہیں جس کی وچھ سے تمماں کپڈے مائلے ہو جائیں کرتے ہیں ।

(سنّت أبي داود، كتاب الادب، باب فی التسبیح عند النوم، ص ٢٩٠، الحديث: ٥٠٢٣)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! گھر کا کام-کا ج اپنے ہاثوں سے کرنا جیگر گوشاء تاجدارے رسالات، خواہوں جنگت، شہجاذیے کوئنے، ہمیل ہسنے کی سुننے موبارکا ہے । اسلامی بہنوں اپنے کام خود کرے گی تو ان کا گھر خوشیوں کا گھووارا بن جائے گا । اپنے بچوں کے ابب کے سوچے ہوئے کام بھی کرے اور اپنی سا س کے سوچے ہوئے کام بھی کرے । امیرے اہلے سوچتے ڈامت بر کاتھم العالیہ نے اپنی بیٹی کی اسی ترہ تربیت فرمائی، چوناں دا' واتے اسلامی کے ایسا اُتی ایدارے مکتبتوں مداری کے متابوں ۸۶ سفہات پر مُشتمل رسالے “سوچنے نیکاہ” سفہا ۴۸ پر شویخ تریکت، امیرے اہلے سوچتے، بانیے دا' واتے اسلامی ہجڑتے اُلّاما مولانا عبدالبیتل، محمد ایلیاس اُظھار کاری رجھی جی یا ای دا' واتے کے ہوالے سے مکمل ہے :

�ر کو خوشیوں کا گھووارا بنانے اُر آخیرت سانوار نے کے لیے "اعلماں" کی ترکھ سے "بیلبے اعلماں" کے لیے 12 مارکنی فول

(1).... شوہر کی ترکھ سے میلانے والा ہر ہوکم جو بھیلا فے
شارع نہ ہو، بجا لانا جروری ہے ।

(2).... اپنے شوہر اور ساس کا خدھے ہو کر اسٹکبال
کیجیے اور خدھے ہو کر ہی رुخسٹ بھی کیجیے ।

(3).... دن میں کم اجڑ کم اک بار (مुمکن ہو تو) ساس
کی دست بوسی کیجیے ।

(4).... اپنی ساس اور سوسر کا والیدن کی ترہ انکرام
کیجیے । ان کی آواز کے سامنے اپنی آواز پست
رکھیے । ان کے اور اپنے شوہر کے سامنے "جی جناہ" سے
بات کیجیے ।

(5).... شوہر جرورت ن سजاؤ دے کا مجاہ ہے ।⁽¹⁾ اسے ہو تو

(1).... مفسرینے شہیر، ہکیمیں اور ہبھتے مفسری احمد یا رخان
نرمی سُرتوں نیسا کی آیات نمبر 34 کے تہذیب لیختے ہیں : رب
تَعَالٰی نے یہاں ان کی (یا'نی بیویوں کی) اسلامیت کی تین سوڑتے بیان
فرمائی : (1).... نسیحت کرنا (2).... باہکوٹ کرنا (3).... مارنا ।
(مجزید لیختے ہیں :) نا فرمانی پر خاکند مار سکتا ہے مگر
اسلامیت کی مار مارے ن کی ایجاد (یا'نی تکلیف دے کر) کی جائے شاگرد
کو عصیاد یا ابوالاد کو مان بآپ اسلامیت کے لیے مارتا ہے । بیلا
کو سوڑ بیوی کو مارنا سخت ممانعت ہے جس کی پکد رب
کے ہاں
جرور ہوگی । (تفسیر نعیمی، پ، ۵، النساء، تحت الای، ۳۷، ج، ۵، ص، ۴۰، ملقطاً)

بہارے شریعت میں (بہارے شریعت، مولانا جعفر علی بن ابی طالب) میں ہے : "بیوی نماج ن پڑے تو شوہر اس کو مار سکتا ہے اسی ترکھ تکے
جی نت پر بھی مار سکتا ہے اور (بیلا ایجاد) گھر سے باہر نیکل جانے
پر بھی مار سکتا ہے ।" (بہارے شریعت، مولانا جعفر علی بن ابی طالب)

सब्रो तहम्मुल का मुज़ाहरा कीजिये, गुस्सा कर के या ज़बान दराजी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में आप पर “मैके” के दरवाज़े बन्द हैं।

«६»....हाँ ! बिगैर रुठे शोहर की इजाज़त की सूरत में जब चाहें
मैके आ सकती हैं ।

॥७॥.... अपने मैके की कोताहियां शोहर को बता कर ग्रीष्म के गुनाहे कबीरा में न खुद मुब्तला हों न अपने शोहर को “सुनने” के गुनाहे कबीरा में मुलव्वष करें ।

﴿8﴾.... अपनी बे अ़मली या ला इल्मी को ढांपने के लिये इस तरह कह देना कि मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया सख्त हमाकत है ।

“**९**.... बहारे शरीअृत हिस्सा ७ से “नान-नफ़क़ा का बयान” “जौजैन के हुक्कु” वगैरा का मतालआ कर लीजिये ।

《10》.... अपने लिये किसी किस्म का “सुवाल” अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना। हाँ ! अगर वोह मुक़र्रर कर्दा हुक्क अदा न करें तो मांग सकती हैं।

﴿11﴾.... मेहमान की खिदमत सआदत समझ कर करना, इस के अखराजात के मुआमले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना । अपने वालिद (या'नी सगे मदीना) से तलब कर लेना، ﴿إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ﴾ मायूसी नहीं होगी और अगर वोह खुश दिली से रिज़ामन्द हों तो उन की सआदत मन्दी होगी ।

『12』.... शोहर की इजाजत के बिगैर घर से न निकलें ।

(इस्लामी बहनों को चाहें तो तोहफे में इस तहरीर की फोटो कॉपी दे सकती हैं)

(3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1418 हि.)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हुक्के जौजैन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को चलाने और इसको खुशियों का गहवारा बनाने में मियां और बीवी का बहुत किरदार है। अगर दोनों अपनी अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करें तो घर खुशियों का गहवारा बन सकता है। मियां-बीवी के दरमियान हर एक के दूसरे पर बहुत से हुक्क़ू वाजिब हैं इन में जो अपने हुक्क़ू अदा न करेगा अपने गुनाह में गिरिफ्तार होगा, अगर बीवी या शोहर में से एक हक़्क़ अदा न करे तो दूसरा इसे दलील बना कर उसके हक़्क़ की अदाएँगी को नहीं छोड़ सकता। लिहाज़ा मियां-बीवी के हुक्क़ू पर मुश्तमिल चन्द अह़ादीषे मुबारका पेश की जाती हैं।

“ਹੁਕੂਮੇ ਸ਼ੋਹਰ” ਕੇ ਆਠ ਹੁਣਫ਼ ਕੀ ਨਿਖ਼ਬਤ ਸੇ
ਸ਼ੋਹਰ ਕੇ ਹੁਕੂਮੁ ਸੇ ਮੁਝਾਲਿਕ 8 ਫਰਾਮੀਨੇ ਮੁਖਤਫ਼ਾ

शख्स को किसी के लिये सज्दा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे ।

(المُسْتَدِرَكُ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ الْبَرِّ وَالصَّلَةِ، حَقُّ الْزَوْجِ عَلَى الْزَوْجَةِ، جُ ٥، صُ ٢٣٠، الْحَدِيثُ: ٤٧٠)

﴿٢﴾ हज़रते सच्चिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अगर आदमी का आदमी के सिये सज्दा करना दुरुस्त होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे कि इस का उस के ज़िम्मे बहुत बड़ा है, क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ाए कुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर की चोटी तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख्म हों जिन से पीप और कच-लहू (या'नी पीप मिला खून) बहता हो फिर औरत इसे चाटे तो हक्के शोहर अदा न किया ।

(مسند احمد، مسند انس بن مالک، ح ۵، ج ۳۲۵، الحدیث: ۱۲۹۷۹)

﴿٣﴾..... हज़रते सच्चिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : शोहर ने औरत को अपने पास बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और गुस्से में इस ने रात गुजारी तो सुब्ह तक उस औरत पर फ़िरिश्ते ला'नत भेजते रहते हैं ।

(صحيح البخاري، كتاب بدأ الخلق، باب إذا قال أحلك أمين والملاك في النساء... الخ، ص ٨٢٩، الحديث: ٣٢٣٧)

और दूसरी रिवायत में है : जब तक शोहर उस से राजी न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औरत से नाराज़ रहता है ।

(صحيح مسلم، كتاب النكاح، باب تحرير امتناعها من فراش زوجها، ص ٥٣٩، الحديث: ١٤٣٦)

﴿4﴾..... **ہجڑتے ساہی دُنًا مُعَاجِزٌ** سے رি঵ايت ہے
کि **ہجڑو** **اکڈس** نے **صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم** نے فرمایا : “جب اُورت
اپنے شوہر کو دُنْيَا مें **ईज़ा** دेतی ہے تو **ہڑے** **ऐن** کہتی ہے : **خُودا**
تُujjَهُ **غَارَة** کرے، **इसे** **ईज़ा** **न दे**، یہ تو تेरے پاس مہماں ہے،
اُن کَرीب **تُujjَهُ** سے **जुदا** **हो** کر **हमारे** پاس آएگا ।”

(سنن البرمذی، کتاب الرضاع، باب ملجه فی کراہیۃ الدخول...الخ، ص ۳۰۵، الحدیث: ۱۷۲)

﴿5﴾..... **ہُسْنَه** **اُخْلَاقُ** کے پैکر، **مَحَبُّوْبَه** رब्बے اکابر
کا فرمائے جنات نیشان ہے : “جو اُورت
ایسے **ہَالَّهُ** میں مرنی کی **उس** کا شوہر **उس** سے راجیٰ ثا تو وہ
جنات میں **داخِل** ہوگئی ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب حق الزوج علی المرأة، ص ۲۹۷، الحدیث: ۱۸۵۳)

﴿6﴾..... **خَاتَمُ الْمُرْسَلِينَ**، **رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ**
نے **اِرْشَاد** فرمایا : “جب اُورت پانچ وکٹ
نماج پढے، ماہے رمজان کے روچے رکھے، اپنی شامگاہ کی
ھیفاجت کرے اور اپنے شوہر کی فرمائیں برداری کرے تو وہ
جنات کے **जिस** **दरवाजे** سے چاہے گی **داخِل** ہو جائے ।”

(الحسان بترتيب صحيح ابن حبان، کتاب النکاح، باب معاشرة الزوجین،

ذکر ایجاد الجنۃ للمرأۃ اذا طاعت زوجها...الخ، ص ۱۱۲، الحدیث: ۲۱۶۳)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِّهُوَسَلَّمَ نے
﴿7﴾ سچیدے اُالم، نورے موجسسماں
एक شادیشुदا اُئرط (या'नी हज़रते سचیدونا हसीن बिन मोहसिन
की फूफी) से दरयाप्त फ़रमाया : “तेरा अपने
शोहर से कैसा बरताव है ?” उस ने अर्ज की : “मैं ने उस की
खिदमत में कोई कमी नहीं की लेकिन अब मैं उस से आजिज़
आ गई हूँ ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِّهُوَسَلَّمَ نے इरशाद फ़रमाया :
“गौर करो ! तुम कैसे उस से आजिज़ आ गई हो हालांकि वोह
तो तेरी جनत और दोज़خु है ।”

(مسند احمد بن حنبل مسند القبائل، حديث عمة حسين بن محسن، ج ١، ص ٢٦٧، الحديث: ٢٨١٢)

﴿٨﴾..... उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना आइशा सिद्दीक़ा
फ़रमाती हैं कि मैं ने रहमते अ़ालम, नूरे मुजस्सम
की बारगाह में अर्ज़ की : “अौरत पर सब से
ज़ियादा हक़ किस का है ?” तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “शोहर का ।” फिर मैं ने अर्ज़ की : “मर्द
पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ?” इरशाद फ़रमाया :
“उस की माँ का ।” (المُسْتَدِرُكُ عَلَى الصَّحِيحَيْنِ، كِتَابُ الْبَرِّ وَالصَّلَاةِ، بَابُ اعْظَمِ النَّاسِ حَقًا عَلَى الرَّجُلِ أَمَّهُ، ج ٥، ص ٢٣٣، الحَدِيثُ: ١٨٢)

बीवी के हक्क के मतभिलिक चन्द्र अहादीषे मुबारक

मर्दों को भी औरतों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये क्योंकि औरत टेढ़ी पस्ली से पैदा की गई है इस लिये इस के टेढ़ेपन से ही फाइदा उठाना चाहिये ।

(۱)..... ہجڑتے سا یہ دُنَا ابُو ہُرَيْرَةَ سے مارکی ہے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کی رسولُ لُلَّا هُوَ نے ایک امرِ فرمادیا : "مُسْلِمٌ رَّجُلٌ مَّرْدٌ اُور مُؤْمِنٌ کو مَبْغُوثٌ نَّ رَخْبَهُ اگر یہ ایک اُدھت بُری مَا' لُمْ ہوتی ہے دُوسَری پسند ہوگی ।"

(صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصیة بالنساء، ص ۱۵۵۶، حدیث: ۱۲۶۹)

یا' نی تماام اُدھتے خُراب نہیں ہونگی جب کی اچھی بُری ہر کیس کی بات ہونگی تو مَرْدُ کو یہ نہ چاہیے کی خُراب ہی اُدھت کو دیکھتا رہے بلکہ بُری اُدھت سے چشمپوشنی کرے اور اچھی اُدھت کی ترکیب نجٹر کرے ।

(۲)..... ہجڑوں نبی یحییٰ اکرام نے فرمادیا : تُم مِنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ ایک ریوایت میں ہے : "اُورت کو گولام کی ترکیب مارنے کا کُسد کرتا ہے (یا' نی اس نے کرے) کی شاید دُوسَرے وکٹ ہسے اپنا ہم خُراب کرے ।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب حسن معاشرۃ النساء، ص ۳۱۶، حدیث: ۱۹۷۸)

(۳)..... ایک ریوایت میں ہے : "اُورت کو گولام کی ترکیب مارنے کا کُسد کرتا ہے (یا' نی اس نے کرے) کی شاید دُوسَرے وکٹ ہسے اپنا ہم خُراب کرے ।"

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الشمس وضخھا، ص ۱۲۷۶، حدیث: ۴۹۳۲)

یا' نی جاؤ جیت کے تبلُّکات اس کیس کے ہے کی ہر ایک کو دُوسَرے کی ہاجت اور باہم اسے مراہیم کی ان کو چوڈنا دُشوار ہے لیہا جا جو ان باتوں کا خیال کرے گا مارنے کا ہر گیج کُسد ن کرے گا ।

میyan-بیوی کی اسلاماً کے لیے نیگرانے شورا کا VCD بیان “شوہر کو کیسا ہونا چاہیے ?” اور “بیوی کو کیسا ہونا چاہیے ?” مکتابت علیہ مداری سے خود بھی حاصل کیجیے اور دوسری اسلامی بہنوں کو بھی اس کی ترجمہ دیلایے ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

بیوی کے زیرمیں شوہر کے ہوکڑے

پ्यारी پ्यारی اسلامی بہنو ! شوہر کے ہوکڑے اُورت پر ب ک پھرتا ہے اور شوہر کے ہوکڑے کی ادائیگی اُورت پر بہت زیادا لاجیم اور جُرُری ہے । اُورت پر سب سے بड़ا ہوکڑہ شوہر کا ہے یا ’نی مام بآپ سے بھی زیادا । مرد پر سب سے بड़ا ہوکڑہ مام کا ہے یا ’نی جو جا کا ہوکڑہ اس سے کم بالکل بآپ سے بھی کم । یہ اس لیے کی **آلہ اللہ** نے ان میں اک کو دوسرے پر فوجیلنا دی । وَاللَّهُ تَعَالَى آعْلَمْ

میرے آکا، آ’لا هجرت، اُجھی مول بركت، اُجھی مول مرتبت، پر وان اے شام پر ریسالات مولانا شاہ اسماعیل احمد رضا خان ”فَتَأْوِيَ رَجُلَيْكَ“ 24 میں بیوی کے زیرمیں شوہر کے ہوکڑے بیان کرتے ہوئے ارشاد فرماتے ہے : اُورت پر مرد کا ہوکڑہ خاص تمورے موت اُلیل کا جو جیت میں **آلہ اللہ** وَاللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ کے بآ’د تماں ہوکڑے ہتھا کی مام بآپ کے ہوکڑے سے جڑید ہے، ان تمورے میں اس کے اہکام کی ایسا اُت اور اس کے ناموس کی نیگہداشت اُورت

पर फ़र्जें अहम हैं, बे इस के इज़्जन के (या'नी इस की इजाज़त के बिगैर) महारिम के सिवा कहीं नहीं जा सकती और महारिम के यहां भी मां बाप के यहां हर आठवें दिन वोह भी सुब्ह से शाम तक के लिये और बहन, भाई, चचा, मामूँ, ख़ाला, फूपी के यहां साल भर बा'द और शब (या'नी रात) को कहीं नहीं जा सकती । (फ़तावा रज़िविया, जि. 24 स. 380)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : उम्रे मुतअ़्लिक़ा ज़न-शवी में मुतलक़न उस की इताअ़त (या'नी मियां-बीवी से मुतअ़्लिक़ मुआमलात में बीवी मुतलक़न शोहर की फ़रमांबरदारी करे) कि इन उम्र में उस की इताअ़त वालिदैन पर भी मुक़द्दम है, उस के नामूस की ब शिद्दत (या'नी सख्ती से) हिफ़ाज़त, उस के माल की हिफ़ाज़त, हर बात में उस की खैरख़्वाही (या'नी अच्छा चाहना), हर वक्त उम्रे जाइज़ में उस की रिज़ा का त़ालिब रहना, उसे अपना मौला जानना, नाम ले कर न पुकारना, किसी से उस की बे जा शिकायत न करना, और खुदा عَزُّوجَلْ तौफ़ीक़ दे तो बजा (या'नी दुरुस्त शिकायत) से भी एहतिराज़ करना (या'नी बचना), न बे उस की इजाज़त के आठवें दिन से पहले वालिदैन या साल भर से पहले और महारिम के यहां जाना, वोह नाराज़ हो तो उस की इन्तिहाई खुशामद कर के उसे मनाना (कि) अपना हाथ उस के हाथ में रख कर कहना कि ये ह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है यहां तक कि तुम राज़ी हो या'नी मैं तुम्हारी ममलूका हूं जो चाहो करो मगर राज़ी हो जाओ । (ऐज़न, स. 371)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुन्यवी मुश्किलात पर सब्र की तलकीन

(كتاب الفضائل، باب فضائل النبي ﷺ، ج ٢، ص ١٩٠، الحديث ٣٥٣٧)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कैसी तरबियत थी कि इतने मसाइबो आलाम मगर ज़बां पर हर्फ़े शिकायत नहीं बल्कि राज़ी ब रिज़ा हैं अपनी तक्लीफ़ का किसी से ज़िक्र नहीं करतीं और एक हम नादान हैं कि मा'मूली सी तक्लीफ़ आ जाए तो आस्मान सर पे उठा लेती हैं। **अब्लाह** वाले मसाइब पर सब्र करते हैं और सब्र के बारे में तो हमारा रब्ब भी فُरमाता है, चुनान्चे पारह 4, सूरए आले इमरान, آयत नम्बर 200 में इरशादे खुदाए रहमान है :

”يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَاصْلِبُوا وَرَايْطُوا فَإِنَّ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ“
تَرْجِمَةٌ كَنْجُولِ إِيمَانٍ : ऐ इमान वालो ! सब्र करो और सब्र में
दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी
करो और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो ।

دًا'वتے اسلامی کے ایسا اُتری ایدارے مکتب بتوں مدنیا کی
متابوں ۲۴۴ سفہاً پر مُشرک میل کیتاب "بِحِشْتِ الْ
كُنْجِيَّاً" سفہاً ۲۲۰ پر شیخوں حمدیہ حجراً تے اُلّامہ مولانا
ابدُوال مُسْتَفْضٰ آجَمیٰ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْیِ فرماتے ہیں : حجراً تے ساییدونا
ابلیسیوں مُرْتَجَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہُ سے مارکی ہے کہ سب تین ہیں :
(۱) .. مُسَيْبَةٌ پر سب (۲) .. ایجاد پر سب (۳) .. گُناہ سے سب،
تو جو مُسَيْبَةٌ پر سب کرے یا ہن تک کہ مُسَيْبَةٌ کو اُचھی
تسالی سے دور کر دے تو **اَللَّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** اس کے لیے ۳۰۰ درجے
لیخ دेतا ہے جس کے دو درجے کے درمیان اتنا فاسیلا ہوتا
ہے جیتا کہ جمینوں آسمان کے درمیان ہے اور جو ایجاد
پر سب کرتا ہے **اَللَّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** اس کے لیے ۶۰۰ درجے لیخ
دیتا ہے جس کے دو درجے کے درمیان اتنا فاسیلا ہوتا ہے
جیتا کہ جمین کی نیچلی کیچڑی اور تمام جمینوں کے
مُنْتَهی کے درمیان فاسیلا ہے اور جو گُناہ سے سب کرے تو
اَللَّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اس کے لیے ۹۰۰ درجے لیخ دیتا ہے جس کے دو
درجے کے درمیان اتنا فاسیلا ہوتا ہے جیتا کہ جمین کی
نیچلی کیچڑیوں اور اُرْش کے مُنْتَهی کے درمیان کے دو گُنے کے
درمیان فاسیلا ہے ।

(كتاب العمال، ج ۳ كتاب الأخلاق، فضيلة الصبر، ص ۱۱۱، الحديث: ۲۵۱۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَيْبِ !

तशरीहात व फ़्वाझद

सब्र के मा'ना "حَبْسُ النَّفْسِ عَلَى الْمَكَارِهِ" या'नी नफ्स को तकलीफ़ों के ऊपर रोके रहना और कन्ट्रोल में रखना, अब गौर कीजिये कि सब्र की तीनों किस्मों पर ये ह ता'रीफ़ सादिक आती है।

(1) **صَبْرٌ عَلَى الْمُصِيَّةِ**.... या'नी "मुसीबत पर सब्र" : ज़ाहिर है कि मुसीबत के वक्त नफ्स में बड़ी बेचैनी और बे क़रारी पैदा होती है और बा'ज़ मरतबा ऐसी बोखलाहट बल्कि जुनून व दीवानगी की कैफिय्यत पैदा हो जाती है कि इन्सान रोने पीटने, बाल नोचने और कपड़े फाड़ने लगता है अब इसी मौक़अ़ पर अपने नफ्स को रोने पीटने और ज़ज़्ज़ व फ़ज़्ज़ की हरकतों से रोके रहना येही "मुसीबत पर सब्र करना" है।

(2) **صَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ**.... या'नी "इबादत पर सब्र" : ज़ाहिर है कि गर्मियों का रोज़ा हो और आदमी प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो और सामने ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा शरबत रखा हुवा हो नफ्स बार बार शरबत की तरफ़ लपकता है मगर रोज़ादार नफ्स को रोके हुए है जो नफ्स पर गिरां और शाक़ है येही "इबादत पर सब्र करना" है।

(3) **صَبْرٌ عَنِ الْمُعْصِيَةِ**.... या'नी "गुनाह से सब्र" : जवान आदमी है, शहवत का ग़लबा शबाब पर है, बदकारी के लिये नफ्स बे क़रार है मगर परहेज़गार मुसलमान (मर्दों औरत) अपने नफ्स को रोके हुए है और बदकारी से बचा हुवा है। येही "गुनाह से सब्र करना" है।

हृदीष में आप ने पढ़ लिया कि सब्र की इन तीनों किस्मों का बड़ा दरजा है।

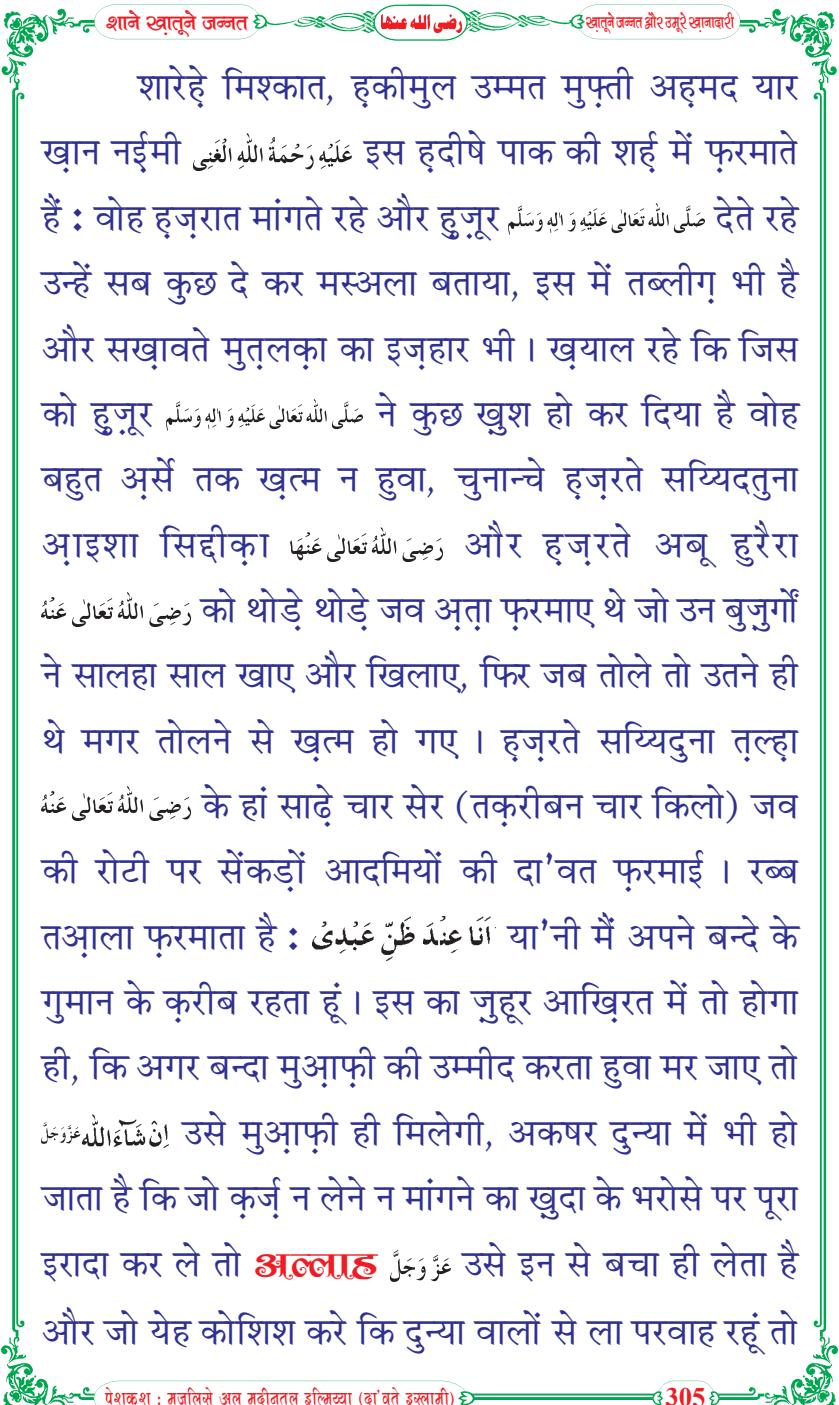
अल्लाह نے کुरआनے مஜید مें इरशाद فرمाया :

تَرْجِمَةٌ كَنْجُولِ إِيمَانٍ : بَشِّك
अङ्गार द्वारा साबिरों के साथ है।

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزُّوْجَلٌ کی ایمداد و
کا مددگار **آلٰہ** عَزُّوْجَلٌ ہوتا
ہے۔ اس سے بढ़ کر سब کا اوجھے شواب کیا ہوگا
کی خود خودا عَزُّوْجَلٌ سا بیرین کے ساتھ ہوتا ہے۔

صَلُّوا عَلَى الْحُبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سَعْيَهُ مَرवी है कि कुछ अन्सारी लोगों ने हुजूर नबिये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुवाल किया । हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें दिया । उन्हों ने फिर मांगा हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अ़ता फरमाया हत्ता कि वोह माल जो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास था ख़त्म हो गया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : जो कुछ माल मेरे पास होगा वोह तुम से हरगिज़ बचा न रखूंगा और जो सुवाल से बचना चाहे **अल्लाह** غََرَّ وَجْلَ उसे बचाएगा और जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** غََرَّ وَجْلَ उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र चाहे **अल्लाह** غََرَّ وَجْلَ उसे सब्र अ़ता करेगा और किसी को सब्र से बेहतर और वसीअ कोई चीज़ न मिली ।

(**سنن الدارمي**، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف عن المسألة، ص ٣٨١، الحديث: ١٦٥٢)


 شاہزادے خاں نے جनत
 رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
 ۳ خاں نے جنات گیر کر دے خانہ خانی

شارے है मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार
 खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي इस हृदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते
 हैं : वोह हज़रत मांगते रहे और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ देते रहे
 उन्हें सब कुछ दे कर मस्अला बताया, इस में तब्लीग़ भी है
 और सख़ावते मुत्लक़ का इज़हार भी । ख़्याल रहे कि जिस
 को हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने कुछ खुश हो कर दिया है वोह
 बहुत अँसे तक ख़त्म न हुवा, चुनान्चे हज़रते सम्प्रियदतुना
 आइशा سिद्दीक़ा أَعْلَمُهُ और हज़रते अबू हुरैरा
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को थोड़े थोड़े जब अँत़ा फ़रमाए थे जो उन बुजुर्गों
 ने सालहा साल खाए और खिलाए, फिर जब तोले तो उतने ही
 थे मगर तोलने से ख़त्म हो गए । हज़रते सम्प्रियदतुना त़ल्हा
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां साढ़े चार सेर (तक़रीबन चार किलो) जब
 की रोटी पर सेंकड़ों आदमियों की दा'वत फ़रमाई । रब्ब
 तआला फ़रमाता है : أَنَّا عِنْدَنَا ظَلَّمٌ عَبْدِيْ या'नी मैं अपने बन्दे के
 गुमान के क़रीब रहता हूं । इस का जुहूर आखिरत में तो होगा
 ही, कि अगर बन्दा मुआफ़ी की उम्मीद करता हुवा मर जाए तो
إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ी ही मिलेगी, अकषर दुन्या में भी हो
 जाता है कि जो कर्ज़ न लेने न मांगने का खुदा के भरोसे पर पूरा
 इरादा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इन से बचा ही लेता है
 और जो येह कोशिश करे कि दुन्या वालों से ला परवाह रहूं तो

बहुत हृद तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ला परवाह ही रखता है, मगर येह फ़क़त् ज़बानी दा'वा न हो अ़मली कोशिश भी हो कि कमाने में मशगूल रहे, ख़र्च दरमियाना रखे, गुलछरे न उड़ाए **अल्लाह** وَ رَسُولُهُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سच्चे हैं इन के वा'दे हक़्, ग़लती हम कर जाते हैं।

“जो सब्र चाहे **अल्लाह** तअ़ाला उसे सब्र अ़त़ा करेगा” इस के तहत मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : रब्ब तअ़ाला की अ़त़ाओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़त़ा सब्र है कि रब्ब तअ़ाला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया :

إِسْتَعِينُو بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ (٢، البَقْرَةُ: ١٥٣)

(तर्जमए कन्जुल ईमान : सब्र और नमाज़ से मदद चाहो) और साबिर के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक्कतें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दर्जे हासिल कर लेता है, रब्ब तअ़ाला ने हज़रते सच्यिदुना अय्यूब عليَّ نَبِيًّا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के बारे में फ़रमाया : (٢٣: ٢٣) اَنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا (٢٣: ٢٣) “सब्र ही की बरकत से हज़रते सच्यिदुना इमामे हुसैन सच्यिदुश्शुहदा हुए !”

(مرأة المناجح شرح مشكوة المصاييف، كتاب الزكاة، بباب لا تحل له المسألة ومن تحل له، ج ٣، ص ٢٠، ملقطاً)

سब کی ہکری کٹ

کुتبے ربانی، گئے سمدانی ہجڑتے ساییدنہ شیخ ابڈول کا دیر جیلانی قُدِّسَ سَلَّمَ اللہُ تَعَالٰی سے سب کے معتزلیک داریا پخت کیا گیا تو آپ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْهِ نے فرمایا：“سب یہ ہے کی بلہ و موسیٰ بنت کے وقت **آل لیاہ** عَزَّ وَجَلَ کے ساتھ ہو سنے ادب رکھے اور اس کے فیصلوں کے آگے سرے تسلیم ختم کر دے ।”

(بہجتوں اسرار (معترض) ص 417)

اندھا جے امری رے اہلے سونت

دا'ватے اسلامی کے ارشادیں ادارے مکتبتوں مدنیا کی متابوں 101 سفہاً پر مشریقیل کتاب “تا'魯فہ امری رے اہلے سونت” سفہاً 47 پر ہے : شیخ تاریکت، امری رے اہلے سونت، بانی دا'واتے اسلامی ہجڑتے اعلیٰ مولانا ابو بیلالم محدث ایڈیس اعلیٰ کا دیری رجیو کے مہلے میں رہنے والے اک اسلامی بائی نے جو آپ کو بچپن سے جانتے ہیں، ہلکیا بتایا کی امری رے اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ بچپن میں بھی نیہایت ہی سادا تباہی ات کے مالک ہے । اگر آپ دامت برکاتہم العالیہ کو کوئی ڈانٹ دeta یا مارتا تو انکا کار روانہ کرنے کی بجائے خاموشی انگلیاں فرماتے । ہم نے انہیں بچپن میں بھی کبھی کسی کو بura بھلا کہتے یا کسی کے ساتھ جگڈا کرتے ہوئے نہیں دیکھا ।

यकीनन इस्लामी बहनों के लिये खातूने जन्नत की इत्तिबाअ में बेहतरीन अज्ञो षवाब और आफ़ियत ही आफ़ियत है चुनान्वे तिरमिज़ी शरीफ़ “किताबुल मनाकिब” में है : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना का फ़रमाने बा क़रीना है : “तुम्हें तक़लीद के लिये तमाम दुन्या की औरतों में मरयम बिन्ते इमरान ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद और फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद और फ़िरअौन की बीवी आसिया काफ़ी है ।”

(سنن الترمذى، أبواب المناقب، باب فضل خديجه رضي الله عنها، من ٨٧٢، الحديث: ٣٨٩٣)

शहज़ादिये कौनैन، उम्मुल हसनैन की इत्तिबाअ की नियत कीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ ख़ूब अज्ञो षवाब हासिल होगा ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

छोटे भाई की इनफिरादी क्रोशिश

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इल्मे दीन हासिल करने, हुक्मों फ़राइज़ सीखने, हलाकत से खुद को बचाने और मग़फिरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा’वते इस्लामी का सुन्तों भरा मदनी माहोल भी है । बसा अवकात एक फ़र्द की दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी घर भर की इस्लाह का सबब बन जाती है ऐसी बीसियों बहारें मौजूद हैं,

شانے خواہیں جنگت ﷺ

رضی اللہ عنہا

خواہیں جنگت ڈیروائے خانہ

एक मदनी बहार मुलाहज़ा हो चुनान्वे बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूँ है कि हमारा घराना बहुत मोड़न था। घर के अफ़राद फ़िल्मों डिरामों और गाने बाज़ों के रसिया थे। खुदा का करना यूँ हुवा कि मेरे छोटे भाई पर एक इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश की। इस पर उन्होंने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्तों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआदत पाई। الحمد لله عز وجل इजतिमाअ़ में मुसल्सल हाज़िरी से भाई के किरदार में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, नमाज़ों के पाबन्द हो गए, सुन्तों पर अ़मल की कोशिश और घर वालों की इस्लाह की फ़िक्र में रहने लगे। वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतें बताते और हमें इस्लामी बहनों के सुन्तों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की रगबत दिलाते। उन की मुसल्सल इनफ़िरादी कोशिश बिल आखिर रंग लाई और मैं ने इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआदत पाई, वहां के माहोल की रुहानियत और सुन्तों भरे बयान ने मुझ पर अ़जीब कैफ़ियत तारी कर दी, दुआ के दौरान मैं ने ख़ूब रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल को कभी न छोड़ने का अ़ज़मे मुसम्म किया। الحمد لله عز وجل इस्लामी बहनों के सुन्तों भरे इजतिमाअ़ात में पाबन्दी से शिर्कत की ब दौलत ख़ैफ़े खुदा और इश्क़े मुस्तफ़ा बढ़ाने का ज़ब्बा नसीब हुवा। दा'वते

इस्लामी के सदके हमारे घर का बिंगड़ा हुवा माहोल मदनी माहोल में तब्दील हो गया। घर वालों की बा-हमी रिज़ा मन्दी से **T.V** निकाल दिया गया क्यूंकि इस के होते हुए फ़िल्मों डिरामों से बचना बेहद दुश्वार है और अब हमारे घर में फ़िल्में डिरामे और गाने नहीं बल्कि सरकार ﷺ की ना'तों के तराने सुने जाते हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 62)

ن مرنा یاد آتا ہے ن جینا یاد آتا ہے

مُحَمَّد یاد آتے ہے مَدِينَة یاد آتا ہے

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !

پ्यारी پ्यारी इस्लामी बहनो ! बिगैर हिम्मत हारे खूब खूब इनफ़िरादी कोशिश करती रहें إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ नाकामी नहीं होगी। इस ज़िम्न में अगर कोई तक्लीफ़ भी पहुंच जाए तो सब्र व शिकैबाई का दामन हाथ से मत छोड़िये कि आने वाली मुसीबत إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा षाबित होगी। हज़रते सच्चिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ का फ़रमाने रुह परवर है : “**अल्लाह** غَرَّ وَجْلٌ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्लिला फ़रमा देता है।”

(صَحِيفَةُ الْبَخَارِيِّ، كِتَابُ الْمَرْضِ، بَابُ مَاجَاءَ فِي كَفَارَةِ الْمَرْضِ، ص ۱۳۳۲، الحَدِيثُ: ۵۱۳۵)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !

बयान नम्बर ४

ख्रिस्तूने जन्माया

का

पर्दे का इहतिमाम

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعْوُذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبَسِ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ طَ

خواں نے جننات کا پردہ کا ڈھنپتی ماماں

دُرُسٰہ شاریف کی فضیلات

ہجڑتے سخی دُننا اسلام شمسِ عدین مُحَمَّد بین
ابدُورِحْمَان سخا کی شافعی نکل فرماتے ہیں :
ہجڑتے سخی دُننا شیخ شیوالی فرماتے ہیں : میرا
ایک پڈوں سی فٹت ہو گیا । میں نے اسے خواب میں دیکھا اور پूछا :
‘ یا ’ نی **اَللٰہ** نے تیرے ساتھ کیا مُعاً ملما
فرمایا ? اس نے کہا : اے شیوالی ! مُعذ ب پر بہت بडی مُسیبتوں
آئی ہتھا کی سُووال کے وکٹ میری جبآن بند ہو گی । میرے دل
میں خیال آیا کی مُعذ ب پر یہ آجِ مادِ ایش کھاں سے آئی، کیا
میری موتِ اسلام پر نہیں ہوئی ? تو نیدا آئی کی یہ پرِ شانیاں
دنیا میں جبآن کی گاٹلات کی وجہ سے ہیں । اسی دُریان جب
(اجاہ کے) فِریشتوں میرے کریب آنے لگے تو اک خوبصورت ڈمدا
خوشبو وala شاخس میرے اور فِریشتوں کے درمیانہ حائل ہو گیا
اور اس نے مُعذ ب جوابات یاد کرવائے جو میں نے فِریشتوں کے
سامنے پیش کر دیے (تو میری جان بخشنی ہو گی) । میں نے اس
(نورانی) شاخس سے پूछا : **اَللٰہ** آپ پر رحم فرمائے !
آپ کون ہیں ? اس نے کہا : میں اک اسی شاخس ہوں جس کو تیرے
نبیِ یحییٰ اک دس پر بکھرتا دُرست دیکھتا ہے (دُنیا میں)

پढ़ने की वजह से पैदा किया गया है। अब मुझे तुम्हारी हर तकलीफ पर मदद करने का हुक्म दिया गया है।

(الْقَوْلُ الْبُدِّيْعُ، الْبَابُ الثَّانِي فِي ثَوَابِ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، ص ١٢٧)

ہज़رतے اُلّالاماء کیفایت اُلّی کافی علیہ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّانِفِی
فَرِمَاتे हैं :

نज़्अ में गोर में क्रियामत में
हर जगह यारे गमगुसार है दुर्लभ

(کافی کی نا'�، اج مौلانا کیفایت اُلّی کافی علیہ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّانِفِی
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

ਮੁਨਾਦੀ ਕੀ ਨਿਦਾ ਬਰਾਉ ਸਥਿਦਾ ਫਾਤਿਮਾ

ہاٹیجُل ہدیش ہج़رतے سਥਿਦੁਨਾ ਇਮਾਮ ਅਬਦੁਰਹਮਾਨ
ਜਲਾਲੁਦੀਨ ਸੁਯੂਤੀ ਸ਼ਾਫੇਈ علیہ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّانِفِی ਨੇ ਅਮੀਰੁਲ ਮੋਅਮਿਨੀਨ
ہج़رਤੇ ਮੌਲਾਏ ਕਾਏਨਾਤ, ਅਲਿਯੁਲ ਮੁਰਤਜਾ, ਸ਼ੇਰੇ ਖੁਦਾ
کرمُ اللَّهِ تَعَالَى رَحْمَةُ الْكَرِيمِ ਸੇ ਰਿਵਾਯਤ ਕੀ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰੇ ਦੋ ਆਲਮ, ਨੂਰੇ
ਮੁਜਸਸਮ, ਸ਼ਾਹੇ ਬਨੀ ਆਦਮ, ਰਸੂਲੇ ਮੋਹਰਤਸ਼ਾਮ
کਾ ਇਰਸਾਦੇ ਮੁਅੜਜਮ ਹੈ : “ਜਬ کਿਯਾਮਤ ਕਾ ਦਿਨ ਹੋਗਾ ਤੋ
ਏਕ ਮੁਨਾਦੀ ਨਿਦਾ ਕਰੇਗਾ, ਏ ਅਹਲੇ ਮਜ਼ਮਅ ! ਅਪਨੀ ਨਿਗਾਹੋਂ
झੁਕਾ ਲੋ ਤਾਕਿ ہਜ਼ਰਤੇ ਫਾਤਿਮਾ ਬਿੱਤੇ ਮੁਹੱਮਦੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ
(رضی اللہ تعالیٰ عنہا) ਪੁਲ ਸਿਰਾਜ਼ ਸੇ ਗੁਜਰੋਂ ।”

(الْجَامِعُ الصَّفِيرِيُّمَ فَيَضُّ الْقَدِيرُ، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۵۲۹، الحدیث: ۸۲۲)

ਅਲਾਹ ਰਖ਼ੂਲ ਇੰਜ਼ت ਕੀ ਉਨ ਪਰ ਰਹਮਤ ਹੋ ਔਰ ਉਨ ਕੇ ਸਦਕੇ ਹਮਾਰੀ ਮਾਫ਼ਿਰਤ ਹੋ।

امین بِجَاهِ الَّذِي أَمَّنَنِي صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

وہ ریدا جس کی ت tuberculosis رے آسمان کی نجیر بھی ن جس پر پડے جس کا دامن ن سہونہ ہوا ٹھوکے جس کا آंچل ن دेखا مہر و میہر نے

उس ریداے نجات پے لاخوں سلام

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! با ایجت و با وفا،
 پैکرے شامروں ہیا مुhammadur سو لالاہ کی
 ساہیب جادی اور آپ کی آگوشن میں تربیت
 پانے والی شاہزادی جو جائے اعلیٰ ہجراتے ساییدت نا
 فاطمہ تھی رہا کے مکاوم مرتبے کی اک جلالک
 اجڑا رہے ہیش آپ نے مولانا فرمائی کی **اللہ** ربع
 ایجت نے آپ کو پردیار رہنے کا اک
 سیلا یہ دیا کی روئے مہشرا آپ کی خاتمہ
 اہلے مہشرا کو نیگاہنے جو کانے کا ہوکم سادیر کیا جائے
 کیونکی یہ وہ افسوس و تھیسیت ہے جنہوں نے ساری
 جنگی بولک باؤ د اجڑا ویساں بھی اپنے پردے کا خیال
 رکھا । تو جو اپنی آدمیات نیخوارنے اور اپنے ہاں اسے
 کا موت مرنی اور اس کے لیے کوشش ہوتا ہے **اللہ** تبارک
 و تھالا اس کا ہامی و ناسیر ہوتا ہے । اسے اس کی کوششوں
 کا بدلہ اس کی نیتیوں کے موتا بیک اپنے فوجوں کو رم سے
 دنیا یا آجیکریت یا دوئیں جہاں میں اترنا فرماتا ہے । پس جو
 شکھ اپنی ایجت کو خراں اور اپنے وکار کو مرج رکھ

نہیں ہونے دेतا ہس کے لیے مुअّجِ جُجُ و بَا و کَار بَنَنَا اُور
اسی حالت پر کاہم رہنا آسان ہوتا ہے । اُورت کے مُعْجَجُجُ
و بَا و کَار ہونے اور رہنے میں شارڈ پردے کا بہت بड़ا دخّل ہے ।
جو اسلامی بہن پردا دار ہوتی ہے وہ مُعْجَجُجُ ہوتی ہے ہس کا
مُعاشرے میں بھی مکام ہوتا ہے اور بارگاہے ربعہ انام میں بھی ।
پہکرے ڈپٹو انجمنت ہجڑتے ساییدتُونا فاطمہؓ
کے نکشوں کدم پر چل کر چادر اور چار دیواری کو اپنے
ऊپر لاجیم کر لئے والی اسلامی بہن اِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّ ذَلِيلٌ
جنات کے جیلوں میں جگہ پائی اور جسے اپنے پردے کا خیال
نہیں، تو ہس کے لیے مُعاشرے میں ڈجٹ پانا اور اپنا مکام
بنانا بہت مشکل ہے । کیونکی مُعاشرہ اور اپراؤ مُعاشرہ
उسی کو ڈجٹ دے دے ہے جو اپنی ڈجٹ کا خیال رکھتا ہے ।
جو جس خسلت کا آدی ہوتا ہے لوگ ہس کی ہسی خسلت
کا لیہا ج رکھتے ہے، ڈجٹ ہسی کی ہوتی ہے جو اپنی ڈجٹ
سنبھالتا ہے جسے مہبوبے مُسٹفی، ساییدوں اسیخیا ڈشمنے
با ہیا کے بارے میں منكول ہے کی اپ
بہت با ہیا ہے، اس خسلتے با انجمنت نے اپ
کو یہ ڈجٹ دی کی ساییدوں امیمیا (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)
اور ملائکہ کرام سے ہیا ہے اپ
فرماتے ہے جیسا کی

بَا ہِيَا سِي ہِيَا

دا'वتے اسلامی کے اشاعتی ہدارے مکتبتوں مدنیا
کی متابوں 649 سفہاً پر مُشتمل کتاب "ہیکایتے"

और نسیہوتے” سफہا 598 पर हज़रते सय्यिदुना शैख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हदीषे पाक नक़ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी तालिब (كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ) से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सरापा बरकत है :

अल्लाह अबू बक्र पर रहम फ़रमाए, उन्होंने अपनी बेटी मेरी जौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) को अपने माल से आज़ाद किया । **अल्लाह** उमर عَزَّ وَجَلَّ पर रहम फ़रमाए, वोह हक़्क बोलते हैं अगर्चे कड़वा हो । **अल्लाह** उषमाने ग़नी पर रहम फ़रमाए, मलाइका इन से ह़या करते हैं । **अल्लाह** अ़ली عَزَّ وَجَلَّ पर रहम फ़रमाए, या **अल्लाह** जहां चले हक़्क को इस के साथ चला दे ।

(سُنْنَ التَّرِيْدِيِّ، باب المناقب عن رسول الله، باب مناقب على بن أبي طالب، من ٨٣٦، الحديث: ٣٤٢٣)

हयाए उषमानी

उम्मुल मोअमिनीन बिन्ते अमीरुल मोअमिनीन हज़रते سय्यिदतुना आइशा سिदीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बयान करती हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम مेरे घर में तशरीफ़

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
की दोनों
फ़रमा थे इस आ़लम में कि आप मुबारक पिन्डलियां कुछ ज़ाहिर थीं। इस दौरान हज़रते अबू बक्र आए और इजाज़त त़लब की तो आप ने उन्हें इजाज़त अ़ता फ़रमाई और इसी त़रह आराम फ़रमा रहे और गुफ्तगू फ़रमाते रहे। फिर हज़रते उमर ने इजाज़त त़लब की तो आप चल्ली त़रह लैटे रहे और गुफ्तगू फ़रमाते रहे। फिर हज़रते सच्चिदुना उषमाने ग़नी ने इजाज़त त़लब की तो आप उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। हज़रते सच्चिदुना उषमान भी बातें करते रहे। जब वोह चले गए तो हज़रते सच्चिदतुना आइशा फ़रमाती हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह जब हज़रते अबू बक्र आए तो आप ने उन के लिये कोई फ़िक्रो एहतिमाम नहीं किया, जब हज़रते उमर आए तब भी आप हज़रते उषमान नहीं किया लेकिन जब उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। रसूल रहमत, नबिय्ये रब्बूल इज्जत ने इरशाद फ़रमाया :

“मैं उस शख्स से कैसे हया न करूँ जिस से
फिरिश्ते भी हया करते हैं।”

صَحِّحُ مُسْلِمُ، كِتَابُ فَضَائِلِ الصَّحَّاْبَةِ، بَابُ فَضَائِلِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، ص٢٧، مِنْ حَدِيثِ عَوْنَىٰ (٢٣٠١)

अल्लाह रब्बुल इऱ्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फिरत हो।

امين بجاء النبي الامين صلى الله تعالى عليه وآلہ وسلم

उलुव्वए शान का क्यूं कर बयां हो आप की प्यारे

हँया करती है मौला आप से मख्लूके नूरानी

(**वसाइले बख़्िशाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत** دامت بر کاتھِمُ الْعَالِيَه س. 498)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

دُون्या مें بहुत
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا^ه हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा
ज़ियादा पैकरे शर्मों ह़या और बा पर्दा रहीं तो उन्हें इस के सिले
में रोज़े मेहशर भी बा पर्दा रखा जाएगा, हज़रते सच्चिदुना
उष्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी ज़िन्दगी बा ह़या गुज़ारी
इस के सिले में रोज़े मेहशर इन का हिसाब ही नहीं होगा, जैसा
कि महबूबे रहमान, سरवरे ج़ीशान نے فُرمाया :
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ (हज़रते) उष्मान रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत ज़ियादा ह़या करने वाले
शख्स हैं, मैं ने **अल्लाह** तअ़ाला से दुआ मांगी है कि वोह
उष्मान سे رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हिसाब न ले तो **अल्लाह** तअ़ाला ने
मेरी सिफारिश कबूल फ़रमाई ।

(كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم، ج ١، ص ٢٩٢، الحديث: ٣٣٠٩٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

जनत में भी पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम ने औरत के हक़ में पर्दे को किस क़दर अहम्मियत दी कि जनत जहाँ किसी बद निगाही और बदकारी का वहमो गुमान तक नहीं वहाँ भी जनती औरतें और हूरें पर्दे में होंगी जैसा कि हज़रते सव्यिदुना अब्दुल्लाह बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की रिवायत करते हैं कि रसूल खुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान हैः (मोमिन के लिये) जनत में एक खोखले मोती का खैमा होगा जिस की चौड़ाई या लम्बाई 60 मील (तक़्रीबन 96.54 किलो मीटर) की है इस के हर गोशे में उस के घर वाले होंगे कि दूसरों को न देख सकेंगे । मोमिन इस खैमे में घूमें फिरेंगे ।

(صَحِّحَ البُخَارِيُّ، كِتَابُ التَّفْسِيرِ، بَابُ حُورٍ مَقْصُورَاتٍ فِي الْخِيَامِ، ص ٢٥٠، الْحَدِيثُ: ٣٨٧٩)

बयान कर्दा हृदीषे पाक की शर्ह करते हुए हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान نَبِيِّمी “میرआतुल मनाजीह शर्ह मिशकातुल मसाबीह” में रक्म तराज़ हैः “या’नी इस मोती के मकान के चारों गोशों में उस के मुख्तलिफ़ घर वाले आबाद होंगे । कहीं अपनी दुन्यावी बीवी बच्चे, कहीं वोह दुन्यावी औरतें जिन के ख़ावन्द काफ़िर मरे और इन के निकाह में दी गईं, कहीं वोह कंवारी लड़कियां जो दुन्या में बिगैर शादी फ़ौत हुईं, कहीं हूरें, खुदाम इन के इलावा इन्हें एक दूसरे को न देखना

फ़ासिले की वजह से न होगा कि जनती मोमिन की निगाह बहुत दूर से देखेगी बल्कि इन जगहों में इमारतें मुख्तलिफ़ होंगी कोठियां, बंगले । ख़्याल रहे कि जनत में पर्दा होगा । रब्ब फ़रमाता है : (٢٧، الرَّحْمَن:) ”**حُبُّ مَقْصُدَاتِ الْخَيَامِ**” (تَرْجِمَة) कन्जुल ईमान : हूरें हैं खैमों में पर्दा नशीन) ” और फ़रमाता है : (٥٦، الرَّحْمَن:) ”**فِيْهَا عَذْرَافٌ**” (تَرْجِمَة) कन्जुल ईमान : वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं । ” पर्दा इस लिये नहीं होगा कि वहां लोग फ़ासिको फ़ाजिर होंगे बल्कि इस लिये कि शर्मी ह़या अच्छी चीज़ है, बे पर्दगी में बे शर्मी है, हाँ ! दोज़ख में पर्दा नहीं होगा वहां नंगे मर्दों औरत एक ही तन्नूर में जलेंगे ।

(مرآة النبیق شعر ومشكلاً المصالح، کتاب احوال قیمة وبداء اخلاق، باب صفتة الجنت واحلامها، ح ٢٧ ص ٩)

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

बीबी फ़ातिमा के क़फ़्न का श्री पर्दा

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतभूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 200 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी रज़वी दामت برکاتہم العالیہ के विसाले नक़ल फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना के ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जनत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते सम्यिदतुना फ़ातिमतुज़ज़हरा رضي الله تعالى عنها पर ग़मे मुस्त़फ़ा का

इस क़दर गुलबा हुवा कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई ! अपने विसाल से क़ब्ल सिफ़्र एक ही बार मुस्कुराती देखी गई। इस का वाकिफ़ा कुछ यूँ है : शर्मों رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हया की पैकर हज़रते सच्चिदतुना ख़ातूने जनत को येह तशवीश थी कि उम्र भर तो गैर मर्दों की नज़रों से खुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़नपोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़ पर हज़रते सच्चिदतुना अस्मा बिन्ते उम्मैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा : मैं ने हब्शा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़त की शाख़े बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं। फिर उन्हों ने खजूर की शाख़े मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर सच्चिदा ख़ातूने जनत को दिखाया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत खुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई। बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई।

(جذب القلوب (مُتَرَجمَ)، ص ۲۳)

سَبِّحْنَ اللَّهَ عَزَّوَ جَلَّ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا سच्चिदा ख़ातूने जनत के पर्दे की भी क्या बात है ! किसी ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

چو زیرا باش از مخلوق ذریوش
که در آغوش شبیر س به بینی

रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا या'नी हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमतुज़ज़हरा की तरह परहेज़गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में हज़रते सच्चिदुना शब्बीरे नामदार इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसी अवलाद देखो ।

जिस का आंचल न देखा मह व मिहर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख्तिशाश अज़ इमामे अहले سुन्नत)

शर्ह سलामे रज़ा :

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا يَا'نِي هज़रते سخییدتُونا فَاتِمَتُوْجَهُرَا^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا}
की चादरे अन्वर का पल्लू चांद सूरज ने भी नहीं देखा, उस पाकीज़ा
चादर की तहारत व पाकीज़गी पर लाखों सलाम नाज़िल हों।

उस बतूल, जिगर पारए मुस्तफ़ा
हे-जला आराए इफ़्रक्त पे लाखों सलाम

(हदाइके बख्तिशाश अज़ इमामे अहले سुन्नत)

शर्ह سलामे रज़ा :

या'नी पारसाई व परहेज़गारी की चारपाई को ज़ैबो ज़ीनत
देने वाली سخियदा फ़اتिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जिन का लक़ब बतूल
है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जिगर मुबारक का
टुकड़ा है, उन पर लाखों सलाम हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उम्मते मुस्लिमा की तनज़्जुली का उक्सबब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज मुसलमान औरतों
की हालत ऐसी है कि सर शर्म से झुक जाता है पर्दे का तसव्वुर
ही नहीं रहा । जब से कुफ़्रारे मक्कार के जेरे अघर आ कर
मुसलमानों ने बे पर्दगी का सिलसिला शुरूअ़ किया है, मुसल्सल

तनज्जुल (या'नी ज़वाल) के गहरे गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, कल तक जो कुफ़्कारे बद अन्जाम मुसलमान के नाम से लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते (या'नी कांप उठते) थे आज वोह मुसलमानों की बे पर्दगियों और बद अमलियों के बाइष ज़ेर आवर हो चुके हैं, इस्लामी मुमालिक पर बा क़ाइदा जारिहाना हम्ले हो रहे हैं और ज़ालिमाना क़ब्ज़े किये जा रहे हैं मगर मुसलमान है कि ग़फ़्लत की चादर ताने लम्बी नींद सोया हुवा है। ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये इस्लाम, जिगर गोशए शाहे ख़ैरुल अनाम हज़रते सच्चिदतुना رضي الله تعالى عنها **फ़ातِمَتُعْجَلُهُرَا** की सीरते मुबारका, आप رضي الله تعالى عنها का रातों को जाग जाग कर इबादत करने का ज़ौक़ और आप رضي الله تعالى عنها के शर्मों ह़या का येह मुबारक ह़ाल उन नादान मुसलमानों के लिये बाइषे तवज्जोह है जो **T.V** और **INTERNET** पर फ़िल्में डिरामे चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाचरंग की महफ़िलें जमा कर, काफ़िरों की नक़्काली में दाढ़ी मुंडा कर कुफ़्कार जैसा बे शर्मना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्द बेगम को बिठा कर, बे ह़या बीवी को मैक-अप करवा कर, मख़्तूत तफ़रीह गाह में ले जा कर, अपनी अवलाद को दुन्यवी ता'लीम की ख़ातिर कुफ़्कार के मुमालिक में काफ़िरों के सिपुर्द करवा कर बे हर्याई की आखिरी ह़दें फलांग रहे हैं।

वोह क्रौम जो कल तक खेलती थी शमशीरों के साथ
सीनेमा देखती है आज वोह हमशीरों के साथ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

وَبِوْدُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

بے پردگاری کی ہولناک سजّا

ہڈرے ساییدونا امام شاہابودین احمد بن محدث
بن حجر مککی شافعی^{علیہ رحمۃ اللہ الشافی} ہدیہ پاک نکل فرماتے
ہیں : “مے راج کی رات سرکرے کا انات، شاہے ماؤ جودات
نے جو بآ’ ج آئرتوں کے انجا بات کے ہولناک
مانجیر مولانا ہڈا فرمائے، ان میں یہ بھی تھا کہ اک آئرہ
باالوں سے لٹکی ہری تھی اور اس کا دیماگ خویل رہا تھا،
سرکارے آلی مرتبت، باہیہ خیرے بارکات کی
خیدمتے سراپا شفکت میں ارجمند کی گई کہ یہ ائرہ اپنے
باالوں کو گیر مارے سے نہیں چھپاتی تھی ।”

(الزوج عن اقتراض الكبار، الكبيره، ج ۲، نشوی المرأة، ۲۸۰، ص ۸۶)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

کنڈی کے باال بھی چھپا دیے !

پ्यारी پ्यारی اسلامی بہنو ! کہیں ہمارے فیشن ہمے
تاباہ ن کر دے، ہماری بے پردگاری ہمے جہنم میں ن ڈکے لے دے، مرنے
سے پہلے سنبھال جانا چاہیے اور پاک پرور دگار کی
بآرگاہ میں سچی توبہ کر لئی چاہیے، گیر مارے سے اپنے باال

ن छुपाने की वजह से बालों से लटकाए जाने का अ़ज़ाब आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया, इस्लामी बहनों को गैर मर्दों से अपने बाल छुपाना भी ज़रूरी है यहां तक कि कंधी से निकलने वाले बालों को भी ऐसी जगह फैंकना मनूअ़ है जहां पर अजनबी मर्दों की नज़र पड़े, जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअ़त” जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़हा 449 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ’ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيٰ फ़रमाते हैं : “अ़ौरतों के लिये लाज़िम है कि कंधा करने या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या’नी गैर मर्दों) की नज़र न पड़े ।”

सुन्नतों का हो अता दर्द मुसलमानों को

दूर फैशन की हो भरमार रसूले अरबी

(वसाइले बख्खाश अज अमीरे अहले सुन्तत **س. 326** دامت بر کتابیہ العالیہ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

ना जाइज़ फैशन करने वालियों के

अजाब का मुशाहदा

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ 480 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बयानाते अन्तारिय्या” हिस्से अव्वल के रिसाले “क़ब्र का इम्तिहान” सफ़हा 30 पर शैखु तरीकृत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास
 अंतर क़ादिरी دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ فَرِمَاتे हैं : सरकारे मदीना, क़रारे
 क़ल्बो सीना, फैज़ गंजीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “(मेरा ज़िनाह की रात) मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो
 ग़ोग़ा बरपा था, मैं ने कहा : ये ह कौन हैं ? तो जिब्रीले अमीन
 (عليه السلام) ने अर्ज़ की : ये ह वो ह औरतें हैं जो ना जाइज़ अशया
 से ज़ीनत हासिल करती थीं ।” (تاریخ بغداد، ج ۱، ص ۱۵)

मुसलमां बाज़ आ जाएं शहा ! फैशन परस्ती से
 करम कर दो बनें पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्तिश अज़ अमीरे अहले سुन्नत स. 148) دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ	تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम अपने मानने
 वाले हर मर्द व ज़न को सादगी अपनाने की तरगीब देता और ना
 जाइज़ ज़राएँ से ज़ीनत हासिल करने से मन्भ करता है। सादगी
 में इज़ज़त व बचत है। फैशन की ख़ातिर रोज़ रोज़ नए लिबास
 पहनने वालियां, ज़रा फैशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना
 हुवा या कहीं से मामूली सा फटा तो पैवन्दकारी कर के उस को
 पहनने में आर (या'नी ऐब) मह़सूस करने वालियां इस रिवायात
 को बार बार पढ़ें :

ہجڑتے سخی دُناؤں ابُو عَمَّامَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سے ریوایت
ہے کہ مہبوبے رُبُّوں کا دُبادُب، کُرارے هر کُلُبے نا شَادَ صَلَّى اللَّهُ عَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
کا ایرشادے ہکیکت بُونیاد ہے: “کہا تُم سُنْتَ نَهْيَ؟ کہا تُم سُنْتَ نَهْيَ؟ کی کپڈے کا پُرانا ہونا یَمَانَ سے ہے، بَشَكَ کپڈے
کا پُرانا ہونا یَمَانَ سے ہے!”

(سنی ابی داود، کتاب الترجل، ص ۶۵۳، الحدیث: ۲۱۲)

ایس ریوایت کے تھت ہجڑتے سخی دُناؤں شیخ شاہ عبدالحکم
مُعْذِّبِ مُهَدِّیَّ دِهْلَوَی فرماتے ہے: “جُنْتَ کا
تَرْكَ کَرْنَا اَهْلَلِ یَمَانَ کَمِ اَخْلَاقُكُمْ مِنْ سِهِّ ہے!”

(أشفهُ اللّغّات (مُتّرجم)، کتاب اللباس، الفصل الثاني، ج ۵، ص ۵۷۶)

ولولما سُنْتَ مَهْبُوبَ کا دَهْ دَهْ مَالِکَ

آہ! فَیْشَنَ پَے مُسْلِمَانَ مَرَا جَاتَا ہے

(واسیلہ بَرَیْشَیَّا اَبْنَیَهُ الْعَالِیَّہ س. 127)

صَلَّى اللَّهُ عَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَّا عَلَى الْحَبِيبِ!

ڈُرتوں کے نا جاہِ ج فیشن

پ्यारी پ्यारی یَمَانَیَ بَهْنَوَ! رِشَمَ، سُونَا، مَهْंदِی، مُूँछَوں
کے بَالَ سَافَ کَرْવَانَا وَگِئَرَا ڈُرتوں کے لِیے جاہِ ج ہے۔ ہاں! جُنْتَ
وَ فَیْشَنَ کی بَا'جَ اَسَیَ سُورَتِنَ بھی ہے جو ڈُرتوں کے لِیے بھی مَنْعِلَ
ہے، جیسے اِنسانی بَالَوْنَ کی چُوتی بَنَا کر اپنے بَالَوْنَ مِنْ گُندَنَا،
ابُو کے بَالَ نَوْچَنَا، رِتَیَ سے دَانَتِ رَغَدَنَا وَگِئَرَا جَسَا کِ دَا' وَتَه

इस्लामी के इशाअूती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्रबूआ 1197

सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहरे शरीअूत” जिल्द 3

हिस्सा 16 सफ़हा 596 पर सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيِ ف़رमाते हैं : इन्सान के बालों की चोटी बना कर औरत अपने बालों में गूंधे येह ह्राम है । हडीष में इस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत जिस ने किसी दूसरी औरत के सर में ऐसी चोटी गूंधी और अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई खुद उसी औरत के हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ और अगर ऊन या सियाह धागे की चोटी बना कर लगाए तो इस की मुमानअूत नहीं । सियाह कपड़े का मूबाफ़⁽¹⁾ बनाना जाइज़ है और कलावा⁽²⁾ में तो अस्लन ह्रज नहीं कि येह बिल्कुल मुमताज़ होता है । इसी तरह गूदने वाली और गूदवाने वाली या रेती से दांत रेत कर खूबसूरत करने वाली या दूसरी औरत के दांत रेतने वाली या मोचने⁽³⁾ से अब्रू के बालों को नोच कर खूबसूरत बनाने वाली और जिस ने दूसरी के बाल नोचे इन सब पर हडीष में ला'नत आई है ।

(رَوَى أَعْمَشُ، كِتَابُ الْأَطْهَرِ وَالْأَبْاحَةِ، فَصْلُ فِي الْأَنْظَرِ، جِنْ، ١٥، صِ)

(1).... बालों में धागा लगा कर इन्हें दराज़ करना मूबाफ़ कहलाता है ।

(2).... कच्चा सूत जो तक्ले पर लगा हुवा हो और तक्ला चखें की उस आहनी सलाख़ को कहते हैं जिस पर कातते वक्त लच्छी बनती जाती है

(3).... मोचना : या'नी बाल उखाड़ने का आला ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

وَبُوْبَا إِلَى اللَّهِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वोह इस्लामी बहनें जो शरई

हुदूद व कुयूद को बालाए ताक़ रख कर आए दिन फ़ैशन के नित
नए ढंग और जैबो ज़ीनत के नए रंग अपनाने में इस क़दर जी
जान से मगन रहती हैं कि फ़र्ज़ पर्दा तक को **مَعَاذُ اللَّهِ بُوْبَا** मह़सूस
करने लग जाती हैं। उन के तसव्वुराते बद में चादर और चार
दीवारी किसी अहमिय्यत की हामिल नहीं होती। ऐसी ख़वातीन
का आईडियल अज़्वाज व बनाते मुस्तफ़ा (رضي الله تعالى عنهن)
नहीं बल्कि कुफ़्फ़ारे ना बकार की चाल-ढाल और फ़िरंगी तहज़ीब
होती है। फ़ैशन परस्ती और बे पर्दगी की इस बेहूदगी का अन्जाम
क्या होता है ? इस से हर ज़ी शुऊर बा ख़बर होगा।

बे गैरती की इन्तिहा

काफ़िरों की उलटी तरक़ी की रेस करते हुए बे पर्दगी
और बे ह़याई का बाज़ार गर्म करने वाले ज़रा गौर तो करें। यूरोप,
अमरीका और इन से मुतअष्षिर होने वाले मुल्कों में क्या हो रहा
है ! रक्स गाहों में लोग अपनी आंखों से अपनी बहू बेटियों को
दूसरों की आग़ोश में देखते हैं और टस से मस नहीं होते बल्कि

वोह दयूष⁽¹⁾ फ़ख़्र से इतराते हुए दाद दे रहे होते हैं !!! बे पर्दा और फैशनेबल औरतों के “मुंह काले” होने की हयासोज़ ख़बरें आए दिन अख्भारात में छपती हैं। वोह औरत जो मर्द की शहवत रानी का शिकार होती है उसे अगर हम्ल ठहर गया तो कहां सर छुपाएगी ? हम्ल गिराने की सूरत में वोह अपनी जान भी खो सकती है। चलिये माना कि यूरोप के तरक़ी याफ़ता मुमालिक (बल्कि अब तो दुन्या भर) में ऐसे अस्पताल मौजूद हैं जो इसकाते हम्ल (या’नी हम्ल गिराने) की “ख़िदमत” अन्जाम देते हैं और ऐसी पनाह गाहें भी मौजूद हैं जहां गैर शादीशुदा माओं को “पनाह” मिल जाती है लेकिन क्या मुआशरे में इन्हें कोई क़ाबिले एहतिराम मक़ाम भी नसीब हो सकता है ! माना कि रुसवा हो कर इन दोनों (या’नी गैर शादी शुदा जोड़े) ने अपने किये की दुन्या में हाथों हाथ सज़ा पाई लेकिन वोह बच्चा जो इस त़रह पैदा हुवा है अगर ज़िन्दा बच भी गया तो उस का क्या बनेगा ? उस के हवस कार बाप ने भी उस से आंखें फैर लीं, बदकार मां भी उसे कचरा कूँड़ी या किसी मोहताज ख़ाने में छोड़ कर चली गई ! येह सब बे गैरती और बे पर्दगी का दुन्यवी अन्जाम है। न जाने कियामत के दिन क्या होगा ?

(1)..... जो लोग वा वुजूदे कुदरत अपनी औरतों और महारिम को बे पर्दगी से मन्थन करें वोह “दयूष” है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65) हज़रते अल्लामा अलाउद्दीन हस्कफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْيَى ف़رमाते हैं : “दयूष” वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी महरम पर गैरत न खाए। (ذرخُتَّار، كتاب الحدوء، باب التعزير، ص ٣١٨)

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ	وَبِوَدْيَا إِلَى اللَّهِ !
صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

بہارے شاریۃ کا مुتالا لذرا فرمادھیے !

इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये ज़ीनत के शरद्द अहकाम क्या हैं इन को जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ 1197 सफ्हात पर मुश्तमिल किताब “बहरे शारीअृत” जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ्हा 591 ता 597 मुलाहज़ा फरमाएं। إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ جाइज़ व ना जाइज़ ज़ीनत के बारे में मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा। **अल्लाह** तआला अमल की तौफ़ीक अृता फरमाए।

امين بجاہِ النبیِ الامین صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अमल का हो ज़ज्बा अृता या इलाही !

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

(वसाइले बख़िਆश अज़ अमीरे अहले सुनत स. 84)

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !
--	----------------------------

पिछले सफ्हात में दयूष या'नी बे गैरत के मुतअल्लिक बयान हुवा, जिस के मुतअल्लिक अहादीषे करीमा में बहुत सारी वईदात हैं इस के बा'द यहां एक गैरत मन्द शोहर की हिकायत

बयान की जाती है जिस ने गैरत मन्दी का षुबूत देते हुए अपनी बीवी का चेहरा गैर मर्द के सामने ज़ाहिर नहीं होने दिया। इस गैरत खाने की वजह से उसे इज़्ज़त भी नसीब हुई, चुनान्वे

गैरत मन्द शोहर

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “उयूनुल हिकायात” हिस्से दुवुम, सफ़हा 123 पर इमाम अब्दुर्रहमान बिन अली जौज़ी عليه رحمة الله تعالى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा رحمه الله تعالى عليه से मन्कूल है कि “एक मरतबा मैं “रै” (ईरान के दारुल ख़िलाफ़ा, मौजूदा नाम तेहरान) के क़ाज़ी हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इस्हाक़ عليه رحمة الله الرَّزِّاق की महफ़िल में था। क़ाज़ी साहिब लोगों के मसाइल हैल कर रहे थे। इतने में एक औरत उन के पास लाई गई, उस के सर परस्तों का दा'वा था कि उस औरत के शोहर ने उस का 500 दीनार महर अदा नहीं किया। जब उस के शोहर से पूछा गया तो उस ने इन्कार कर दिया और कहा : मुझ पर महर का दा'वा बे बुन्याद है। शोहर के इन्कार पर क़ाज़ी साहिब ने औरत से गवाह त़लब किये। गवाह हाजिर किये गए तो उन में से एक ने कहा : मैं इस औरत को देखना चाहता हूं ताकि इसे पहचान कर

गवाही दूं।” चुनान्चे वोह औरत की तरफ बढ़ा और कहा : “तुम अपना निकाब हटाओ ताकि तुम्हारी पहचान हो सके।” येह देख कर उस के शोहर ने कहा : “येह शख्स मेरी ज़ौजा के पास क्यूं आया है ?” वकील ने कहा : “येह गवाह तुम्हारी ज़ौजा का चेहरा देखना चाहता है ताकि पहचान हो जाए।”

येह सुन कर गैरत मन्द शोहर पुकार उठा : “इस शख्स को रोक दो, मैं क़ाज़ी साहिब के सामने इक़रार करता हूं कि जो दा’वा मेरी ज़ौजा ने मुझ पर किया है वोह मुझ पर लाज़िम है, मैं 500 दीनार अदा करने को तय्यार हूं, खुदारा ! मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी गैर मर्द पर ज़ाहिर न किया जाए।” चुनान्चे गवाह को रोक दिया गया। जब औरत ने अपने गैरत मन्द शोहर का येह ज़ज्बा देखा तो कहा : “सब गवाह हो जाओ ! मैं ने अपना महर मुआफ़ कर दिया, मैं दुन्या व आखिरत में इस का मुतालबा न करूँगी, येह महर मेरे गैरत मन्द शोहर को मुबारक हो !”

महफिल में मौजूद तमाम लोग मियां-बीबी के इस फैसले पर अश-अश कर उठे। क़ाज़ी साहिब ने फ़रमाया : “इन दोनों का येह मुआमला बेहतरीन अवसाफ़ और आ’ला अख़्लाक़ पर दलालत करता है।” (उङ्गुल हिकायात, स. 275)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी म़ाफ़िरत हो।

امين بجاه الٰئي الامين صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

इस वाकिए में हमारे लिये बेहतरीन सबक है। कैसा गैरत मन्द था वोह शख्स ! कि अपने ऊपर लाज़िम पांच सो (500) दीनार का इक़रार कर लिया लेकिन उस की गैरत ने येह गवारा न किया कि मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी गैर मर्द के सामने ज़ाहिर हो। येह हऱ्या का आ'ला दर्जा है। دَعَا الْحَمْدَ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ دَا'वते इस्लामी के मदनी माहोल में तरगीब दिलाई जाती है कि गैर महरम से पर्दा किया जाए और बे पर्दगी की नुहूसत से खुद भी बचा जाए और अपने घर वालों को भी बचाया जाए। इसी उन्वान या'नी पर्दे के बारे में अहकाम से मुतअल्लिक शैखे तरीक़त, अमीरे अहले سुनत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ की जामेअ किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से हासिल फ़रमाएं, खुद भी पढ़िये और मुसलमानों की खैर ख्वाही की नियत से दूसरों को भी तोहफ़तन पेश करें।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

पर्दा इज़ज़त है बे इज़ज़ती नहीं

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जनती ज़ेवर” सफ़हा 82 पर शैखुल हडीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी تَحْمِيلَ رَحْمَةَ اللَّهِ الْقَوْيِ आज कल बा'ज़ मुलहिद (या'नी बे दीन) किस्म के दुश्मनाने इस्लाम मुसलमान

اُرتوں کو یہ کہ کر بہکایا کرتے ہیں کہ اسلام نے اُرتوں کو پردے مें رخوب کر اُرتوں کی بے ڈھنڈتی کی ہے اس لیے اُرتوں کو پردے سے نیکل کر هر میدان مें مار्दوں کے دोش بادوش خड़ی ہو جانا چاہیے । مگر پ्यारی بہنو ! خوب اچھی ترہ سماں لے کی ان مار्दوں کا یہ پروپگنڈا ایتنا گندा اور غینا و نا فکر ب اور دھوکا ہے کہ شاہد شہزاد کو بھی ن سوچنا ہوگا ।

اے **اللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ کی بندیو ! تुمہری انساں کرو کی تماام کیتابوں خुلی پड़ی رہتی ہے اور بے پردا رہتی ہے مگر کورآن شریف پر ہمسہ شا گلیا ف چढ़ا کر اس کو پردے مें رخوا جاتا ہے تو بتاؤ کیا کورآنے مజید پر گلیا ف چढ़انا یہ کورآن کی ڈھنڈت ہے یا بے ڈھنڈتی ؟ اسی ترہ تماام دُنیا کی مسیحیوں بے پردا رخبو گرد ہے مگر خانہ کا'بہ پر گلیا ف چढ़ا کر اس کو پردے مें رخوا گیا ہے تو بتاؤ کیا کا'بہ مکہ دُنیا پر گلیا ف چढ़انا اس کی ڈھنڈت ہے یا بے ڈھنڈتی ؟ تماام دُنیا کو ما'لوں ہے کی کورآنے مజید اور کا'بہ مسیحیوں پر گلیا ف چढُا کر ان دونوں کی ڈھنڈتے اُجھمات کا اے'لان کیا گیا ہے کی تماام کیتابوں مें سب سے اپنے لئے آ'لا کورآن ہے اور تماام مسیحیوں مें اپنے لئے آ'لا کا'بہ مسیحیوں ہے । اسی ترہ مسیحیوں اُرتوں کو پردے کا ٹوکر دے کر **اللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ وَسَلَّمَ کی ترکھ سے اس بات کا اے'لان کیا گیا ہے کی انکھوں میں اُلّام کی تماام اُرتوں مें مسیحیوں اُرتوں سے اپنے لئے آ'لا ہے ।

پ्यारी بہنو! اب تुمہری کو اس کا فیصلہ کرنا ہے کہ
اسلام نے مुسالمان اُورتوں کو پردے میں رکھ کر ان کی ہجت
بढ़ای ہے یا ان کی بے ہجتی کی ہی?

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

کیس کیس سے پردہ ہے؟

پ्यारੀ پ्यारੀ اسلامی بہنو! دےوار و جےठ، بہنوٰہ
اور خالا جاد، مامُنجاد، چچا جاد و فُوفی جاد، فُوفا اور
خالوں سے پردے کی تاکید کرتے ہوئے میرے آکا آلا ہجرت
یمامے اہلے سُننٰت، مُujdide دینوں میللت مولانا شاہ
یمام احمد رضا خاں علیہ رحمۃ الرحمٰن فرماتے ہیں: "جےठ،
دےوار، بہنوٰہ، فوپا (فُوفا)، خالوں، چچا جاد،
مامُنجاد، فوپی (فُوفی) جاد، خالا جاد بارڈ یہ سب
لوگ اُرطت کے لیے مہجُ اجنبی (یا'نی گئر مارڈ) ہیں بلکہ
ان کا جرر (نوكسان) نیرے (یا'نی موتلکن) بےگانے (یا'نی
پرائے) شاخس کے جرر سے جاؤ د ہے کہ مہجُ گئر (یا'نی بیلکوں
نا واقعی) آدمی گھر میں آتے ہوئے ڈرے گا اور یہ (یا'نی
بیان کردا رشته دار) آپس کے مل جوں (یا'نی جان پہنچان)
کے باہر خواف نہیں رکھتے۔ اُرطت نیرے اجنبی (یا'نی
موتلکن نا واقعی) شاخس سے دफٹن (فُورن) ملے نہیں خا
سکتی (یا'نی بے تکلیف نہیں ہو سکتی) اور ان (یا'نی
م JACK رشته داروں) سے لیہا ج ٹوٹا ہوتا ہے (یا'نی ڈیجک ٹڈی
ہوئی ہوتی ہے) لیہا جا جب رسول اللہ ﷺ نے گئر

औरतों के پاس جانے کो مन्थ फ़रमाया (जैसा कि بुखारी
شरीफ में है कि इस पर) एक अन्सारी सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
ने اُर्ज़ की : या رَسُولُ اللَّاهِ ! جِئَةٌ - دَوْلَةٌ
लिये क्या हुक्म है ? فَرَمَيْتَ : جِئَةٌ - دَوْلَةٌ
مौत है ।”
(صحيح البخاري، كتاب النكاح، باب لا يخلون رجال بأمراء... الخ، من ١٣٢٢، الحديث: ٥٢٢)

دار المعرفة بيروت. فتاوى رضویہ (مُخْرَجَه)، ج ۲۲، ص ۷۱

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो
वरना सुन लो ! कब्र में जब जाओगी

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
उन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो
सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

صَلُّوْعَلَى الْحَبِيبِ !

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلُّوْعَلَى الْحَبِيبِ !

औरत के लिये फ़ोन वुसूल करने का तरीक़

इस्लामी बहनों को चाहिये कि अगर गैर मर्दों का फ़ोन
वुसूल करना पड़ जाए तो आवाज़ नर्म न रखें मषलन नर्मी के
साथ “हेलो हेलो” कहने के बजाए रूखे अन्दाज़ में पूछे :
“कौन ?” यहां मुआमला ज़रा दुश्वार है क्योंकि इम्कान है कि
सामने वाला घर के किसी मर्द से बात करवाने का मुतालबा करे,
अपना नाम व पैग़ाम बयान करे और बात करने का वक़्त वग़ैरा
पूछे, नीज़ येह भी हो सकता है कि खुदा न ख़्वास्ता बा ह़या और
बा अ़मल इस्लामी बहन के भिंचे हुए रूखे अन्दाज़े गुफ़्तगू का
बुरा मनाए, और शरई मसाइल से ना वाक़िफ़ होने के सबब

मुंह फट हो तो “कुछ” बोल भी पड़े जैसा कि बा’ज़ इस्लामी भाइयों ने अपना तजरिबा बयान किया है कि ना महरम औरतों से ज़रूरतन फ़ोन पर बात करने की नौबत आने पर हमारे गैर नर्म और रुखे लहजे पर औरतों ने اللہ معاذہ इस तरह की बातें सुना दी हैं : (मषलन) **मौलाना !** आप को गुस्सा क्यूँ आ रहा है ! बहर हाल आफ़ियत इसी में मा’लूम होती है कि “आन्सरिंग मशीन (**Answering Machine**)⁽¹⁾ लगा दी जाए और इस में मर्द की आवाज़ में ये ह जुम्ला भर दिया जाए : “पैग़ाम रेकोर्ड (**Record**) करवा दीजिये ।” बा’द में मर्दों के रेकोर्ड शुदा पैग़ामात घर के मर्द अपनी सहूलिय्यत से सुन लिया करें । इसी तरह ना महरम पीर साहिब से लबो लहजा क़दरे रुखा सा हो । आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो ।”

उम्महातुल मोअमिनीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुतअ़्लिक पारह

22 सूरतुल अहज़ाब आयत नम्बर **32** में इशादे रब्बुल इबाद है :

لَيْسَأُ إِنَّ اللَّهَ يَسْتَئِنُ كَاحِرٌ مِّنْ
اللَّيْسَأُ إِنَّ اللَّهَ يَسْتَئِنُ فَلَا تَحْصُنَ
بِلْقَوْلِ فَيُطْمَعُ الْزَّنْبُ فِي قُلُوبِهِ
مَرْضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا

(۳۲: ۲۲، الاحزاب)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ नबी की बीबियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर **अल्लाह** से डरो तो बात में ऐसी नर्मी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी बात कहो ।

(1).... ऐसी मशीन जो किसी की गैर मौजूदगी में टेलीफ़ोन कोल रेकोर्ड करती है ।

سائبیکا ریવایات سے پتا چلا کی اُرطت گھر میں یا باہر سار تا پا بآپدا رہے، گھر میں رہتے ہوئے بھی اپنے گئر مہرم رشته داروں سے پردہ لاجیم ہے، اسی ترہ جڑھ رکھتے گھر سے باہر نیکلتے وکٹ بھی پردے کا لیہا ج رکھنا اینتیہا ای جڑھی ہے لیہا جا۔

घر سے نیکلتے وکٹ کی چھٹیاں

شارڈ ایجاد کی سوچت میں گھر سے نیکلتے وکٹ اسلامی بہن گئر جا جیبے نجیر کپڈے کا ڈیلہ ڈالا مدنی بُرکْعَدْ اُڈے، دستاںے اُرطت جورا بونے پہنے۔ مگر دستاںے اُرطت جورا بونے کا کپڈا ایتنا باریک نہ ہو کی خال کی رنگت جنکے، جہاں کہنیں گئر مارڈے کی نجیر پڈنے کا امکان نہ ہو وہاں چہرے سے نیکاب ن ٹھاٹے مषلناں اپنے یا کیسی کے گھر کی سیڈھی اُرطت گالی مہللا وگئرا، نیچے کی ترکھ سے بھی اس ترہ بُرکْعَدْ ن ٹھاٹے کی بدن کے رنگ بیرنے کپڈوں پر گئر مارڈے کی نجیر پڈے، واچھ رہے کی اُرطت کے سار سے لے کر پاٹ کے گیٹوں کے نیچے تک جیسم کا کوئی بھی ہیسسا مषلناں سار کے بآل یا باؤ یا کلائی یا گالی یا پیٹ یا پنڈلی وگئرا اجنبی مارڈ (یا'نی جس سے شادی ہمے شا کے لیے ہرام نہ ہو) پر بیلہ ایجاد کے شارڈ جاہیر نہ ہو بلکہ اگر لیباں اے سا مہین یا'نی پتلہ ہے جس سے بدن کی رنگت جنکے یا اے سا چوست ہے کی کیسی ڈھنڈ کی ہے ات (یا'نی شکلوں سوچت یا ڈھار وگئرا) جاہیر ہے یا دوپٹا۔

इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है ।
 मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत,
 अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत,
 मुज़द्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअُत, आलिमे
 शरीअُत, पीरे तरीक़त, बाइषे ख़ैरो बरकत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना
 शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ فُरमाते हैं : जो
 वज़्ह लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व तरीक़ए पौशिश
 (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औरात में राइज है कि कपड़े
 बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या
 बाज़ू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई हिस्सा खुला हो यूं
 तो (सिवा) ख़ास महारिम के जिन से निकाह हमेशा को हराम है,
 किसी के सामने होना सख्त हरामे क़र्तई है ।

(फ़तावा रज़विय्या (मुखर्ज़ा), जि. 22, स. 217)

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अ़ पहनें
 हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले !

(वसाइले بख़िशां अज़ अमीरे अहले सुन्नत س. 288)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَسِيبِ !

बे पर्दगी सबबे शज़बे झलाही

मुफ़स्सिरे कुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल
 अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना हाफ़िज़ सच्चिद मुफ़्ती
 मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी پारह 18 सूरतुनूर
 आयत नम्बर 31 के तहत “तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान”

में झाँझन⁽¹⁾ की मुमानअत् बयान करते हुए फ़रमाते हैं : “इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अदमे कबूले दुआ (या’नी दुआ कबूल न होने) का सबब है तो ख़ास औरत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शरई गैर मर्दी तक पहुंचना) और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की तरफ़ से बे परवाई, तबाही का सबब है (अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पناہ) !”

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

پردہ کی ڈھرمیمیت

پ्यारी پ्यारी इस्लामी بहनो ! इस बयान में आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि सरापाए इफ़क़त व इस्मत, जिगर गोशाए मुस्तफ़ा जाने रहमत, سच्चिदा फ़اتिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها का कैसा मदनी पर्दा था । ज़िन्दगी भर पर्दा, कफ़न व दफ़ن में भी पर्दा, जनाज़ा भी रात के अधेरे में पढ़ने की वसियत फ़रमाई ताकि गैर महरम की नज़र न पड़े लिहाज़ा इस मालिकए जनत, سाहिबए रिदाए इफ़ك़त व इस्मत को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ रब्बुल इज़्ज़त बरोजे क़ियामत इतनी इज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाएगा कि जब आप पुल سिरात पर तशरीफ़ लाएंगी तो तमाम अहले मेहशर को हुक्म होगा : सर झुका लो ! हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा رضي الله تعالى عنها की बेटी ف़اطِمَةٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आ रही है ।

صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) औरतों के पाउं का एक ज़ेवर जो अन्दर से खोखला होता है और अन्दर पड़े हुए दानों की वजह से झान-झान करता है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन पर्दे की बहुत
ज़ियादा अहम्मिय्यत है, पर्दा मुसलमान औरत की ज़ीनत है,
उस की इफ़फ़त व पाक दामनी की अ़्लामत है, शर्मों ह़या का
निशान है, बा पर्दा इस्लामी बहन **अल्लाह** व रसूल
عَزُّوجَلَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
पर्दगी ग़ज़बे इलाही की मूजिब और मुसलमानों की तबाही व
बरबादी, तनज़्जुली व पस्ती और दुन्या व आखिरत की ज़िल्लत
का सबब है। तमाम इस्लामी बहनों की ख़िदमत में गुज़ारिश
है कि इस्लाम की तालीमात पर अ़मल और ख़वातीने इस्लाम
को आईडियल बनाने में ही बेहतरी और दीनो दुन्या की भलाई
है। गैर शरई ज़ीनतों और फैशनों से जान छुड़ाइये, शरई पर्दे
की पाबन्दी कीजिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये
तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक
दा वते इस्लामी के जेरे एहतिमाम होने वाले सुन्नतों भरे
इजतिमाआत में शिर्कत कीजिये ।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزٰوْجٌ دا'वتے ایسلاٽی کے سੁਨ्तوںٰ برے
 ایجتیماؤ ایات کی خوب خوب بہارے ہیں، مسئللن فیشن پرسستی اور
 فھنھاشی و تریانی سے سرشار معاشرے میں پرવان چढنے والی بے
 شمار ایسلاٽی بہنوں گناہوں کی دل-دل سے نیکل کر عالمہاتوں
 موالیں اور شاہزادیے کوئنے بیبی فاطمہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) کی
 دیوانیاں بن گईں، جو بے نماجی ثہیں نماجی بن گائے، گلے میں

دُوپٹا لٹکا کر شوپینگ سینٹر میں اور مکھلپت تھکریہ گاہوں میں بھٹکنے والیوں کو کربلا والی ایفٹری مآب شہزادیوں کی شامیہ ہے کی وہ بارکت نسیب ہریں کی مدنی بُرکت اُن کے لیباں کا جو جو لایا یونفک (یا' نی جو دن نہ ہونے والی حیثیت) بن گیا اور انہوں نے اس مدنی مکسدا کو اپنا لیا کہ "مُذْنِيَ أَنْفُنِيَّةَ وَ سَارِيَّةَ دُنْيَاَ كے لوگوں کی اسلامیہ کی کوشش کرنی ہے ।" مدنی کافیلیوں کی بارکت سے با'ج ایک ایسا کائنات رہے کا اینات عروج کی اینا یات سے ایمان افراد ایک کاریشمہ کا بھی جوہر ہو گا مسئلہ نسیب ہریوں کو شیفہ میلی، بے ایسا کائنات نسیب ہریں، آسے ب جدی کو خुلاسی میلی، بے ایسا کائنات نسیب ہریں، آسے ب جدی کو خیدمت ہے چنانچہ دا' وہ ایسا کاریشمہ کے ایشانیتی ایدارے مکتبہ تکمیل مدنیا کی متابوں ۳۹۷ سفہاً پر مُشتمل کتاب "پردہ کے بارے میں سُوْوَالِ جَوَاب" سفہاً ۱۸۲ پر شیخہ تریکت، امریکہ اہلے سُنّت، بانی دا' وہ ایسا کاریشمہ ہے جس کے ایڈل امیر مولانا عبدالجلیل، محدث ایڈلیس ایڈنر کافیلی رجیوی دامت برکاتہم العالیہ نکل فرماتے ہیں :

میں فکر نہ بدل ٹھی !

اسلامی بھنو ! ایک مُبَالِیگ ای دا' وہ ایسا کاریشمہ نے دا' وہ ایسا کاریشمہ میں اپنی شُمُولیّت کے جو اسکا بیان کیے وہ مولانا جزا فرمائیے، چنانچہ ایک ایسا کاریشمہ بھن کے

تھریڑی بیان کا لुبھے لुبھا ہے کی میں نیت نہ فیضان کے کپڈے پہنا کرتی اور بے پردازی گھر سے نیکل جایا کرتی تھی । ایک مرتبہ چند اسلامی بہنوں ہمارے گھر آئیں اور دا'ونتے اسلامی کے مدنی ماہول کی بارکتوں بتاتے ہوئے ہمارے گھر میں سُننتوں برا جتیماً اُن کرنے کی ایجاد مانگی । ہم نے بخوبی ایجاد دی، آخیر اجتیماً کا دین بھی آتا گیا، میں بخوبی اس اجتیماً میں شریک ہوئی، مुझے اسلامی بہنوں کی سادگی، ہنسنے اور خلنک اور مدنی کام کرنے کا انداز بहت پسند آتا ہے । بیل بخوبی ریکٹ اُنگے ج دعاء سے میں بہت سُن ایسی دعاء سے میں نے پہلی مرتبہ سُنی تھی । یوں اس اجتیماً کی بارکت سے مुझے گناہوں سے توبہ نسیب ہوئی اور میں مدنی ماہول سے وابستہ ہو گیا । فیضان ترک کر کے میں نے بھی سادگی اپنا لی اور اب جعلی سٹھن کی جمیదار کی ہیئت سے دا'ونتے اسلامی کا مدنی کام کر کے اپنی آخیرت بنانے کے لیے کوششیں ہوں ﷺ مکتبہ تبلیغ مدنی کا جاری کردیں ایک کے سیٹ بیان روکھانا سُننے کا بھی مال مول ہے । میں **اعلام** تعلیماً کا شوکر ادا کرتی ہوں کی اس نے مुझے اتنا پیارا مدنی ماہول اُٹا کیا، اے کاش ! ہر اسلامی بہن دا'ونتے اسلامی کے مدنی ماہول سے وابستہ ہو جائے ।

اے اسلامی بہنو ! تعمیر لیے بھی سُنو ہے بہت کام کا مدنی ماہول تعمیر سُنن تو اور پرداز کے اہم کام یہ تا'لیم فرمائے گا مدنی ماہول

(وہ سوال بخشش انجام اور اہل سُنن سے 603)

کریسٹن کو کبھی لے یہ اسلام

مرکجزوں اولیا (لارہور) کے اک اسلامی
بائی کا بیان کوچ یون ہے کہ ہمارے اکلائے میں اک
وارکشیپ تھی، اس میں اک **T.V** بھی رکھا ہوا تھا جس
پر کاریگر میڈیا لیف چینلز دیکھا کرتے تھے۔ رمذان نوں
مubarک سی. 1429 ہی۔ (سی. 2008 ی.) میں جب دا'تے
اسلامی کا مدنی چینل شروع ہوا تو انہوں کوچ ایسا
بایا کے دیگر تماام چینلز کے بجائے اب وہ مدنی
چینل دیکھنے لگے۔ ان کاریگروں میں اک کریسٹن نویجوان
بھی شامیل تھا وہ بھی مدنی چینل کے پورسوز سیلسلوں
(پروگرامز) میں دلچسپی لئے لگا۔ **الحمد لله رب العالمين** سیرتین
دین کے بائی د وہ کہنے لگا کہ میں امریکے اہلے سمعت
کی سادگی سے بہت معتادی ہوا ہوں ।
اور وہ کلیما پढ کر مسلمان ہو گیا ।

مدنی چینل کی میہم ہے نپرسو شیات کے خلیل اف

جو بھی دیکھے گا کرے گا **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** ا'تیراف

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ!

बयान नम्बर ९

खातूने जन्नत

के

फ़ाक़े

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِيعَتِ اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ط

खातूने जन्नत के फ़ाक़े

ਦੁਖਦ ਸ਼ਾਰੀਫ਼ ਕੀ ਫੁਜ਼ੀਲਤ

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سَحَابَيْهِ رَسُولُهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سَمُورًا سُوْلَارِدِيْنَ
के वालिदे गिरामी हज़रते सच्चिदुना जाबिर
रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आली वक़ार
के दरबारे गुहरबार में हाजिर थे कि एक शख्स हाजिर हो कर अर्ज़
गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ बारगाहे रब्बे लम
यज़्ल में सब से अच्छा अमल कौन सा है ? तो महबूबे खुदा,
सरवरे अम्बिया, शाहे हर दो सरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने इरशाद
फ़रमाया : “सच बोलना और अमानत अदा करना ।” (राविये
हदीष हज़रते सच्चिदुना समुरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فَرِمَاتَهُ हैं :) मैं ने
अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मज़ीद कुछ इरशाद
फ़रमाइये ! फ़रमाया : “कपरते ज़िक्र और मुझ पर दुर्लभे पाक
पढ़ना कि येह अमल फ़क्र (या'नी गुर्बत) को दूर करता है ।”

(**القولُ الْبَدِيعُ، الْبَابُ الثَّانِي فِي ثَوَابِ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، ص ١٣٥**)

तुम पढ़ो साहिबे लौलाक पर कषरत से दुरुद
है अजब दर्दे निहां⁽¹⁾ और अमा⁽²⁾ का ता'वीज

(كَافِيٌّ كَيْ نَأْتُ، أَجْ مَوْلَانَا كِيفَيْتُ الْأُلْيَى كَافِيٌّ) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّانِفِي

(1).... पोशीदा, छुपा हवा दर्द | (2).... हिफाजत

खातूने जन्नत का डालमे गुर्बत

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 680 सफ़हात पर मुश्तमिल किताबे मुस्तताब “मुकाशफ़तुल कुलूब” सफ़हा 265 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِيٍّ سय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नक़ल फ़रमाते हैं : महबूबे शाहे कौनैन हज़रते सayyidunā iImrān bñ hūsain رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि दिलो जान से प्यारे, बे कसों के सहारे, दो आलम के राज दुलारे مुझ से बहुत हुस्ने ज़न रखते थे । एक मरतबा आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ इमरान मेरे नज़दीक तुम्हारा एक खास मकाम है, क्या तुम मेरी बेटी फ़तिमा की इयादत को चलोगे ? मैं ने अर्ज की ये ”فَدَاكَ اُمِّي وَأَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ : مेरे मां बाप आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! क्युँ नहीं ? जरूर चलूँगा ।

شانے خواہوں جنمات ﴿ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ﴾ شانے جنمات کے فاکٹے

نے تشریفِ آواری کے لیے ارجمند کی، تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا : میرے ساتھ اک اور شاخہ بھی ہے ।

پूछا : یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم وہ کیا ہے ؟ فرمایا :

”یمران !“ پسکرے شامیں ہیا ہجرا تے ساییدتُونا فاتیمۃُ زُبُرہ

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ارجمند کرنے لگئے : یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم رباً چوں جلال عزوجل کی کسماں ! میرے پاس پردے کے لیے سرخ اک چادر ہے । آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے دستے اکڈس کے اشارة سے فرمایا : تुم اسے اسے پردہ کر لو । ارجمند کی : اس ترہ میرا جسم تو ڈک جاتا ہے مگر سار نہیں چھپتا । آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اُن کی ترہ فرمایا : اس سے سار ڈانپ لو । فیر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم گھر میں داخیل ہوئے اور سلام کے باہم پूछا : بیٹی ! کہسی ہو ؟ تو شہزادیوں اسلام، مالکیکے دارالسلام ہجرا تے ساییدتُونا فاتیمہ نے اُپنی گوربنت اور بیماری کی حالت بیان کرتے ہوئے ارجمند کیا : اے ہبیبے خودا میں دوہری تکلیف میں مُبتلا ہوں، اک تو بیماری کی تکلیف اور دوسری بُک کی تکلیف ! اور میرے پاس اسی کوئی چیز بھی نہیں جسے خا کر بُک میتا سکوں । یہ سمع کر دے اُالم کے مالکوں مُखڑا، دُنیا و آخیرت کے شاہوں تاجدار، اُمم کے گُرم گُسار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ارشک بار ہو گئے اور اپنے ایک بیماری کی خبر اور تسلیم دے ہوئے ارشاد فرمایا : بیٹی ! گھبراوے نہیں، ربا کی کسماں ! میں نے تین دن سے کوچ نہیں خاکا ہاں کی بارگاہے ربعہ لے جائیں گے

मेरा तुम से ज़ियादा मर्तबा है, अगर मैं **अल्लाह** तआला से मांगू तो वोह मुझे ज़रूर खिलाए मगर मैं ने दुन्या पर आखिरत को तरजीह दी है।

कौनो मकाँ के आका हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فُرَاكِے سے हैं शाहे दो आ़लम

(مَكَاشِفَةُ الْقُلُوبِ، يَابْ فِي فَضْلِ الْفَقَاءِ ص ١٨٠)

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(1).... या'नी दोनों जहां के सरदार (2).... या'नी इन्सानो जिनात के नबी

(3).... या'नी नहरे कौषर व जनतों के मालिक (4).... या'नी हज़रते अ़लियुल

मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अहले अरब बाप के चचाज़ाद को भी चचाज़ाद कह देते

हैं। (इल्मया)

“فَالْبِرِّ” کے ۵ ہुکم ف کی نیکیت سے ۵ ہس واکیپیڈیا سے ہاسیل ہونے والے ۵ مددنی فول

﴿۱﴾.... ہبیبے خودا اُور اہلے بُتے مُسٹفٰا
اسھابے ڈفکتو ابجُمٰت (یا'نی پاک دامنی و
بُجُرگی والے)، شارمے ہیا کے پئکر اُر هر ہاں میں اس دللتے
بے میوال سے مالا مال مُکدھس ہستیاں ہیں । بیل خُسوس
والیدہ ہسنائے و ۵ کو گھوڑا ہجڑتے ساییدتُونا
فَاتِمَتُوْجَهْ رہا تو ڈنٹھاہی دُرجا بآ پردہ و
بآ ہیا ہیں، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا جنازہ بھی پردے میں ٹھاٹا
گیا یہاں تک کہ ریوایت میں آتا ہے کہ بروجے کیا مات بھی
آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے شارمے ہیا کا مکمل لیہاڑ رکھتے ہوئے
آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی آمد پر تمام اہلے مہشیر کو نیگاہوں
झکانے کا ہوکم دیا جائے ।

(الجامع الصغير مع فيض القدير، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۵۳۹، الحديث: ۸۲۲)

یہی ماءِ ہیں جن کی گود میں اسلام پللتا�ا

ہیا سے ان کی انسان نور کے سانچے میں ڈلتا�ا

صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(2).... شادی کے بارے میں بنتی کے گھر جانا اور اس کی ایجادت کرنا سرکارے مددیں ﷺ کے مुبارک املا سے مشاہدہ ہے ।

(3).... اس نورانی واقعیت سے یہ بھی پتا چلا کہ شاہزاد بارا، دو اسرائیل کے تاجدار، بیوی ایجمنے پرور دگار مالیکو مुख्तار ہیں । تکلیفوں اور فکر کو بری جیندگی بسرا کرنا آپ ﷺ کا مہرج ایخیثیاری املا کا نہ کہ ایجتیحاری (یا) نی مجبوری و بے بسی نہیں । تبھی تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا : “اگر میں (اللہ عزوجل سے) مانگوں تو وہ مुझے جڑک خیلائے مگر میں نے دنیا پر آخیرت کو ترجیح دی ।” اسی ترجیح آپ ﷺ کا مुبارک گھرانا بھی کناعت کی دللت سے مالا مال اور پئکرے سبھو ریجھا ۔

کل جہاں میلک اور جو کی روٹی گیجا

उस شیکھ کی کناعت پے لاخوں سلام

(علیہ رحمۃ الرؤوف)

شانے سلامے رجھا :

ہنوز تماام جہاںوں کے مالیک ہیں مگر کناعت کا یہ اسرائیل کی بیگیر چنے جو کے آتے کی روٹی

تนาوں کے ساتھ فرماتے । **اللّٰہُ اکبر !** اس پست کے ساتھ کا یہ اعلیٰ اسلام ! اس سابق پست پر لاخوں سلام کا نجٹل ہے ।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّوَا عَلٰى الْحَبِيبِ !

﴿4﴾.... گورنر اور فکر کے فاکٹری میں ساتھ کرنے اور اس کی تلاشی کرنے سونتے مسٹر فراہم ہے، جیسا کہ اس واکٹے سے پتا چلتا ہے کہ راہت گل ایشیکوں، انیسونل گورنر اور مساقیوں، جنابے رہنمائیل ایالمن نے اپنی لادلی اور چھیتی بستی ہجڑتے ساییدت گل ایشی کو گورنر کی آجڑمادش میں ساتھ کرنے اور شایستہ کوڈم رہنے کی تلاشی فرمائی اور خود بھی کوئی دینوں سے فاکٹری پر ساتھ کیے ہوئے ہے ।

آپ بھوکے رہئے اور پست پر پیشہ وار باندھے

نے 'متوں' کے دینے ہم میں خواہ مداری نے والے

(وہ سایلے بخشش اجڑیں اور اہلے سونت ﴿دَامَتْ بِرَبِّكُمْ أَعْلَمُ﴾ س. 306)

﴿5﴾.... گورنر **اللّٰہُ اکبر** رکھنے کی نے 'متوں'، نبی یہ رہنمائی کی چاہت، بہت ساری فوجیں اور بے شمار فوجیں کا پیشہ خدمت ہے، اسی وجہ سے اللہ اکبر کے والوں نے گورنر کو پسند فرمایا ।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّوَا عَلٰى الْحَبِيبِ !

کرشنا نے فاتیمہ میں فاکڑ کشی کا اعلام

دا'�تے اسلامی کے ایشان ابتدی ادوارے مکتبات علیل مداری کی متابوں ۸۵ سلفہات پر مسٹر میل کتاب "دنیا سے بے رجوبتی اور عالمی دوں کی کمری" سلفہ ۴۲ پر ہے: اک دن ہنوز نبی یہ پاک، ساہیبے لالاک، سایہاہے افلاک رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہنوز سلیمانی کے ہنوز تشریف لایا اور ارشاد فرمایا: میرے دوں بے (یا' نی ہنوز ہنسن و ہنسنے رضی اللہ تعالیٰ عنہما کہاں ہیں؟ ہنوز سلیمانی فاتیمہ نے ارجمند کی: آج جب ہم نے سوہنے کی تو ہمارے گھر میں خانے کے لیے کوئی چیز نہیں تھی تو ہنوز ہنوز نے میڈ سے فرمایا کہ "میں این دوں کو کہہں لے جاتا ہوں، میڈے ڈر ہے کہ یہ تو مہارے پاس (بُوک کی وجہ سے) رہے اور تو مہارے پاس انہیں خیلانے کو کوچھ نہیں!" پس وہ فولانی یہودی کی ترکیب گئی ہے۔

تو ہنوز بھی ڈر تشریف لے گئے، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہی و اللہ و سلم کہاں پہنچے تو دیکھا کہ دوں شہزادے ہنوز میں خیل رہے ہیں اور کوچھ بچی ہرید خجڑےں ان کے سامنے پडی ہیں، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہی و اللہ و سلم نے فرمایا: "اے اعلیٰ! کیا میرے بے کو گرمی کی شدید سے پہلے پہلے گھر نہیں لے جاؤ گے؟" ہنوز سلیمانی اعلیٰ کریم نے ارجمند کی: "یا رسول اللہ اعلیٰ آج جب ہم نے سوہنے

की तो हमारे घर में खाने के लिये कुछ नहीं था, अगर आप थोड़ी देर बैठ जाएं तो मैं हज़रते फ़ातिमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ के लिये ये हुई खजूरें चुन लूं।” पस हुज़र तशरीफ़ फ़रमा हो गए और हज़रते सच्चिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ने बची हुई खजूरें इकट्ठी कर के एक कपड़े में जम्मू कीं फिर चल दिये, एक शहज़ादे को हुज़र صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ ने और दूसरे को हज़रते सच्चिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ने उठा लिया यहां तक कि उन को घर पहुंचा दिया।

(المُعْجَمُ الْكَبِيرُ، اسماء بنت عميس عن فاطمة، ج ٩، ص ٣٧٤، الحديث: ١٨٣٢٣)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَسِيبِ!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबी की लाडली, आक़ा की शहज़ादी हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमतुज़्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी किस क़दर फ़ाक़ा मस्ती में और इस कठिन दौर को कितने सब्रो शुक्र के साथ गुज़रा, पूरी तारीख़े इस्लाम शाहिद है कि गुर्बत व फ़ाक़े बल्कि किसी भी मुश्किल के बारे में शिकवा व शिकायत के लिये आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लब न खुले, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बारगाहे नुबुव्वत के जेरे साया पल्ली बढ़ीं, जहां से इन्होंने तरबियत पाई थी कि फ़क़्र, ग़ना (या'नी दौलत मन्दी) से अफ़ज़ल है। इस बारगाहे अलिया की तालीमात में से है कि साबिर ग़रीब को रोज़े कियामत उमरा पर फ़ज़ीलत हासिल होगी जैसा कि

जन्नत पाने में सबकृत

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 743 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जन्नत में ले जाने वाले आ‘माल” सफ़हा 672 पर हाफिज़ुल मशरिको मग़रिब हज़रते सच्चिदुना शैख़ अबू मुहम्मद शरफुद्दीन अब्दुल मोमिन दिमयाती عليه رحمة الله الهاوي फुक़रा की फ़ज़ीलत बयान करते हुए नक़ल फ़रमाते हैं : फैज़्याबे फैज़ाने मुस्तफ़ा हज़रते सच्चिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि अनीसुल ग्रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मुहिष्बुल फुक़राए वल मसाकीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है :

”يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِينَ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْأَغْنِيَاءِ بِنَصْفِ يَوْمٍ وَهُوَ خَمْسُمَائَةٌ عَامٌ“
या’नी मुसलमान फुक़रा अग़निया से आधा दिन पहले जन्नत में दाखिल हो जाएंगे और वोह (आधा दिन) 500 साल (के बराबर) होगा ।
(سنن الترمذى، كتاب الزهد، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين يدخلون...الخ، ص ٥٢٢، الحديث: ٢٣٥٣)

शारेह मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी عليه رحمة الله العظى “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 7, सफ़हा 67 पर इस हृदीषे पाक की तशरीह में फ़रमाते हैं : “ये ह उन फुक़रा की शान दिखाने के लिये होगा कि अमीरों को हिसाब के नाम पर रोक लिया गया और फ़कीरों को जन्नत की तरफ़ चलता कर दिया गया ।”

(مِرَآةُ الْمَنَاجِنِ، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، ج 7، ص ٦٧)

अ़ज़ाबे क़ब्रो मेहशर से, बचा लो नारे दोज़ख़ से

खुदारा साथ ले के जाओ जन्मत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख्शाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत س. 147) ذامت بِرَبِّكُوْنُهُ الْعَالِيِّ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَسِيبِ !

गुर्बत पर सब्र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ये ह सब फ़ज़ाइल उस ग़रीब मुसलमान के लिये हैं जो अपनी गुर्बत पर सब्र करे । हर वक़्त जम्मू माल के चक्कर में पड़े रहने, अमीरों और उन की ने'मतों को देख देख कर दिल जलाने या हःसद की आफ़त में मुब्तला होने वाला जो मुफ़िलस व नादार अपनी गुर्बत पर साबिर नहीं वो ह बयान कर्दा इन्झाम का मुस्तहिक़ नहीं और अगर बद क़िस्मती से बे सब्री में मज़ीद आगे बढ़ गया तो फिर ज़िल्लतो रुस्वाई मुक़द्दर बन सकती है । पस नादारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाहु** क़दीर **غُرَّ حَلَّ** की ख़ुफ़या तदबीर से डरते रहना ज़रूरी है क्यूंकि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए आज़माइश में डाला गया हो और ना जाइज़ गिले शिकवे, गैर शरई बे सब्री व गुर्बत व मुसीबत को हराम ज़राएँ से ख़त्म करने की कोशिशें आखिरत में तबाही व बरबादी का सबब बन जाएँ । मोहताजी एक मरज़ है जो इस में मुब्तला हुवा और सब्र

किया वोह इस का अज्ञो षवाब पाएगा और ग़रीब लोग अमीरों से पहले जनत में जाएंगे चुनान्वे नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे पाक है कि फुक़रा अमीरों से 500 साल पहले जनत में दाखिल हो जाएंगे ।

(سنن الترمذى، كتاب الزهد، باب ما جاء ان فقرا.....الخ، ص ٥٦٢، الحديث: ٢٣٥٣)

रहें सब शाद घरवाले शहा ! थोड़ी सी रोज़ी पर

अता हो दौलते सब्रो कनाअत या रसुलल्लाह !

(वसाइले बखिंश अजु अमीरे अहले सुनत دامت بر کاتبهم العالیه स. 186)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

अहले बैत के तीन रोज़े

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्भूआ़ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फैज़ाने सुन्नत” जिल्द अब्वल सफ़हा 1442 पर मन्कूल है : हज़राते हसनैने करीमैन رضي الله تعالى عنهم بचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलियुल मुर्तज़ा, शेरे खुदा व हज़रते سय्यदतुना बीबी ف़اتिमा (رضي الله تعالى عنهم) और ख़ादिमा हज़रते سय्यदतुना ف़िज़्ज़ा (رضي الله تعالى عنهم) ने इन शहज़ादों رضي الله تعالى عنهم की सिह़त याबी के लिये तीन रोज़ों की मन्त मानी । **अल्लाह** तआला ने दोनों शहज़ादों رضي الله تعالى عنهم को शिफ़ा अृता फ़रमाई, चुनान्वे तीन रोज़े रख लिये गए । हज़रते

مولیٰ اُلیٰ تین ساڑھے رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ جव لاء، اک اک ساڑھے (یا' نی 4 کیلو میں سے 160 گرام کم) تینوں دن پکایا، جب ایفٹار کا وکٹ آیا اور تینوں روچاداروں کے سامنے روٹیاں رکھی گई تو اک دن میسکین، اک دن یتیم اور اک دن کڈی دارواجے پر ہاجیر ہو گئے اور روٹیوں کا سووال کیا تو تینوں دن سب روٹیاں ان سائلوں کو دے دیں اور سیف پانی سے ایفٹار کر کے اگلا روچا رکھ لیا۔

(تفسیر خداوندی اور فتن، پا. 29، ادھر: تہذیل آیات: 8، ص. 1073، مولانا بخاری)

آلہ ربوبیت ایجات کی عنوان پر رحمت ہو اور ان کے ساتھ ماضیت ہے।

امین بجاۃ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

بھکر رہ کے خود اور میں کو خیلہ دتے ہے

کہ سے سا بیر ہے موسیٰ مدد کے بھانے والے

صلوٰۃ علی الحبیب ! صَلَوٰۃ علی محمد ﷺ

کورآنے مجدید میں **آلہ** تعلیٰ نے اپنے پیارے

صلوٰۃ اللہ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ مہبوب، دانائے گویا، مونجھون انیل ڈیوب

کی پیاری شاہزادی کے بھانے کے اس ایمان افراد کے ایسا ایمان کی پارہ 29 سورت دھر آیات نمبر 8-9 میں اس ترکیب بیان

فرمایا ہے :

وَ يُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ
 مُسْكِيْنًا وَيَتِيْهَا وَآسِيْرًا ① إِنَّمَا
 نُطْعِمُكُمْ لِرَوْجَهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ
 مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ②
 (ب، ٢٩، الدهر: ٨، ٩)

تَرْجِمَةِ كَلْجُولِ إِيمَانٍ : اُور خانا
 خیلاتے ہیں ہے اُس کی مہبّت پر
 میسکین اُور یتیم اُور اسیں
 (یا' نی کے دی) کو । اُن سے کہتے ہیں
 ہم تُمھے خاس **اللّٰہ** کے لیے
 خانا دتے ہیں، تُم سے کوئی بدلنا یا
 شُکر گزارتی نہیں مانگتے ।

इस ایمان اپنے روحانیت مें اहले بैत
 اُत्तराहर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के جज्बए ایषار का क्या खूब इज़हर है !
 वाकेई तीन दिन तक सिर्फ़ पानी पी कर रोज़ा रख लेना कोई
 मामूली बात नहीं । हम अगर एक रोज़ा रखें तो इफ्तार में ठंडा
 ठंडा शरबत, कबाब समोसे, मीठे मीठे फल, गर्म गर्म बिरयानी
 और न जाने क्या क्या चाहिये ! इस क़दर तंगदस्ती के आलम में
 इतना शानदार इषार इन्हीं का हिस्सा था ।

ईषार की फ़ज़ीलत में खुद मदीने के سुल्तान, رحمتے
 اُलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का فُرمाने मणिप्रियत निशान है :
 “जो शख्स किसी चीज़ की ख़ाहिश रखता हो, फिर उस
 ख़ाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह
 दे, तो **اللّٰہ** عَزَّ وَجَلَ **उसे** बरखा देता है ।”

(كتاب الموعظ والرقائق والخطب والحكم، الباب الاول في الموعظ والترغيبات، ج ١، ص ٣٣٢، الحديث: ٥٠٤، رقم: ٢٣١)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

فَرَكْ وَ كَثِيرَةَ فَاتِمَةُ اُولَئِكَ الْمُسْتَفَضَّةُ

हज़रते सच्चिदुना इमरान बिन हुसैन رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : एक दफ़्भा हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमतुज्ज़हरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी बेटी का हाल मुलाहज़ा फ़रमाया कि शिद्दते भूक की वजह से चेहरे से खून खेत्म और रंग ज़र्द पड़ चुका है, हड्डीबे खुदा, शाहे हर दो सरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها को क़रीब बुलाया और अपना दस्ते पुर अन्वार आप के सीने पर रख कर बारगाहे इलाही में अर्ज़ की :

”اللَّهُمَّ مُشَبِّعُ الْجَاعَةِ وَرَافِعُ الْوَضِيعَةِ ارْفُعْ فَاطِمَةَ بُنْتَ مُحَمَّدٍ“

तर्जमा : ऐ भूकों को सैर करने वाले और पस्तों को बुलन्द करने वाले परवर दगार ! फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद से भूक की शिद्दत उठा ले ।

हज़रते सच्चिदुना इमरान बिन हुसैन رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : दुआए मुस्तफ़ा के बा'द मैं ने मुलाहज़ा किया कि हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها के चेहरे की ज़र्दी पर खून ग़ालिब आ गया और फिर किसी मौक़अ़ पर जब हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमा رضي الله تعالى عنها से मुलाक़ात हुई तो मेरे पूछने पर बताया कि इस वाकिए के बा'द मुझे (शदीद) भूक न लगी ।

(ذلِيلُ النُّبُوَّةِ لِبَيْهَقِي، بَابُ مَا جَلَ فِي دُعَائِهِ لَابْنَتِهِ فَاطِمَةٍ...الخ ج ٤، ص ١٠٨، ملخصاً)

प्रेशकश : ग़ज़ीविसे अल ग़दीवतुल इलिया (दावते इस्लामी)

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद
इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद

(عليه رحمة رب العزّ) (हृदाइके बख्शिश अज़ इमामे अहले سुन्नत)

शर्हِ کلامِ رج़ा :

हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की दुआ ने जब इज़ज़तों शान से
क़दम आगे बढ़ाया तो क़बूलिय्यत ने झुक कर ता'ज़ीम दे कर उस
को अपने गले लगाया और मुजीबुद्दा'वात की बारगाह से
क़बूलिय्यत का शाहाना ताज दिलवाया ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस हस्ती की दुआएं
इस क़दर पुर अषर और मक़ामे क़बूलिय्यत पाने में जल्द तर हों
उन्हें किस चीज़ की कमी ? लेकिन दुन्यावी व ज़ाहिरी ज़िन्दगी
में जो पसन्द किया वोह येही कि अगर्चे **अल्लाह** तभ़ुला ने दो
जहां की ने'मतें अपने हाथ में दे दी हैं लेकिन गुज़ारा इस तरह
किया जाए कि ता कियामत आने वाली उम्मत के लिये सब्रो भूक
की सुन्नत क़ाइम हो जाए । सच्चियदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले
सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत “हृदाइके बख्शिश
शरीफ” में शहनशाहे काएनात की मिलकिय्यत व इख़ितायारी
फ़क़ की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :

مالیکے کوئنہن हैं गो पास कुछ रखते नहीं

दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّةِ)

شَرْحٌ كَلَامَةِ رَجَاءٍ :

हुज्जूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ तमाम जहानों के मालिको मुख्तार हैं मगर अपने पास कुछ नहीं रखते। दोनों जहां (दुन्या व उक्बा) की तमाम ने'मतें हुज्जूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के तसरुफ़ में हैं मगर हाथ ख़ाली हैं।

صَلَّوْ عَلَى الْحَمِيمِ !

वस्वसा : येह चश्म दीद वाकिआ बयान करने वाले सहाबिये रसूल हज़रते सच्चिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ातूने जन्त, पैकरे इफ़क्तो इस्मत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये ना महरम हैं, फिर पर्दे का लिहाज़ क्यूँ न रखा गया ?

जवाबे वस्वसा : हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बैहकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ ने इख़ितामे रिवायत पर इस वस्वसे की काट करते हुए सराहत फ़रमाई है कि येह वाकिआ आयते पर्दा नाज़िल होने से पहले का है।

(دَلَائِلُ النَّبِيَّ لِبَيْهِقِي، بَابُ مَا جَاءَ فِي دُعَائِهِ لَبْنَتِهِ فَاطِمَةَ...الخ، ج ۲، ص ۱۰۸)

वर्ना हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमा ज़हरा, तथिबा, ताहिरा तो बा पर्दा और पैकरे शर्मो हया थीं, पर्दे के शरई

ہ Kum کے نujool کے با'd گیر مار्दोں سے گوپتگू اور بے پردگی سے کوسوں دُور رہنی، ان کی پردازدی اور ہیاداری جربول مسال⁽¹⁾ بن گई، پرداز اور ریداء ہیا کا اینا خیال کی ب وکٹے کुبے وفاط اپنے کافن کو بھی با پرداز رخنے کی وسیعیت فرمائی۔ سیرتے فاتیما کا یہ لایکے تکلیف پہلے (با'نی گوشہ) اسلامی بہنوں کی توجہوہ چاہتا ہے । فون پر گیر مار्दوں سے گوپتگू نا مہرموں سے انٹرنیٹ پر چینگ اور چادر و چار دیواری کو ڈبڑ کرنے والیاں گیر کرئے اور سون لئے کہ اگر دنیا میں ڈجیٹ و وکار اور آخیرت میں سुخربُرڈ متابلوں ہو تو پرداز و ریداء ہیا کا بہت خیال رکھیے ورنہ لوگ خواہ آپ کو مہاترما کہتے رہئے دنیا و آخیرت میں آپ نا مہاترما ہی ہوں گی ।

یہ شدہ آیا ایسماں ہے جو ہے بے ش ن کم
ہیا ہے آنکھ میں باؤں ن دل میں خاؤکے خودا
یہ سے رہا ہے کہ مکتبل ہے شامیں گیرت کے
یہ نیم باؤ سا بُرکبُری یہ دیدائے ب نیکا ب
ن دے خ رشک سے تہجیب کی نعمائش کو
وہی ہے راہ تے ابُرجمو شاؤک کی منجیل
تے ری ہیا ہے کیردارے رابیبُری بسرا

صلی اللہ تعالیٰ علیٰ مُحَمَّدٌ

دیلو نجیر کی تباہی ہے کुبے نا مہرماں
بہت دنیوں سے نیجامے ہیا ہے بہرام
یہ ما'سیح کے مناجیر ہے جینتے بُلالم
ڈالک رہا ہے ڈالا ڈال کُمیس کا رِشام
کی سارے فُل یہ کاغذ کے ہے خودا کی کسما !
جہاں ہے ابُریشا و فاتیما کے نکشوں کو دم
تے رے فُسائے کا ماؤبُری یہ سماں میرام
صلوٰعَلیٰ الْحَبِيبِ !

(1).... کہا وہ یا'نی اسے جو میڈیا کے تاریخ پر مشہور ہے ।

تین دن کا فاکٹری

خادیمے بارگاہے ریسا لات هجرا تے ساییدتُونا ان سب بین مالیک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کیا دین اُبلاش کے حبیب، بیمار دلیوں کے تبیب مخدوم اُبلاش کے اپنات، هجرا تے ساییدتُونا فاطمۃ متعظہ رہا کے گھر تشریف لے گئے، تو هجرا تے ساییدتُونا فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے اپنے فاکٹری کا اُلام بیان کرتے ہوئے اُرجُ کی: میں نے اپنے پت پر تین پسمر بامد رکھے ہیں اور ہر پسمر اک دن کی بُوک کی وجہ سے بامدھا ہے۔ جواب میں مالیک کوئی نہ نے اپنے بتانے اک دس پر چار پسمر بامدھے ہوئے دیکھا۔

(بریقہ مُحَمَّدیہ، جز ۲، ص ۲۵، المکتبۃ الشاملۃ)

مالیک دینو دُنیا ہو کر فاکٹری سے ہی شاہے دو اُلام	دوں جہاں کے سرکار ہو کر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم
صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّد	صلوٰا علی الحبیب!

پ्यاری پ्यاری اسلامی بھنو! شکم سیر رہنا اور
خانے کی لجڑتوں سے لुٹپ اندوں ہوتے رہنا سُننت نہیں بلکہ
سُننت بُوک اور فاکٹری میں ہے اگرچہ پت بھر کر خانا مُبَاہ
یا' نی جائی ہے مگر "پت کا کوپلے مداری" لگاتے ہوئے
یا' نی اپنے پت کو ہرام اور شُبُھات سے بچاتے ہوئے ہلال
گیڑا بھی بُوک سے کم خانے میں دینو دُنیا کے بے شُمَار فُواہد

है। खाना मुयस्सर न होने की सूरत में मजबूरन भूका रहना कमाल नहीं, वाफिर मिकदार में खाना मौजूद होने के बा वुजूद फ़क़्त रिज़ाए इलाही की ख़ातिर भूक बर्दाश्त करना हक़ीक़त में कमाल है और कषीर फ़वाइद व फ़ज़ाइल का मूजिब है जैसा कि

भूक के 10 फ़वाइद

- (1) दिल की सफाई। (2) रिक़्क़ते क़ल्बी।
- (3) आजिज़ी व इन्किसारी। (4) आखिरत की भूक व प्यास की याद। (5) गुनाहों की रग्बत में कमी। (6) नींद में कमी।
- (7) इबादत में आसानी। (8) तन्दुरुस्ती। (9) थोड़ी रोज़ी में किफ़ायत। (10) बचा हुवा खैरात करने का ज़ब्बा।

(احياء علوم الدين، كتاب كسر الشهورتين، بيان فوائد الجوع وآفات الشبع، ج ٣، ص ١٠٥، اتا، ملخصاً)

भूक का سिला

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सथियदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली فَرَمَّا تَرَكَّبَتْ بُعْدَهُ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِ : बुजुर्गाने दीन فَرَمَّا تَرَكَّبَتْ بُعْدَهُ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِ : या' رَأْسُ الْجُوعِ رَأْسُ مَا لَنَا फ़रमाते हैं : नी भूक हमारा बेहतरीन सरमाया है। इस से मुराद येह है कि हमें जो वुस्अत, सलामती, इबादत, हलावत और इल्मे नाफ़ेअ़ हासिल होता है येह **अल्लाह** तबारक व तआला के लिये भूक और इस पर सब्र करने के सबब हासिल होता है।

(مِنْاجُ الغَابِدِينَ، تقوی الاعضاء الخمسة، فصل في رعاية الاعضاء الاربعة العين... الخ، ص ٢٢٩)

بُوك سرمایا بنے میرا خوداۓ جعل جلال !

اَجْزِ تُرْكَلے مُسْتَفَا ! کار بُوك سے مुڈھ کو نیھال

امین بِحَمَّةِ الْأَمِينِ مَنِ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُدُوْلُ

صَلُوْغَ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُوْغَ عَلَى الْحَسِيبِ !

جہنمت و دوچڑھ کے دروازے

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي
فُرْمَاتِهِ هُنْ : پेट اور شَرْمَگاہ جہنم کے دروازوں میں سے اک دروازا ہے اور اس کی اس्ल پेट بھر کر خانا ہے اور آجیجی و انکیساڑی جہنم کے دروازوں میں سے اک دروازا ہے اور اس کی جڈ (یا'نی بُونیا) بُوك ہے । اپنے اوپر جہنم کا دروازا بند کرنے والा یکینن اپنے لیے جہنم کا دروازا خولتا ہے کیونکہ ان دونوں مُعاً ملات کے اندر اک دوسرے میں مشارک و مغارب کی ترہ فرک ہے لیہا جا ان میں سے اک دروازے کے کریب ہونا یکینن دوسرے سے دُور ہونا ہے । (یا'نی جو بُوك کے جریئے آجیجی اپنا کر جہنم کے کریب ہو وہ جہنم سے دُور ہو اور جو ڈٹ کر خانے کے جریئے پेट اور شَرْمَگاہ کی آفٹوں میں مُلبلا ہو وہ وہ جہنم سے کریب ہو کر جہنم سے دُور جا پڈا ।)

(احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشہوتین، بیان فوائد الجوع و آفات الشبع، ج ۳، ص ۱۰۶)

دُور آفٹا ہو ڈٹ کر خانے کی

کاش ! سُورت ہو، خُلُد پانے کی

بَدْنَ كَيْ دُسْلَاهْ

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके
आ'ज़م फ़रमाते हैं : तुम पेट भर कर खाने पीने
से बचो क्यूंकि ये ह जिस्म को ख़राब करता, बीमारियां पैदा
करता और नमाज़ में सुस्ती लाता है और तुम पर खाने पीने में
मियाना रवी लाज़िम है क्यूंकि इस से जिस्म की इस्लाह होती
और फुज्जूल ख़र्ची से नजात मिलती है ।

(كتاب المعيشة، مخطوط الأكل، ج ١، ص ١٨٣، الحديث: ٢٠٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन रिवायात व वाकिआत से हमें ये ह इल्म हासिल हुवा कि शहनशाहे नुबुव्वत और ख़ानदाने नुबुव्वत ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा फ़ाक़ा के अ़ालम में गुज़ारा । ताजदारे काएनात के बा'द फ़क़ो फ़ाक़ा और सब्र व शिकेबाई के कषीर मवाकेअ हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा की हयाते मुबारका में आए । बहुत कम आमदनी, खाने की तंगी और घर के काम-काज की ज़ियादती कठिन उम्र हैं जिन को बिगैर किसी शिकवा व शिकायत के सब्रो शुक्र से गुज़ारना सीरते फ़ातिमा का एक लाइके तक़लीद और क़ाबिले सद तहसीन पहलू है । याद रखिये ! मुश्किल लमहात में वावेला और शोर मचाना बे सूद षाबित होता बल्कि बे सब्री की बिना पर अज्ञो षवाब से भी महरूम कर देता है, अन्धेरी रात में डरने और

شانے خواہوں جنمات ﴿رضی اللہ عنہما﴾ خواہوں جنمات کے فاکے

بیل بیلاناں والوں کے لیے سورج جلدی تعلوٰؑ نہیں ہے جاتا । ہاں ! سب سے روشن سुبھ کا انٹیج़ار کرنے والوں کی نیڈ جاہِ اُ ہوتی ہے ن جان جو خون مें پड़تی ہے । ب تکا جڑا بشاریت جب هجرتے ساییدتُنَا فَاطِمَة رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا دُنْيَا وَيْدُ مُوشِكِلَاتَ وَ مَسَاءِبَ سے کبیدا خَاتِر (یا' نی رنجیدا دل) ہر یہ تو رسوئے کریم، رَأْفُورْهِیم نے اُنْلَیْهِ أَفْصُلُ الْمُلْأَوِيَّةِ وَ التَّسْلِیمِ اُنْ نے اُن کی تواجہ جناتی اُنھا مات کرا مات کی ترک دیلا دی یا' نی رات کو سُبھ کا انٹیج़ار کرنے کا ہُوكمِ ارشاد فرمایا । اس نفیسیاتی عسلوں کو اگر ہر گم جڑا مُسالمان اپنے ڈپر لागُ کر لے تو برد نہیں کی دل برداشتگی اور گم جڑگی اپنی راہ لے اور راہت سُکون کا بسرا ہو جائے । بہر کے سیرتے فاطِمَة میں ہر مُسلمان کے لیے نسیہت وِ ہدایت کے مدنی فُل ہیں بیل خُسوسِ اسلامی بہنوں کے لیے تو ہدایتِ جہرا کا ہر دیر مسئلن شریفانہ بچپن، سوتے لے ریشِ داروں سے ہُسنے سُلُک، شادی کی سادگی اور بہترینِ ایجیدِ واجی جنبدگی اپنے اندر کریں مدنی فُل لیے ہوئے ہے । کاش ! ہر اسلامی بہن ہجرتے ساییدتُنَا فَاطِمَة جہرا کے نکشے کُدم پر چلنے کی ہتھیں امکان سأُبُر کرے، اور اس پر مدد پانے کے لیے تبلیغِ کُرآن اُنعت کی اُلِمگیر گیر سیاسی تہریک دا 'वتے اسلامی کا مدنی ماحول اپنا لے کی یہ ماحول سیرتے عِمَّہ تُرل مُامنین اور سیرتے فاطِمَة پر اُمَل کا درس دेतا ہے । ترکیب کے لیے اک مدنی بہار اور اسلامی بہنوں میں مدنی کام کی کوچھ تفسیل مُلایہ جاؤ فرمائیے :

میرے مسائیل حل ہو گئے

باقیل مدائیا (کراچی) کی ایک معاشر اسلامی بہن کا حل فیضیا بیان کुछ اس ترہ ہے کہ میں مسکھ لیف غریل مسائیل میں گیریضتار تھی۔ ہم کیراے کے مکان میں رہتے، مگر آمد نی کم ہونے کی وجہ سے کیراے بھی تک پر نہ دے پاتے۔ بچیوں بھی جوان ہو رہی تھیں، ان کی شادیوں کی فیکر اعلیٰ خاہے جا رہی تھی۔ اک روئے کسی اسلامی بہن سے میری مولانا کاٹ ہوئی، انہوں نے میری گرم خواری کی اور ان فیضتاری کو شیش کرتے ہوئے دا' واتے اسلامی کے اسلامی بہنوں کے ہفتہوار سمعن توں برے ایجتیماع میں پابندی کے ساتھ شرکت کی نیتیت کر واہی اور وہاں آ کر اپنے مسائیل کے لیے دعاؤں کرنے کی بھی ترجمیب دی۔ **الحمد لله عزوجل** میں ہفتہوار سمعن توں برے ایجتیماع میں شرکت کی سعادت حاصل کرنے لگی۔ میں وہاں اپنے مسائیل کے حل کے لیے **آلہ عزوجل** کی بارگاہ میں دعاؤں بھی کیا کرتی۔ کुछ ہی ارسا گujra تھا کہ **آلہ عزوجل** رबوں کے کرام سے میرے بچوں کے ابتو کو اچھی مولائیت میل گردی اور کرام بالا اکرام یہ ہوا کہ کुछ ہی ارسے میں ہم نے کیراے کا گھر ڈکھانے کر اپنا جاتی مکان بھی خرید لیا۔ **آلہ عزوجل** نے اپنے ہبیبے لبیبے کے سدکے، سمعن توں برے ایجتیماع ات میں مانگی جانے والی دعاؤں کی برکت سے بچیوں کی شادیوں کے فرماں سے اُوہدا برآ ہونے کی تکمیل بھی ہنایت فرمادی۔ اس

تُرہ دا' وَتَهِ إِسْلَامِيَّةِ مَدْنَى مَاهِيَّلَّهِ کِي بَرَكَتِ سَهِ هَمَارِهِ
مَسَايِّلَ کَ رِئِيْسِتَانِ، هَسْتَهِ مُوسَكُرَاتِ لَهَلَلَهَاتِ گُولِسَتَانِ مَهِ
تَبَدِيلِ ہَوَ گَيَا । الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(إِسْلَامِيَّةِ بَهَنَوْنَ کِي نَمَاجِ، س. 289)

بے کسو بے بس و بے یارو مددگار جو ہو

آپ کے در سے شاہ سب کا بلالا ہوتا ہے

(سَامَانِ بَھِیَّشَ اَجَ مُفِیْضِتِیَّهِ آَجَمَهِ هِنْدَ (حَمْدَ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْهِ

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ عَلَیْ الْحَبِيبِ !

इस्लामी बहनों में मदनी इन्डिलाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दा'वते
इस्लामी वालों पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार दो
صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ اबरार
आलम के मालिको मुख्तार, शहनशाहे अबरार
का कितना बड़ा करम है ! اَللَّهُمَّ اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ
इस्लामी भाइयों के साथ
साथ इस्लामी बहनों में भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की
हर तरफ़ धूमें हैं । اَللَّهُمَّ لَا يَخْلُقْ
लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी
दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को कबूल किया, फैशन परस्ती
से सरशार मुआशरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी
बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन
और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْهُنَّ की दीवानियां
बन गईं । गले में दूपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत
तफ़रीह गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सीनेमा घरों

شانے خواہوں جنمات ﴿رضی اللہ عنہما﴾ خواہوں جنمات کے فاکٹری

की جینات बनने वालियों को करबला वाली इफ़्फत मआब
शहज़ादियों رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की शर्मो हया के सदके वोह बरकतें
नसीब हुईं कि मदनी बुर्क़अः उन के लिबास का जु़ज़े ला यन्फ़क (या'नी जुदा न होने वाला हिस्सा) बन गया । مادनी
मुनों और इस्लामी बहनों को कुरआने करीम हिफ़ज़ो नाज़िरा की
मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और आलिमा
बनाने के लिये मुतअ़द्दद “जामिअ़तुल मदीना” क़ाइम हैं ।
دَا'वَتِ اِسْلَامِيَّةِ مَنْهُجٌ
आलِيَّةٍ دَا'वَتِ اِسْلَامِيَّةِ مَنْهُجٌ
“हाफ़िज़ात” और “मदनिया
आलिमात” की ता'दाद बढ़ती जा रही है । बहर हाल इस्लामी
भाइयों से इस्लामी बहनें किसी त्रह पीछे नहीं हैं, 1433 सिने
हिजरी के मदनी माह रबीउल गौष (ब मुताबिक़ मार्च 2012 ई.)
में पाकिस्तान के अन्दर होने वाले دَا'वَتِ اِسْلَامِيَّةِ مَنْهُجٌ के मदनी
कामों की इस्लामी बहनों की “मजलिसे मुशावरत” की तरफ़
से मिलने वाली कारकर्दगी की एक झलक मुलाह़ज़ा हो :

『1』.... इस एक मदनी माह में मुल्क भर के अन्दर रोज़ाना
तक़रीबन 64,762 घर दर्स हुए 『2』.... रोज़ाना लगने वाले
मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) की ता'दाद लगभग 3,495 और
इन से इस्तिफ़ादा करने वालियों की ता'दाद तक़रीबन 38,552
『3』.... हल्क़ा / अलाक़ा सत्ह के हफ़्तावार सुन्तों भरे
इज़तिमाआत की ता'दाद तक़रीबन 3,000 और इन में शरीक होने
वालियां लगभग 1,95,175 『4』.... हफ़्तावार तरबियती हल्कों

की शुरका की ता'दाद तक़रीबन 29,829 《5》.... तक़रीबन 91,254 मदनी इन्नामात के रसाइल तक़सीम हुए और 82,340 वुसूल हुए 《6》.... मदनी दौरा की शुरका की ता'दाद 20,479 《7》.... अमीरे अहले سुन्नत ذامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةِ का बयान या मदनी मुज़ाकरा सुनने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद तक़रीबन 1,19,924 《8》.... इनफ़िरादी कोशिश से 22,976 इस्लामी बहनें मदनी माहोल से मुन्सलिक हुईं ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अू पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

(वसाइले بख़िਆش अज़ अमीरे अहले سुन्नत ذامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةِ س. 288)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

नाखुन काटने के 9 मदनी फूल

《1》.... जुमुआ के दिन नाखुन काटना मुस्तहब है । हाँ ! अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ का इन्तिज़ार न कीजिये । (۱۱۳) सदरुशशरीआ बदरुत्तरीक़ा मौलाना अमजद अली आ'ज़मी "बहारे शारीअत" عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ हिस्सा 16 सफ़हा 226 पर हीषे पाक नक़ल फ़रमाते हैं : जो जुमुआ के रोज़ नाखुन तरशवाए (काटे) अल्लाह तअ़ाला उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से महफूज़ रखेगा और 3 दिन ज़ाइद या'नी 10 दिन तक । (۱۱۴) एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ के दिन नाखुन तरशवाए (काटे) तो रहमत आएगी और गुनाह जाएंगे । (۱۱۵)

(2).... ہادیوں کے ناخون کاٹنے کے منكول تریکے کا خुلاسا پہلو خیدمت ہے: پہلے سیधے ہاث کی شہادت کی ٹنگلی سے شروع کر کے ترتبہ وار چونگلیا (یا'نی چوٹی ٹنگلی) سمت ناخون کاٹے جائے مگر انگوٹھے دیجیے । اب ڈلٹے ہاث کی چونگلیا (یا'نی چوٹی ٹنگلی) سے شروع کر کے ترتبہ وار انگوٹھے سمت ناخون کاٹ لیجیے । اب آخیر میں سیधے ہاث کے انگوٹھے کا ناخون کاٹا جائے । (الرُّخْتَار، ص ۱۱۲)

(3).... پاؤں کے ناخون کاٹنے کی کوئی ترتبہ منكول نہیں، بہتر یہ ہے کہ سیधے پاؤں کی چونگلیا (یا'نی چوٹی ٹنگلی) سے شروع کر کے ترتبہ وار انگوٹھے سمت ناخون کاٹ لیجیے فیر ڈلٹے پاؤں کے انگوٹھے سے شروع کر کے چونگلیا سمت ناخون کاٹ لیجیے ।

(4).... جنابات کی ہلالت (یا'نی گوسل فرج ہونے کی سورت) میں ناخون کاٹنا مکرہ ہے । (فُتَّاَوَاَ اَلَّاَمِيَّةِ، ج ۱، ص ۱۸۹)

(5).... دانت سے ناخون کاٹنا مکرہ ہے اور اس سے برس یا'نی کوڈ کے مرجع کا اندازہ ہے । (المرجع السالیق)

(6).... ناخون کاٹنے کے با'd این کو دفن کر دیجیے اور اگر این کو فینک دے تو بھی ہرج نہیں । (المرجع السالیق)

(7).... ناخون کا تراشا (یا'نی کटے ہوئے ناخون) بیتلل خللا یا گوسل خانے میں ڈال دینا مکرہ ہے کہ اس سے بیماری پیدا ہوتی ہے । (المرجع السالیق)

(8).... بودھ کے دین ناخون نہیں کاٹنے چاہیے کہ برس یا'نی کوڈ ہو جانے کا اندازہ ہے ایک بڑا آج نہیں کاٹتا تو **40** دین سے ناخون کاٹے ہے، آج بودھ کو **40** وां دین ہے اگر آج ناخون کاٹتا تو **40** دین سے جڑید ہو جائے تو اس پر واجب ہوگا کہ آج ہی کے دین کاٹے اس لیے کہ **40** دین سے جڑید ناخون رکھنا نا جاہل و مکرہ تھا تھا ہے । (تفسیلی مام'lūmat کے لیے فُتَّاَوَاَ رجُلیٰ مُحَمَّد رَجَبِيٰ جیلڈ 22 سफہا 574-685 مولانا جو فرمایا ہے)

(9).... لمبے ناخون شہزاد کی نیشستگاہ ہے یا'نی اس پر شہزاد بیٹتا ہے । (احیاء الفہم، ج ۱، ص ۱۸۹)

बयान नम्बर 10

खातूने जनत

का

जोहद

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِيعَتِي اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ طَبِيعَتِي

خواہوںے جنات کا جاوہ

ہujrؑ کا مُوشکل کوشاد فرمانا

عَلٰيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَارِ
“تजْكِير تُولِيَّ اُولِيَّاً” مें इरशाद फ़रमाते हैं : हज़रते सभ्यदतुना राबिआ बसरिया की विलादत की शब आप عَلٰيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِدِ के वालिदे माजिद के हाँ न तो इतना तेल था जिस से नाफ़ की मालिश की जाती और न इतना कपड़ा था जिस में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا को लपेटा जा सकता, हत्ता कि गुर्बत का येह आलम था कि घर में चराग़ तक न था और चूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا अपनी तीन बहनों के बा’द पैदा हुई थीं इसी मुनासबत से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا का नाम “राबिआ” (या’नी चौथी) रखा गया ।

जब आप की वालिदए माजिदा ने आप के वालिद साहिब से कहा कि पड़ोस से थोड़ा सा तेल मांग लाइये ताकि घर में कुछ रोशनी हो जाए तो उन्होंने शदीद इस्रार पर हमसाया के दरवाजे पर सिर्फ़ हाथ रख कर घर आ कर कह दिया कि वोह दरवाज़ा नहीं खोलता क्यूंकि वोह येह अ़हद कर चुके थे कि **अَلْلَٰهُ** रब्बुल आलमिन عَزَّوَجَلَّ के सिवा कभी किसी से कुछ त़्लब न करूँगा । इसी

پرے شانی مें نہیں آگई तो ख़बाब में मक्की मदनी, मुश्किल कुशा
نबी ﷺ की ज़ियारत हुई, आप ﷺ ने
तसल्ली व तशफ़्फ़ी देते हुए فَرमाया कि तेरी येह بच्ची बहुत
ही मक़बूलियत हासिल करेगी और इस की शफ़ाअत से मेरी
उम्मत के **1000** अप्राद बख़्श दिये जाएंगे ।

इस के बाद सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात, महबूबे
रब्बुल अरदे वस्समावात, अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा
ने इरशाद फَرमाया कि वालिये बसरा के पास
एक काग़ज पर तहरीर कर के ले जाओ कि तुम हर रोज़ **100**
मरतबा मुझ पर दुरूद भेजते हो और शबेِ جुमुआ **400** मरतबा ।
लेकिन आज जुमुआ की जो रात गुज़री है इस में तुम दुरूद
भेजना भूल गए लिहाज़ा बतौरे कफ़्फ़ारा येह तहरीर लाने वाले
को **400** दीनार दे दो ।

हज़रते سخ्यिदतुना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ
वालिदे माजिद عليه رحمة الله الواحد अगली सुहृ बेदार हो कर बहुत
रोए और ख़त् तहरीर कर के दरबान के ज़रीए वालिये बसरा के
पास भेज दिया, उस ने मक्तूब पढ़ते ही हुक्म दिया कि
अल्लाह غُرُورِ جَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्ज़हुन अनिल
उयूب صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की याद आवरी के शुक्राने में **10,000**
दिरहम तो फुक़रा में तक्सीम कर दो और **400** दीनार उस
शख्स को दे दो । इस के बाद वालिये बसरा ताज़ीमन खुद
आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मुलाक़ात करने पहुंचा और अर्ज़ किया कि

जब भी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को किसी चीज़ की ज़रूरत हुवा करे मुझे इत्तिलाअः फ़रमा दिया करें, चुनान्वे उन्होंने 400 दीनार ले कर ज़रूरत का तमाम सामान ख़रीद लिया ।

(تَنْكِيرَةُ الْأَوْلَيَا (مُتَرْجَمٌ)، ص ۲۲)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ!

مَكَّكَيِّ مَدْنَانِ سُلْطَانِ رَاهِمَتِهِ أَلَّامِيَّانِ
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने गुलाम की किस तरह मुश्किल कुशाई फ़रमाई कि ख़बाब में तशरीफ़ ला कर अपनी ज़ियारत से भी मुशर्रफ़ फ़रमाया और हाजत की चीज़ें भी दिला दीं नीज़ उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का भी काम बन गया कि रहमते आलम, शफ़ीए मुअ़ज़ज़म صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुद अपनी ज़बाने हक़्के तर्जमान से अपने उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले गुलाम का तज़्किरा फ़रमाया यक़ीनन एक आशिक़े रसूल के लिये येही बहुत बड़ी सआदत है कि मक्के मर्दीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में उस का ज़िक्र खैर हो, जिस का तज़्किरा खुद सरकारे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाएं उस की खुश बख़्ती का आलम क्या होगा ?

उफ़ वोह रहे संगलाख़ आह येह पा शाख़ शाख़

ऐ मेरे मुश्किल कुशा तुम पे करोरों दुरूद

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرَبِ) اہم احادیث اسلام

شہرِ کلما میں رجاء :

ہا اے ! افکسوس ! راستا پ�ریلا ہے، آہ ! یہ پاؤں
جڑھماؤں سے چور چور ہے، اے میری مुشکلؤں کو ہل فرمانے والے
آکا ! میری مुشکل کوشائی فرمایا یہ، **اللہ عزوجل** آپ
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر کروڈوں رہمات میں ناجیل فرمائے ।

اللہ عزوجل میں تھی ہے، ہujar kawasim hain

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنونے ! **اللہ عزوجل** رब्बوں
इज़ज़ت نے ہمارے پ्यارے پ्यارے آکا، میठے میठے مُسْتَفَى
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو بے شُما رِخْلیٰ یارا ت ابٹا فرمائے جیس
ت رہ ویسا لے جاہیری سے کُبُل آپ لُوگوں کی
رہنُوْمَائِی و مُشکل کوشائی فرمایا کرتے ہے بَا'د اجڑیں
بھی رਬبے کُدیار عزوجل کی ابٹا سے اپنے گُلاؤں کی مُشکلؤں ہل
فرماتے ہے جیسا کی ہجڑتے سایدُونا امام ابوبُکر عبود اللہ علیہ الرحمۃ الرَّاضی
بین ایں ”سہیہ بُوکھاری شاریف“
میں ریوایت فرماتے ہے کی ساروں کا اینا ت، شاہ مُجْدُ الدّاَت، مہبُوبے
ربّوں اردوے وسما وات، اہمادے مُعْتَبَر، مُهَمَّدے مُسْتَفَى
”إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَحَازِرٌ وَاللَّهُ يُعْطِيُ :“ نے ایسا داد فرمایا :
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم
یا' نی **اللہ عزوجل** ابٹا فرماتا ہے اور میں کاسیم (یا' نی
تکسیم کرنے والा) اور خاچین ہوں ।

(صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب قول اللہ تعالیٰ فان للہ خمسہ، ص ۹۸، الحدیث: ۳۱۱۲)

उस की बख्खिश इन का सदका देता वोह है दिलाते येह हैं
रब्ब है मो'ती, ये हैं क़ासिम रिज़क उस का है खिलाते येह हैं
लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन कौन बचाए बचाते येह हैं

(عليهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوَّاتِ)

शर्हِ کلامے رज़ا :

हकीकत में बख्खिश फ़रमाने वाली ज़ात **अल्लाह**

صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
की ही है लेकिन रब्ब अपने महबूब
के सदके हमारी बख्खिश फ़रमाता है, हकीकत में अ़ता **अल्लाह**
ही फ़रमाता है और हमारे प्यारे प्यारे आका, दो आलम
के दाता **بारगाहे** रब्बुल इज़ज़त में सिफारिश
फ़रमाते हैं।

रब्ब तअला मो'ती (या'नी अ़ता फ़रमाने वाला) है और
सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **رَبُّ** रब्ब **صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ**
की ने'मतें उस के बन्दों में तक्सीम फ़रमाते हैं, रोज़ी **अल्लाह**
रब्बुल आलमिन **عَزَّوَجَلَّ** ही की है और उस के महबूब
उस के इज़्न से अ़ता फ़रमाते हैं।

और हमारे सामने दुन्या व आखिरत में बे शुमार बलाएं
और दुश्मन हैं जिन से हमें प्यारे आका के
सिवा और कौन बचा सकता है ?

صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ !
صلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

जौहद की तारीफ़

हृज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन
मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّأْيِ “एह्यातल उलूम” में “ज़ोह्द”
से मुतअल्लिक इरशाद फ़रमाते हैं : अगर ज़ोह्द से मुराद “माल
के होने या न होने में बिल्कुल रग्बत न होना” हो तो ये ह कमाल
की इन्तिहा है और अगर इस से मुराद “माल के न होने में रग्बत
होना” हो तो ये ह भी कमाल है लेकिन पहले दर्जे से कम ।

(أحياء علوم الدين، كتاب الفقر والزهد، الشطر الأول من الكتاب في الفقر، ج ٤، ص ٢٣٤)

जोहङ्क व फक्र की फजीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़क्र का सब से बुलन्द
दर्जा “ज़ोहूद” है और “ज़ोहूद” अबरार (या’नी नेक लोगों)
का कमाल है और इस को इख्तियार करने वाले “मुक़र्रबीन”
में शुमार होते हैं, शहनशाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़ोहूद व फ़क्र के फ़ज़ाइल बयान करते हुए
इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने जन्त में झाँक कर देखा तो अकषर
जन्ती (वोह थे जो दुन्या में) फुक़रा थे और मैं ने जहन्म में
झाँक कर देखा तो अकषर जहन्मी औरतें थीं ।

(صحيح البخاري، كتاب الرقاق، باب فضل الفقر، ص ٥٨٧، حديث ٦٢٣٩)

एक दूसरी रिवायत में है : (जब मैं ने जन्त में अक्षर “फुक़रा” को देखा तो) मैं ने पूछा कि “अग़निया (या’नी मालदार)

कहां हैं ? बताया गया : (माल इकट्ठा करने की) तगो दो (या'नी कोशिश) ने इन्हें रोक रखा है । ” (اجياء علوم الرين، كتاب الفقير والرخص، ج ٢، ص ٢٣٨)

एक और रिवायत में है : जब मैं ने जहन्म में ज़ियादा तर औरतों को देखा तो पूछा : इन का क्या हाल है (या'नी येह क्यूं जहन्म में हैं) ? बताया गया : इन्हें दो सुख्र चीज़ों या'नी सोने और ज़ा'फ़रान ने मशगूल रखा (कि येह दोनों चीजें औरतों के भलाई से गाफ़िल होने और इस से रू-गरदानी करने का सबब हैं।)

(المراجع السابق)

ଆଲାହ ଗ୍ରେଜ୍‌ଲେ କେ ମହିବୁବ ବନ୍ଦେ

عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ
 هِجْرَتَهُ سَادِيًّا دُونًا مُوسَى كَلَمِي مُولَّا هَاهُ
 نَهُ بَارِغَاهُ إِلَاهِيَّا مِنْ أَبْرَجِ كِي : إِنْ مَرِي رَبِّكَ عَزَّ وَجَلَّ
 تَرَهُ مَهْبُوبَ بَانِدَهُ كَوْنَاهُ هُنَّ تَاْكِي تَرَهُ وَجَاهُ سَهَّلَكَ مِنْ
 كَرْنَهُ ؟ اَللَّاهُ رَبُّكُلَّ إِذْجَاتٍ نَهُ اِسْرَاشَادَ فَرَسَماَيَا :
 هَرَ فَكَرِيرَ (مَرِي مَهْبُوبَ بَانِدَهُ هُنَّ)
 (المرجع السابق، ص ٢٢٩)

રજુલાહ ﷺ કા પસન્દીદા નામ

عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
हजरते سच्चिदुना ईसा रूहुल्लाह

इशाद फ़रमाते हैं : बेशक मैं मिस्कीनी से महब्बत और आसाइशों
को ना पसन्द करता हूँ। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ का पसन्दीदा नाम ये हैं
कि आप को “या मिस्कीन” कह कर पुकारा जाए।

المرحوم السادة

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! جوہد و فکر کی اک
بہوت بडی فوجیلیت یہ ہے کہ ہمارے آکا نے
اسے خود بھی ایخیلیار فرمایا اور اپنے اہلے بیتے اتھار
کو رضوان اللہ تعالیٰ علیہم فرمایا اس سلسلے میں پ्यارے آکا نے
کے اپنی شہزادی، خاتونے جنّت ہجرا تے ساییدتُنَا^{صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم}
فاطمۃ المُتُّجَہْرَہ کو جوہد و فکر کی تا'لیم
دنے کے مुتابرہد واقعیٰتِ جیکر کیے گئے ہیں جैسا کہ

ہجڑ کی خاتونے جنّت کے جوہد کی تا'لیم

سہابیٰ رسویل ہجرا تے ساییدتُنَا سبیان رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ اک مرتبہ پ्यارے پ्यارے آکا، میठے میठے مُسْتَفَاضاً اپنی شہزادی ہجرا تے ساییدتُنَا فاطمۃ المُتُّجَہْرَہ کے پاس تشریف لائے تو آپ نے اپنی گردن میں پہنا ہوا سونے کا ہار پکڈ کر ارج کی : یہ ابھول ہسن (یا'نی ہجرا تے ساییدتُنَا اُلیٰ یُل مُرْتَजَا) نے مुझے توہفے میں دیا ہے । **امام مُتُّجَہْرَہ** نے اپنی شہزادی کی تربیت کرتے ہوئے ارشاد فرمایا : **اے فاطمہ !** کیا لوگوں کے اس ترہ کہنے سے تُمھے خوشی ہوگی کہ “فاطمہ بنت مُحَمَّد” کے ہاث میں آگ کا ہار ہے ؟

ये ह कह कर आप ﷺ बैठे बिगैर ही तशरीफ़ ले गए इस के बा'द उम्मुस्सादात हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها ने वोह हार दे कर एक गुलाम ख़रीदा फिर उसे आज़ाद कर दिया ।

जब नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत को इस बात की ख़बर पहुंची तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : ”الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي نَجَّى فَاطِمَةَ مِنَ النَّارِ“ या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने फ़ातिमा को आग से नजात अ़त़ा फ़रमाई । (المُسْتَدِرُكُ عَلَى الصَّحِيْحَيْنِ لِلْحَاكِمِ، كتاب معرفة الصحابة، زهد فاطمة رضي الله عنها، ج ۲، ص ۱۳۲، الحديث: ۳۷۷۸)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फिरत हो ।

امين بجا و اللئي الامين مَنْ أَنْهَى تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ وَسَلَّمَ

صَلَّوَا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ ने अपनी शहज़ादी ख़ातूने जनत हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها की कैसी तरबियत फ़रमाई ? अगर्चे इस्लामी बहनों को सोने के ज़ेवरात पहनना जाइज़ हैं लेकिन इमामुज़ज़ाहिदीन, सच्चिदुल महबूबीन ﷺ ने अपनी शहज़ादी رضي الله تعالى عنها को ज़ोहد की तालीम देते हुए

इस से मन्थुः फ़रमा दिया । याद रहे ! अवलाद की सहीहः दीनी तरबियत करना, उन्हें इल्मे दीन की ला ज़्वाल ने'मत से बहरा वर करना और अच्छे अख़्लाक़ सिखाना वालिदैन की ज़िम्मेदारी है । आ'ला हज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पूरिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

“مشكلة الإرشاد في حقوق الأولاد” مें वालिदैन पर अवलाद के हुक्मूक बयान करते हुए एक हक़्क येह भी बयान फ़रमाते हैं कि (वालिदैन अपनी अवलाद को) इल्मे दीन खुसूसन वुज़़्ू, गुस्ल, नमाज़, वरोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअ़त, ज़ोहू, इख़्लास, तवाज़ोअ, अमानत, सिद्क़, अद्दल, हया, سलामते सद्र व लिसान वगैरहा (दिलो ज़बान और दीगर आ'ज़ा की सलामती की) ख़ूबियों के फ़ज़ाइल (पढ़ाए नीज़), हिर्स व तम्मुز, हुब्बे दुन्या (दुन्या की महब्बत), हुब्बे जाह, रिया, उज्ज्ब, तकब्बुर, ख़ियानत, किज्ब, जुल्म, फ़ोहूश, ग़ीबत, ह़सद, कीना वगैरहा बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाए ।

और ख़ास बच्चियों के हुक्मूक बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : 9 बरस की उम्र से (वालिद बेटियों को) न अपने पास सुलाए न भाई वगैरा के साथ सोने दे, इस उम्र से ख़ास निगहदाश्त शुरूअ़ करे, शादी बारात में जहां नाच-गाना हो हरगिज़ न जाने दे अगर्चे ख़ास अपने भाई के यहां हो कि गाना सख़्त संगीन जादू है और इन नाजुक शीशों को थोड़ी ठेस बहुत है, बल्कि हंगामों में जाने की मुत्तलक बन्दिश करे (या'नी फ़ंक्शनों में जाने से बिल्कुल

रोक दे), घर को इन पर ज़िन्दां (कैद खाने की तरह) कर दे, बाला खानों (छतों) पर न रहने दे, जब कुप्रव मिले निकाह में देर न करे, ज़निहार.... ! ज़निहार.....! किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर खुसूसन बद मज़हब के निकाह में न दे ।

(مشعلة الارشاد في حقوق الارواح، ص ٢١، ٢٨، ملتقى)

صلوا على الحبيب !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने अवलाद के चन्द हुकूक मुलाहज़ा फ़रमाए इस से मा'लूम हुवा कि अवलाद को “ज़ोहद” की ता'लीम देना भी वालिदैन पर अवलाद के हुकूक में से है, अवलाद के हुकूक के बारे में मज़ीद मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ सच्चिदी आ'ला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “अवलाद के हुकूक” का मुतालआ फ़रमाइये, मा'लूमात का अज़ीम ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

صلوا على الحبيب !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

मुज़्य्यन घर में दाखिल होना
नबी के शायाने शान नहीं

سَهْلَ بْنِي رَسُولِ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُ سَهْلٌ
रिवायत करते हैं कि एक शख्स हज़रते सच्चिदुना अलियुल

(مشكوة المصايب، كتاب النكاح، باب الوليمة، ج ١، ص ٥٩١، الحديث: ٣٢٢١)

आस्मां ख्वान, जर्मी ख्वान, जमाना मेहमान

साहिबे खाना लकब किस का है तेरा तेरा

(عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّزِ) (हृदाइके बख्तिरश अज् इमामे अहले सुन्नत)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद
यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ^ع ज़िक्र कर्दा हृदीष शरीफ़ की शर्ह करते हुए
तहरीर फ़रमाते हैं : बा'ज़ उँ-लमा ने फ़रमाया कि येह पर्दा

نکशीन (या'नी नक्शो निगार वाला) था और इस पर जानदारों की तसावीर थीं, इस लिये हुजूरे अन्वर صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم वहां तशरीफ न लाए, इस से मा'लूम हुवा कि अगर दा'वत में कोई ममनूअ़ काम हो तो न जाए, मगर येह (कहना) ग़लत है (कि पर्दा नक्शीन था) अगर ना जाइज़ पर्दा होता तो सरकारे आ़ली صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم मन्ड़ फ़रमाते बल्क दस्ते अक्दस से फ़ाड़ देते, पर्दा सादा था, जाइज़ था मगर दुन्यावी तकल्लुफ़ और ज़ाहिरी टीप टोप अहले نुबुव्वत के लाइक न थी इस लिये मन्ड़ तो न फ़रमाया अ़मलन ना पसन्दीदगी का इज़हार फ़रमा दिया ताकि आयन्दा जनाबे ज़हरा (رضي الله تعالى عنها) अपना घर नेक आ'मल से ही आरास्ता रखें। ज़ीनते दुन्या नुक़साने आखिरत का ज़रीआ बन सकती है।

(مرأة المناجيج، كتاب النكاح، باب الوليمه، ج ٥، ص ٢٨)

ک़़़ان سدک़َر کر دیئے!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब आइये प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم का अपनी शहज़ादी हज़रते सच्चिदतुना رضي الله تعالى عنها को दुन्या से बे रग़बती और आखिरत की रग़बत का ज़ेहन देने का एक और वाक़िआ मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्वे एक बार मदीने के ताजदार, नबियों के सालार, महबूब किर्दगार صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم سफ़र से वापस तशरीफ लाए तो ख़ातूने जनत हज़रते सच्चिदतुना رضي الله تعالى عنها के हां तशरीफ ले गए देखा कि उन के दरवाज़े पर एक पर्दा है और

ہاثوں مें چांदी के کंगन پھن رखे हैं (येह देख कर) आप
 ابू رफ़ेअ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} वापस तशरीफ़ ले गए। हज़रते सच्चिदुना
 अबू رफ़ेअ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} आप ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} के पास आए तो
 आप रो रही थीं, आप ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} ने उन्हें नबिय्ये रहमत,
 शफ़ीए उम्मत ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} के वापस चले जाने की इच्छिलाअ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ}
 दी तो हज़रते सच्चिदुना अबू رफ़ेअ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ} ने अर्ज़ किया :
 पर्दे और कंगनों की वजह से आप ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} वापस
 तशरीफ़ ले गए, चुनान्चे हज़रते सच्चिदुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा
^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} ने पर्दा फ़ाड़ दिया और कंगन उतार कर हज़रते
 सच्चिदुना बिलाल ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ} के हाथ सच्चिदुल मुरसलीन,
 रहमतुल्लिल आलमीन ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} की ख़िदमत में भेज
 दिये और अर्ज़ किया : “मैं ने इन को सदका कर दिया, आप
 जहां मुनासिब समझें ख़र्च फ़रमा दें।”

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे आदमो
 बनी आदम, रसूले मोहूतशम ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} ने इशाद
 फ़रमाया : जाओ ! इसे फ़रोख़त कर के इस की कीमत अहले
 सुफ़का को दे दो। चुनान्चे दोनों कंगन अदाई दिरहम में फ़रोख़त
 हुए और अस्हाबे सुफ़का ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ} पर सदका कर दिये गए
 फिर आप ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} ख़اتूने जनत ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} (घर)
 तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : तेरा बाप तुझ पर कुरबान ! तूने
 अच्छा किया। (ثُوَّتُ الْقُلُوبُ، أَفْصَلَ الشَّافِي وَالشَّافِعِي، شِرْحُ مَقَامَاتِ أَبِي هُبَيْرَةَ - ٢٣٠)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

جہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا سرورے کا انہا، شاہنشاہ میڈیا ایڈٹریویٹ کی ناگواری سے کیس کدر ایجتیہاد کی کوشش فرماتی ہیں کہ مہرج اس وجہ سے کہ آپ کے اندر تشریف ن لانے کی وجہ یہ پردہ اور کنگن ہے، پردے کو فاڈ دیا اور کنگن سدکا کر دیے ।

اللّٰہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ کے سدکے ہم میں بھی رسوئے خودا، احمد محب محبوب کا ایسا سचھا ارشیک بنا اے کہ ہرام و نا جایز بولک خیلاؤں سے ایجتیہاد کرتے ہوئے نبی یہ رحمت، شفایہ اور عمت اس اعداد نسبی ہو جائے । آمین

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! جیکر کردہ ریوایت پردہ کا ہو کم آنے سے پہلے کی ہے اسی وجہ سے ہجرت سیمی دننا ابू رافعؑ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا خواہوں کا جنمات ہجرت سیمی دننا فاطمہ تجوہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آنے کا جیکر ہے । فیر جب **اللّٰہ** تبارک و تامیل ناجیل فرمادیا تو اس کے باد آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کیا کیفیتی تھی । آیہ ! مولانا حسین فرمادیا، چوناں اک مرتبہ پئکرے انوار، تمام نبیوں کے سردار، مدنیت کے تاجدار نے اپنی بیٹی ہجرت سیمی دننا فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے

इस्तिफ़سार फ़रमाया : ऐ बेटी ! औरत के लिये क्या चीज़ बेहतर है ? आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जवाबन अर्ज़ की : “न वोह किसी (अजनबी) मर्द को देखे और न कोई (अजनबी) मर्द उसे देखे ।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें सीने से लगा लिया और यह आयत तिलावत फ़रमाई :

ذُرْيَةٌ بِعُصْبَاهُ امْتُ بَعْضٍ

(۳۲:۳۲، عِزْمَن)

तर्जमए कन्जुल इमान : ये ह एक
नस्ल है एक दूसरे से ।

(ايضاً، الفصل ، الخامس والاربعون فيه ذكر التزويع وتركه... الخ، ج ٢، ص ١٨)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पारह 22 सूरतुल अहज़ाब,
आयत नम्बर 33, परवर दगारे आ़लम पर्दे का हुक्म देते
हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَ لَا تَبْرُجْنَ

تَبْرُجُ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى

(۳۳:۲۲، الاحزاب)

तर्जमए कन्जुल इमान : और
अपने घरों में ठहरी रहो और बे
पदा न रहो जैसे अगली
जाहिलियत की बे पर्दगी ।

ख़्लीफ़ए आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते
अ़ल्लामा مौलाना سच्चिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी
इस आयत के तहत फ़रमाते हैं : अगली जाहिलियत
से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औरतें
इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन (या’नी बनाव

سینگھار اور جیسم کی خوبی�اں مسلسل سینے کے عبار وغیرہ) کا
ایجاد کرتی ہیں کیونکہ مرد دے�وں، لیباں اپنے پہنچتی ہیں جن
سے جیسم کے آجڑا اچھی ترہ نہ ٹکے ।

(تفسیر خزائن العِرْفَان، پ ۲۲، الآحزاب، تحت الآیہ: ۳۳، ص ۷۸۰)

اپسوسا، ساد کروڈ اپسوسا ! ماؤ جودا دaur مें भी वोही
जमानए जाहिलियत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है, यक़ीनन
जैसे उस जमाने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है बल्कि अब
तो हालत येह है कि औरतें बाज़ारों, कम्पनी, बाग़ों, तफ़रीह गाहों
और सीनेमा घरों में धूमती फिरती हैं, स्कूलज़-कॉलेजिज़ में लड़के
लड़कियां एक साथ बैठ कर तालीम हासिल करते हैं बल्कि मर्द
व औरत वग़ैरा मिल कर टेनिस, होकी वग़ैरा खेल खेलते हैं ।

याद रहे ! औरतों का बे पर्दा बाहर آنا जाना, धूमना
फिरना, गैर مہرماں مर्दों सے میلنا جुलنا हराम हराम हराम और
جہنم مें ले जाने वाला کام है, رसूले کरीم، رکुरुर्हीम
کا فرمानے इब्रات نیشن है : औरत چुपाने के
لाइک है (لیہا ج़ा इस को पर्दے में रहنا چاہیے) جब کोई औरत
बाहर نیکलती है तो شैतान उस को झांक झांक कर देखता है ।

(سنن الترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جعل فی کراهيۃ الدخول علی المغيبات، ص ۳۰۷، الحدیث: ۱۱۷۳)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّوَا عَلَى الْحَبِيبِ !

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

تَوَبُوا إِلَى اللَّهِ !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّوَا عَلَى الْحَبِيبِ !

सीधा रास्ता मिल गया

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बद अ़कीदगी से बचने और गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । दा'वते इस्लामी का मदनी काम भी करती रहिये । **الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزٰوجَلٌ** इस मदनी माहोल की बरकत से लाखों इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस ज़िम्न में एक मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्वे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है : हमारा ख़ानदान अ़क़ाइद के ए'तिबार से मुख्लिफ़ ख़ानों में बटा हुवा था, मैं शदीद परेशान थी कि न जाने कौन से लोग सही ह रास्ते पर हैं ! मैं अपने रब्ब **عَزٰوجَلٌ** की बारगाह में दुआएं किया करती कि या **अल्लाह** **عَزٰوجَلٌ** मुझे सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक अ़ता फ़रमा । **الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزٰوجَلٌ** मुझे सीधा रास्ता मिल गया और इस की सूरत यूं बनी कि एक दिन चन्द इस्लामी बहनों ने मुझे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुई । वहां एक मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन ने फैज़ाने सुन्नत से देख कर बयान किया, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े खुदा से कांप उठी, रिक़्क़त अ़ंगेज़ दुआ, सलातो सलाम और इस्लामी

بہنوں کی اپناء ایسی تھی کہ ملکاٹیوں نے مسجد بہت سوچا اور
کیا۔ سُوْنَتُوْنَ بَرَىءَةً إِلَيْهِ عَزَّلَ جَلَّ
سے مسجد بہت سوچا اور اہل سوچ کی سداکت پر یکٹیں
کی دلائل کے ساتھ ساتھ مुझے نماز پنجگانہ اور رمذان نول
مُبَاارک کے روؤں کی پابندی بھی نسیب ہے، یون میں دا'vatے
اسلامی کے مدنی ماحول کی بركتوں کو سمتی سمتی تا دمے
تھریں تھسیل جمیدار کی ہیئت سے اسلامی بہنوں میں نکی
کی دا'vat آم کرنے کے لیے کوشش ہے۔

(اسلامی بہنوں کی نماز، ص 277)

جَلِيلٌ هُوَ جَفَاكَارٌ وَ سِيتَمٌ غَرٌ هُوَ مَيْنٌ
آسی وَ خَطَاكَارٌ بَهِيْدَ بَرٌ هُوَ مَيْنٌ
یہ سب ہے مگر پھر تیری رحمت سے سُونَيٌ هُوَ مُسَلِّمَانٌ مَغَرٌ هُوَ مَيْنٌ

صَلَوٰعَلَى عَلَى مُحَمَّدٍ ! صَلَوٰعَلَى الحُسِيبِ !

سلام کے 11 مددنی فوائد

﴿1﴾ مُسَلِّمَانٌ سے مُلَاقَات کرتے وکٹے اسے سلام کرنا
سوچتے ہیں۔ ﴿2﴾ بہارے شاریعت، ہیئت 16، سلفہ 102 پر
لیکھے ہوئے جو جیسے کا خوکا سا ہے: “سلام کرتے وکٹے دل میں
یہ نیت ہے کہ جس کو سلام کرنے لگا ہوں اس کا مال
اور جو جس کو آبڑ سب کوچھ میری ہیفاہ جات میں ہے اور میں ان
میں سے کسی چیز میں دارخواست اندازی کرننا ہرام جانتا ہوں۔”

﴿3﴾.... دن میں کتنی ہی بار مُلَاقَات ہے، اک کمرے سے
دوسرے کمرے میں بار بار آنا جانا ہے وہاں مسیح مُسَلِّمَانوں
کو سلام کرنے کا رہنمائی ہے۔ (سنن ابی داؤد، ص 81، حدیث: ۵۲۰۰)

﴿4﴾.... سلام مें پहल کرنा سुन्नत है । (الرجُّعُ السَّابِقُ، الحدیث: ۵۱۹۷)

﴿5﴾.... سلام में पहल करने वाला عَزَّ وَجَلَ اللَّهُ كा

مुक़र्रب है । ﴿6﴾.... سلام में पहल करने

वाला تکब्बुर से भी बरी है । जैसा कि मेरे मक्की मदनी

आक़ा، مीठे मीठे مُسْتَفَأٰ کा فُرمانाने वा

سफ़ा है : पहले سلام कहने वाला تकब्बुर से बरी है ।

(شعبُ الْإِيمَانِ، ج ۱، ص ۲۲۳، الحدیث: ۸۷۸۲) ﴿7﴾.... سلام (में पहल)

करने वाले पर ۹۰ رहमतें और جواب देने वाले पर ۱۰

رहमतें ناجِل होती हैं । (شعبُ الْإِيمَانِ، ج ۱، ص ۲۵۳، الحدیث: ۸۰۵۲)

﴿8﴾.... ﷺ कहने से ۱۰ نेकियां मिलती हैं । साथ

में भी कहेंगे तो ۲۰ نेकियां हो जाएंगी और

शामिल करेंगे तो ۳۰ نेकियां हो जाएंगी ।

(الْعَجْمُ الْكَبِيرُ، ج ۳، ص ۲۳۳، الحدیث: ۵۲۲۹) ﴿9﴾.... इसी तरह

जवाब में وَعَلَيْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ कह कर ۳۰ नेकियां

हासिल की जा सकती हैं । ﴿10﴾.... سلام का जवाब

फौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि سلام

करने वाला सुन ले । (बहारे शरीअत, हिस्सा 16, स. 103 ता 107)

﴿11﴾.... سلام और जवाबे सلام का दुरुस्त तलफ़ुज़

याद फ़रमा लीजिये :

السلامُ عَلَيْكُمْ (آس۔ سلام۔ عَلَيْكُمْ) وَعَلَيْکُمُ السَّلَامُ (وَعَلَيْكُمْ سَلَام)

बयान नम्बर 11

विसाले रसूल पर
ख़ातूने जन्नत
की
कैफियत

399

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ طَبِيسٰمُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

❖ विशाले २खूल पर खातूने जनत की कैफियत ❖

दुर्घट शरीफ की फ़जीलत

खातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लल आलमीन,
शफीउल मुजनबीन, अनीसुल ग्रीबीन, सिराजुस्सालिकीन,
महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिको अमीन
मुझ पर कषरत से दुर्घटे पाक पढ़ने वालों के
नाम लिखते हैं।

(كتاب الانذار، الكتاب السادس في آداب الصلاة عليه وعلى آله، ج ١، الجزء الاول، ص ٢٥٠، الحديث: ٢١٧٣)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ
صَلَّوْا عَلٰى الْحَبِيبِ !

नबी की गैबी खबर

उम्मुल मोअमिनीन हजरते सच्चिदतुना आइशा सिदीका

رضي الله تعالى عنها فرماتी हैं : हजरते सच्चिदा फ़तिमतुज्जहरा رضي الله تعالى عنها

तशरीफ लाई, उन का चलना रसूلुल्लाह की

चाल के मुशाबेह था । नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “मेरी बेटी को मरहबा ! फिर उन्हें दाएं या बाएं बिठाया, फिर उन के कान में कोई बात फ़रमाई तो वोह रोने लगीं । मैं ने पूछा : तुम क्यूँ रोई ? फिर थोड़ी देर के बा’द उन के कान में एक और बात कही, तो वोह हँसने लगीं । मैं ने कहा : आप में ग़म से ज़ियादा खुशी मैं ने आज से पहले नहीं देखी । फिर मैं ने हज़रते सच्चिदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से इस रोने और हँसने का सबब पूछा ? तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती । जब हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की वफ़ात हो गई तो (सच्चिदा अ़इशा के दोबारा दरयापृथ करने पर) हज़रते सच्चिदतुना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा : हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने पहली मरतबा मेरे कान में येह फ़रमाया था कि हज़रते جِب्रِيل عَلَيْهِ السَّلَامُ हर साल एक मरतबा कुरआने पाक का मुझ से दौर करते (या’नी दोनों एक दूसरे को कुरआने पाक सुनाते) थे और इस साल इन्होंने ने दो मरतबा दौर किया है, लगता है कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है, मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी । येह सुन कर मैं फ़र्ते ग़म से रो पड़ी, फिर फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम अहले जनत की औरतों की सरदार हो ? येह सुन कर मैं मुस्कुरा पड़ी ।”

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة في الإسلام، ص ٩٢٠، الحديث: ٣١٢٣٣١٢٣)

जिन की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें

उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

(هذا إكّل بخيّشة أَجْزِيَة إِيمَانَهُمْ وَبِالْعَيْتِ). (عليهم خمسة زب العيّت)

شہرِ سلام میں رجاء :

हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ وَسَلَّمَ की तसल्ली से गमज़दा रोते हुए हंसने लगते और अपने ग़मों को भूल जाते थे, आप के हमा वक्त मुस्कुराने की आदतों ख़स्लत पर लाखों सलाम नाज़िल हों।

صَلَّوَا عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ وَسَلَّمَ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हडीषे मुबारक से चन्द मदनी फूल चुनने को मिले। पहला मदनी फूल येह है कि हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ وَسَلَّمَ अपनी बेटी से किस क़दर महब्बत फ़रमाया करते थे कि इन की आमद पर फ़रमाया : “मेरी बेटी को मरहबा !” और फिर इन को अपने पास बिठाया। यक़ीनन बेटी **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त की अज़ीम ने’मत है। बा’ज़ नादान बेटी को अच्छा नहीं समझते, बेटों की पैदाइश पर तो खूब खुशियां मनाते हैं मगर बेटियों की पैदाइश पर खुश नहीं होते। याद रखिये ! इस्लाम ऐसे मज़मूम ख़यालात की इजाज़त नहीं देता। अहादीषे मुबारका में बेटी की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, चुनान्चे

बेटी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रमैने मुस्तफ़

(1).... जब किसी के हाँ लड़की पैदा होती है तो **अल्लाह** तआला उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं :

“ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो । फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फैरते हुए कहते हैं कि एक नातुवां व कमज़ोर जान एक नातुवां से पैदा हुई है, इस नातुवां जान की परवरिश करने वाला कियामत तक मदद किया जाएगा ।”

(مجمع الزوائد، كتاب البر والصلة، باب ماجد في الأولاد، ج ٨، ص ٢٨٥، الحديث: ١٣٣٨٣)

﴿2﴾.... जो बेटियों के ज़रीए (आज़माइश में) मुब्तला किया जाए और वोह इन के साथ हुम्से सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिये जहनम से रोक बन जाएंगी ।

(صحیح مسلم، كتاب البر والصلة والأدب، باب فضل الاحسان الى البناء، من ١٣١٣، الحديث: ٢٦٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हृदीषे मुबारक से जो दूसरा मदनी फूल हमें चुनने को मिलता है वोह है राज़ को पोशीदा रखना कि हज़रते सच्चिदा फ़तिमतुज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها نे फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती । आज हम में से बा'ज़ ऐसी नादान भी हैं जो दूसरों के राज़ों को ज़ाहिर करती और ऐ'बों को उछालती हैं । याद रहे ! मुसलमान के हुकूक में से एक हूक़ येह है कि वोह तमाम मुसलमानों के राज़ों को पोशीदा रखे । और राज़ को पोशीदा रखने के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने बड़ी ताकीद फ़रमाई है, चुनान्चे

राज़ छुपाने के मुतब्लिक 2 अहंदीषे मुबारक

﴿1﴾.... मोमिन जब अपने भाई का कोई राज़ देखता है और उस को छुपाता है तो **अल्लाह** तभी उसे जनत में दाखिल परमाणुगत है। (العجم الاوسط، باب الاف، من اسمه احمد، ج ١، ص ٢٠٢، الحدیث: ١٣٨٠)

﴿2﴾.... हुज्ञूर नविये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ ने हजरते अमीरे मुआविया बिन अबी सुफ्यान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से इरशाद परमाणु : “बेशक तुम अगर लोगों के राजों को तलाश करोगे तो तुम उन को ख़राब कर दोगे या उन को ख़राब करने के क़रीब कर दोगे।”

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النهي عن التجسس، الحدیث: ٢٨٨٨، ص ٢٢)

मेरे आका सरे मेहशर मेरा पर्दा रखना

राज़ ऐबों का मेरे फ़ाश हुवा जाता है

(vasa'il-e-bariyah az-amir ahlu sunnah 127)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हडीषे मुबारक से हमें यह मदनी फूल भी चुनने को मिला कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने रसूले मक्कूल, गुलशने आमिना के महकते फूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ को इल्मे गैब भी अ़ता परमाणु है। जभी तो जान लिया कि मेरे विसाल का वक़्त क़रीब आ गया है और येह भी बता दिया कि मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी। और बा’द में येह बात उसी तरह षाबित भी हुई। और इल्मे गैब का तो

اللّٰهُ أَكْبَرُ نے کوئی آنے پاک مें واجہہٗ ارشاد فرمایا دिया है। चुनान्वे पारह 30 सूरतुत्तवीर आयत नम्बर 24 में इशादे रब्बानी है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْعِيْبِ بِضَيْنِينِ
(پ ۳۰، التکویر: ۲۴)

تَرْجِمَةٌ كَنْجُولِ إِيمَانٍ : और ये हैं
नबी गैब बताने में बख़ील नहीं।

और ये हैं जब ही हो सकता है कि हुज़ूर को इल्मे गैब हो और आप लोगों को इस से मुत्तलअः फरमाते हों।

एक हृदीषे मुबारक भी मुलाहज़ा फरमा लीजिये, चुनान्वे ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत ने इशाद फरमाया : हम पर हमारी उम्मत पेश फरमाई गई अपनी अपनी सूरतों में मिट्टी में जिस तरह कि हज़रते आदम पर ईमान लाएगा और कौन कुफ्र करेगा ये ह ख़बर मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो हंस कर कहने लगे कि हुज़ूर फरमाते हैं कि उन लोगों की पैदाइश से पहले ही काफ़िर व मोमिन की ख़बर हो गई हम तो इन के साथ हैं और हम को नहीं पहचानते। ये ह ख़बर हुज़ूर को पहुंची तो आप عزَّ وَجَلَ مिम्बर पर खड़े हुए और खुदा की हम्दो षना की, फिर फरमाया : उन लोगों का क्या हाल है जो हमारे इल्म में तान करते हैं, अब से कियामत तक किसी चीज़ के बारे में जो भी तुम हम से पूछोगे हम तुम को ख़बर देंगे।

(تَفْسِيرُ البَقَوِيِّ، پ ۲، آل عمران، تحت الآية ۲۹، ج ۱، ص ۳۵۳)

شارہے میشکات، ہکیمیل عالمت مسٹر احمد دیار
 خان نریمی علیہ رحمۃ اللہ الغنی فرماتے ہیں : اس حدیث سے دو باتें
 ماں لوم ہریں اک یہ کی ہو جو صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے اسلام میں تھیں نے
 کرنا موناپھیکوں کا تریکھا ہے । دوسرا یہ کی کیا مات تک کے
 واکیب ایسا ہو جو صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے اسلام میں ہے । (جائز میں ۱۲)
 تم مکنے لامکا ہے، اور ہک کے راجدا ہے اینے ربا سے گہب دا ہے، کیا ہے جو تم سے نیا ہے
 یا نی سلام علیک یا رسول سلام علیک یا حبیب سلام علیک صلوات اللہ علیک

(س. 573) دامت برکاتہم العالیہ

صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ صلوا علی الحبیب !

مہبوبے رببے جوں جلال کا جاہیری ویساں

ہجڑتے جابر بن عبد اللہ اور عبد اللہ بن عبد اسماں فرماتے ہیں : اک دن رضوی اکارم،
 نبیی مکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ہجڑتے ساییدونا بیلال
 کو ہوکم دیا سب کو نماز کے لیے بولاؤ،
 چنانچہ معاذیں و انصار رضوی اکارم کی
 مسجد شریف میں جماعت ہو گئی । رضوی اکارم
 میڈر پر تشریف فرمایا ہے اور **اللہ** کی ہندو
 پنما کی، فیر اسے خوبیا ارشاد فرمایا کی (اسے سون کر)
 دل ڈر گئے اور آنکھوں سے سائلے اشک روان ہو گیا : فیر

شانے خواہوں کا جنگل

رسی اللہ عنہا

تبلیغی طبع پر حکم اعلیٰ کی فرمائیا

इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम ने मुझे कैसा नबी पाया ?”

سहाबए किराम ﷺ ने अर्ज़ की : **अल्लाह** आप को जज़ाए ख़ेर दे, आप ﷺ बेहतरीन नबी हैं, हम पर बाप की तरह लुट्फ़े करम फ़रमाने वाले, भाई की तरह नासेह और शफीक हैं, आप ﷺ ने **अल्लाह** के पैग़ामात पहुंचा दिये, हम तक उस की वहूय पहुंचा दी और अपने रब्ब के रास्ते की तरफ़ हिक्मत और अच्छी नसीहत के साथ दा’वत दी, **अल्लाह** हमारी तरफ़ से आप को इस से बेहतर व अफ़ज़ल जज़ा अ़त़ा फ़रमाए जो जज़ा वोह किसी नबी को उस की उम्मत की तरफ़ से देता है। हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** की ओर अपने उस हक़ की क़सम देता हूँ जो मेरा तुम पर है, मेरी तरफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से बदला ले ले। कोई भी खड़ा न हुवा। आप ﷺ ने दोबारा क़सम दी, फिर भी कोई खड़ा न हुवा। तीसरी बार इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** की ओर अपने उस हक़ की क़सम देता हूँ जो मेरा तुम पर है, मेरी तरफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से क़ियामत के दिन क़िसास (ق. ص. ص.) से पहले अपना क़िसास ले ले। سहाबए किराम رضي الله تعالى عنهم مैं से एक बुजुर्ग हज़रते सच्चियदुना अ़क्काश के

پرشکارش : جازیت مسے اول مادھीغاتل ایلیک्ट्रیک (ڈا'वतے ایسلامی)

شانے خواہوں کا جنمات

رسی اللہ عنہا

تبلیغی ملکہ پر خواہوں کا جنمات کی فہیم

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سامنے پھونچ کر ارجمند گujarāt ہوئے : میرے مां باپ آپ پر کوربان ! آپ بار بار کسماں ن دेतے تو ان میں سے کسی چیز پر انکھدام کی جو ارت ن ہوتی । اک گجھے میں، میں آپ کے ساتھ ہے । **اللّٰہُ** نے ہم میں فٹھ دی اور اپنے نبی کی مدد کی، ہم واپس لौट رہے ہے کہ میری انٹنی آپ کی انٹنی کے کریب ہو گی । میں نیچے ہتھا تاکی آپ کی پینڈلی موبارک کو چوم کر برکتوں ہاسیل کر لیں، آپ نے شاخہ ڈٹا کر میرے پہلو میں مار دی، میں نہیں جانتا کہ آپ نے جان بڑھ کر ماری یا آپ انٹنی کو مارنے کا ہردا فرمایا رہے ہے । **اللّٰہُ** نے ہر شاد فرمایا : میں تужے **اللّٰہُ** کی پناہ میں لاتا ہوں یہ بات سے کہ **اللّٰہُ** کا رسول تھے تھے کسدن مارے । اے بیلال (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) ہجرتے فاتح متوужہ ہرا کے گھر جاؤ اور پتلی لامبی شاخہ لے کر آओ । ہجرتے سیدھونا بیلال (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) اپنے سر پر ہاث رخے پرےشانی کے آلام میں کہتے جا رہے ہے کہ **اللّٰہُ** کے رسول اپنی جان کا کیسا دے ؟ ہجرتے سیدھونا فاتح متوужہ ہرا کے گھر پھونچ کر دروازا بجا یا اور ارجمند کی : اے رسول اللہ ! میں پتلی لامبی شاخہ دیجیے ।

شانے خواہوں کا جنم
دینی علم و فلسفہ کی کمپنی

آپ ! رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ نے فَرَمَأَ يَا : اے بیلال ! میرے والی دے مोہترم نے شاخہ کیا کرنی ہے ؟ ن تو آج ہج کا دن ہے اور نہیں کیسی گزجے کا ! ارج کی : اے سخیدا فاتح متوужہ رہا آپ ! رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ آپ اس معاشرے سے گرفتار ن رہیے جس میں آپ کے والید ہیں، آپ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ دین کو (تکمیل کے باہم) اعلیٰ وادی فرمائے والے اور یہ دنیا چوڈ کر جانے والے ہیں اور اپنی جان کا کیسا س دینا چاہتے ہیں । فرمایا : اے بیلال کیس کے دل نے یہ بات گوارا کر لی کی وہ ہو جو سے کیسا س لے । اے بیلال کو رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ تुم ہسن و ہوسن کے پاس لے جاؤ، وہ ان دونوں سے کیسا س لے لے । ہج رہے بیلال (شاخہ لے کر) مسجد میں (بارگاہ رسالت میں) ہاجیر ہوئے । ہو جو نبی یہے اکرم رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کو پکڑا دی । ہج رہے اب بُو بُکر و ڈمر رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ یہ مnj ر دکھ کر خडھے ہو گए اور فرمایا : اے اُککا شا ! ہم ترے سامنے خڈھے ہیں ہم سے کیسا س لے لو اور رسوول للاہ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سے ن لو । ہو جو نبی یہے کریم رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے ہم سے فرمایا : اے اب بُو بُکر و ڈمر (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ٹھرے، **اعلماں** تا ایسا تھا مکام مرتبا جانتا ہے । ہج رہے سخیدوں اُلیٰ یہے اب تا تھا (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) خڈھے ہوئے اور فرمایا । اے اُککا شا ! میں ابھی جیندا ہوں، میرا دل کیسے گوارا کرے گا کی میرے ہوتے ہوئے ہم رسوول للاہ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سے کیسا س لے ।

شانے خواہوں کا جنم
دینی علم و فلسفہ پر خواہوں کا جنم

دے�و ! یہ رہی میری پیٹ اور یہ رہا میرا پेट، مुझ سے کیساں
 لے اور مुझے 100 کوڈے مار لے مگر **اللٰہ** کے پ्यارے
 مہبوب سے بدلنا مत لے، نبیyye رہمات
 (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ارشاد فرمایا : اے اُلیٰ
 تुم بیٹ جاؤ، **اللٰہ** تुमھارا مکام اور تुمھاری
 نیت جانتا ہے । اب ہسن و ہوسنے خدے ہوئے
 اور فرمایا : اے اُککاشا (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)
 نہیں کہ ہم رسلوں کا ہے ؟ ہم سے
 کیساں لےنا اسے ہی ہے جسے رسلوں کا ہے
 کیساں لےنا । ہنوز نبیyye اکرم فرمایا : اے اُلیٰ
 تھے تुمھے تुمھارا یہ مکام ن بھالا । فیر آپ
اللٰہ نے ارشاد فرمایا : اے اُککاشا
 (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اگر تुم مارنا چاہتے ہو تو مار لے । اُرجن
 کی : یا رسلوں کا جب آپ نے مुझے مارا ثا
 تب میرے پेट پر کوچھ نا ثا، ہنوز نبیyye اکرم
 نے اپنے باتنے اکڈس سے کپڑا ہتا دیا، یہ دेख کر
 سہابہ کی رونگوئی کے رونگوئی کی آواز بولنے کا گرد
 اور کہنے لگے : کیا اُککاشا کو رسلوں کا
 سے بدلنا لے لے ہوئے دیکھنا گوارا کر لے گے ؟ جب ہنوز ساییدونا
 اُککاشا نے باتنے انوار کی پورنر سफیدی دیکھی

تو بے تابانا جिसमें अक़दस से लिपट गए और आ़लमे बेखुदी में बोसे लेने लगे और अُर्ज़ु गुज़ार हुए, या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप से किसास लेने की हिम्मत किस में है ? हुजूर ने فَرَمَّا يَا : तुम मुझ से किसास ले लो या مُझे मुआफ़ कर दो । अُर्ज़ु की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ मैं ने अपना हक़ मुआफ़ किया इस उम्मीद पर कि **अल्लाह** कियामत के दिन मुझे भी मुआफ़ फ़रमाए । आप ने इरशाद فَرَمَّا يَا : जो जन्त में मेरे पड़ोसी को देखना चाहता है वोह इस शैख़ की तरफ़ देख ले, येह سुनते ही सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ खड़े हुए और हज़रते सच्चिदुना अ़क्काशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दोनों आँखों के दरमियान बोसे देते हुए कहने लगे : (ऐ अ़क्काशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तुम्हें मुबारक हो, तुम बुलन्द दरजात और जन्त में नबिय्ये अकरम की रफ़ाक़त पा गए ।

इसी दिन से हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम अ़लील हो गए और 18 दिन तक अ़लील रहे (और मरज़ को बरकतें लेने की सआदत अ़ता फ़रमाते रहे) इस दौरान सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ इयादत के लिये हाजिर होते रहे, इतवार के दिन मरज़ ने शिद्दत इख़ित्यार की, फिर पीर के दिन मरज़ ने और शिद्दत इख़ित्यार की । **अल्लाह** तआला ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म इरशाद फ़रमाया : मेरे हबीब

मेरे सफ़ी की बारगाह में हाजिरी दो, इन के पास बड़ी प्यारी सूरत में जाना और इन की रुह क़ब्ज़ करने में नर्मी करना । हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने एक आ'राबी की सूरत में दरवाज़े मुक़द्दसा पर खड़े हो कर सलाम किया और अन्दर दाखिल होने की इजाज़त तलब की । हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا तुम उस शख्स को जवाब दो । हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरे आने का तुझे अन्न दे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तबीअ़त ठीक नहीं । हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर इजाज़त तलब की तो येही जवाब मिला । तीसरी मरतबा दरवाज़ा बजा कर फ़रमाया मेरा अन्दर आना ज़रूरी है । हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ सुनी तो पूछा : दरवाजे पर कौन है ? हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : एक शख्स बार बार अन्दर आने की इजाज़त तलब कर रहा है, तीसरी मरतबा जब मैं ने उस की आवाज़ सुनी तो मेरे रोंगटे (या'नी जिस्म के बाल) खड़े हो गए और आ'ज़ा कांपने लग गए । इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमतुज़्ज़हरा ! رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا तुम जानती हो, दरवाजे पर कौन है ? येह लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाला, जमाअ़तों में जुदाई डालने वाला, बीवियों को बेवा करने वाला, अवलाद को यतीम करने वाला, घरों को वीरान करने वाला, क़ब्रों को आबाद करने वाला है, येह मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام है । ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अन्दर आ जाओ, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए । हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे अक्दस में

شانے خواہوں کا جنگل

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

تبلیغی طبع پر رکھو جنگل میں کوئی سوتا نہیں

ہاجیر ہوئے تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا : اے ملکوں میتوں تुم میری جیوارت کے لیے ہاجیر ہوئے ہو یا رُحْ کبجھ کرنے کے لیے ؟ اُرج کی : یا رسُلِ اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم آپ کی جیوارت کے لیے ہاجیر ہو گئے ہوں اور رُحے مُبارک کو لے جانے کا بھی حکم ہو گئے ہے । مुझے **اعلیٰ اللہ علیہ السلام** نے حکم دیا ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ایجاد کے بیگنے بارگاہ میں ہاجیری نہ دُون ہی بیگنے ایجاد کر رہے مُبارک کبجھ کر، اگر آپ ایجاد اُڑھا فرمائے تو ٹیک ورنہ میں اپنے رُب کی تارف لے جاتے ہوں । ارشاد فرمایا : میرے مہبوب جبریل علیہ السلام کو کہاں چوڈ آئے । اُرج کی : وہ آسمانے دُنیا پر ہے اور فریشہ تون سے آپ کی تاریخیت کر رہے ہے । ناگاہ (فرانس) ایجاد کی بیگنے تشریف لے آئے اور سرے انوار کے پاس بیٹھ گئے । ہُجُر نبی یعیش اکرام نے ارشاد فرمایا : اے جبریل علیہ السلام ! یہ دُنیا سے کوچ کا وکٹ ہے جو کوچ میرے لیے ایجاد کے پاس ہے مुझے اس کی بیشارة دو । اُرج کی : اے **اعلیٰ اللہ علیہ السلام** کے پیارے حبیب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم آپ خوش ہو جائے، میں آسمانوں کے دروازے خلوتے چوڈ آیا ہوں، فریشہ سلف دار سلف، دست بستا، سلامتی کی دُعا ائے کرتے، خوشبو میں بسے، آپ کی رُحے مُبارک کے استکبار کی خاتمہ مُنتजیر ہوں । ارشاد فرمایا : سب تاریخ میرے رُب کے لیے ہے، اے جبریل علیہ السلام مुझے اور خوش خبری دو ।

شانے خواہوں کا جنگل

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

ترجمہ بخوبی پر خواہوں کا جنگل

اُرجُ کی : مैں آپ کو خुश خبُری دेतا ہوں کہ جناتोں کے درواजے خُلے ہیں اُس کی نہ رُنے جاری ہیں، اُس کے درخت فلوں سے لادے ہیں اور آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کی رُحْمَتِ مُبَارَکَتِ اِسْتِکْبَارِ الْجَنَّاتِ کے لیے ہُر رُونِ آرائشیا ہیں । اِسْرَافِ فَرَمَایَا : تَمَامُ تَارِیخِ میرے رَبِّ کے لیے ہیں । اِسے جِبْرِیل عَلَیْہِ السَّلَامُ مُعْذِّبَہ اور خُوشی کی خبر سُنا اُمُّوں । اُرجُ کی : آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ سب سے پہلے شفَاعَتِ فَرَمَانے والے ہیں اور کِیْمَاتِ کِیْمَاتِ کے دِن سب سے پہلے آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ اُمُّوں کی شفَاعَتِ کَبُولِ کی جائیں । سرکار نے صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ اِسْرَافِ فَرَمَایَا : تَمَامُ تَارِیخِ میرے رَبِّ کے لیے ہیں ।

ہُجْرَتِ سَدِیْدُونا جِبْرِیل عَلَیْہِ السَّلَامُ مَجْدِ اُرجُ گُوجَار
ہُوئے کی **اَللّٰهُ** تَعَالَیٰ فَرَمَاتا ہے : اے مُحَمَّد ! مैں نے تَمَامُ اَمْبِيَاءِ کِيرَامَ اور اَمْمَاتِ پَرِ جَنَّاتَ حَرَامَ کَرَ دَیٰ ہے یہاں تک کہ آپ اور آپ کی اَمْمَاتِ اِس مَیں دَاخِلٰ ہو جائے । (یہ سُن کر) فَرَمَایَا : اب میرا دِل خُوش ہو گیا ہے لیہا جا اے مَلَکُوْلِ مَوْتِ ! جِس کا تُمھُنے ہُکْمٰ ہُو گیا ہو وہ کرو । ہُجْرَتِ سَدِیْدُونا اَلْلَّٰیْلُ مُرْتَجَا نے رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُ اُرجُ کی : یا رَسُوْلُ اللّٰہُ وَسَلَّمَ وِسَالَتِ جَاهِرِیَ کے بَارِدِ آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کو گُوسِل کَوْنِ دے، کِنْ کَپڈوں میں کَفْنِ دے، آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ پَر نِمَاجُ کَوْنِ پَدِھے اور کَبُرِ میں کَوْنِ دَاخِلٰ کرے ? فَرَمَایَا : اے اَلْلَّٰی آپ رَضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُ پَانِی ڈالوں اور جِبْرِیل عَلَیْہِ السَّلَامُ تُمْہارے سَاتِ ہوں گے । جَب تُم میرے گُوسِل سے

پَشْكَشٌ : گُوجَارِیَہ اُمَّتِ مُحَمَّدِیَہ اِلْلَّٰیْلُ اِلْلَّٰیْلُ (ڈاً وَتَرِ اِسْلَامِی)

415

فَارِغٌ हो जाओ तो तीन नए कपड़ों में कफ़्न देना और जिब्रील
 جनती खुशबू लाएंगे । जब तुम मुझे चारपाई पर लैटा दो
 तो मुझे मस्जिद में रख कर चले जाना क्यूंकि सब से पहले मेरा
 रब्ब फौक़ल अर्श से (जैसे उस की शान के लाइक है) मुझ पर दुरुद
 भेजेगा फिर जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फिर मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर इसराफ़ील
 फिर दीगर मलाइका عَلَيْهِمُ السَّلَام गुरौह दर गुरौह, इस के
 बा'द तुम सफ़ दर सफ़ खड़े होना और मुझ से आगे कोई भी न
 बढ़े । हज़रते सच्चिदा फ़اتिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की :
 बाबा जान ! आज जुदाई का दिन है तो मेरी आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
 से मुलाक़ात कब होगी ? इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! तुम
 मुझे क्रियामत के रोज़ हौज़ के पास मिलना जहां मैं अपने उम्मतियों
 में से हौज़ पर आने वालों को पानी पिला रहा होऊंगा । अर्ज़ की :
 या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ अगर मैं वहां आप
 से मुलाक़ात न कर सकूं तो ? रसूلल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
 ने फ़रमाया : तुम मीज़ान के पास मुझे मिलना
 मैं अपने उम्मतियों की शफ़ाअत कर रहा होऊंगा । अर्ज़ की :
 अगर वहां न पाऊं तो कहां मिलूं ? इरशाद फ़रमाया : तुम पुल
 सिरात् के पास मुझे मिल लेना मैं अपने रब्ब के हुज़ूर येह
 सदा बुलन्द कर रहा होऊंगा “ رَبِّنِي سَلَّمَ أُمِتُّ مِنَ النَّارِ ” या’नी ऐ मेरे
 रब्ब मेरी उम्मत को आग से سलामती के साथ गुज़ार दे । ”

इस के बा'द मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने रुह क़ब्ज़ करनी
 शुरूअ़ की, जब रुह नाफ़ तक पहुंची तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम

نے فرمایا : ہاۓ ! کہسی سخھی کا وکٹ ہے ।

ہجڑتے ساخیدا فاتیم تужہ رضا^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} نے بے تابانا پوکارا : ہاۓ ! میرے بابا جان کی تکلیف ! جب رُحْمَةٰ مُبَارَكَ مُوكَدَسَ باتن سے جو دا ہریٰ تو آپ کی وسیعیت کے موتا بیک اُمل کیا گیا اور ہجڑتے اب بکر سیدھیک، اُلیٰ یوں مورتاجا اور اُبدول لالاہ بین اُبساں نے کبڑے انوار میں ٹتارا اور تادفین کر دی، جب سہا باد کیرام تادفین سے فاریغ ہو کر پلاتے تو ہجڑتے ساخیدا فاتیم تужہ رضا^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} نے ہجڑتے ساخیدونا اُلیٰ یوں مورتاجا سے کہا : اے اب بالہ ہسن کو دفن کر دیا ? فرمایا : ہاں । ہجڑتے ساخیدا فاتیم تужہ رضا^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} نے فرمایا : توم لوگوں نے رسول لالاہ^{صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ} پر میٹیڈی ڈالو ؟ کیا تومہارے سینوں میں ہو جو نبی یہ کریم^{صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ} کے لیے رہم نہ ہے ؟ کیا وہ بلالہ کی باتیں سیخانے والے نہ ہے ؟

ہجڑتے ساخیدونا اُلیٰ یوں مورتاجا نے فرمایا : اے فاتیم تужہ رضا^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} کیون نہیں، لے کین اُلبلاہ کا ہو کم تالا نہیں جا سکتا । ہجڑتے ساخیدونا فاتیم تужہ رضا^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} روتے ہوئے فرمائے لگئے : ہاۓ بابا جان ! اب جبریل کبھی نہیں آئے گے ।

(المُعجمُ الْكَبِيرُ، بابُ الْحَلَ، بقيةُ أخبارِ حسن بن علی رضي الله عنه ج، ص ۱۹۱، الحديث: ۲۲۱۰، ملخصاً وملقاً)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! وہ کہا ریکھت
 انگوچ منجرا ہوگا جب ساییدے دو اہل مل
 دنیا سے تشریف لے گا ہونگے ! سہابہ کرام پر
 کوہے گم ٹوٹ پડا ہوگا اور ہجرت ساییدا فاطمہ تجوہ
 کی کلبی کافیت کیا ہوگی ? یکین ن مسٹا فا
 کی جودا ای سے آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا دل رنجو
 گم سے گاہل ہو گیا ہوگا !!!

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

پ्यारी پ्यारی اسلامی بہنو ! آپ نے مولانا حجاج فرمایا
 کی سرکارے دو اہل مل حکم کوکل ایجاد کے بارے میں کیس
 کدر مہتاتا تھے । گناہوں سے پاک ہونے کے با وعود فرمایا کہ
 “اے مسلمانوں کے گوراء ! میں تumھے **اللہ** کی اور
 اپنے اس ہک کی کسماں دےتا ہوں جو میرا توہ پر ہے، میری
 ترکیب سے کسی کو کوئی تکلیف پہنچی ہو تو وہ خड़ا
 ہے اور معدن سے بدلنا لے لے” اس فرمائے اہلیشان میں
 ہمارے لیے درس و نسیحت کے کیتنے مدنی فلوں ہیں । ہم گئے کہے
 کہ ہماری ہلالت کیا ہے ؟ اور ہم لوگوں کے کیتنے ہکوک
 پامال کرتے ہیں ؟ ہمارے اسلامی کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین کی
 آداتے معاشر کا ہی کہ وہ ہکوکل ایجاد سے بہت ڈرتے ہے

ख़واہ مَا' مूلیٰ سی چیजٗ مषل ن کیسی کا خیلال (دانت کر دنے کا تینکا) یا سُرْ اَنْدَلِیْلَهُ هُوَ تَوَسِّعٌ مِنْ حَدَّتِ الْمُؤْمِنِیْنَ کا اپنے آ' مال کا مُھا سبا فَرما تے تو خُو فے خُودا کے سبب بے کُرار हो जाते कि हमारे पास तो कोई ऐसी नेकी नहीं जिसे मुख़ा لِفَ کो उस के हक्क के بدلے ک़ियामत के दिन दे कर राजी किया जाए । बسا अवक़ात किसी एक ही बे इन्साफ़ी के इवज़ ج़ा لِم की तमाम नेकियां ले कर भी मज़लूم खुश न होगा ।

आम तौर पर लोग بندों के हुकूक की अहमियत नहीं سمج्हते हालांकि बندों के हुकूक का मुआमला बहुत ही अहम, नाजुक और इस में कोताही सख्त तशबीशनाक है । बल्कि एक हैषियत से देखा जाए तो हुकूكُل्लाह (या'नी **اللَّهُ** के हुकूك) से ज़ि�ादा हुकूكُل इबाद (बन्दों के हुकूك) सख्त हैं कि **اللَّهُ** تُو سब से बढ़ कर रहम फَرماने वाला है अगर वोह अपने फ़ज़्लो करम से चाहेगा तो अपने बन्दों पर रहम फَرما कर अपने हुकूك मुआफ़ फَرما देगा मगर बन्दों के हुकूك को उस वक्त तक मुआफ़ न फَرماएगा जब तक बन्दे अपने हुकूك को मुआफ़ न कर दें । लिहाज़ा बन्दों के हुकूك को अदा करना या मुआफ़ करा लेना बेहद ज़रूरी है वरना क़ियामत में बड़ी बड़ी मुश्किलात का सामना हो सकता है ।

ਛੁਕ੍ਲਕੁਲ ਝੁਬਾਦ ਕੀ ਮੁਅਾਫ਼ੀ ਕਾਂ ਤਰੀਕਾ

मेरे आँकड़ा, आ'ला हज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल
 मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद
 रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن हुक्कुल इबाद की मुआफ़ी का तरीक़ा
 बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : हुक्कुल इबाद मुआफ़
 होने की दो सूरतें हैं :

- (1).... जो कृबिले अदा है अदा करना वरना उन से मुआफ़ी चाहना ।
(2).... साहिंबे हड़क बिला मुआवज़ा लिये मुआफ़ कर दे ।

और बा'ज़ तुरुके जामेआ जिन से हुकूकुल्लाह व हुकूकुल
 इबाद बि इज़निल्लाहि तआला सब मुआफ़ हो जाते हैं मषलन
 (जिस से उस का कोई हक़ मुआफ़ कराना है उस से इस तरह कहे :)
 “छोटे से छोटा बड़े से बड़ा जो गुनाह एक मर्द दूसरे का कर
 सकता है जान माल इज़ज़त आबरू हर शै के मुतअल्लिक
 इस में से जो तेरा मैं ने गुनाह किया हो सब मझे मुआफ़ कर दे ।”

(फतावा रजुविय्या (मुखर्जा), जि. 24 स. 373-374, मुलतक़तुन)

मुफ्तिलस कौन?

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ نَهَا
هَدِيَّةً شَرِيفَةً مِنْ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
سَهَابَةَ كِرَامٍ عَلَيْهِمُ الرَّحْمَنُ سَهَابَةَ كِرَامٍ عَلَيْهِمُ الرَّحْمَنُ
مُفْلِسَ كَوْنَهُ ؟ ” سَهَابَةَ كِرَامٍ عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ نَهَا
أَرْجُبَ كَوْنِي : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكْثَرُ
جِئْسَ كَيْمَانِ دِيرَهِمَ نَهَا
وَمَتَاهِي نَهَا وَهُوَ مُفْلِسٌ نَهَا

فَرْمَأَهُ : मेरी उम्मत में से मुफ़िलस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज्, रोज़ा, ज़कात ले कर आए और उस ने किसी को गाली दी हो, किसी पर तोहमत लगाई हो किसी का माल खाया हो, किसी का ख़ून बहाया हो, किसी को मारा हो (तो मुद्दई आ जाएं और अُर्जू करें कि परवर दगार ! इस ने मुझे गाली दी, इस ने मुझे मारा, इस ने मेरा माल खाया, इस ने मेरा ख़ून किया) तो उस की नेकियां इन मुद्द़ियों को दे दी जाएंगी अगर लोगों के हुकूक जो उस पर हैं इन के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो इन के गुनाह ले कर उस पर डाल कर उसे जहन्म में डाला जाए ।

(صحيح مسلم،كتاب البر والصلة والاداب،باب تحريم الظلم،ص ١٠٠٠،Hadith ٢٥٨١)

या'नी हकीकत में मुफ़िलस वोह है कि क़ियामत के रोज़ बा वुजूद नमाज्, रोज़ा, हज, ज़कात होने के वोह ख़ाली का ख़ाली रह जाए ।

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
فَرْمَأَتْهُ : **अल्लाह** क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा कि कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जनती जनत में दाखिल न हो और न ही वोह शख़स जिस पर कोई जुल्म हुवा हो हत्ता कि मैं इस (या'नी मज़लूम) के लिये उस (या'नी ज़ालिम) से क़िसास ले लूँ । (تَبَرَّعَ لِخَمْرٍ سُـنْ، وَمِنْ أَخْلَاقِكُمْ كَثِيرٌ لَا يُخَوِّفُ مِنَ اللَّهِ۔۔۔ اخْ، ص ٢٧)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ज़ाइले दुआ” सफ़हा 155 पर रईसुल मुतक़ल्लमीन मौलाना नकी

अ़्ली खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان نक़्ल फ़रमाते हैं : सुफ़्यान षौरी
كَहते हैं : बनी इस्राईल सात बरस क़हत्त में
मुब्लिमा रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे, हमेशा
पहाड़ों में निकल जाते और आजिज़ी व इन्किसारी के साथ दुआ
मांगते और रोते मगर रहमते इलाही उन के हाल पर असलन
तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के پैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلَاوَةُ وَالسَّلَام
पर वहय हुई अगर तुम मेरी तरफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे
घुटने घिस जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और
तुम्हारी ज़बानें दुआ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में
से किसी दुआ मांगने वाले की दुआ क़बूल न करूँ और किसी
रोने वाले पर रह्म न फ़रमाऊँ, जब तक मज़लूमों को उन के हक़
वापस न कर दें। पस बनी इस्राईल ने मज़लूमों को उन के हुक्म
वापस किये, इसी दिन मीह बरसा ।

(احياء علوم الدين، كتاب الانكار والدعوات، الباب الثاني في آداب الدعاء وفضله... الخ ج ١، ص ٢٠٤)

ਹੁਕੂਮਤ ਦੁਬਾਦ ਕੇ ਹੁਵਾਲੇ ਦੇ “ਫਿਕ੍ਰੇ ਮਦੀਨਾ”

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कभी इस त़रह अपना मुहासबा कीजिये कि मेरी ज़ात से कितने ही लोगों के शरई हुक्मूक वाबस्ता हैं ? ... मधलन मां, बाप, बच्चों, बच्चों के अब्दू, मन्सूब, क़राबत दारों, पड़ोसियों, आम मुसलमानों, मुर्शिद, उस्ताज़, शागिर्द और मा तह्त लोगों के हुक्मूक लेकिन अफ़्सोस ! मैं इन के हुक्मूक कमा हक़क़ुह अदा करने में नाकाम रही, मैं सआदत मन्द

بےٹی، شفیقہ کی ماں، میषالی بیوی، بے جرر پڑھسنا، سچھی موریدنی، کامیاب افسوسی، میषالی تالیبا اور بہترین جیمپے دار بننے میں کامیاب نہ ہو سکی ।

�ن کے ہوکھ کپڑے کرننا تو اک ترکھ رہا، میں نے تو ان میں سے کیسی کو گالی بھی دی، کیسی پر تو ہمtat لگائی، کیسی کی گیبত کی، کیسی کا مال ناہکھ خا�ا، کیسی کا خون بھاایا، کیسی کو بیلہ ایجادتے شارڈ تکلیف دی، کیسی کو مارا۔ پیٹا، کیسی کا کرجھ دبا لیا، کیسی کی چیج اڑایتھا لے کر واپس ن کی، کیسی کا نام بیگاندہ، کیسی کی چیج بیلہ ایجادت، با وعود ہے نا گوار گھر رنے کے ایسٹ مال کی، کیسی ما تھت کی ہکھ تلپھی کی اور با وعود کو درت ہس کی پرے شانی کا کوئی ہل ن نیکالا وغیرا وغیرا

آہ سد آہ ! میں نے جن لوگوں کے ہوکھ تلپھ کیے یا..... ہن پر جولم کیا، اگر کیا مات کے دین ہن سب نے مere خیلیاف بارگاہے ایلاہی میں دا'وا کر ڈالا تو مुझے ہن سے چھٹکارا ہاسیل کرنے کے لیے ہنھنے اپنی نے کیا دینا پडھے گی اور جب نے کیا ختم ہو جائے گی تو ہن کے گوناہ میری گردن پر ڈال دیے جائے گے । ہا اے افسوس ! مere پاس تو پہلے ہی نے کیوں کا فوکدانا (یا' نی کرمی) ہے ایتھے سارے لوگوں کے ہوکھ کے بدلے میں دینے کے لیے نے کیا کھان سے لاؤ گی اور ہن سب کے گوناہوں کا بوجھ میں کیس ترہ برداشت کر پاؤ گی،

आह ! मेरा क्या बनेगा ? नहीं, नहीं, मैं जल्द अज़्ज जल्द अपने बचने की कोई सूरत निकालूँगी, जिस के लिये मैं उन सब से अपने हुकूक मुआफ़ कर देने की दरख़्वास्त करूँगी, उन पर किये गए जुल्म का इज़ाला करूँगी, किसी न किसी तरह उन सब को राज़ी कर लूँगी, ताकि मैंदाने मेहशर के कर्बनाक (या नी बे क़रारी के) माहोल में मुझे उन के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े ।

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

ज़रा सा कवथ़ज़ फटने पर मा'जिरत

इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसी हस्तियां मौजूद हैं कि जो हुकूकुल इबाद का इस क़दर ख़्याल रखती हैं कि इन के वाकिअ़ात पढ़ या सुन कर दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा हो जाती है, चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मकतबतुल मदीना की मत्बूआ 101 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “तआरूफ़े अमीरे अहले سुन्नत” सफ़हा 70 पर है कि दौरए हृदीष (जामिअ़तुल मदीना बाबुल मदीना कराची) के एक त़ालिबे इल्म की फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की एक जिल्द चन्द दिन अमीरे अहले سुन्नत دَامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ के ज़ेरे मुतालआ रही । आप ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की जिल्द मअ़ रुक़आ जब वापस फ़रमाई तो त़ालिबे इल्म रुक़आ पढ़ कर शशदर रह गए और ज़ब्बाते तअष्वर से उन की पलकें भीग गईं । (मज़मून कुछ यूं था)

مेरے میठے میठے مदنی بے^{زید مَجْدُه}े کی خِدِمَت مें شुक्रिया

بَرَأَ سَلَامٌ، آپ کے فُکْتَاوا رَجُوْلِيَّا شَرِيفٍ سے مतْلُوبًا इबारात के इलावा भी इस्तिफ़ादा किया, ख़ास ख़ास कलिमात व फ़िक़रात को ख़त् कशीदा करने की आदत है मगर مजाज़ (या'नी बा इख़्लायार) न होने के बाइष मुजतनिब (या'नी रुका) रहा मगर बे एहतियाती के सबब एक सफ़हे के ऊपर की जानिब मा'मूली सा काग़ज़ फट गया, बसद नदामत, मा'जिरत-ख़्वा हूं, उम्मीद है मुआफ़ी की खैरात से महरूम नहीं फ़रमाएंगे। काग़ज़ इतना कम शक़ हुवा है कि ग़ालिबन ढूंडने पर भी न मिल सके। इलावा अर्ज़ी भी जो हुकूक तलफ़ हुए हों मुआफ़ फ़रमा दीजिये। दैन हो तो वुसूل कर लीजिये (या'नी मेरी तरफ़ आप की कोई रक़म वगैरा बनती हो तो ले लीजिये)। دُعَاءٌ مَّعَ الْكَرَامَ

پ्यारी پ्यारी इस्लामी بहनो ! ساہِبِے جूदो نवाल, شاهِ
خُوش بِخِسَال, مَهْبُوبَے رَبِّے جُولَ جَلَالَ^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} का
विसाल तो क्या हुवा गोया ख़ातूने जन्नत^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} पर कोहे
ग़म व अलम टूट पड़ा, चुनान्वे रिवायत में आता है कि

فِرَاكِے ۲۸۷۳ پर بے چैनी व ۴۷۱ تِرِشَاب

سَرِکَارِے مَدِينَة, رَاهِتِے كَلْبُو سَيِّنَة^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ} के
विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते
सय्यिदतुना फ़ातِمَتُوْज़्ज़हरा^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} पर ग़मे मुस्त़फ़ा का
इस कदर ग़्लबा हुवा कि आप^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا} के लबों की मुस्कुराहट
ही ख़त्म हो गई अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक बार ही
मुस्कुराती देखी गई।

(جذب القلوب (مترجم)، ص ۲۳۱)

आप के हिज्ब का ग़म काश रुलाए मुझ को
खून रोता रहूँ सरकार ! रसूले अरबी

(वसाइले बख्खिश अजु अमीरे अहले सुनत دامت بر کاتبهم العالیه स. 325)

रसूल ﷺ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ هُجْرَةٌ سَيِّدِ الْمُهَاجِرَاتِ مَكْبُولٌ كَمَا
के गम व जुदाई की मुसीबत के जमाने में लोगों की सोह़बत से परेशान हो कर तन्हाई इख़ित्यार कर के बैतूल हज़ून में कियाम पज़ीर हो गई थीं।

(مَدَارِجُ النُّبُوَّةِ) (مُتَرْجِمٌ)، ج ٢، بَابُ اولِ درْذَكْرِ اولاً دَكْرَامٍ، ص ٤٢٥)

होगा उसी क़दर अन्वारे इलाही व असरारे इलाही का इन्किशाफ़ होगा । आदमी जब लोगों से इख़िलात़ रखता है तो ला मुह़ाला हज़ारों तरह के मुआमलात दर पेश होते हैं । किसी की मह़ब्बत, किसी से अ़दावत, किसी से लड़ाई, कभी किसी से खुश, कभी किसी से नाराज़, कभी ग़म, कभी फ़िक्रे नानो खुर्श, लिबास व सुकना वगैरा वगैरा । खुसूसन मुतअ़्लिक़ीन से राबित़ा और इन रवाबित़ के अषरात दिल पर पड़ते हैं । जिस से दिल की तवज्जोह बटती है फिर ज़ज्बात की तक्मील की ख़्वाहिश और इस ख़्वाहिश के लिये जिद्दो जहद । इस में मा'रका आराइयां, हैजाने नफ़्स का बाइष हो सकते हैं और फिर इस से जो मफ़्सिद पैदा हो सकते हैं वोह सब को मा'लूम है ।

ख़ल्वत में जा कर आदमी खुद व खुद कितने गुनाहों से महफूज़ हो जाता है इसे हर शख्स जानता है और गुनाह **अُल्लाह** ﷺ के साथ तअल्लुक़ में कितने हारिज हैं येह किसी से मख़फ़ी (या'नी पोशीदा) नहीं इस लिये ख़ल्वत से बढ़ कर गुनाहों से रोकने वाली कोई चीज़ नहीं ।

(نُزُهَ الْقَارِي شرِح صَحِيحُ الْبَخَارِي، بَاب كِيفَ كَانَ بَدْءُ الْوَحْيِ، ج ١، ص ٢٣٢)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

• विसाले रसूल पर खातूने जन्नत का गम व अलम

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ هَجْرَتَ سَفِيْدُونَا اَنَسَ بْنَ مَالِكٍ كَمَا
का विसाल हुवा
रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ حَفَظَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
(शिद्दते गृम के
सबब) फ़रमाने लार्गीं । हाए बाबा जान ! आप
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
ने अपने रब्ब के बुलावे को क़बूल कर लिया, हाए बाबा
जान ! जनतुल फ़िरदौस आप का मकाम हो गया, हाए बाबा
जान ! हम जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَامَ को ताज़ियत देते हैं ।

(صَحِّيْحُ ابْنِ حِبَّانَ، كِتَابُ التَّارِيْخِ، ذِكْرُ الْخَبَرِ المَدْحُضِ... الْخَ ص ٢٥١، الْحَدِيْثُ: ٦٦٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

नौहा और बे सब्री में फर्क

शारे हे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार
खान नईमी ﷺ इस रिवायत के तहत फ़रमाते हैं :
सच्चिदा (फ़ातिमा) ﷺ के येह अल्फ़ाज़ न तो नौहा हैं
न बे सब्री, बल्कि हुज़ूर ﷺ के फ़िराक़ पर बे
चैनी है जो ब ज़ाते खुद इबादत है। नौहा येह है कि मय्यित के
ऐसे अवसाफ़ बयान किये जावें जो उस में न हों और पीटा
जावे। बे सब्री येह है कि रब्ब तअ़ाला की शिकायत की जावे।
जनाबे सच्चिदा ﷺ इन दोनों से महफूज़ हैं। येह भी
ख्याल रहे कि दुन्या में पांच हज़रात बहुत रोए हैं :

﴿١﴾.... हङ्गरते सय्यिदुना आदम ﴿عٰلِيَّ بَنِيٰ وَعَلَيْهِ الْصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ﴾ फ़िराके जनत में ।

﴿2-3﴾.... **हज़रते सम्यिदुना नूह** عليهما وآلهما الصلاة والسلام व हज़रते सम्यिदुना
यह्या عليهما وآلهما الصلاة والسلام खोफे खुदा में **﴿4﴾**.... हज़रते सम्यिदुना
फ़اتِمَتُوْज़्ज़हरा رضي الله تعالى عنها फ़िराके रसूल में और **﴿5﴾**.... हज़रते
सम्यिदुना इमाम ज़ैनुल अबिदीन رضي الله تعالى عنه वाकिअए करबला
के बा'द हज़रते इमामे हुसैन رضي الله تعالى عنه की प्यास याद कर के।
जनाबे सम्यिदा ज़ैनब رضي الله تعالى عنها फरमाती थीं :

صَبَّتْ عَلَيْ مَصَائِبُ لَوْ أَنَّهَا

صَبَّتْ عَلَى الْأَيَامِ صِرْنَ لِيَالِيًّا

तर्जमा : मुझ पर ऐसी मुसीबत पड़ी कि अगर रोज़े रोशन पर
पड़तीं तो वोह शबे तारीक बन जाते ।

^٨ (مِوَادَةُ الْمَنَاجِعُ شَرْحُ مِشْكُوَةُ الْمَصَابِيحُ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ وَالشَّمَائِلِ، بَابٌ جَ، ص ٢٩١)

दिन रात हिजरे यार में आहें भरा करूँ

रोया करूँ फिराक में जारो कितार में

(वसाइले बख्खिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत ذامث بر كاتبهم الغاليه स. 407)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

विशाले रसूल पर खातने जन्मत की कल्पी कैफियत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़्लियुल
मुर्तज़ाؑ سے رِیوایت ہے کہ جب مہبوبؑ کریم

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ الْفَضْلُ الصَّلُوةُ وَالْتَّسْلِيمُ

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
को दफ्न कर दिया गया तो हज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा मज़ार पर हाजिर हुईं, ख़ाके अक़दस की मुट्ठी भरी, आंखों पर लगाई, आंखों से आंसू रवां हो गए और ज़बाने अक़दस, ग़मे दिल को इन अल्फाज में ढालने लगी ।

(1).... उस शख्स पर क्या मलामत हो सकती है जिस ने तुर्बते अहमदे मुज्तबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ को सूंधा है कि वोह रहती दुन्या तक क़ीमती से क़ीमती खुशबूओं को न सूंधे । महबूबे करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ के जसदे अतःहर से ख़ाके तुर्बत में बसने वाली खुशबू उस को हमेशा हमेशा के लिये दूसरी खुशबूओं से बे नियाज कर देने वाली है ।

(2).... मुझ पर मसाइबो शदाइद की वोह सियाह रातें आन पड़ी हैं कि इन को दिनों पर डाला जाता तो रातों में तब्दील हो जाते ।

(الزفاف بالخواں المصطفیٰ (مترجم)، ابباب وصال مصطفیٰ، چالیسوائی باب بعد وصال حضرت فاطمہ کی کیفیت، ص ۸۳۱)

गोया कर्कुं पिलाक (२) में जासे कितम से

(一九三二年九月三十日)

(वसाइले बाख्याश अज़ अमारे अहले सुन्त س. 409 دامت برکاتہم العالیہ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

(1)या'नी जुदाई (2) या'नी जुदाई

मध्यित पर रोना कैसा ?

शारे हेमिशकात्, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार
खान नईमी ﷺ फरमाते हैं : मय्यित पर आवाज़ से
या सिर्फ़ आंसूओं से रोना जाइज़ है बल्कि मुर्दे के बा'ज़
फ़ज़ाइल बयान करना भी दुरुस्त है जैसे हज़रते सच्चिदा
फ़तिमतुज़ज़हरा رضي الله تعالى عنها نے हुज़ूर पर रोते हुए फ़रमाया था :
अब्बा जान ! आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ जन्नत में चले गए । अब
वहूय आना बन्द हो गई वगैरा । हाँ ! उस पर सर या सीना
कूटना, मुँह पर थप्पड़ लगाना, बाल नोचना, उस के झूटे
अवसाफ़ बयान करना जैसे हाए मेरे पहाड़, हाए ! काली घोड़ी के
सुवार । येह सब ह्राम है कि नौहा में दाखिल है ।

(مرأة المذاق شعر مشكورة المضايق، كتاب الجنائز، باب الركاع على الميت، ج ٢، ص ٣٩٩)

नौहा की तारीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द अब्वल सफ़्हा 854 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْى फ़रमाते हैं : नौहा या'नी मच्यित के अवसाफ मुबालगा के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना

जिस को बैन कहते हैं, बिल इजमाअः हराम है यूहीं वावैला,
वा मुसीबता कह के चिल्लाना ।

(बहारे शरीअत, किताबुल जनाइज़, ता'जिय्यत का बयान, जि. 1, स. 854)

نौहा करने का अज़ाब

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल
का فَرْمَانِ اِبْرَاهِيمَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
वाली औरत कियामत वाले दिन अपनी क़ब्र से इस हाल में
निकलेगी कि उस के बाल बिखरे हुए और गर्द आलूद होंगे
और उस पर ख़ारिश का कुर्ता और ला'नत की चादर होगी वोह
अपने हाथों को अपने सर पर रखे चीखते और चिल्लाते हुए
कहेगी : हाए बरबादी । मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ
कहेंगे : آمین (या'नी
ऐसा ही हो) । फिर इस (या'नी रोने पीटने) में से उस का हिस्सा
जहन्म की आग होगी ।

(كنز العمال، كتاب الموت، قسم الأقوال، ج ٨، الجزء الخامس عشر، ص ٢٠، حديث ٣٣٧)

سرकارे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए
रोजे شुमार का فَرْمَانِ اِبْرَاهِيمَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
“**اَللّٰهُ نَّهٰى نَّهٰى** نे नौहा करने वाली और नौहा सुनने वाली
पर ला'नत फ़रमाई है ।” (جَمِيع الْجَوَاعِ، قُسْمُ الْأَقْوَالِ، جَرْفُ الْلَّامِ، ج ٢، م ٢٢، حَدِيثٌ ١٨٥٨)

एक सच्चिदजादे इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते इमामे
 हसन बसरी عليه رحمة الله القوي से पूछा : क्या ताजदारे रिसालत,
 शहनशाहे नुबुव्वत, मख्भजे जूदो सखावत صلى الله تعالى عليه وآله وسالم के
 ज़माने में भी मुहाजिरीन की औरतें नौहा करती थीं ? तो उन्होंने
 इरशाद फ़रमाया ! नहीं । फिर फ़रमाया : **अल्लाह** عز وجل की
 क़सम ! एक औरत रोती हुई बारगाहे रिसालत मआब
صلى الله تعالى عليه وآله وسالم में हाजिर हुई जिस का बाप, बेटा और भाई
 जंग में शहीद हो गए थे, हुजूर नबिय्ये करीम صلى الله تعالى عليه وآله وسالم
 ने उस से इस्तफ़सार फ़रमाया : “तुझे किस मुसीबत ने
 रुलाया है ?” उस ने अ़र्ज़ की : “मेरे घर के तमाम मर्द फ़ैत
 हो गए ।” आप صلى الله تعالى عليه وآله وسالم ने इरशाद फ़रमाया : “तू सब्र
 करे तो तेरे लिये जनत है ।” उस ने अ़र्ज़ की : “**अल्लाह**
عز وجل की क़सम ! जब मेरे लिये जनत है तो मैं आज के बा’द
 कभी न रोऊंगी ।”

(قرۃ العینون و مفہوم القلب المحررون مع الروض الفائق، الباب السادس فی عقوبة النائحة، ص ۳۹۲)

सच्चिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आलमीन
صلى الله تعالى عليه وآله وسالم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : “वोह हम में से
 नहीं (या’नी हमारे तरीके पर नहीं) जो अपने मुंह पर तमांचे
 मारे गिरेबान चाक करे और ज़मानए जाहिलियत की तरह
 वावैला मचाए ।”

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، بلب لیس منا من شق الجیوب، ص ۳۶۶، الحدیث: ۱۲۹۷)

اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ ایرشاد فرماتا ہے :

إِنَّمَا يُؤْفَى الصِّدِّيقُونَ أَجْرَهُمْ بَعْدَ

حِسَابٍ (بِ الْزَّمْرِ: ۲۳)

تَرْجِمَةً كَنْجُولِ الْمَانَ : سَابِرِيَّ

ہی کو ان کا بھواب بھرپور دی�ा
جائے گا جو گنتی ہے ।

بچے کی موت پر سब کرننا

اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اس اُورت سے جس کا بچا فٹا ہو گیا تھا، اس ترہ ایرشاد فرمائے گا : “اے میری بندی ! میں تیرے بچے کی موت کا فسلا لایا ہے مہفوں میں کر چکا تھا اور جب میں نے اس کی روح کبھی کی تو تیرے دل نے جذبہ و فضہ ن کی اور نہیں تیرا سینا تھا ہو گا تو سمع ! آج میری ریضا و خوشنودی کی تुڑے خوش خبری ہے اور تुڑے اپنے بیٹے کے ساتھ اسے جنگی والے گھر یا ’نی جننات میں اکٹھا کر دیا گیا جہاں نہ موت ہے اور نہیں گم و ملال اور اسے مکام میں کی جہاں سے کبھی نیکلنا نہیں ہے ।”

(قرۃ العین و مفرج القلب المحرزون مع الروض الفائق، الباب السادس فی عقوبة النائحة، ص ۳۹۵)

جننات میں گار

اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ کے مہبوب، دانا اے گویوب، مونجھون اُنیل ڈیوب کا فرمانے جیشان ہے : جب کیسی آدمی کا بچا فٹا ہو جاتا ہے تو **اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** (سab کوچ جاننے کے با وعید) فریشتوں سے اسٹسپسار فرماتا ہے : تum نے میرے بندے کے بیٹے کی روح کبھی کر لی ہے ؟ فریشتوں نے اُرج کرتے ہے : جی ہاں ! **اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** فرماتا ہے : تum نے

इस के दिल का फल ले लिया है ? फ़िरिश्ते अُर्ज़ करते हैं : जी हां ! **अल्लाह** ﷺ फ़रमाता है : मेरा बन्दा क्या कह रहा था ?
 वोह अُर्ज़ करते हैं वोह तेरी हम्मद कर रहा था और
 पढ़ रहा था तो **अल्लाह** ﷺ फ़रमाता है मेरे बन्दे के लिये
 जनत में घर बनाओ और उस का नाम बैतुल हम्मद रखो ।

(جمع الجوامع، قسم الأقوال، حرف الهمزة، ج ١، ص ٩٤، الحديث: ١٨٠٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !

बे पर्दारी से तौबा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमल का ज़ज्बा बढ़ाने के लिये मदनी माहोल ज़रूरी है वरना आरिज़ी तौर पर ज़ज्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोहबत के फुक़दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती । अपना मदनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये ।
 سُبْحَنَ اللَّهِ عَزُّوْجَلَ دा'वते इस्लामी के मदनी माहोल, سुन्नतों भरे इजतिमाआत और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और बरकतें हैं । दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माहोल में रचने बसने की बरकत से मुतअ़द्दद इस्लामी बहनों को शरई पर्दा करने की सआदत नसीब हो गई । ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के

تھریڑی کی بیان کا لुبھے لुبکاہ ہے : میں دا'�تے اسلامی کے مुشكباار مدنی ماحول سے وابستہ ہونے سے پہلے T.V پر فلمیں دیرامے دیکھنے کی آدی ٹھی، باجڑا وگڑا جانے کے لیے بے پردہ ہی نیکل خडھی ہوتی، نماج بھی نہیں پढھتی ٹھی۔ یون میرے سوچھے شام گھفلت و ما'سیحیت میں بسر ہو رہے ہے۔ اک بار کسی نے مੁझے مکتب تھل مدنیا سے جا ری ہونے والے سوچن توں بھرے بیانات کے کے سیٹ دیے، میں نے انھیں سوچا تو الحمد لله عزوجل میں خواہے گھفلت سے بیدار ہو گئی۔ ان بیانات کی برکت سے مੁझے خڈھے خودا کی دلیلت نسیب ہوئی، ایشکے رسول کا جذبہ میلا اور میں نماجی بنا گئی، میں نے اپنے تمام گوناہوں بیل خوسوس بے پردگی سے پککی توبہ کر لی۔ الحمد لله عزوجل مدنی بُرکت اور لیباد کا ہیسسا بنا گیا۔ ووہ بے لگام جبائن جو پہلے گانے گون-گوناں میں مسروف رہتی ٹھی اب نا'تے مسٹکا سوچانے لگی۔ تا دمہ تھریڑ دا'�تے اسلامی کی جعلی معاشرت کی خادیما کے توار پر سوچن توں کی خدمت کی سعادت ہاسیل کر رہی ہے۔

(پردے کے بارے میں سوچاں جواب، ص. 31)

کٹی ہے گھفلت میں جنگانی	ن جانے ہشیر میں کیا فیصلہ ہو
یلاہی ! ہون بہت کم جوڑ بندی	ن دنیا میں ن عکبا میں سجھا ہو

(واسیلے باریکا ش ارجع امریکے اہلے سوچن ص. 165) دامت برکاتہم العالیہ

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ !
صلوٰ علی الحسیب !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! دेखا آپ نے ! ایسی
اسلامی بہن جو گुناہوں کے دلدارل میں فنسی ہری ہی عس کو خڑکے
خود جیسی اُجھیم دللت میل گردی، بے پردگی سے توبہ کی توبہ کیک
بھی نسیب ہری ہی । آپ بھی مکتوبتول مادینا سے جاری ہونے والے
بیانات کی کسیٹے خود بھی سونے اور اپنے مہاریم رشته داروں
کو بھی توہفہ کرنے پے اور دا'ватے اسلامی کے حفظاوار
سونتوں بھرے ایجاد میں شرکت کی بھی دا'ват دئی رہے کی
اگر آپ کے دا'ват دنے سے کسی کا دل چوتھا گیا اور
وہ ایجاد میں شرکت کر کے کورآن سونت کی راہ پر آ
گردی تو آپ کا بھی سینا مادینا ہوگا । ہر اسلامی بہن اپنی
مادنی جہن بنانا لے کی “مੁझے اپنی اور ساری دنیا کے
لोگوں کی اسلامی کی کوشش کرنی ہے ।”

اپنی اسلامی کی کوشش کے لیے “مادنی ایجاد”
پر اُملاں اور ساری دنیا کے لوگوں کی اسلامی کی کوشش کے
لیے اپنے مہاریم کو، جن کی ڈپر 22 سال یا اس سے
زیادا ہے، “مادنی کافیلوں” میں سफیر کروانا ہے ।

اعلیٰ حکم اے سا کرے تujh پے جہاں میں

اے دا'ватے اسلامی تیری بھوم مچی ہو !

(واسیلہ باریکا ش ابج امریکہ اہلے سونت ﷺ (دامت برکاتہم العالیہ) س. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ !

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَى مُحَمَّدٍ

تेल डालने के मदनी फूल

● **फ़रमाने मुस्तफ़ा :** “जिस के बाल हों वोह इन का एहतिराम करे।” (ابوداؤد، ج ۳، ص ۱۰۳، حديث: ۱۶۲)

इन्हें धोए, तेल लगाए और कंधी करे (أشياع المعمات، ج ۳، ص ۱۱۷)

बाल साबुन वगैरा से धोने का जिन का मा’मूल नहीं होता उन के बालों में अक्षर बदबू हो जाती है खुद को अगर्चे बदबू न आती हो मगर दूसरों को आती है। ● **हज़रते سय्यिदुना نافعؑ** سے रिवायत है कि हज़रते سय्यिदुना इब्ने उमरؑ दिन में दो मरतबा तेल लगाते थे (بَلَّفَ أَبْنَى شَيْبَهُ بْنَ عَاصِمٍ) बालों में तेल का ब कषरत इस्ति’माल खुसूसन अहले इल्म हज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में खुशकी नहीं होती, दिमाग़ तर और हाफ़िज़ा क़वी होता है

● **फ़रमाने मुस्तफ़ा :** “जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या’नी अबरूओं) से शुरूअ़ करे, इस से सर का दर्द दूर होता है” (الجایع الصغير، ص ۲۸، الحدیث: ۳۱۹)

● **کन्जुल उम्माल में है :** प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा جب तेल इस्ति’माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अबरूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे। (کنز الغمال، ج ۷، ص ۳۱، رقم ۱۸۲۹۵)

बयान नम्बर 12

ख़ातूने जन्नत

का

विसाले मुबारक

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ طَبِيعَتْ بِنَا اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ط

खातूने जन्मत का विसाले मुबारक

मौतियों का ताज

दा'वते इस्लामी के इशाअूती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़हा 72 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ दुरुदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : इन्तिकाल के बा'द हज़रते सच्चिदुना अबू अब्बास अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفُورُ को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जनती लिबास में मल्बूस “शीराज़” की जामेअ मस्जिद की मेहराब में खड़े हैं । ख़्वाब देखने वाले ने अर्ज़ की : يَاٰ مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? फ़रमाया : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं कषरत से दुरुद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अमल काम आ गया कि **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी मग़फिरत कर दी और मुझे ताज पहना कर दाखिले जनत फ़रमाया ।

(**القولُ الْبَدِيعُ**، البابُ الثانِي فِي ثوابِ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، ص ١٢٣، ملخصاً)

हर दर्द की दवा है सल्ले अ़ला मुहम्मद

ता'वीजे हर बला है सल्ले अ़ला मुहम्मद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

ਵਫ਼ਾਤੇ ਸਥਿਦਾ ਕੀ ਖਬਰ

(حلية الأولياء وطبقات الأصفياء، ذكر النساء الصحابيات، فاطمة بنت رسول الله، ج ٢، ص ٥٠، الحديث: ١٣٢٣)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे आक़ा, दो अ़्लाम
के दाता صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने गैब की ख़बर इशाद फ़रमाई कि
“मेरे अहल में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी ।” गैब क्या
होता है ? आइये ! सुनिये, चुनान्वे मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल
उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : गैब
के (लफ़ज़ी) मा’ना ग़ाइब या’नी छुपी हुई चीज़ । इस्तिलाह
(मछूस, मुरादी मा’ना) में गैब वोह चीज़ कहलाती है जो कि
ज़ाहिरी बातिनी हवास (महसूस करने की कुब्बतों) और अ़क्ल से

﴿ छुपी हो या'नी न तो आंख, नाक, कान वगैरा से मा'लूम हो सके और न गौरो फ़िक्र से अ़कْल में आ सके ।) ١٢٧، ج ١، هـ (تفسير نعيمي ﴾

मष्लन जन्नत हमारे लिये इस वकृत गैब है क्यूंकि इस को हम हँवास (या'नी आंख, नाक, कान वगैरा) से मालूम ही नहीं कर सकते ।

हज़रते सच्चिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर शीराज़ी बैज़ावी
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَّاَتْ فَرَمَّاَتْ فَرَمَّاَتْ
 का इदराक न कर सकें (हवासे ख़म्सा या'नी देखने, सुनने, सूंघने,
 चखने और छूने से न जाना जा सके) और बदाहते अ़क्ल इस का
 तकाज़ा नहीं करती । (تفسيير الْبَيْنَاضِلِوي، ج ١، ص ١٨٠)

ਈਮਾਨ ਅਫਰੋਜ਼ ਖ਼ਵਾਬ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे मक्की मदनी आक़ा,
मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ गैब की बातें जानते हैं ।
आइये ! इस ज़िम्म में एक ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब मुलाहज़ा
फ़रमाइये, चुनान्वे एक इस्लामी भाई ने शैख़े तरीक़त, अमीरे
अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ को
जो कुछ बताया उस का खुलासा येह है । مُعْذِنَةً لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ
में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की
सअदत मिली, हिम्मत कर के अर्ज की : या रसूलल्लाह
क्या आप को इलमे गैब है ? इरशाद फ़रमाया :

ہاں ! اس کے با'د سرکارے نامدار صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ نے اک آیتے کو رواں کے لبھا اپنے میں کر آنی سुنا ایں । سرکارے مادینا صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کے تیلاؤت، آپ صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کی خوش آوازی اور ادای ایغیرے ہر رکھ کا ہونے عسلوب (یا' نی ہر رکھ کی اپنے مخادری سے ادای ایغیرے کی خوب سوتی) مراہب ! اسی ڈمدا اور شیری آواج و کیرا ات میں نے کبھی نہیں سونی، آیتے شاریف میں بھول گیا ہے، ہاں ! اتنا یاد پڑتا ہے کہ اس کے آخیر میں لفظِ ڈینیں ایسے پڑتے ہیں کہ اس پر امریکے اہلے سونت نے پارہ 30 سو رات کوئی کی آیت نمبر ڈبل بارہ (24) سونا ایں ”وَمَا هُوَ عَلَى الْعَيْنِ بِإِصْنَابِ“ ہے ”وَمَا هُوَ عَلَى الْعَيْنِ بِإِصْنَابِ“ وہ اسلامی باری بول ڈالے : ہاں ! ہاں ! یہی آیتے کریما ثہی । امریکے اہلے سونت نے اس کو آیتے کریما کا ترجیم باتا یا اور فرمایا کہ یہ کیونن سرکارے دو اسلام کو عز و جل اور اکر رکھ کی رہمات و اینا یات سے ڈلمے گئے ہیں ।

پھری پھری اسلامی بہنو ! اس ہیکایت سے کوئی اس وسوسے میں ن پડے کہ لو بھی خوابوں سے ڈلمے گئے بحابیت کیا جا رہا ہے । ہالانکی گئے نبی کا خواب تو ہو جات (یا' نی دلیل) ہی نہیں । امریکے اہلے سونت فرماتے ہیں کہ میں اکر رکھ کرتا ہوں کہ واقعہ اکھر مسٹرلا خواب سے ہل نہیں کیا جاتا، مگر یہاں خواب سے نہیں، خواب میں اٹھا کردا جواب

में बयान कर्दा कुरआनी आयत से इल्मे गैब का षुबूत पेश किया जा रहा है और वोह आयते करीमा वाकेई इल्मे गैबे मुस्तफ़ा पर दाल्ल (या'नी दलील) है। लिहाज़ा ज़िक्र कर्दा आयत मअ़ तर्जमा मुलाहज़ा फरमाइये :

وَمَا هُوَ عَلَى الْعَيْبِ بِصَنِّيْنِ ۝
 (٢٣٠ التكوير:)

तर्जमए कन्जुल ईमानः और ये
 नबी गैब बताने में बखील नहीं ।

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा ﷺ गैब बताते हैं और ज़ाहिर है कि बताएगा वोही जिस को इल्म होगा । तो बिला शको शुबा रब्बुल आलमीन की इनायत से रहमतुल्लिल आलमीन इल्मे गैब की दौलत से माला माल हैं । आशिके माहे रिसालत, آ'ला हज़रत ﷺ बारगाहे रिसालत में अर्ज करते हैं :

और कोई गैब क्या तुम से निहाँ हो भला
 जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुर्सद
 (हदाइके बख्शाश अज़ इमामे अहले सूनत उल्लेख)

शर्ह कलामे रजा :

या रसूलल्लाह ﷺ आप की शाने अ़ज़मत
निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती ह़ालत में आप
ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक

परवर दगार का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** जो कि
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ
 गैबुल गैब है वोह भी अपने फ़ज़्लों करम से आप
 पर ज़ाहिरो आश्कार हो गया तो अब कोई और गैब आप
 से किस तरह निहां या'नी छुपा रह सकता है।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया
 कि ख़ातूने जनत हज़रते सच्चिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा (رضي الله تعالى عنها) को
 पहले ही गैबी ख़बर अ़ता फ़रमा दी थी कि तुम सब से पहले मुझ
 से मिलोगी। अब येह मुलाहज़ा फ़रमाइये कि विसाले मुस्तफ़ा के
 बा'द ख़ातूने जनत (رضي الله تعالى عنها) की कैफियत क्या थी ?

ग़मे मुस्तफ़ा का ग़लबा

सरकारे मदीना صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ के विसाले ज़ाहिरी के
 बा'द ख़ातूने जनत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते सच्चिदतुना
 फ़ातिमतुज़्ज़हरा (رضي الله تعالى عنها) पर ग़मे मुस्तफ़ा का इस क़दर
 ग़लबा हुवा कि आप (رضي الله تعالى عنها) के लबों की मुस्कुराहट ही
 ख़त्म हो गई। अपने विसाल से क़ब्ल सिफ़े एक ही बार मुस्कुराती
 देखी गई। इस का वाकिअ़ा यूं है कि हज़रते सच्चिदतुना ख़ातूने
 जनत (رضي الله تعالى عنها) को येह तश्वीश थी कि उम्र भर तो गैर मर्दों
 की नज़रों से खुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी
 कफ़न पोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़

پر ہجڑتے ساییدتوں اسما بینتے ڈمیس نے کہا : رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا میں نے ہبشا مें دेखा है कि جنाजे पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी سूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं । फिर उन्होंने खजूर की शाख़ें मँगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर ساییدा خواہوں جنات رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को दिखाया । آپ بहुत खुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई । बस येही एक मुस्कुराहट थी जो سरकारे مदीनا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले ج़ाहिरी के बाद देखी गई । (جَذْبُ الْقُلُوبُ (مُتَرَجَّمٌ)، ص ۲۳۱)

چُو زَهْرَا باش از مخلوق رو یوش

که در آغوش شبیرے به بینی

यानी ہجڑتے ف़اطِمَة تُحَمَّدُ هرَا کी ترह پارہے ج़گار پर्दादार बनो, ताकि अपनी गोद में ہجड़ते ساییدुना شब्बीरे نामदार, इमामे हुसैن رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसी अवलाद देखो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

پ्यारी پ्यारी इस्लामी बहनो ! آज کितनी इस्लामी बहनें पर्दा करती हैं । माहोल बहुत एडवान्स और फ़ेशन परस्ती आम है । शरई पर्दा करते हुए झिजक महसूस होती है । क्या ऐसे हालात में शरई पर्दा तर्क कर दिया जाए ? नहीं, शरई पर्दा हरगिज़ तर्क न किया जाए कि येह अज़ीम नेकी है और बे पर्दगी सख्त गुनाह । पर्दा करने में जितनी तकलीफ़ ज़ियादा होगी उतना ही षवाब भी ان شاء اللہ عَزَّ وَجَلَّ ज़ियादा मिलेगा । मन्कूल है :

أَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ أَحْمَزُهَا

या'नी अफ़ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़हमत ज़ियादा हो।

(كُشْتُ الْخِفَاء، حرف الهمزة مع الفاء، ج ١، ص ١٢١، الحديث: ٣٥٩)

شैखुल इस्लाम हाफिज मुहूयुद्दीन अबू ज़करिया यहूया बिन शरफ़नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ التَّوْفِيقُ ف़رماते हैं : इबादत में मशकूत और खर्च ज़ियादा होने से षवाब और फ़ज़ीलत भी ज़ियादा हो जाती है।

(شَرْحُ صَحِيحِ مُسْلِمٍ لِلنَّوْوَى، كتاب الحج، باب بيان وجوه الاحرام.....الخ، ج ١، ص ٣٩٠)

نَبِيَّهُ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : अफ़ज़ल अ़मल वोह है जिस पर नुफूस को मजबूर किया जाए। (احياء علوم الدين، كتاب الصبر والشکر، المطر الاول، ج ٣، ص ٧٥)

هَجَرَتِهِ سَادِيِّدُنَا إِبْرَاهِيمَ بِنِ اَدْهَمَ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَكْرَمُ ف़رماते हैं : “हशर में वोह अ़मल वज़दार होगा जो दुन्या में दुश्वार महसूस होता है।” (तज़किरतुल औलिया (मुतर्जम) स. 72)

हाँ ! अगर किसी के अपने ही दिल में खोट हो तो क्या कह सकते हैं ! मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार खान “نُورُلِ اِدْرَفَان” عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن 772 पर फ़रमाते हैं : जिस को गुनाह आसान मा’लूम हों और नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक है, रब तआला महफूज़ रखे।

(تفسير نور العرفان، پ ٠، ١، التوبۃ، تحت الآية ٨١، ص ٧٧٢)

امين بِجَاهِ الْبَيْ اَمِينٌ مَنْ اَنْهَى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

شانے خواہ نے جنگت (رضی اللہ عنہ) خواہ نے جنگت کا میراث لے گواہ رک

بَا'جُّ اِسْلَامी بَهْنَنْ يَوْ كَهْتَيْ سُونَارَى دَتَيْ هَيْنَ كِ بَسْ
 "هَمَارَ لِيَهِ دِيلَ كَا پَرْدَ كَافَّيْ هَيْ" يَهِ كَهْنَا دُورُسْتَ نَهَيْ,
 دُورُسْتَ كَيْنَ نَهَيْ ؟ آيَهِ ! مُولَاهُجَّا فَرَمَادِيَهِ دَا'َتَهِ إِسْلَامَيِهِ
 كِ إِشَاءِتِي إِداَرَهِ مَكَتَبَتُلَ مَدِيَنَاهِ مَتَبُوَأَهِ 397 سَفَهَاتَ
 پَرَ مُشَتَّمِيلَ كِيتَابَ "پَرْدَهِ كَهَارَ مَيْ سُونَالَ جَوابَ" سَفَهَهَا
 193 پَرَ شَيَخَهِ تَرِيَكَتَ، آمَارِهِ اَهَلَهِ سُونَتَ، بَانِيَهِ دَا'َتَهِ
 إِسْلَامَيِهِ، هَجَّرَتَهِ أَلَلَّامَهِ مَؤَلَّاَنَاهِ بَبُوَ بِلَالَ مُهَمَّدَ إِلَيَّاَسَ
 أَنَّتَهِارَ كَادِيرَهِ رَجَّيَهِ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهِ فَرَمَاتَهِ هَيْنَ : "يَهِ شَيَّطَانَ كَا
 بَهُوتَ بَذَّا اَوَّرَ بُوَرَاهِ وَارَهِ هَيْ اَوَّرَ إِسَهِ كَلَهِ بَدَهِ تَرَهِ اَجَّ بَلَهِ مَيْ
 عَنَ كُورَآنِي آيَاتَهِ مُوَبَّارَكَاهِ كِ إِنْكَارَهِ پَهَلَوَهِ هَيْ جِنَهِ مَيْ
 جَاهِيرَيِهِ جِيسَمَهِ پَرْدَهِ مَيْ چُوَپَانَهِ کَا هُوكَمَ دِيَهِ گَيَا هَيْ، مَسَلَنَ
 پَارَهِ 22 سُورَتُلَ اَهَجَّاَبَ آيَاتَ نَمَّبَرَ 33 مَيْ فَرَمَاهَهِ گَيَا هَيْ،
 تَرْجَمَهِ كَنْجُولَ إِمَانَ : اَوَّرَ اَپَنَهِ گَهَرَهِ مَيْ ٹَهَرَهِ رَهَهِ اَوَّرَ بَهِ
 پَرْدَهِ نَرَهِ جَسَسَهِ اَغَلَيِهِ جَاهِيلِيَّتَهِ کَيِهِ بَهِ پَرْدَگَيِهِ । اَسَيِهِ سُورَهِ
 مُوَبَّارَكَاهِ آيَاتَ نَمَّبَرَ 59 مَيْ هَيْ : تَرْجَمَهِ كَنْجُولَ إِمَانَ :
 اَهِ نَبِيِهِ ! اَپَنَيِهِ بَيَّبَيَّنَهِ اَوَّرَ سَاحِبَبَجَّادَيَّنَهِ اَوَّرَ مُوسَلَمَانَهِ
 کِيِهِ اُئَرَتَهِ سَهِ فَرَمَاهِ دَوَهِ کِيِهِ اَپَنَيِهِ چَادَرَهِ کَا اَكَهِھِسَسَا اَپَنَهِ
 مُونَهِ پَرَ ڈَالَهِ رَهَهِ ۴۱ । سُورَتُنُورَ کِيِهِ آيَاتَ نَمَّبَرَ 31 مَيْ هَيْ،
 تَرْجَمَهِ كَنْجُولَ إِمَانَ : اَوَّرَ اَپَنَهِ بَنَاهَهِ نَدِيَخَاَهِ ۴۱ ।
 جَوَ جِيسَمَهِ پَرْدَهِ کَا مُوتَلَكَنَهِ إِنْكَارَهِ اَوَّرَ کَهَهِ کِ "سِرْفَهِ

दिल का पर्दा होना चाहिये” उस का ईमान जाता रहा। शादीशुदा थी तो निकाह भी टूट गया किसी की मुरीदनी थी तो बैअंत भी ख़त्म हुई अगर फ़र्ज़ हज़ कर लिया था तो वोह भी गया नीज़ गुज़्शता ज़िन्दगी के तमाम नेक आ’माल बरबाद हो गए। अपने इस कुफ़्र से तौबा कर के कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसलमान हो और शोहरे अब्बल ही से नए सिरे से निकाह करे। (हाँ ! अगर शोहरे अब्बल निकाह करना न चाहे तो किसी और मर्द से निकाह कर सकती है) और मुरीद होना चाहे तो किसी भी जामेअः शराइत पीर से बैअंत हो जाए। अलबत्ता अगर कोई पर्दे की फ़र्ज़िय्यत का क़ाइल है मगर पर्दे की किसी ख़ास नोइय्यत (या’नी मख़्सूस तर्ज़) का इन्कार करता है जिस का तअ़्लुक़ ज़रूरियाते दीन से नहीं तो फिर हुक्मे कुफ़्र नहीं।”

कुफ़्र से तौबा नीज़ तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह का तरीक़ा मक्तबतुल मदीना की तरफ से शाएअः कर्दा 16 सफ़्हात के मुख़्तसर रिसाले “**28 कलिमाते कुफ़्ر**” से देख लीजिये। **اَللّٰهُمَّ بِسْمِكَ الْحَمْدِ الْعَلِيِّ الْأَكْبَرِ اَكْبِرُ** هमारा ईमान سलामत रखें।

हृकीक़त तो येह है कि “ज़ाहिर” दिल का नुमाइन्दा है, दिल अच्छा होगा तो इस का अपर ख़ारिज में भी ज़ाहिर होगा लिहाज़ा पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और **اَللّٰهُمَّ بِسْمِكَ الْحَمْدِ الْعَلِيِّ رَبِّ الْعَزَّةِ اَكْبِرُ** की इत्ताअंत की तरफ माइल होगा, चुनान्चे मेरे आक़ा आ’ला हज़रत **فَرِمَاتَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** : येह ख़याल कि बातिन

(या'नी दिल) साफ़ होना चाहिये ज़ाहिर कैसा ही हो महज़ बातिल है। हृदीष में फ़रमाया कि इस का दिल ठीक होता तो ज़ाहिर आप (या'नी खुद ही) ठीक हो जाता। (फ़तावा रज़िविय्या, जि. 22, स. 605)

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो उन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो
वरना सुन लो कब्र में जब जाओगी सांप बिछू देख कर चिल्लाओगी

(वसाइले बख़िਆश अज़ اَمْمَارِ اَهْلَلِهِ سُنْنَةٍ س. 669) دامت برَحْمَةِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ وَأَعْلَمُ بِالْحَسِيبِ :

خُطْرَنےِ جَنَّتَ की वसिय्यतें

हज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत ने अपने विसाल से क़ब्ल दो वसिय्यतें फ़रमाईं :

(1).... हज़रते सय्यिदुना अ़्लियुल मुर्तज़ा को वसिय्यत की, कि मेरी वफ़ात के बा'द आप हज़रते उमामा से निकाह कर लें, चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अ़्ली ने हज़रते सय्यिदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की वसिय्यत पर अ़मल किया। येह निकाह जुबैर बिन अ़ब्वाम के एहतिमाम से हुवा। (اكمال (مترجم) مع مرآت المناجح، ج 8، ص 7، ملخصاً)

(2).... जब मैं दुन्या से जाऊं तो मुझे रात में दफ़्न करें ताकि मेरे जनाज़े पर ना महरम की नज़र न पड़े। (फ़तावा रज़िविय्या, जि. 9, स. 307)

خُطْرَنےِ جَنَّتَ نे दुन्या से तशरीफ़ ले जाने से क़ब्ल वसिय्यत फ़रमाई, वसिय्यत किसे कहते हैं ? और इस के क्या फ़ज़ाइल हैं ? आइये ! मुलाहज़ा फ़रमाइये !

vasiyat kisne kahate hain?

बहारे शरीअत में है : वसियत करने का मतलब ये है कि बतौरे एहसान किसी को अपने मरने के बाद अपने माल या मन्फ़अत का मालिक बनाना ।

(बहारे शरीअत, वसियत का बयान, जि. 3, हिस्सा. 19, स. 936)

vasiyat ki akhdam

वसियत चार किस्म की है : (1)..... वाजिबा : जैसे ज़कात की वसियत और कफ़ाराते वाजिबा की वसियत और सदक़ा, सौमो सलात की वसियत (2)..... मुबाह : वसियते अग्रनिया के लिये (3)..... वसियते मकरूहा : जैसे अहले फ़िस्क व (अहले) मा'सियत के लिये वसियत जब ये हुमान ग़ालिब हो कि वोह माले वसियत गुनाह में सर्फ़ करेगा (4).... मुस्तहब : इस के इलावा के लिये वसियत मुस्तहब है ।

(اللَّهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ الْمُخْتَارُ وَرَبُّ الْمُخْتَارِ، كِتَابُ الْوَصْلَابَا، ج ١٠، ص ٣٥٣)

इस को आप इस तरह याद रखें कि जिन हुक्कूक का अदा करना फ़र्ज़ है उन के लिये वसियत फ़र्ज़ होगी और जिन हुक्कूक का अदा करना वाजिब है उन के बारे में वसियत करना वाजिब । ऐसे मुआमलात जो मुस्तहब्बात में से हैं उन की वसियत करना भी मुस्तहब, मुबाह कामों की वसियत भी मुबाह, मकरूह कामों की वसियत मकरूह और हराम कामों के लिये वसियत करना हराम ।

वसिय्यत बाह्ये मठाफ़िरत

सरकारे मदीना, करारे कल्बो सीना, फैज़ गंजीना, बाह्ये
नुजूले सकीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने
बा करीना है : “जो अच्छी वसिय्यत पर मरा वोह दीन के रास्ते
और सुन्नत पर मरा और तक्वा व शहादत की मौत मरा और
(مشکوٰۃ النجیح شرح مشکوٰۃ المصالیح، باب الوصایا، ج ۱، ص ۵۷۶، الحدیث ۳۰۷۶) बख्शा हुवा मरा ।”

मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद
यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَتَّابِ इस हृदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं :
(अच्छी वसिय्यत से मुराद येह है कि) मरते वक्त अपने माल
का कुछ हिस्सा फुक़रा पर या किसी कारे खैर में लगाने की
वसिय्यत कर गया या किसी दीनी इदारे में लगाने की वसिय्यत
कर गया ।

मज़ीद फ़रमाते हैं : इस हृदीष से मा’लूम हुवा कि बा’ज़
नेक अमल ब ज़ाहिर मा’मूली तर हैं मगर इन का घवाब बहुत
ज़ियादा होता है । देखो ! बा’दे मौत माल राहे खुदा में ख़र्च करना
मा’मूली काम है कि वोह इन्सान अब माल से बे नियाज़ हो चुका
मगर इस पर भी इतना बड़ा घवाब मिला और ऐसे दर्जे का
मुस्तहिक हुवा । इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि मा’मूली नेकी
को भी हलका न जानो, कभी एक घूंट पानी जान बचा लेता है
और मा’मूली गुनाह कर न लो कि कभी छोटी चिंगारी घर जला
देती है । ख़याल रहे कि यहां शहादत से मुराद हुक्मी शहादत है ।

(براءة الناجين شرح مشکوٰۃ المصالیح، باب الوصایا، ج ۱، ص ۳۸۵)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! آپ نے وسیعیت کے بارے مें سुना हमें भी اس پर اُमल کرنے की نیت کرنی چاہیے। ابھी تک جن کے جو ہوکوک ہمارے جیمیں हैं उन को اदا کرنے کی کوشش کरें और جو ہوکوک اदا کرنे में وकٹ درکار है (अभी नहीं हो सकते) अपने مہارिम में से किसी को इन की وسیعیت فرمائें। اس کے مुतاًلیک مजید رہنمایہ حاسیل کرنے کे لिये مکتبتوں مدارس سے شاہزادی کرت, امیرों अहلے سونت, बानिये दा'वते اسلامी, हज़रत अल्लामा مौलانا अबू بیلal مुहम्मद illyas अंतार क़ادیری رज़वी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ का مورثباً کردا 16 سفہات پर مُشتمل رسالہ "مَدْنَى الْوَسِيْعَيْتِ نَامَا" حاسیل فرمائی جائے। آپ کو اپنی وسیعیتें لیखنے में भी بहुत مدد मिलेगी। और وسیعیت کے تفصیلی अहکام जानने के لिये दा'वते اسلامी के इशाअती दारों मکتبتوں मدارس की متابूआ 1197 سفہات पर مُشتمل کتاب "بہارِ شریعت" جلد 3 उनیسوں हیसے सے "وسیعیت کا بیان" کا مُتالاً فرمائें।

خواہوںے جنگت کو کیس نے گوسل دیا?

آ'لا هज़رत, اُج़یمُول بارکات, اُجِیمُول مرتبت, پرવانए شامپُرسالات مौلانا شاہ ایماد رجڑا خان علیہ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ اس کی وجاہت کرتے ہوئے "فُتَّاَوَا رَجَّاَفِيَّا" مुखِّرِ رجڑا جلد 9 مें ارشاد فرماتे हैं: वोह जो मन्कूल हुवा कि سایدुنا اُلیٰ كَرَمُ اللهُ تَعَالَى وَجْهُهُ نے हज़رत बतूل ج़हरा رَحْمَةُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهَا کो گوسل دिया:

अव्वलन (पहली बात तो ये ह कि) इस की ऐसी सिंहत व लियाक़ते हुज्जय्यत महल्ले नज़र है (या'नी इस के सही होने और दलील बनने के लाइक होने पर ए'तिराज़ है)

घानियन..... (दूसरी ये ह कि एक) दूसरी रिवायत यूं है कि इस जनाब को हज़रते उम्मे ऐमन رضي الله تعالى عنها (नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ की दाई) ने गुस्ल दिया ।

घालिघन..... (तीसरी ये ह कि यहां) ब मा'ना अप्रे शाएऽु (या'नी चूंकि आप كرَمُ الله تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ने गुस्ल देने का हुक्म फ़रमाया था इस वजह से आप كرَمُ الله تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ की तरफ़ ही गुस्ल देने की निस्बत कर दी गई और अरबी कलाम में बारहा ऐसा होता है कि काम करने की निस्बत उस काम का हुक्म देने वाले की तरफ़ कर दी जाती है जैसे) कहा जाता है बादशाह ने फुलां कौम से जंग की (हालांकि बादशाह खुद हथियार ले कर जंग नहीं करता बल्कि फ़ौज को जंग करने का हुक्म देता है तो इस हुक्म देने की वजह से जंग करने की निस्बत ही बादशाह की तरफ़ कर दी जाती है, इसी तरह) हडीष में आया : नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने अज़ान दी या'नी अज़ान का हुक्म दिया ।

राबिअन.... (चौथी ये ह कि) इज़ाफ़ते फे'ल ब सूए मुसब्बिबे गैर मुस्तन्कर और हडीषे अ़ली उन वुजूह पर महमूल करने से तआरुज मुर्तफ़ेअ़ या'नी (बा'ज़ दफ़आ किसी काम की निस्बत उस की तरफ़ कर दी जाती है जो उस काम के करने का सबब होता है और ये ह कोई गैरे मा'रूफ़ बात नहीं, खातूने जनत हज़रते सच्चिदतुना फ़اتिमतुज्ज़हरा رضي الله تعالى عنها को गुस्ल दिये जाने का सबब चूंकि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते

سادھی دُنَا اَلْلِيْعُولْ مُرْتَجَا بَنَهِ اِسْ تَأْرِيْخِ پَر
 کِيْ آپ نِے اِنْهُنْ غُوْسِلْ دِيْهِ جَانِهِ کا هُوكِم
 فَرْمَاءِ يَا آپ نِے غُوْسِلْ کا سَامَانْ مُهْيَّا
 فَرْمَاءِ، اِسْ بِنَاهِ پَر غُوْسِلْ دِئَنِيْهِ کِيْ نِسْبَتِ آپ
 کِيْ تَرْفَهِ هِيْ كَارِدِيْهِ غَيْرِ، چُونَانْچِهِ هَجَرَتِ
 سادھِيْدِتُنَا عَمَّهِ اِيمَانِ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)
 اَلْلِيْعُولْ مُرْتَجَا كَرِمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ
 مِنْ تَتْبِيْكِ اِسْ تَرْحَاهِ هُوَيْغِيْرِ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)
 نِيْ اَفَنِيْهِ هَاثِرِوْنِ سَهَلَاءِ اَوْ سادھِيْدِتُنَا اَلْلِيْ
 نِيْ هُوكِمِ دِيْهِ اَسْبَابِهِ غُوْسِلِهِ مُهْيَّا فَرْمَاءِ ।

خَامِسَن..... (پانچवیں یہہ کی) مौلا اَلْلِيْ
 کِيْ لِيْهِ خُوسُوْسِيْيَّتِ ثَرِيْهِ اُورِيْهِ کِيْ
 پَر رَوَا (يَا'نِيْ دُرُسْتِ) نَهْرِيْهِ هَمَارِيْهِ ظُلْلَمَاهِ جَوْجَاهِ
 سِے مَنْزُلِ فَرْمَاهِيْهِ هُنْهُنْ اِسِيْهِ کِيْ وَجَاهِيْهِ هُنْهُنْ
 اِنْدِدَامِ مَهْلَلِ، مِيلَكِ نِيكَاهِ خَتْمِ هُوَ جَاتِيْهِ (يَا'نِيْ مَرَنِيْهِ کِيْ بَدِيْ)
 چُونِکِ نِيكَاهِ کَا مَهْلَلِ هِيْ خَتْمِ هُوَ گَيَا لِهَاجَاهِ نِيكَاهِ بِيْهِ خَتْمِ هُوَ
 گَيَا اُور جَابِ نِيكَاهِ خَتْمِ هُوَ گَيَا) تَوْ شَوَّهِ اَجَنَّبِيْهِ گَيَا ।

اِسِيْ لِيْهِ مَنْکُوْلِ هُوَ گِيْ سادھِيْدِتُنَا اَلْلِيْ
 پَر هَجَرَتِ اَبُو لَلَّاهِ بِنِ مَسْؤُلِيْهِ (غُوْسِلِ دِئَنِيْهِ
 وَالَّهِ عَلَيْهِ اِنْهُنْ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ)
 نِيْ اَفْرَجَاهِ اَتِيَّا رَجَاهِ اَتِيَّا (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)
 نِيْ اَتِيَّا رَجَاهِ اَتِيَّا : کَيَا تُمْهِنْ خَبَرِ نَهْرِيْهِ کِيْ رَسُوْلُ لَلَّهِ
 اِنَّ فَاطِمَةَ رَوْجَنْتَكَ فِي الدُّنْيَا وَالاِخْرَةِ : نِيْ اَتِيَّا رَجَاهِ اَتِيَّا

“يَا'نِيْ بَشَكِ فَاتِيْمَا دُنْيَا وَ اَخِيْرَتِ مِنْ تَرِيْهِ بَيْبَيِيْهِ ।”

تو دेखو ! اس خुسوسیت کی تحرفِ ایشانہ فرمائیا کی
یہ ریشتہ مونکھے اُ (یا' نی ختم) نہیں یہ جواب ن فرمائیا
کی شوہر کو اپنی اُرطت کا نہ لانا روا ہے । اس سے اُرطت بھی
شایستہ ہوا کی سہابہؓ کیرام (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) کے نجذیک سُورتے
مذکوراً میں مذہب، اُدھرے جوابؓ تھا (یا' نی سہابہؓ کیرام
کے نجذیک مرد کی بیوی کی میت کو گسل دینا نا^{رضی اللہ تعالیٰ عنہم}
جاہیز تھا) جب تو هجرتے ہجڑے مسٹرد (رضی اللہ تعالیٰ عنہ)^{رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ} نے انکار
فرمایا اور هجرتے (سیدیدنا اُلیاء) مرتضیا (کرم اللہ تعالیٰ وَجْهُهُ الْكَرِيمُ)
نے اسے تسلیم فرمایا کہ اپنی خوسوسیت سے جواب دیا ।

(فتاویٰ رجبیہ (مُخَرْجَة)، ج. ۹، ص. ۹۲-۹۴، مُلْتَكْتَن)

سادیکہ جہار کا جانا جا

ہجرتے سیدیدنا ہجڑے ڈمر سے مُنکُل ہے
کی ہجرتے فاطمۃ الزہرا کی نمائے جانا جا
ہجرتے سیدیدنا ابوبکر سیہیک نے پढ़ای ।

(کنز الفعل، کتاب الموت، باب فی اشیاء قبل الدفن، ج: ۸، الجزء الخامس عشر، ص: ۳۰۳، الحدیث: ۲۲۸۵۶)

ہجرتے سیدیدنا ہبڑیم علیہ رحمۃ اللہ الرحیم سے مُنکُل ہے
ہجرتے سیدیدنا ابوبکر سیہیک نے ہجرتے
سیدیدنا فاطمۃ البنت رسلوں لالہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) کی نمائے
جانا جا پڑای اور چار تکبیرے کہئے ।

(کنز الفعل، کتاب الموت، باب فی اشیاء قبل الدفن، ج: ۸، الجزء الخامس عشر، ص: ۲۹۹، الحدیث: ۲۲۸۱۶)

شارےٰ میشکات، ہکیمیل عالمت ہجڑتے مufتی احمد
یار خاں نریمی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي فرماتے ہیں : سہیہ ہے یہ ہے کہ
ہجڑتے ساییدونا ابو بکر سیہیک رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْهُ نے آپ کا
جنما جا پढ़ایا ।

(مراءُ النتاجِنْ شَرْحُ مشْكُوٰهُ المَصَابِيْحُ، کتاب الفضائل، باب مناقب اهل بیت النبی، ج ۸، ص ۴۵۶)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو ! با'جِ اسلامی بہنے سے
ساییدا فاطیما رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْهَا کی کہانی اور اس ترہ کے دیگر
من घडت کیسے پढ़تی اور گھر میں پढ़اتی ہے । آیا ! اس بارے
میں ما'لومات ہاسیل کرتے ہیں کہ یہ پढنا کیسا ہے ? چوناں
دا'ватے اسلامی کے ایسا اُتری یادے مکتب تعلیم مداری کی متابوں
499 سفہاً 485 پر شیخے تریکت اُمریکے اہلے سُنّت، بانیے
دا'ватے اسلامی، ہجڑتے اُلّامہ مولانا ابو بکر بیلائل مُحَمَّد
یلیساں اُٹھا کا دیری رجُوی دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ فرماتے ہیں : داسٹانے
اُجھیا، شہزادے کا سار، دس بیویوں کی کہانی اور جنابے
ساییدا رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْهَا کی کہانی وغیرہ سب من घڈت کیسے ہے،
یہ ہرگیج ن پढہ کرئے । اسی ترہ اک پیڈلےٹ ب نام
”واسیت ناما“ لوگ تکسیم کرتے ہیں جس میں کسی ”شیخ
احمد“ کا خواب درج ہے یہ بھی جا'لی ہے اس کے نیچے مخسوس
تا'داد میں چپوا کر بانتے کی فوجیلات اور ن تکسیم کرنے
کے نکسہ ناٹ وغیرہ لیکھے ہے اس کا بھی اے'تیباً ن کرئے ।

صلوٰعَلیِ الحَبِیْبِ ! صَلَوٰعَلیِ الْحَبِیْبِ !

“خاشقیں شاشیف کھڈکے” کے باڑھ ہو سکف کی نیکبتو سے سوڑھ یاسین شاشیف کے 12 فوجاً ایل

اگر ایسالے بحاب کے لیے پढنا ہے تو کلیما شاشیف پڑیے، دوڑدے پاک پڑیے، سوڑے یاسین پڑیے، سوڑے مولک پڑیے، کورآنے پاک کی تیلاؤت کیجیے । إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ
بحاب کا انجیم خجڑانا حاصل ہوگا । آیہ ! سوڑے یاسین شاشیف کے فوجاً ایل مولہ جا فرمائیے، چوناںچے

کوڑاً آن کو دل

(1)..... ہجرتے ساییدونا ماؤ کیل بین یساار سے ریوایت ہے کی سرکارے والا تباار، ہم بے کسون کے مددگار، شافعیہ روزے شومار، دو اعلیٰ کے مالیکو مुखوار، ہبیبے پرکار دگار نے فرمایا : سوڑے یاسین کورآن کا دل ہے جو اسے **آلہ** کی ریزا اور آخیرت کی بہتری کے لیے پढے گا اس کی ماغفیرت کر دی جائے ।

(مسند احمد، مسند البصیرین، مقلوب یسار، ج ۲۳۶، ص ۲۰۸۳۶، الحدیث: ملقطا)

10 کوڑاً آن کو بحاب

(2).... ہجرتے ساییدونا اننس سے ریوایت ہے کی رسوئے اکرم، نورے موجسس م نے فرمایا : بے شک هر چیز کا اک دل ہے اور کورآن کا دل سوڑے یاسین ہے اور جو اک مرتبہ سوڑے یاسین پढے گا اس کے لیے دس مرتبہ کورآن پढنے کا بحاب لیخا جائے ।

(سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل سورۃ یس، من ۶۱، الحدیث: ۲۸۸۷)

دُنْيَا وَ آخِيرَتِ الْمُلَائِكَه

(3).... رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے رি঵ايت है कि सरदारे मक्कए मुकर्मा, सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तौरात में सूरए यासीन का नाम मुइम्मतुन है, क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले को दुन्या व आखिरत की हर भलाई अ़ता करती है, इस से दुन्या व आखिरत की बलाएं दूर करती है और आखिरत की हौलनाकियों से नजात बख़्शती है। और इस का नाम दाफ़ेआ और क़اج़िया भी है क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले से हर बुराई को दूर कर देती है और उस की हर हाजत पूरी करती है, जिस शख्स ने इस की तिलावत की येह उस के लिये 20 हज़ के बराबर है और जिस ने इस को सुना उस के लिये **آلِلَّاهُ** तआला की राह में एक हज़ार दीनार ख़र्च करने के बराबर है और जिस ने इस को लिखा फिर इसे पिया तो उस के पेट में हज़ार दवाएं, हज़ार नूर, हज़ार यक़ीन, हज़ार बरकतें और हज़ार रहमतें, दाखिल होंगी और इस से हर धोका और बीमारी निकाल देती है।

(كتاب الانذار، كتاب الانذار، قسم الاقوال، سورة يس، ج ١، الجزء الاول، ص ٢٩٣، الحديث: ٢١٨٣)

شہید کی مaut

(4).... رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے رি঵ايت है कि हुज़रे अकरम, रसूले मोहूतशम, शाहे बनी **آدم** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهُ وَسَلَّمَ हैं अशक़ش : مَذَمَّةً لِلْمُؤْمِنِينَ أَنَّ الْمَذْمُومَاتِ لِلْمُؤْمِنِينَ

نے فرمایا : جو شاخس हमेशा हर रात सूरए यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह शहीद मरेगा ।

(المعجم الاوسط، بقية ذكر من اسمه محمد، ج ٥، ص ١٨٨، الحديث: ٢٠١٨)

तमाम हाजात पूरी हों

(5)..... हज़रते सच्चिदुना अतः बिन अबू रबाह ताबेर्इ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِي
से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, सुरुरे कल्बो सीना نَبِيُّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ
में सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम हाजात पूरी कर दी जाएंगी ।

(سنن الدارمي، كتاب فضائل القرآن، باب في فضل سورة طه ويس، ص ١٠٣٥، الحديث: ٢٣١٩)

साबिकः गुनाह मुआफः

(6)..... हज़रते सच्चिदुना मा'क़िल बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار
से रिवायत है कि बेशक हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक نَبِيُّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ
रिज़ा के लिये इस सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस के पहले के गुनाह बछशा दिये जाएंगे, तो तुम इस की तिलावत अपने मरने वालों के पास करो ।

(شعب الایمان، باب في تعظيم القرآن، فصل في فضائل السور والآيات، ج ٢، ص ٢٧٩، الحديث: ٢٣٥٨)

نज़د़ में आसानी

(7).... हृज़रते सच्चिदुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه سے रिवायत है कि हुजूरे अकरम, शाहे बनी आदम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूरए यासीन तिलावत की जाती है । **अल्लाह** तबारक व तभ़ाला उस पर (उस की रुह कब्ज़ करने में) नर्मी फ़रमाता है ।

(كتاب الموت، قسم الأقوال، ج ٨، الجزء الخامس عشر، ص ٢٣٠، الحديث: ٢٩١٧٢)

मण्डिरित का इन्द्राम

(8).... हृज़रते सच्चिदुना अबू क़लाबा رحمة الله تعالى عليه سے रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की मण्डिरित हो जाएगी और जिस ने भूक की ह़ालत में पढ़ी वोह शिकम सैर हो जाएगा और जिस ने रास्ता भूल जाने की ह़ालत में पढ़ी वोह रहनुमाई पा लेगा और जिस ने किसी चीज़ के गुम होने पर इस की तिलावत की तो उसे गुमशुदा चीज़ मिल जाएगी और जिस ने खाने पर उस के कम होने के खौफ़ से तिलावत की तो वोह उसे किफ़ायत करेगा और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर नर्मी फ़रमाएगा जिस ने किसी औरत के पास उस के बच्चे की विलादत की दुश्वारी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर आसानी होगी और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने ग्यारह मरतबा

کوئی اُنے پاک کی تیلماوات کی اور ہر چیز کے لیے دل ہے
اور کوئی آن کا دل سوڑے یاسین ہے ।

(شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والآیات، ج ۲، ص ۳۸۱، الحدیث: ۲۴۶)

دِل نَرْم होथा !

(9)..... ہجراۃ سعیدونا ابُو جا'فِر مُحَمَّد بْن ابْلَيی سے ریوایت ہے، فرماتے ہیں : جو شاکھ اپنے دل مें یس وَالْقُرْآنُ الْحَكِيمَ سے لیخے، فیر اسے پی جائے । (الرجوعُ السَّابِقُ، ص ۳۸۲، الحدیث: ۲۴۱)

ہر حرف کے بدلے مثاہفِ رُتْ

(10).... امام الرسل موسی بن جعفر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ریوایت ہے کہ سارکارے مادینا، راہتے کلبہ سینا، ساہبے مُعُٹر پسینا، بائیسے نو جزو لے سکینا، واپسی کے لئے جس نے ہر جماعت کو اپنے والیدین، دونوں یا اک کو کبر کی جیوارت کی اور سوڑے یاسین کی تیلماوات کی تو **اللّٰهُ عَزٌوجَلٌ** عسکریہ کی بخشش و مگفیرت فرمادے ।

(کنز العمال، کتاب النکاح، قسم الاقوال، ج ۸، الجزء السادس عشر، ص ۹۵، الحدیث: ۲۴۷)

(کبر کی جیوارت کا ہوکم مار्दوں کے لیے ہے । اسلامی بہنوں کو کبھی سلطان جانا مनع ہے گھر پر ہی تیلماوات فرمادے اس کا شوابہ والیدین کو ایساں کر دئے ।)

अङ्गीम सङ्घादत

(11)..... हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका^{رضي الله تعالى عنها} से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना^{صلى الله تعالى عليه وآله وسَلَّمَ} ने फ़रमाया : “कुरआने हकीम में एक सूरत है जिसे **अल्लाह** के हां अङ्गीम कहा जाता है, इस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** के हां शरीफ़ कहा जाता है, कियामत के रोज़ रबीआ और मज़र कबाइल से भी ज़ाइद अफ़राद के हक़ में इस के पढ़ने वाले की शफ़ाअत कबूल की जाएगी, वोह सूरए यासीन है ।”

(جمع الجواب، قسم الاقوال، حرف القاف، المُحلِّي بِأَلْ مِنْ هَذَا الْحُرْفِ، ج ٥، ص ٣٨، حدیث ١٥٥٢)

बरकते यासीन

(12)....दा'वते इस्लामी के इशाअंती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्कूआ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जनती ज़ेवर” सफ़हा 595 पर शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी^{عليه رحمة الله القوي} नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सूरए यासीन पढ़े इस में बीस बरकतें हैं : 《1》.....भूका आदमी इस को पढ़े तो आसूदा किया जाए । 《2》.....प्यासा पढ़े तो सैराब किया जाए । 《3》.....नंगा पढ़े तो लिबास मिले । 《4》.....मर्द वे औरत वाला पढ़े तो जल्द उस की शादी हो जाए ।

﴿۵﴾..... اُرط بے شوہر والی پढے تو جلد شادی ہو جائے ।

﴿۶﴾..... بیمار پढے تو شیفہ پاۓ । ﴿۷﴾..... کہدی پढے تو ریہا ہو جائے ।

﴿۸﴾..... موسا فیر پढے تو سفار میں **آلہ عزوجل** کی

تاریخ سے مدد ہو । ﴿۹﴾..... گمگین پढے تو اس کا رنجو گم دُور ہو جائے ।

﴿۱۰﴾..... جس کی کوئی چیज گوم ہو گई ہو وہ پढے

تو جو خویا ہے وہ میل جائے । سُورَةِ يَا سَيِّدَنَا

سَلَمٌ قُوْلًا مِّنْ رَبِّنَا حَمْدُهُ (۱۴۶۹) یہ سے (۵۸: ۲۳) پ

بَار پढے جس مکہ سے پढے گے مُراد پُوری ہو گی،

خواجہ دیربی لی�تے ہیں : یہ مُرجَّب ہے । اُرط

سَلَمٌ قُوْلًا مِّنْ رَبِّنَا حَمْدُهُ (۱۴۶۹) یہ سے (۵۸: ۲۳) پ

لی� کر تا' چیز بآندھے تو ہبادیشات اُرط و گیرا سے

ہیکجا جت رہے گی । جو شاخ سُبھ کو سُورَةِ يَا سَيِّدَنَا

پُورا دین اُچھا گوچے رہے گی اُرط اس کو پढے گا اس کا

پُورا رات اُچھی گوچے رہے گی । ہدیہ شریف میں ہے کہ

یا سَيِّدَنَا کو کوئی کام نہیں کرے گی ।

(جناتی جے ور، س. 594)

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَمِيْدِ !

مُلک کے تین ہوشیروں کی نیشنل سے

سُورَةِ مُلک کے ۳ فَجَادِل

﴿۱﴾..... ہبادت سُلیمان اُبُدُللاہ بین مسکونی

فرماتے ہیں : “جب بند کبر میں جائے گا تو (اُبادت) اس کے

کہدھوں کی جانیب سے آएگا تو اس کے کھدم کہوں گے تیرے لیے میری ترک سے کوئی راستا نہیں کیونکہ یہ میرے ساتھ خडھے ہو کر سوڑا ملک پढھا کرتا تھا، فیر (اُجڑا ب) اس کے سینے یا پستان کی ترک سے آएگا تو وہ کہے گا کہ تुمھارے لیے میری جانیب سے کوئی راستا نہیں کیونکہ یہ میرے ساتھ سوڑا ملک پढھا کرتا تھا । فیر وہ اس کے سر کی ترک سے آएگا تو سر کہے گا کہ تुمھارے لیے میری ترک سے کوئی راستا نہیں کیونکہ یہ میرے ساتھ سوڑا ملک پढھا کرتا تھا । ” پس یہ سوڑت روکنے والی ہے، اُجڑا ب کہ سے بچاتی ہے، تیرات میں اس کا نام سوڑا ملک ہے ।

(المُسْتَرِكَ عَلَى الصَّحِيحَيْنِ الْكَافِمَ، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الْمَلَک ج ۳، ص ۲۲۱، حدیث ۳۸۹۲)

بےدھاری تکھی فضاحت

(2)..... ہجڑتے ساییدوں اُبُدُللاہ بین اُبُو اس فرماتے ہیں کہ میठے میठے آکھا مکھی مدنی مُسٹفَا نے ایرشاد فرمایا : بےشک میں کورآن میں ایک سوڑت پاتا ہوں اس کی 30 آیات ہیں جو شاخس سوتے وکھت اس (سوڑت) کی تیلابت کرے، اس کے لیے 30 نئکیاں لیخی جائے گی اور اس کے 30 گناہ میتاں جائے گے اور اس کے 30 درجات بولند کیے جائے گے، **اُبُللاہ** ربوہ ایڈجڑت اپنے فیرشتوں میں سے اک فیرشتہ اس کی ترک بھے جے گا جو اس پر اپنے پر بیٹھا دے گا اور جانے تک ہر چیز سے اس کی فضاحت کرے گا

और ये ह मुजादला (या'नी झगड़ा) करने वाली है अपने पढ़ने वाले की माफिरत के लिये कब्र में झगड़ा करेगी और ये ह “تَبَارَكَ الَّذِي بَيْدَهُ الْمُلْكُ” है।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة مع النون، ج ٣، ص ٢٣٠، الحديث: ٨٢٧)

نजات دیلانے والی

(3)..... हज़रत सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنهما ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक हृदीष तोहफे के तौर पर न दूँ जिस के साथ तू खुश हो जाए, उस ने अर्ज़ की : बेशक । तो आप رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : ये ह सूरत पढ़ो “تَبَارَكَ الَّذِي بَيْدَهُ الْمُلْكُ” और ये ह सूरत अपने अहलो इयाल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की उन्हें ता'लीम दो) क्यूंकि ये ह नजات दिलाने वाली है और कियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब्ब के पास झगड़ने वाली है और ये ह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अज़ाब से नजات दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अज़ाबे कब्र से नजات पा जाएगा ।

(الدر المغير، پ ٢٩، سورۃ الملک، ج ٨٣)

مَا مُولِئِ ۝ ۝ ۝

س ر ک ا رے م دی ن ا ئ م ن ب و را ، س ر د ا رے م ک ک ا ئ م ک ر م ا

उ س و ک ت ت ک آ را م ن ف ر م ا تے ج ب ت ک تی ل ا و ت ن ف ر م ا ل تے ।

“تَبَارَكَ الَّذِي بَيْدَهُ الْمُلْكُ” اُور الْمِنْزِيل

(الادب المفرد، باب ما يقول اذا اوى الى فراش، ج ٣٥٣، الحديث: ١٢٠)

صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آله و سلم
 آللہمَّ لِلَّهِ عَزَّوَجْلُ
 آپ نے مुلاہڑا فرمایا کि رسولِ علیہ السلام
 هر رات سو رے ملک کی تیلابت فرمایا کرتے،
 شیخوں تھریکت، امریروں اہلے سونت، بانیوں دا'�تے
 حجرا تے اعلیٰ مسلمانوں بیلال مسیح دیلیساں اعلیٰ
 کاری دیری رجھی دامت برکاتہم العالیہ کے اسلامی بہنوں کو اعلیٰ کردا
 63 مدنی اسلامیت میں سے مدنی اسلام نمبر 3 میں ہے کि "کیا
 آج آپ نے نماج پنجگانہ کے با'د نیج سوتے وکٹ کم اج
 کم اک بار آیاتوں کو کریں، سو رے ایکلیساں اور تسبیھ فاتیما
 پڑی؟ نیج رات میں سو رے ملک پڑی یا سون لی؟"⁽¹⁾

پیاری پیاری اسلامی بہنو! دेखا آپ نے! امریروں
 اہلے سونت نے کامیابی کی تھی اسی ترکیب
 کرنا رہے ہیں۔ یہ مدنی اسلامیت نے کامیابی کی تھی اسی
 اگر ہم روئانا فیکر مددیں کرنے میں کامیاب ہو گیں تو
 ہمارے دل میں گناہوں سے نفرت پیدا ہونے کے ساتھ ساتھ
 کامیابی کی خیالیں ہوں گی۔ جیسا کی ہدیت پاک میں ہے
 (آیتیں کے میں میں) گھر گاؤں فیکر کرنا 60 سال
 کی ایجاد سے بہتر ہے۔

(الْجَامِعُ الصَّفِيرُ لِلسُّلْطُوْطِيِّ مَعَ فَيْضِ الْقَدِيرِ، حِرْفُ الْفَاءِ، جِءَ، صِ ۱۰۸۲، حِدِيْثُ ۱۹۷)

(1) اسلامی بہنوں ہی جو نیفاس کے ایام میں کوئی آنے پاک کی تیلابت
 ن کرے۔

دُعاؤں اُندر

مادنیِٰ انعامات کی اُمیلات کے لیے امریِٰ اہلے سُنّت دامت برکاتہم العالیہ کی دُعا بھی ہے । فرماتے ہیں : “**يَا أَللَّاهُ**
 جو تیری ریضا کے لیے مادنیِٰ انعامات پر اُمّل کر کے روزگارنا اس رسالے مें دیے گئے خانے پور کر کے هر ماہ اپنی جعلیٰ مुشاوارت جیمیڈار کو جامع کرवائے تو ہے اس کے اُمّل مें ایسٹکامت اُतا فرماء کر اس کو اپنی مکبول بندی بنالے ।”

تُو وَلَيْ اَنْتَ بَنَا لَهُ عَسْكَرَ لَمَّا يَجْزُلُ

مادنیِٰ انعامات پر کرتا ہے جو کوئی اُمّل

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

“بَارِحِدُو” کے چار ہوشِ فرشتے نیست
کوکلیم اُتھی برا کے 4 فوجاً حمل

(1)..... خوش نسیب کوئی ؟

ہجڑتے ساییدونا ابُو ہُرَيْرَةَ سے ریوایت ہے،
 انہوں نے اُرجُع کی : یا رَسُولُ اللَّهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کی فیضات کے
 دین آپ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کی شفافیت سے بھرا مند ہونے والے
 خوش نسیب لوگ کوئی ہوئے ؟ فرمایا : اے ابُو ہُرَيْرَةَ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ)
 میرا گومان یہی تھا کہ تُو مُسیٰ سے پہلے مُسیٰ سے یہ بات کوئی ن

پूछेगा ک्यूंकि मैं हृदीष सुनने के मुआमले में तुम्हारी हिस्स को
जानता हूँ, कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत पाने वाला खुश नसीब
वोह होगा जो सिद्धूँके दिल से لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहेगा ।

(صَحِيْحُ البُخَارِيِّ، كِتَابُ الْعِلْمِ، بَابُ الْحَرْصِ عَلَى الْحَدِيثِ، ص ١٠٠، الحدیث: ٩٩)

(2)..... اپْجَلِ جِبْرِيلٍ دُعَاءً

ہज़रतے ساییڈوں نا جا بیر رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فَرماतے ہیں : مैं ने
شہنشاہ مदینا, کراڑے ک़ل्बो सीना, ساہِبِ مُعْتَر پسीना,
بَاىشے نُجُولے سکीनا, فِئْرَاجِ گَنْجَيْنَا کो فَرماतے ہوئے^{صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ}
سुना : سب سے اپْجَلِ جِبْرِيلٍ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ اُور سب سے اپْجَلِ
دُعَاءً (سُئَلَ ابْنُ مَاجِدٍ، كِتَابُ الْأَدْبِ، بَابُ فَضْلِ الْحَادِيرَيْنِ، ص ١٦٠، الحدیث: ٣٨٠٠)

(3)..... آسمانوں کے دروازے خول جاتے ہیں

ہجَّرَتِ ساییڈوں ابُو هُرَيْرَةَ سے رِوَايَتٌ ہے
کि نور کے پैکر, تماام نبیوں کے سرવर, دو جہاں کے تاجوار,
سُلْطَانِ بَهْرَوَرَ بَارِ نے اِرْشَادِ فَرما�ا : جِس
بَنْدَے نے اِخْلَاسَ کے سَاتِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ کہا تو آسمانوں کے
دروازے خول دیے جاتے ہیں, يہاں تک کि ووہ کلیما اُرْش تک
پہنچ جاتا ہے جب کि کبیرا گُنَاهوں سے بچتا رہے ।

(سُئَلَ الْبَرْمَذِيُّ، أَحَادِيثُ شَفَّعِيِّ، بَابُ دُعَاءِ اَمْ سَلَّمَ، ص ٨٢٠، الحدیث: ٣٥٩٠)

(4).... تजدیدِ إيمان

ہجڑتے سایدی دُننا بَوْبُوْ هُرَرَا سے ریوایت ہے کہ
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ سایدی دُننا بَوْبُوْ هُرَرَا مُبَالِلِ گُریں، رَحْمَتُ اللَّهِ الْعَالِيِّ وَالْوَسِّعِ اَلَّا لِمَنْ يَنْهَا نے فرمایا : اپنے إيمان کی تجدید کرو । اُرجُع کیا گیا :
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ ! ہم اپنے إيمان کی تجدید کaise کرو ؟ فرمایا : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ کثیرت سے پढ़و ।

(مسند احمد، مندرجہ حریرہ، ج ۳، ص ۹۲، الحدیث: ۸۹۲۲)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ ! صَلُّوْ عَلَى الْحَبِيبِ !

جہنمی مریجِ تندوسرت ہو گیا !

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنونو ! یہ فوجاً ایل و بارکات پढ़ کر آپ کا بھی جہن بنانا ہوگا کہ ہمें بھی تیلابوتے کور آن کرنی چاہیے، جیکو تو رُسُد میں اپنے اور کاٹا گھار نے چاہیے مگر جیسے کیتاب پढ़ کر فُریخ ہونے گے تو ہماری کافیٰ فیضیت دوبارا تبدیل ہونا شروع ہو جائے گی اور شہادت ہم پر اس کدر وار کرے گا کہ شاہد ہم میں سے بآج تھے اور جسیں ہم پر اُمَّال کرنے سے مہرُّم رہے ہیں । نئکیوں پر اسٹیکامت پانے کے لیے نئکیوں برا ماحول بहت جڑکری ہے اور یہ نے مات ہمے دا'ватے اسلامی کی سُورت میں مُعوسس رہے ہے । دا'ватے اسلامی کے مدنی ماحول کی بارکتوں کے کیا کہنے ! اس بارکتوں کو لٹونے کی اُدادت بنانے کے لیے آپ بھی دا'ватے اسلامی کے سُونتوں برے ایجادیما اُت میں شرکت کی ساڈا دت ہاسیل کیجیے ।

شانے خواہیں جنات (رضی اللہ عنہا) خواہیں جنات کو پریشانی بخوبی

آنے شاء اللہ عزوجلٰ آسیکھر کی بے شumar برکات کے ساتھ ساتھ آپ کے مسایل بھی ہر رات انگوچ تر پر ہل ہونگے اور **اعلیٰ** عزوجلٰ کے فضل کرم سے گئی بی امداد دین ہونگی، چنانچہ کھرورد پککا (پنجاب، پاکستان) کی ایک اسلامی بہن کے تھریری بیان کا خالصہ ہے کہ میرے ٹوٹے بارے گھر لئے ناچارکیوں، تانگ دستیوں وغیرا پرےشانیوں کے سبب موسالسل تہذیب (یا' نی جہنی دباؤ) میں مुکتلا رہنے کی وجہ سے رفتہ رفتہ جہنی مریج بن گا اور اور ڈل فل بکتے رہتے ہے، یہاں تک کہ عاذ اللہ اپنے ہاثوں اپنی جان لئے اور خود کوشی کے بارے میں سوچنے لگے ہے۔ میں اس کی حالت پر بड़ا ترس آتا مگر میں اک بے بس ایسا کیا کر سکتی ہیں۔ میں پہلے ہی سے دا' ہوتے اسلامی کے سمعنتوں برے اجازت میں شرکت کرتی ہیں، وہاں میں نے بارے جان کی سیہوت یادی کے لیے گرد-گرد کر دیا مانگنی شروع کر دی۔ کوئی ہی اسرائیل گھر ہے کہ میرے بارے بارے میں شفیع احمد عزوجلٰ نے شفیع احمد عزوجلٰ اب وہ اپنی اور اب بھی کی ایجاد اور اس کا اہمیت رکھنے کے باہم اس کی ایجاد کے تاریخی کوئے ہیں۔ (پرہنے کے بارے میں سوال جواب، ص 195)

اٹھا اے ہبیبے خدا مدنی ماحول ہے فیضانے گئے رضا مدنی ماحول
اگر سمعنتوں سیخنے کا ہے جذبا تریم آ جاؤ دے گا سیخا مدنی ماحول
بُری سوہبتوں سے کنارا کشی کر کے اُنھوں کے پاس آ کے پا مدنی ماحول
سُنْبَر جائے گی آسیکھر اِنْ شاء اللہ عزوجلٰ تریم اپناء رخو سدا مدنی ماحول

(واسیلے بخششہ اج اپنے اہل سمعنات سے ص 604)

پ्यारी پ्यारी اسلامی بہنو! آپ نے خاطونے جنات رضي الله تعالى عنها کے وسالے با کمال کے بارے مें پढ़ा । **اَللّٰهُمَّ** عَزٌّ وَجَلٌ हमें اسلام पर जिन्दा रखे ईमान पर मौत अंता फ़रमाए । बहुत सारे दुन्या में कुफ़ر पर जिन्दा रहेंगे कुफ़ر पर मरेंगे । बहुत से لوग اسلام पर जिन्दा रहेंगे इسلام पर मरेंगे । बहुत से कुफ़ر पर जिन्दा रहेंगे मगर مرنे से पहले इسلام कबूल कर के जाएंगे । जी हाँ ! दा'वते اسلامी का एक मदनी क़ाफ़िला केन्या गया और वहां एक गैर مुस्लिम जो कि हॉस्पिटल (**Hospital**) में था اسلامी भाइयों ने जा कर इनफिरादी कोशिश की तो उस ने इسلام कबूल कर लिया और इسلام कबूल करने के तकरीबन **45** मिनट बा'द उस का इन्तिकाल हो गया । सारी जिन्दगी कुफ़ر पर रहा मगर मौत से कब्ल इسلام कबूल कर के दुन्या से रुख़सत हुवा । और बहुत सारे बद نसीब ऐसे भी होंगे जो इسلام पर जिन्दा रहेंगे कुफ़ر पर मरेंगे । **اَللّٰهُمَّ** عَزٌّ وَجَلٌ خاطونے جنات رضي الله تعالى عنها के سदके हमारा ईमान سلامت रखे ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
بَيْانِ رَحْمَةِ اللّٰهِ الْقَوِيِّ
کیا کرتے�ے کی جس کا خاتیما لَإِلٰهٌ إِلَّا هُوَ
داخیلے جنات होगा فیر روتे हुए کہتےथے : میرے لیے کौन
ज़مانت دेता है कि मेरा خاتिमا لَإِلٰهٌ إِلَّا هُوَ पर होगा ?

(تَبَيِّنُ الْمُغْتَرِّينَ، الْبَابُ الْثَالِثُ فِي جَمِيلِ الْأَخْلَاقِ، شَدَّةُ خَوْفِهِمْ مِنْ سُوءِ الْخَاتَمَةِ، ص ۱۳۶)

اَللّٰهُمَّ عَزٌّ وَجَلٌ हमारा ईमान سلامت रखे ।

امین بجاہ البی اَمِينٌ بِجَاهِ الْبَیِّ اَمِينٌ بِجَاهِ الْبَیِّ اَمِينٌ بِجَاهِ الْبَیِّ اَمِينٌ بِجَاهِ الْبَیِّ اَمِينٌ بِجَاهِ الْبَیِّ

مُسْلِمًا هُوَ الْأَتَّارُ تَرِي أَتَّا سے

ہو إيمان پر خاتماً يا إلهاي !

(بساۓلے بخیاش اجڑ امریئے اہلے سُننَت س. 78) دامت برکاتہم العالیہ

تَبَلِّيْغِ کُورآنِ کریم کی سُننَت کی آمَالِ مَهْمَةَ گیر جو اسلامیت کے مَحَکَمَاتِ مَدْنَی مَاهِل میں ب کَسْرَت سُننَتِ سَیِّدِنَا اور سِیِّدِ عَبْدِنَا کے ساتھ شرکت اور رَوْجَانَا فِیْکِ مَدْنَیِنَا کے جَرِیْبِ مَدْنَیِنَا اِنْعَمَّا مَات کا رِسَالَة پُور کر کے اپنے یہاں کی جِمِّیْدَارِ کو جَمْعَ کر وَانَّهُ کا مَأْمُول بَنَا لَیِّذِیْجَیے اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ اس کی بَرَکَت سے پَابَندِ سُننَت بَنَنے، گُنَاحَوْنَ سے نَفْرَت کر نے اور إيمان کی حِفَاظَة کے لیے کُوڈَنے کا جَهَنَّمَ بنے گا । هر اسلامی بَهَنَ اپنَا یہ مَدْنَیِنَا جَهَنَّمَ بنائے کیا “مُعْذِّبِ اپنی اور ساری دُنْیَا کے لَوْگَوْں کی اسلاماَہُ کی کوَشِش کرنی ہے ।” اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ !

اپنی اسلاماَہُ کی کوَشِش کے لیے مَدْنَیِنَا اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ اپنے مَهْمَمَات پر اُمَل اور ساری دُنْیَا کے لَوْگَوْں کی اسلاماَہُ کی کوَشِش کے لیے اپنے مَهَارِم کو، جن کی ڈسپر 22 سال یا اس سے زیادا ہے “مَدْنَیِنَا کَافِلُوْنَ” میں سَفَر کر وَانَا ہے اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ !

أَلْحَدْدِيلُ بِرَبِّ الْعَلَيْنَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْبَرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبِيسِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“ਮੁझے ਛਾਵਣੇ ਵਾਲੇ ਇਸਲਾਮੀ ਥੋੜਾ ਪਾਹਾਰ ਹੈ” ਕੇ ਬਾਈਸ ਹੁਣਫ਼ ਕੀ ਨਿਖਤ ਸੇ ਦਰੱਸ ਫੈਜਾਨੇ ਸੁਨਨਾ ਕੇ 22 ਮਦਨੀ ਫੂਲ

《1》..... ਫਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ : “ਜੋ ਸ਼ਾਖ਼ ਮੇਰੀ
ਉਮਤ ਤਕ ਕੋਈ ਇਸਲਾਮੀ ਬਾਤ ਪਹੁੰਚਾਏ ਤਾਕਿ ਉਸ ਸੇ ਸੁਨਨਾ
ਕਾਇਮ ਕੀ ਜਾਏ ਯਾ ਉਸ ਸੇ ਬਦ ਮਜ਼ਹਬੀ ਦੂਰ ਕੀ ਜਾਏ ਤੋ ਵੋਹ
ਜਨਤੀ ਹੈ ।” (جُلُّيَّةُ الْأُولَيَاءِ، ج ۱، ص ۲۵، رقم: ۱۲۳۶۶)

《2》..... ਸਰਕਾਰੇ ਮਦੀਨਾ : “ਅਲਲਾਹ عَزَّ وَجَلَّ ਉਸ ਕੋ ਤਰੋ ਤਾਜ਼ਾ ਰਖੋ ਜੋ ਮੇਰੀ ਹ੍ਰਦੀ਷ ਕੋ ਸੁਨੇ,
ਧਾਰ ਰਖੋ ਅਤੇ ਦੂਸਰੋਂ ਤਕ ਪਹੁੰਚਾਏ ।” (سنن الترمذی، ج ۲، ص ۲۹۸، الحدیث: ۲۲۱۵)

《3》..... ਹਜ਼ਰਤ ਸਾਈਦੁਨਾ ਇਦਰੀਸ ਕੇ ਨਾਮੇ
ਮੁਬਾਰਕ ਕੀ ਏਕ ਹਿਕਮਤ ਯੇਹ ਭੀ ਹੈ ਕਿ ਕੁਤੁਬੇ ਇਲਾਹਿਯਾ ਕੀ
ਕਥਰਤੇ ਦਰਸ ਵ ਤਦਰੀਸ ਕੇ ਬਾਇਥ ਆਪ ਕਾ ਨਾਮ
ਇਦਰੀਸ ਹੁਵਾ । (تَفَسِيرٌ كَبِيرٌ، ج ۷، ص ۵۵۰، تَفَسِيرُ الْحَسَنَاتِ ج ۲، ص ۲۸)

《4》..... ਹੁਜ਼ਰੇ ਗੈਬੇ ਪਾਕ : “رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
‘ਧਾ’ਨੀ ਮੈਂ ਨੇ ਇਲਮ ਕਾ ਦਰਸ ਲਿਆ ਯਹਾਂ ਤਕ ਕਿ
ਮਕਾਮੇ ਕੁਤਬਿਕਾਵ ਪਰ ਫਾਇਜ਼ ਹੋ ਗਿਆ ।” (قصیدۃ غوثیہ)

《5》..... ਫੈਜਾਨੇ ਸੁਨਨਾ ਦਰਸ ਦੇਨਾ ਭੀ ਦਾਵਤੇ ਇਸਲਾਮੀ ਕਾ ਏਕ
ਮਦਨੀ ਕਾਮ ਹੈ । ਘਰ, ਮਸ਼ਿਦ, ਦੁਕਾਨ, ਸਕੂਲ, ਕੌਲੋਜ, ਚੌਕ ਵਾਂਗ
ਮੈਂ ਵਕਤ ਮੁਕਰਰ ਕਰ ਕੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦਰਸ ਕੇ ਜ਼ਰੀਏ ਖੂਬ ਖੂਬ ਸੁਨਨਾਂ ਕੇ
ਮਦਨੀ ਫੂਲ ਲੁਟਾਇਏ ਅਤੇ ਢੇਰੋਂ ਘਵਾਬ ਕਮਾਇਏ ।

﴿٦﴾ فَإِذَا نَسِيْنَ سُونَنَتَ سَرِّ رَوْجَانَةِ كَمْ أَجْرَ كَمْ دَرْسَ دَنَةِ يَا سُونَنَةِ كَيْفَيَةِ سَعْنَانَتِ سَرِّ حَادِثَاتِ حَاسِلَةِ كَيْفِيَةِ دَرِسَنَةِ । (इन दो में एक “घर दर्स” ज़रूर हो)

﴿٧﴾ پارह 28 सूरतुत्तहरीम की छठी आयत में इरशाद होता है :

يَا إِيَّاهَا الَّذِينَ أَمْسَأْقُوا النَّفْسَكُمْ
وَأَهْلِيْكُمْ نَارًا وَأَقْوُدُهَا لَنَّا سُ
وَالْحَجَاجُ

تَرْجِمَةِ كَنْجُولِ إِيمَانٌ : ऐ ईमान
वालो ! अपनी जानों और अपने घर
वालों को उस आग से बचाओ जिस
के ईंधन आदमी और पथर हैं ।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ फैज़ाने सुन्नत का दर्स भी है ।

(दर्स के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या मदनी मुज़ाकरे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

﴿٨﴾ ج़िम्मेदार घड़ी का वक्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौक दर्स का एहतिमाम करें । मषलन रात 9 बजे मदीना चौक (साढ़े नव बजे) बग़ुदादी चौक में वग़ैरा । छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये । (मगर हुक्कूके आम्मा तलफ़ न हों मषलन आप की वजह से मुसलमानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

﴿٩﴾ दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें ।

﴿10﴾.... درس والی نماجٰ ٹسی مسجد کی پہلی سفڑ مें تکبیرے چللا کے ساتھ با جماعت ادا فرمائیے ।

﴿11﴾.... مہرہاب سے ہٹ کر (سہن وگرے میں) کوئی اسی جگہ درس کے لیے مakhṣus کر لیجیے جہاں دیگر نمازیوں اور تیلابات کرنے والوں کو دعویاری نہ ہو ।

﴿12﴾.... جعلی مساجد کے نیگران کو چاہیے کہ اپنی مسجد میں دو خیر خواہ مسکر رکھے جو درس (بیان) کے ماؤک اپر جانے والوں کو نرمی سے روکے اور سب کو کریب کریب بیٹھاں ।

﴿13﴾.... پردے میں پردا کیے دو جانوں بیٹھ کر درس دیجیے । اگر سुننے والے جیسا دا ہونے تو خडے ہو کر یا مارک پر دینے میں بھی ہرج نہیں جب کہ کسی بھی نمازی یا تیلابات کرنے والے وگرے کو تشویش نہ ہو ।

﴿14﴾.... آواجٰ نہ تو جیسا دا بولند ہو اور نہیں بیلکل آہیستا، ہتھلے ایمکان ایتنی آواجٰ سے درس دیجیے کہ سرپھر ہاجرین سुن سکے । اس بات کی ہمسہ اہمیت فرمائیے کہ درس و بیان کی آواجٰ سے کسی سوئے ہوئے یا کسی نمازی یا مساجد میں تیلابات وگرے کو تکلیف نہ ہو ।

﴿15﴾.... درس ہمسہ ٹھہر ٹھہر کر اور ڈیمے انداجٰ میں دیجیے ।

﴿16﴾.... جو کوچ درس دینا ہے پہلے اس کا کم اجٰ کم اک بار موتالا کر لیجیے تاکہ گل تیار نہ ہو ।

﴿17﴾.... فیضانے سونت کے مورب الفاظ ار رک کے موتا بیک ہی ادا کیجیے اس ترہ ﴿اَنْشَاءُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ﴾ تلطف کی دوسرست اداए گی کی ایجادت بنے گی ।

﴿18﴾.... ہمدو سلات، دوسردو سلات کے دونوں سینے، آئتے دوسرد اور ایکٹاتامی آیات وغیرا کیسی سونی اعلیٰ یا کاری کو جریساً سمعاً دیجیے۔ ایسی تراہ اُر بی دعا اُن وغیرا جب تک ڈالما اَہل سمعنات کو ن سمعاً لے اُنکے میں بھی ن پढھا کرے۔

﴿19﴾.... فیڈرے سمعنات کے ایلاتا دا' وہ ایسلا می کے ایشا اُتھی ایدارے مکتب تعلیم مداری سے شاء اُن اُنے والے مداری رسا ایل سے بھی درس دے سکتے ہیں۔⁽¹⁾

﴿20﴾.... درس ماعِ ایکٹاتامی دعا سات مینٹ کے اندر اندر مکمل کر لیجیے۔

﴿21﴾.... ہر موباللگ کو چاہیے کہ وہ درس کا تریکھا، با'د کی ترگیب اور ایکٹاتامی دعا جبائنی یاد کر لے۔

﴿22﴾.... درس کے تریکے میں ایسلا می بھننے ہسپے جریساً ترمیم کر لے۔



تکبیر سے بچنے کی فوجی لط

ہujūr nabiyye pāk ﷺ نے ارشاد فرمایا :

“جو شاخ تکبیر، خیانات اور دین (یا'نی کرج وغیرا) سے باری ہو کر مرے گا وہ جنات میں دا خیل ہوگا ।”

(سنن الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث: ۸۷۵۱، ج: ۳، ص: ۸۰۲)

(1)..... اپنے اَہل سمعنات کے رسا ایل کے ایلاتا کیسی اور کتاب سے درس کی جا جاتی نہیں۔ مارکجی مراجیل سے شروع

تپسیلی فہریست

م杰امیں	سکھ نمبر	م杰امیں	سکھ نمبر
کیتاب کو پढ़نے کی 11 نیوتوں	5	islamی بہنوں کے لیے سیرت سالیہ اور عالمت	35
इजमالی فہریست	6	سیرت سالیہ	35
ال ماریت نو تلیمیہ کا تاخرا روک	7	بھرلو کام کا ج کرنے کے 11 فواد	37
پہلے اسے پڑھئے	9	خواستہ ہو تو اے سی!	39
(1) خاٹونے جنات کی شاہزادی اور جنم	13	بیوی فاطیمہ کے جنائز کا بھی پردہ	41
دُرُّ د شریف کی فوجیل	13	70 دن پورانی لاش	41
فیریشہ کی بیشتر براہ خاٹونے جنات	13	خاٹونے جنات کا ویساں بہ کمال	43
سیدنا فاطیمہ کا مुखنسر تاخرا روک	17	منکربتے خاٹونے جنات	43
ال کبا	18	(2) خاٹونے جنات کی کرامات	47
فاطیمہ کی وجہ تسمیہ	19	دُرُّ د شریف کی فوجیل	47
2 ال کبا کی وجہ تسمیہ	21	شاہی دا 'وٹ	47
(1) جہر (یا 'نی جنات کی کلمی)	21	کرامات ہنگ	52
(2) تاہیرا و جاکیا	21	کرامات کی تا ریف	53
فوجیلے بتوں ب جباؤ رہن	22	کورآن سے کرامات کا بعثت	53
(1) جو کوئی تری خوشی ہے بخدا کو گھنی اوریج	23	افجذلیل اولیا	57
(2) ہم کو ہے وہ پسند جیسے آئے تو پسند	23	"فاطیمہ" کے 5 ہنگ کی نسبت سے خانا	59
(3) جیگر گوشہ رہن	23	خیلانے کے فوجیلے پر مجنی 5 فاطیمہ موسیٰ	
تسبیہ موسیٰ	26	سایہ اور	61
سیدنا فاطیمہ رہیں فیر ہنس پڑی	27	شکمے مادر سے نیدا	61
10 فوجیلے فاطیمہ	29	خاٹونے جنات کی کرامات	63
تسبیہ فاطیمہ کی فوجیل	33	گیئے جلی مادر جاد بہ کرامات والی	63

مجزاً میں	سفہ نامہ	مجزاً میں	سفہ نامہ
بَ وَكْتُهُ وِيلادت فَجَزاً مُونَعَر	64	خَانا پکارتے وَكْتُهُ بَهی تِيلَادت	92
نِسْوانِيَ اَبْوارِيزِ جَسْ سَمْبَرَا	65	خُلُوٰنے جَنَّات کَی دُعَاءِ	93
بَرَكَتُهُ وَالِيَ سَمَرِی	66	دُعَاءِ کے 3 فَوَادِ	95
اَپَنَنِ دِيلَ کَی نِيَگَارِانِی کَرَتے رَهَو	68	دُعَاءِ مِنْ 4 سَأَدَاتِ	95
جَبَ دَرِيَادَهِ دِيلَالا اِسْلِيمِيَبَالَ کَے لِيلَيَهِ بَدَأ	69	“يَا هَبَّهُ” کَے چَارِ هُرُوفَ کَی نِسْبَت سے	96
دِيلَ کَی سُورَاخَ	71	4 مَدْنَیِ فُول	
(3) خُلُوٰنے جَنَّات کَا جُؤُکِهِ بَداَدَت	75	نَ جَانَهُ کُؤِن سَانِ سَانِاَهُ هَوَ گَيَا هَے ؟	97
دُرُلَدَ شَارِيَفَ کَی فَجَزِیَلَت	75	نَمَاجِنَ نَ پَدَنَنَا تَوَ گَوَيَا کَوَدِيَ خَلَتَا هَیِ نَهَیِ !!!	97
سَمِيَدَهِ فَاتِیَمَا کَا جُؤُکِهِ نَمَاجِن	76	کَبُلِیَمَتِهِ دُعَاءِ مِنْ جَلَّدِیِ نَ کَرَهِ !	98
نَمَاجِنَ کَی بَرَكَتِهِ	77	پَذِئِسِیَوَهِ کَی خَلَرِ خَلَاهِ	101
بَهِ نَمَاجِنَ کَی دَرَنَاقَ اَنْجَام	79	پَذِئِسِیَوَهِ کَے دُوكُوك	102
“مُسْتَفَاهُ” کَے پَانِچِ هُرُوفَ کَی نِسْبَت سے تَرَکَه	80	10 چَيِّزِ جُلَمَ سَهِ هَے	103
نَمَاجِنَ کَی وَرَدَدَهِ پَرِ مُوَسَّتَمِيلِ 5 فَضَارِمَنِ مُسْتَفَاه		پَذِئِسِیَوَهِ کَا هَكَ کَيَا هَے ؟	104
شَرِیدَهِ جَنَّهِیَهِ هَلَلتَهِ مَنِ نَمَاجِن	82	کِيتَنَهُ بَهِرِ پَذِئِسِیَوَهِ مَنِ دَخِیَلَ هَے ؟	105
بَیِمَارِیَهِ وَ كُولِفَتَهِ کَے بَآهِ بَعْدَ مَشَغُولَهِ بَداَدَت	82	(4) خُلُوٰنے جَنَّات کَا دَحْشَرِکِهِ بَسْطَل	113
مَسَرُوفِیَتِهِ مَنِ بَهی جِنِکِهِ رَبُوبِیَت	83	دُرُلَدَ شَارِيَفَ کَی فَجَزِیَلَت	113
شِيكَمَهِ مَادَرِ مَنِ هَیِ 18 پَارِهِ يَادَ کَرِ لِيلَه	84	هَمِ شَكَلَهِ مُسْتَفَاه	114
کُورَآنَهِ پَاكِ پَدَنَهِ کَا بَحَوَاب	84	کُوَدَرَتِیَهِ مُشَاهَبَهَت	116
بَهَتَرَینَ شَخَصَ	86	بَهَرُسْلِيَهِ بَهِ گَيَا !	117
کُورَآنَهِ شَفَاعَهِ اَبْتَهِ کَے جَنَّات مَنِ لَهِ جَاءَنَگا	86	اُبَرَتَوَهِ کَوَ مَدَنَنِیَهِ بَهِ بَنَانَا هَرَامَ هَے	117
اَلْعَالَهُ تَهَالَهِ کِيَامَتِ تَكَ اَنْجَ بَدَأَتَ رَهَهَا	87	کَفَنِ فَادِهِ کَرِ لَثَ بَئَثَتِي	119
دَهَلَهِ اِسْلَامِيَهِ کَے جَامِيَاتِهِ مَدَارِسِ کَی تَهَادَ	88	سَمِيَدَهِ فَاتِیَمَا کَے چَلَنَهِ کَا اَنْدَاجِ	121
نَهَدِ دُلَهِنِ بَداَدَت مَنِ بَهَانَ	89	اُبَرَتَ کَا مَءَكِ-اَپَ کَرَنَا کَسَا ؟	122

م杰ماں	سپھن نمبر	م杰ماں	سپھن نمبر
لیबاس کے باہر بوجوں نہیں	123	آکھا شہزادی کو نمازِ کے لیے بے دار کرتے	150
سخیدا فاطمہ کا اندازے گوپتھا	124	سدا امدادیں	151
آواج کا پردہ	125	میں نماز نہیں پڑتی شری	151
اُر رت پیر سے بات چیت کرے یا نہ?	126	(5) خاتونے جنگت کا یقیناً و سخاوت	157
پیر اور میری دنی کی فون پر بات چیت	126	دُرُّ دشمن کی فوجیلیت	157
ایسلامی بھرنے نا تے پڑے یا نہیں?	127	سادلین کی حاصل رواز	159
ایسلامی بھرنے مارک ایسٹ مال ن کروں	128	”ہوسن“ کے چار ہر سو فیض سے جیکر	160
اُر رت کے راج کی آواج	129	کردہ ہیکایت کے 4 مدنی فول	
بڑا مدار سے اک دوسری کو پوکارنا کہسا?	130	پہلا مدنی فول نج़ :	161
بچوں کو ڈانتنے کی آواج	130	نجَّ کیسے کہتے ہیں?	161
سدا کرتے سخیدا جوہرا	131	نجَّ کے بارے میں اہم ماں لوماٹ	161
سچ کی بركت	132	مُنْتَ کے بارے میں فرمائے ربوں یڈجُٹ	163
झوٹ کی نہ سوتے	134	مُنْتَ پوری کرنے والوں کی مدد سارا	164
باہا جان کی مسکن کو دے خ کر رونا	137	سدا بارے کی رمان مانا	165
اُر رت کا تناہ سفار کرنا کہسا?	142	کوئں سی مُنْتَ مانا جائے?	166
خاتونے جنگت کی ہجوں سے مہبوبت	143	ہجُر تے جُنُبِ بیانے جوہرا کی نجَّ	167
کنٹنی کا بچوں دان	143	نجَّ کے تین ہر سو فیض سے نجَّ کے	169
بڑا گاہے سوتھا میں مہبوبیت	145	مُنْتَلیک 3 اہمیتی مُباکرا	
جیگار گوشے رسم	147	بہارے شریعت کا سوتال آ کریجیے!	173
سکرے سوتھا کی ڈلیدا و ڈنٹیا	147	دوسرے مدنی فول سخاوت:	173
آپدے سوتھا پر اندازے ایسٹ کوال	148	دینے اسلام کی ڈلیدا کیس پر مُنْسِر ہے	174
امیر اہلے سونت اور ڈنٹیا سونت	148	سخاوت کیسے کہتے ہیں?	175
”بُرٹی“ کے چار ہر سو فیض سے	149		
4 اہمیتی مُباکرا			

مجزاً میں	سفہ نکار	مجزاً میں	سفہ نکار
थेलیयां भर भर कर तक्सीम फ़रमा दीं	175	ईधार करने वाली माँ	204
बेहतरीन सखावत	176	अपना खाना कुचे पर ईधार कर दिया !	205
जूदो करम ईमान का हिस्सा	176	ईधार का घवाब मुफ्त लूटने के नुस्खे	206
अनोखा अन्दाज़े सखावत	177	खिलाने पिलाने का अज़ीमुशान घवाब	207
सखावत ईमान के लिये बाधे तक़िव्वत	178	रहमते इलाही को वफ़िज़ करने वाला अमल !	208
इब्राहीम बिन अदहम की सखावत	179	ज़रा गौर कीजिये !	208
सखी का खाना दवा है !	180	बेटी की इस्लाह का राज़	211
मेरे आक़ा की सखावत	181	(6) खُلُوٰنے जنگات का निकाह व जहेज़	217
यारे गार का माली ईधार	184	दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	218
कन्जूसी बातिन का रोग	186	बरकाते दुरुदो सलाम	217
तीसरा और चौथा मदनी पूर्ण : ईधार और खाना खिलाना	187	सच्चिदा फ़ातिमा का निकाह	219
ईधार की ता रीफ़	187	अबू बक्र व उमर की सच्चिदुना अली को तरगीब	220
ईधार का घवाब बे हिसाब जन्नत	187	अस्लाफ़े किराम का मुबारक शिआर	222
ईधार व सखावते फ़ातिमा	189	सच्चिदुना अली की बारगाहेरिसालत में हाज़िरी	223
साइल की अर्ज़ और सच्चिदतुना फ़ातिमा का सखावत भरा जवाब	192	शाने मुस्तफ़ा व अज़मते मुर्तजा	225
उमर बिन ख़ुन्नाब का ईधार	194	आमान पर निकाह और फ़िरिश्तों की बारात	226
سالمान फ़ारसी का ईधार	195	खुब्बए निकाह	230
अबू अली दक्काक का ज़ज्ज़ब ईधार	196	सच्चिदए काएनात का जहेज़	232
ईधार की आला मिथाल	197	खُلُوٰने जनत की जहेज़ की मन्ज़ूम तफ़सील	233
ईधार की मदनी बहार	199	जहेज़ कैसा और कितना हो ?	235
आयते मुबारका की تفسیر	201	बिने अन्तार का जहेज़	236
अस्लाफ़े उम्मत आईनए कुरआने सुन्नत थे	202	सच्चिदा फ़ातिमा की रुख़सती	238
राबिआ अदविव्या का ईधार	203	दा'वते तआम	240

مجزاً میں	سپلف نمبر	مجزاً میں	سپلف نمبر
شاہدی بیویاہ کی اسلامی رسم	244	سخیبدتُنا عَمَّے کُلَّ شَوْمَ کی ابوالاد	263
شاہجہادِ اُنٹار مذکورہ العالیٰ کی شاہدی	247	سخیبدتُنا عَمَّے کُلَّ شَوْمَ کا اینٹکالے پور ملال	263
تکریبے نیکاہ	247	اُلیٰ و فاطمہ کوئی ناراج نہ ہے	264
مکان پر سजاؤاٹ	248	میں نے مدنی بُرْکَ اُن کے سے اپنایا؟	266
پور تکلُف جہوں لئے سے انکار	249	(7) خواہوں جنات اُؤکھے عُمُر خواہاشری	271
ایجادتِ اپنے جیگرو نا 'ت	249	دُرُّ د شاریف کی فرجیلیت	271
رسمے روحِ سُرتی	250	ڈیزِ دوازی جی دنگی	272
धُومِ دھام سے والیما کرنے کا مُتالبا	250	घرےل کاموں کی تکسیم	272
دا'ونے والیما	252	�ر کے کام کا ج کرنے کے فواباد	274
شاہدی کی پہلی رات بھی ہبادت	253	�ر میں کام والی رخ سکتے ہے یا نہیں؟	275
ہبادت ہو تو اپنی ہو!	254	خالیک کی نا فرمائی میں کسی کی ڈتا اُن جاڈج نہیں	277
خواہوں جنات کی ابوالادے پاک	255	جہنم میں ڈیورتوں کی کھرست	279
﴿1﴾ سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی ویلادتے با ساظھادت	255	�ر خُوشیوں کا گہوارا کے بنے؟	281
سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی انجیلیا ج و ابوالاد	257	یا رबوے کریم! ہم مُٹکی بنا کے ٹنیس	281
سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی شاہادت	258	ہرُوف کی نیسبت سے�ر میں مدنی ماحول	
﴿2﴾ سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی ویلادتے با ساظھادت	259	بنانے کے 19 مدنی فُل	
سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی انجیلیا ج و ابوالاد	259	خُادیم کے لیے درخواست	285
سخیبدتُنا ایمامہ حسن کی شاہادت	260	تربیت و تا 'لیم کا خُذانہ	290
﴿3,4﴾ سخیبدتُنا موسیٰ حسین و سخیبدتُنا رُکُبُیا	261	خواہوں جنات اُور�رےل کام کا ج	291
﴿5﴾ سخیبدتُنا جناب کا جیکے خیر	261	خواہوں جنات اُور�رےل کام کا ج	291
سخیدا جناب کا نیکاہ	261	�ر کو خُوشیوں کا گہوارا بنانے اُور	292
سخیدا جناب کی ابوالاد	262	آسخیرت سانوار نے کے لیے "اُنٹار" کی ترک	
﴿6﴾ سخیدا عَمَّے کُلَّ شَوْمَ	262	سے "بینتے اُنٹار" کے لیے 12 مدنی فُل	
سخیبدتُنا عَمَّے کُلَّ شَوْمَ کا نیکاہ	262	ہرکے جناب	294

مجزاً میں	سپھنہ نمبر	مجزاً میں	سپھنہ نمبر
“ہنکڑکے شوہر” کے آٹھ ہنرک کی نیسبت سے	294	گیرت مند شوہر	333
شوہر کے ہنکڑک سے مутاہلیک 8 فراہمیں مسٹفہ		پرداز جذبہ ہے بے جذبہ نہیں	335
بیوی کے ہنکڑک سے موتاہلیک چند اہمیتیں مुبارکہ	298	کیس کیس سے پردہ ہے؟	337
بیوی کے جیمسے شوہر کے ہنکڑک	299	اُورت کے لیے فون بوسول کرنے کا تریکا	338
دنیوی میشکلات پر سب کی تلاکیں	301	�ر سے نیکلاتے وکٹ کی اہمیتیاں	340
تشریف ہاتھ و فباڈ	303	بے پردگی سببے گزبے ایساہی	341
سब کی ہنکڑک	307	پردے کی اہمیتیاں	342
اندماجے امیرے اہلے سجنات	307	میں فرشنے بلال تھی!	346
چوٹے بارڈ کی انفارماڈی کو شناس	309	(9) خواہوں جنگات کے فاکے	349
(8) خواہوں جنگات کا پرداز کا ٹھاتیما		313 دُرُّ د شریف کی فوجیلیت	349
دُرُّ د شریف کی فوجیلیت	313	خواہوں جنگات کا آلام میں گریت	350
مُنَادی کی نیدا براۓ سادیہ فاطیما	314	“فاطیما” کے 5 ہنرک کی نیسبت سے اس	353
بَا هِيَا سے ہدایا	316	وَاکیپ سے ہاسیل ہونے والے 5 مدنی فُل	
ہدایا اے عثمانی	317	کاشان اے فاطیما میں فاکا کشی کا آلام	356
جنگات میں بھی پردہ	320	جنگات پانے میں سبقت	358
بیوی فاطیما کے کفرن کا بھی پردہ	321	گریت پر سب	359
تمامے مُسْلِمَاتُ کی تاجِ جعلیٰ کا اک سبب	323	اہلے بیت کے تین روزے	360
بے پردگی کی ہولناک سजَا	325	فَاکا کاشیے فاطیما اور دُعاء مسٹفہ	363
کَنْدِیَہ کے بَالَ بَھِی چُپاَیَہ!	325	اک وسیسہ اور اس کا جواب	365
نا جاڈج پیشان کرنے والیوں کے اعْجَابِ کا مُشَاهِدَہ	326	تین دن کا فَاکا	367
اُورتوں کے نا جاڈج پیشان	328	بُوك کے 10 فَوَادِ	368
بے گُرتی کی ڈنٹیا	330	بُوك کا سیلہ	368
بہارے شریعت کا مُتالعہ فرمادیے	332	جنگات و دُوْجُھ کے دروازے	369

م杰امین	سپھنا نمبر	م杰امین	سپھنا نمبر
بدن کی اسلام	370	دکھکولِ دباد کی معاشری کا تریکھا	420
mere مسائیلِ حل ہے گا	372	مُعْلَس کون؟	420
اسلامی بہنوں میں مددی اینکلاب	373	دکھکولِ دباد کے حوالے سے "فیکرِ مداری"	422
(10) خاٹوںے جنات کا جوہد	379	جرا سا کاغذ فٹنے پر ما جیرت	424
دُجُورِ ﷺ کا مُعْلَس کوشای	379	فیراکِ رسول پر بے چینی وِ دُجُورِ تیرا	425
فرمانا		ویسا لے رسول پر خاٹوںے جنات کا گم وِ عالم	428
آلِ اُمَّۃ مُؤمِنی ہے دُجُورِ کاسیم ہے!	382	نیہا اور بے سبی میں فکر	428
جوہد کی تا ریف	384	ویسا لے رسول پر خاٹوںے جنات کی کلیہ کے پیغام	429
جوہد و فکر کی فوجیل	384	میغام پر روانہ کیسا؟	431
آلِ اُمَّۃ کے مہربوں بندے	385	نیہا کی تا ریف	431
رسُلِ اللہ کا پاسِ نیدا نام	385	نیہا کرنے کا انجام	432
دُجُور کی خاٹوںے جنات کو جوہد کی تا لیم	386	بچے کی موت پر سُب کرننا	434
مُعْلَم بھر میں دارِ خیل ہونا نبی کے	389	جنات میں بھر	434
شاپانے شان نہیں		بے پرہنگی سے توبہ	435
کنگن سدکا کر دیے	391	(12) خاٹوںے جنات کا ویسا لے مُغوا	441
سیدھا راستا میل گیا	396	مُوتیوں کا تاج	441
(11) ویسا لے رسول پر خاٹوںے جنات کی کے پیغام	401	وکھاتے سدھی دا کی خبر	442
دُرُسِ شاریف کی فوجیل	401	یُمَانِ افروزِ خواہ	443
نبی کی گئی خبر	402	گمے مُسْتَفَکا کا گلبا	446
بُوئی کی فوجیل پر مُعْتَمِل ۲ فکر میں مُسْتَفَکا	403	خاٹوںے جنات کی وسیعتوں	451
راج چھپانے کے مُعتَلِک ۲ اہمیت مُبارکا	405	واسیع کیسے کہتے ہیں؟	452
مہربوے رکھے جوں جلال کا جاہری ویسا لے	407	واسیع کی اکسماں	452

مجزاً میں	سپھا نمبر	مجزاً میں	سپھا نمبر
برسیت باراً مگر فیرت	453	“مُلْكٌ” کے تین ہرکٹ کی نیست سے سو راء	465
خواہوں جنات کو کیس نے گسل دیا?	454	مُلْكٌ کے ۳ فَجَّاً لِ	
سیفیہ جہاں کا جناہیا	457	بے داری تک ڈیفاؤٹ	466
“یاسین شریف پڑو” کے بارہ ہرکٹ کی	459	نیات دیلائے والی	467
نیست سے سو راء یاسین کے ۱۲ فَجَّاً لِ		ما بھلے رسم	467
کورآن کا دل	459	دُعَا اے اُنہاں	469
۱۰ کورآن کا بحیا ب	459	“بَاهِدٌ” کے چار ہرکٹ کی نیست سے کالیم اے	469
دنیا و آریخیر کی بلائی	460	تیفیہ کے ۴ فَجَّاً لِ	
شہید کی موت	460	(۱) خوش نسیب کون?	469
تمام ہنات پوری ہوں	461	(۲) افجول جیگرو دُعا	470
سائبیکا گناہ مُعآف	461	(۳) آسماں کے دربارے خوں جاتے ہیں	470
نہج میں آسماںی	462	(۴) تجذیبےِ ایمان	471
مگر فیرت کا انعام	462	جہنی مرنی ج تدنیست ہے گیا!	471
دل نرم ہوگا!	463	درستے فے جانے سعنات کے ۲۲ مدنی فُل	475
ہر ہر کے بدلے مگر فیرت	463	تفسیلی فہریست	479
اُجیم سزا دات	464	مآریخیو مرا جے اے	487
برکاتے یاسین	464	الل مدائی نتولِ علیمیا کی کوتوب کی فہریست	493

کا **سراکارے دو اعلیٰ نورے موجسس م** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ
 یہ شادی مُعَزَّزٌ ہے : جب کیا مات کا دن ہوگا تو اک موناہی
 نیدا کرے گا : اے اہلے ماجماع ! اپنی آنکھیں بند کر لو تاکی
 ہجڑتے فاتیما بینتے مُحَمَّد مُسْتَفْفًا (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) پول سیرا ت
 سے گزرے । (جامع الصفیر مع فیض القدیر، حرف الہمزة، ج ۱، ص ۵۲۹، الحدیث: ۸۲۲)

مأخذ و مراجع

مطبوعات	مؤلف / مصنف	نام کتاب
مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۴۳۲ھ	کلام پاری تعالیٰ	قرآن مجید
مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۴۳۲ھ	اطلی حضرت امام احمد رضا خاں توثی ۱۴۳۵ھ	ترجمہ کنز الایمان
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۳۲ھ	امام سعیل حقی بردوی متوفی ۱۴۱۳ھ	تفسیر روحُ الکتب
المکتبۃ الشاملۃ	امام علام معلیٰ بن محمد خازن متوفی ۷۲۱ھ	تفسیر حاذن
دار الفکر بیروت	امام جلال الدین سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	الدرُّ المنثور
پشاور ۱۴۳۲ھ	امام ابو الحسن شیخ بن مسعود بن بوی متوفی ۵۱۶ھ	تفسیر بفوی
لتحیی کتب خانہ مرکز الاولیاء بہوڑ	مولانا محتشی احمد بخاری لتحیی متوفی ۱۴۳۹ھ	تفسیر نعیمی
مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۴۳۲ھ	صدر الدافتل شیخ الدین مراد آبادی متوفی ۷۱۶ھ	تفسیر حَوَّائِنُ الْوَرْقَان
لتحیی کتب خانہ بخاری	مفتی احمد بخاری لتحیی متوفی ۱۴۳۹ھ	تفسیر نورُ العرفان
دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام محمد بن اسحاق بخاری متوفی ۲۵۲ھ	صَحِحُ البَخارِی
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام سلم بن جاجج نیشاپوری متوفی ۲۶۱ھ	صَحِحُ مُسْلِم
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام محمد بن عیّاش ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	سُنُنُ التَّرمذِی
دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام محمد بن زیاد قزوینی ابن بابوی متوفی ۲۷۳ھ	سُنُنُ ابْنِ ماجَة
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام ابو داود سلیمان بن اعفع متوفی ۲۶۵ھ	سُنُنُ ابْنِ دَاوُد
دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام حافظ محمد بن حبان متوفی ۳۵۲ھ	صَحِحُ ابْنِ حِیَّانَ
مذیمت الاولیاء ملتان شریف	حافظ عبداللہ محمد بن ابی هبیبة عصی متوفی ۱۴۳۵ھ	المُصَنَّفُ لِابْنِ ابِی هَبَیْبَةِ
دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام عبد اللہ بن عبد الرحمن متوفی ۲۵۵ھ	سُنُنُ الدَّارِمِی
المکتبۃ الشاملۃ	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر پوتی متوفی ۷۸۰ھ	مَجْمُعُ الزَّوَالِد
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام احمد بن حنبل متوفی ۲۳۱ھ	مسنونِ احمد
دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ	امام محمد بن عبد اللہ حاکم متوفی ۳۰۵ھ	الْمُسْتَدِرُكُ لِلْحَاکِمِ

دارالقبرير د	الإيجاع شيرويه بن شهراواديلي متوفي ١٥٥٩هـ	فُرْدُوسُ الْأَخْبَارِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٣هـ	علام علي ثقي بن حام الدين بندر متوفي ٩٧٥هـ	كُنْتُ الْعَمَالِ
دارالكتب العلمية بيروت	حافظ سليمان بن احمد طراني متوفي ١٣٦٠هـ	مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ
المكتبة الشاملة	امام جلال الدين عبدالرحمن بيضي شافعي متوفي ١١٩٦هـ	جَامِعُ الْأَحَادِيثِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٤هـ	شِعْرُ اسْعَيلِ بْنِ حَمْرَجَلُونِي مُتُوفٍ ١٤٢٤هـ	كَشْفُ الْجِفَاءِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٨هـ	حافظ سليمان بن احمد طراني متوفي ١٣٦٠هـ	الْمُعْجمُ الْكَبِيرُ
دارالقبرير عمان ١٣٢٥هـ	حافظ سليمان بن احمد طراني متوفي ١٣٦٠هـ	الْمُعْجمُ الْأُوْسَطُ
دارالمعرفة بيروت ١٣٢٩هـ	امام ذكي الدين متذري متوفي ٢٥٦هـ	الْتَّرْغِيبُ وَالْتَّرْهِبُ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٩هـ	امام ابوياقوب يحيى بن سعيد الغوثى متوفي ٢٥٨هـ	شُعْبُ الْإِيمَانِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٣هـ	امام ابومحمد حسين بن مسعود الغوثى متوفي ٥٥٦هـ	شَرْحُ السُّنْنَةِ
المكتبة الشاملة	حافظ محمد بن فتوح الحميري متوفي ٣٨٨هـ	الْجَمْعُ بَيْنَ الصَّحِيحِيْنِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٥هـ	امام محمد بن اساعيل بن جباري متوفي ٢٥٢هـ	الْأَدَبُ الْمُفَرْدُ
دارالقبرير بيروت ١٣٢٣هـ	امام ابواليعلى الحمر بن علي موصلي متوفي ١٣٠٧هـ	مُسْنَدُ ابْنِ يَعْلَى
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٨هـ	علام ابيالدين تبريزى متوفي ٢٢٧هـ	مِشْكُوْهُ الْمَصَابِيْحِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢١هـ	امام جلال الدين عبدالرحمن بيضي شافعي متوفي ١١٩٦هـ	جَمْعُ الْحَوَامِعِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٩هـ	امام ابوياقوب يحيى بن سعيد الغوثى متوفي ٢٥٨هـ	دَلَائِلُ الْبَوْهَةِ
دارالكتب العلمية بيروت	امام الابراهيم عبدالله بن عدرى جرجانى متوفي ١٣٦٥هـ	الْكَاهِيلُ فِي ضَعْنَاءِ الرِّبَاحِ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٤هـ	امام جلال الدين عبدالرحمن بيضي شافعي متوفي ١١٩٦هـ	الْجَامِعُ الصَّغِيرُ
مكتبة الامام شافعى الرياض ١٣٨٦هـ	حافظ زين الدين عبدالرؤوف نادوى متوفي ١٤٠٣هـ	تَيْسِيرُ شَرْحِ جَلِيعِ صَفِيرٍ
دارالكتب العلمية بيروت ١٣٢٤هـ	حافظ زين الدين عبدالرؤوف نادوى متوفي ١٤٠٣هـ	فَيْضُ الْقَدِيرِ
فریدیک شال مرکز الاولیاء لاہور ١٤٣٨هـ	فَقیرِ عَظِيمٍ بِدِفْنِ مُحَمَّدِ شَرِيفِ الْأَقْبَدِيِّ مُتُوفٍ ١٤٢٠هـ	رُؤْمَةُ قَلْرَى شَرْحُ صَحِحِ الْمَعْلُوِىِّ

شانے خاتمے جنمات	رضی اللہ عنہا	ગાંધીબજો મશારે આ
باب المدینہ کراچی	امام حافظ الدین ابوذر کرایخی بن شرف دہوی ۱۲۸۶ھ	شرح المسلم للنبوی
دارالكتب العلمية بیروت ۱۳۷۸ھ	علام مسلمی بن سلطان قاری متوفی ۱۰۱۳ھ	برؤۃ النبیخ مشکاة المصائب
فرید بک شال مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۲۳ھ	شیخ عبدالحق حدث دہوی متوفی ۱۰۵۲ھ	أشعّة اللمعات
لئی کتب خانہ گجرات	مولانا نقی احمد یارشان نقی متوفی ۱۳۹۱ھ	مرأۃ المناجح
دارالكتب العلمية بیروت ۱۳۲۹ھ	علی بن محمد بن الاشیر متوفی ۱۲۳۰ھ	أسد العالیۃ فی میرۃ الصحابة
المکتبۃ التوفیقیۃ مصر	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۴ھ	الاصابۃ فی تمیز الصحابة
دارحضرت ۱۳۲۶ھ	شرف الدین عبدالرسویں دمیاطی متوفی ۷۰۴ھ	لحریلح فی ثواب العمل الصالح
دارالكتب العلمية بیروت ۱۳۲۸ھ	امام ابو القاسم عبدالکریم بوارن قیری متوفی ۱۳۶۵ھ	الکِرِسَالَةُ الْقُشْشِيرِيَّةُ
دارالكتب العلمی بیروت ۱۳۹۵ھ	امام محمد بن عبدالرحمن شاذی شافعی متوفی ۹۰۲ھ	القولُ الْبَرِیْعُ
شیخ رادرزلہ لاہور ۱۳۱۹ھ	شیخ عبدالحق حدث دہوی متوفی ۱۰۵۲ھ	جَذْبُ الْقُلُوبُ
دارالмедиہ القاهرہ ۱۳۲۳ھ	شہاب الدین احمد بن محمد بن حجر عسقلانی متوفی ۹۶۲ھ	کڑواجِ عنِ الفُرُادِ الْكَبِیرِ
کوئٹہ	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	مُکَاشَفَةُ الْقُلُوبِ
دارالعارف مصر	حافظ احمد بن حیی بیان ذری متوفی ۱۲۷۸ھ	انساب الاشراف
دارالكتب العلمية بیروت	حافظ ابوکریش علی بن احمد خطیب بغدادی متوفی ۱۳۳۳ھ	تاریخ بغداد
شیع القرآن پیغمبر کش مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۹۹ھ	شیخ عبدالحق حدث دہوی متوفی ۱۰۵۲ھ	مقادِیْجُ الْبَیْوَکَ
حامد ایڈ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور	امام عبد الرحمن بن علی جوزی متوفی ۵۵۹ھ	الْوَفَا بِأَحْوَالِ الْمُصْكِلَةِ
مصر	شیخ محمد واعظ اصفہانی	جامعُ المغیزات
المکتبۃ الشاملۃ	ابوحامد امام محمد بن مصلحه المدقی القادی متوفی ۱۲۷۸ھ	بِرِیْقَهُ مَحْمُودُ دَیَہ
المکتبۃ الشاملۃ	محمد بن یوسف صالح شاذی شافعی متوفی ۹۲۲ھ	سُبُّ الْهُدَیِ وَالْإِشَاد
دارالبشاۃ الاسلامیۃ بیروت	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	منْهَاجُ الْعَابِدِيْنَ
دارالكتب العلمی بیروت ۱۳۲۷ھ	امام عبد الوہاب شعرانی متوفی ۹۷۳ھ	الْأَطْبَاقَاتُ الْكُبِیرَی
مکتبۃ مشکاة الاسلامیۃ	امام جمال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی متوفی ۱۱۹۶ھ	تمہید الفرش

دار المغاربي دمشق ١٣٢٦هـ	شیخ احمد محمد سعید الصاغری	الزهد و قصر الامر
دار الاحیاء اثرات العرب بیروت ١٣٢٦هـ	امام ابوالایش نصر بن محمد مرتفعی متوفی ٩٧٥هـ	فڑہ المکوٰۃ و مکوٰۃ القلب التمکون
دار احیاء اثرات العرب بیروت ١٣٢٦هـ	ملئۃ الاسلام شیعیب بن علی بن علی شافعی متوفی ٨١٥هـ	کروض الفاقہ
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٦هـ	شیخ ابوطالب محمد بن علی کے متوفی ٣٢٦هـ	قوٹ القلوب
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٩هـ	ابوحادیث محمد بن محمد غزالی متوفی ٥٠٥هـ	احیاء علوم الدین
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٩هـ	امام محمد بن محمد غزالی متوفی ٥٠٥هـ	لباب الاحیاء
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٦هـ	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زیدی متوفی ١٤٠٥هـ	التحف السادة المتقدین
شیعی برادر زمزراک الاولیاء لاہور	مقتی جلال الدین احمد امجدی متوفی ١٣٢٢هـ	خطبات مُحرّم
شیعیان لاقر ان پبلیکیشنز کراچی الاطیاء لاہور ١٤٢٩هـ	سید محمد احمد قادری متوفی ١٤٢٨هـ	اوراق غم
شیعی برادر زمزراک الاولیاء لاہور ١٤٢٩هـ	ابوحسن نور الدین علی خطبوٰ فی متوفی ١٤٢٧هـ	پہنچۃ الکمسار
کتب خانہ حاجی نیاز احمد محدثہ لاہولیاء ملتان	فرید الدین عطّار متوفی ٦٦٢٦٢٠هـ	تذکرۃ الاؤکیاء
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٢٩هـ	اعلیٰ ایضاً تاج احمد رضا خان متوفی ١٤٣٠هـ	مشکلۃ الازدیاد فی مشقی الازداد
باب المدینہ کراچی	علامہ ابو بکر بن علی عذراً متوفی ٨٠٠هـ	الجھوہرۃ النیرۃ
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٣هـ	علام مطلاع الدین حکیمی متوفی ١٤٠٨هـ	دُرُّ مُختار
دارالمرفہ بیروت ١٣٢٣هـ	محمد امین ابن عابدین شافعی متوفی ١٤٢٥هـ	رَدُّ المُخْتَار
دارالکتب العلمیہ بیروت	امام فیض الدین خان بن علی رطبی حقی متوفی ١٤٣٧هـ	تَبِیِّنُ الْحَقَّاَقِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ١٣٢٣هـ	علام حامی مولانا شفیع القائم متوفی ١٤١٦هـ	الفتاویٰ الہندیۃ
رضفا و میراث من مرکز الاولیاء لاہور ١٤٢٧هـ	اعلیٰ ایضاً تاج احمد رضا خان متوفی ١٤٣٠هـ	فتاویٰ رضویہ
احمد رضا بریلوی کتب خانہ کراچی ١٤٢٩هـ	اعلیٰ ایضاً تاج احمد رضا خان متوفی ١٤٣٠هـ	احکام شریعت
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٢٩هـ	صدر ارشیبیہ مفتی امجد علی عظی متوٰفی ١٤٣٦هـ	بھاری شریعت
خدیجہ بیلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ١٤٣٣هـ	مولانا جلال الدین روی متوفی ٦٧٢هـ	مُہٹری مولانا رُوم
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٣٣هـ	رسیس امدادگار مولانا نقی علی خان متوفی ١٤٩٧هـ	احسن الرعاء

گلستان سعدی	شیخ مصلح الدین سعید شیرازی متوفی ۱۳۹۱ھ	لکتبہ دایلی مکتبہ زر الال ولیاء لاہور
جگہ الحق	مفتی احمد یار خان نسی تولیٰ متوفی ۱۳۹۱ھ	قادری پیغمبر مکتبہ زر الال ولیاء لاہور ۱۳۲۴ھ
سفیہ نوح	مفتی محمد شفیق ادکاری متوفی ۱۳۰۲ھ	ضیاء القرآن بیلی کیش مکتبہ زر الال ولیاء لاہور
مسائل القرآن	علام عبد المصطفیٰ عظیٰ متوفی ۱۳۰۶ھ	شیخ برادر زمر مکتبہ زر الال ولیاء لاہور ۱۳۲۸ھ
فضائل دعا	اعلیٰ یحضرت امام احمد رضا خاں متوفی ۱۳۳۰ھ	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۴ھ
عاشق اکبر	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۵ھ
مدبیہ کی منجهلی	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی
پُر آسوار بہکاری	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی
خاموش شہزادہ	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی
بيانات عطاریہ	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۶ھ
152 رسمت یہودی حکیمات	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی کتب)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۷ھ
ضیائی صدقات	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۹ھ
تریبیت اولاد	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی کتب)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۴۰ھ
سیرت رسول عربی	توڑ بخش توکلی حقیٰ تشیندی متوفی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن بیلی کیش مکتبہ زر الال ولیاء لاہور
سیرت سیدنا ابو درداء	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی المسنّت)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۹ھ
قبر کا امتحان	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی
بہشت کی کنجیان	علام عبد المصطفیٰ عظیٰ متوفی ۱۳۰۶ھ	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۹ھ
تعارف امیر اهلسنّت	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی المسنّت)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۲۸ھ
اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نسی متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۲۹ھ
نیک بنتی اور بنتی کے طریقے	المدرسة العلمية (شیخ اصالحی کتب)	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۰ھ
اسلامی بہنوں کی نماز	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۹ھ
بڑی کئی بلائیں میں مولانا جواب	امیر المسنّت مولانا محمد عطاء قاروی	مکتبۃ المدیہ باب المدیہ کراچی ۱۳۳۹ھ

مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۸ھ	المدینہ العلیہ (شبہ اصلح)	امہات المؤمنین
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	علام عبدالعزیز بن عثیمین ۱۴۰۶ھ	کرامات صحابہ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	علام عبدالعزیز بن عثیمین ۱۴۰۶ھ	جنتی زیور
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	المدینہ العلیہ (شبہ اصلح کتب)	خوفِ خدا
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	فیضانِ ست جلد اول
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	غیبت کی تباہ کاریاں
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	نیکی کی دعوت
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	لماز کے احکام
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	کھبہ کلمت کے لئے من مول جوب
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	ملائی پیچ سُورہ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	رسائلِ عطاء ریہ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	منی کی لاش
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	المدینہ العلیہ (شبہ اصلح کتب)	تکبیر
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	المدینہ العلیہ (شبہ استہت)	سینگون والی دلہن
فرید بک شال مرکز الاولیاء لاہور	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان ۱۳۲۹ھ	حدائقِ بخشش
شیخ برادر زمرکر الاولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ	شیخ احمد بن مولانا حکیم رضا خان ۱۳۲۹ھ	ذوقِ نعمت
شیخ برادر زمرکر الاولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ	مفتی اعظم بن تلوڑی ۱۴۰۲ھ	سامانِ بخشش
نیمی کتب خانہ گجرات	حکیم الاستہت مفتی احمد رضا خان ۱۴۰۱ھ	دیوانِ سالیک
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	ابیر الاستہت مولانا محمد عطاء قادری	وسائلِ بخشش
مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ	علام کاظمی علی کافی شیرین ۱۴۰۷ھ	کافی کی نعمت



مجالیکے اول مددیگری کی تکف کے

پے شا کارڈ کا بیلے موتال آ کرو

﴿شَرِيكُهُ كُلُّ بَعْدٍ وَكُلُّ حَاجَةٍ﴾ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

(1) کرنسی نوٹ کے شارڈ اہکامات :

(اول کیپلول فکریہل فٹھیم پڑی کیرتاسیدھارہیم) (کुل سफہات : 199)

(2) ویلایت کا آسان راستا (تساویر شیخ)

(اول یاکوتیل واسیتہ) (کुل سفہات : 60)

(3) ایمان کی پہچان (ہاشمیہ تمحید ایمان) (کुل سفہات : 74)

(4) مआشی ترکی کا راج

(ہاشمیہ و تشریفیہ تدبیری فلماہو نجات و اسلام) (کुل سفہات : 41)

(5) شریعت و ترقیت

(مکالوں دے رکھا اب بی دی جانی شریعت و لاما) (کुل سفہات : 57)

(6) بعبوتہ هیلائی کے ترقیکے (تھرکیہ اسلامیہ) (کुل سفہات : 63)

(7) آلہا هجرت سے سووال جواب

(دیہاریل همکیل جلوی) (کुل سفہات : 100)

(8) ایڈن میں گلے میلنا کہسا ؟

(ویشاہل جید فری تھلیلی معاہنی کتیل اید) (کुل سفہات : 55)

(9) راہے خودا عزوجل میں خرچ کرنے کے فرجاہل

(رہیل کھاتی وال بواہ بی دی واتیل جیگنی و معاہلاتیل فوکراہ) (کुل سفہات : 40)

(10) والیدن، جاؤ جین اور اساتیزا کے ہوکوک

(اول ہوکوک لی تھیل دکوک) (کुل سفہات : 125)

(11) دعاء کے فرجاہل (احسن نیل ویاہ ایل آدابیہ دعاء ماحمود جلیل مودع ایل احسانیل ویاہ)

(کुل سفہات : 326)

﴿شادُّوْلُ هُونے والی اُبَّا کُوتُب﴾

اجڑی : اسما میں اہل سنت محدثین دینے میں ملکت
مولانا احمد رضا خاں علیہ رحمۃ الرحمٰن

- (12) کیپلول فکریہل فراہم (کل سफہات : 74)
- (13) تھیڈل ایمان (کل سفہات : 77)
- (14) اول ایجاداً تول متنہ (کل سفہات : 62)
- (15) ایکا-متوں کییا مہ (کل سفہات : 60)
- (16) اول فکلول ماؤبی (کل سفہات : 46)
- (17) اجتلل اے'لام (کل سفہات : 70)
- (18) اجڑی-ج-متوں کے مارییہ (کل سفہات : 93)
- (19,20,21) جدیل مومتار اعلیٰ رحیل مومتار
(اول موالیل اول ابوال وسیانی) (کل سفہات : 713,677,570)

﴿شُو'بَعِ إِسْلَامِيِّ كُوتُب﴾

- (22) خونے خودا عزوجل (کل سفہات : 160)
- (23) انفیکرداری کوشش (کل سفہات : 200)
- (24) تگ دستی کے اسٹاک (کل سفہات : 33)
- (25) فیکر مدنیا (کل سفہات : 164)
- (26) امدادیان کی تاریخ کیسے کرو ؟ (کل سفہات : 32)
- (27) نماج میں لعکما کے مسائل (کل سفہات : 39)
- (28) جنہاں کی دو چابیاں (کل سفہات : 152)
- (29) کامیاب اسٹاک کیون ؟ (کل سفہات : 43)
- (30) نیسا بے مدنی کافلیا (کل سفہات : 196)
- (31) کامیاب تالیبے اسلام کیون ؟ (کل سفہات : تکمیل 63)
- (32) فیجاںے اہمیت اعلیٰ (کل سفہات : 325)

- (33) مufidtaye da'vat ke islamी (کل سफہات : 96)
- (34) hukm w batil kā fark (کل سفہات : 50)
- (35) Tahkīkāt (کل سفہات : 142)
- (36) Ar-baidne h-nafīyāh (کل سفہات : 112)
- (37) Aqāri jin kā gurслے māyyit (کل سفہات : 24)
- (38) Tlāk kē āsān masā'il (کل سفہات : 30)
- (39) Tawāba kī riwāyat w hikāyat (کل سفہات : 124)
- (40) Kubr khul garī (کل سفہات : 48)
- (41) Ādāb-e-mu'rīd kāmil (mu'kkiml pāñc hīssē) (کل سفہات : 275)
- (42) Yā wāi aur mūvī (کل سفہات : 32)
- (43 tā 49) Fatawā ahle sunnat (sāt hīssē)
- (50) Kibrīstān kī chudail (کل سفہات : 24)
- (51) Gāyhe pāk رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کے hālat (کل سفہات : 106)
- (52) Tāzārufe amīrī ahle sunnat (کل سفہات : 100)
- (53) Rahnumāē jadwal bāraē m-danī kāfiila (کل سفہات : 255)
- (54) Da'vat ke islamī ki jellখানা jāt mēn khidmat (کل سفہات : 24)
- (55) M-danī kāmōn kī takṣīm (کل سفہات : 68)
- (56) Da'vat ke islamī ki m-danī baharē (کل سفہات : 220)
- (57) Tarbiyat e avlād (کل سفہات : 187)
- (58) Āyahat kūrānī kē anvār (کل سفہات : 62)
- (59) Ahādīṣe mu'barraka kē anvār (کل سفہات : 66)
- (60) Fejānē chahal ahādīṣ (کل سفہات : 120)
- (61) Bad gūmānī (کل سفہات : 57)

﴿شُرُّو' بَأْتُ تَرَاجِيمَ كُوتُبٍ﴾

- (62) جننات مें ले जाने वाले आ'माल (अल मुजर्सर्बिह फ़ी घवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
- (63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल अरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
- (64) हुस्ने अख्लाक (मकारिमुल अख्लाक) (कुल सफ़हात : 74)
- (65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ्लिम तरीकुतअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)
- (66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलाद) (कुल सफ़हात : 64)
- (67) अद्वा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)
- (68) आंसूओं का दरिया (बहरुद्दुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)
- (69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सजाएं (कुर्तुल उऱून) (कुल सफ़हात : 136)
- (70) उऱूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

﴿شُرُّو' بَأْتُ دَر्सَيَ كُوتُبٍ﴾

- (71) ता'रीफ़ाते नहूविय्यह (कुल सफ़हात : 45)
- (72) किताबुल अङ्काइद (कुल सफ़हात : 64)
- (73) नुऽहतुन्नज़र शर्हे नख्वतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)
- (74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
- (75) निसाबुतज्बीद (कुल सफ़हात : 79)
- (76) गुलदस्तए अङ्काइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
- (77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव
- (78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

﴿شُرُّو' بَأْتُ تَخْرِीجٍ﴾

- (79) अजाइबुल कुर्अन मअ़ ग़राइबुल कुर्अन (कुल सफ़हात : 422)
- (80) जनती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
- (81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अब्वल (हिस्सा : 1 से 6)
- (82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)

- (83) بہارے شریعت، جیلد سی وعمر (ہیسٹا : 14 سے 20)
- (84) اسلامیہ زیندگی (کل سफہات : 170)
- (85) آئینہ کیامات (کل سفہات : 108)
- (86) عالمہ احمد بن مسلم (کل سفہات : 59)
- (87) سہابہ کیرام کا دشکے رسالت (کل سفہات : 274)

﴿شہوں باغِ امراءِ اہل لعل سُونَت﴾

- (88) سرکار کا پیغمبر ﷺ کے نام (کل سفہات : 49)
- (89) مुکدھس تہریرات کے ادب کے بارے میں سوال جواب (کل سفہات : 48)
- (90) اسلام کا راجح (م-دانی چنل کی بہارے ہیسٹے دو فرموم) (کل سفہات : 32)
- (91) 25 کریمین کے دین اور پادری کا کبوترے اسلام (کل سفہات : 33)
- (92) دا'وتے اسلامی کی جائیدادیں جات میں خدمت (کل سفہات : 24)
- (93) بیوی کے بارے میں وسوسے اور ان کا درمان (کل سفہات : 48)
- (94) تجھ کی رسم اسلامیہ سونت کیسٹ سی وعمر (سونت نیکاہ) (کل سفہات : 86)
- (95) آداب میں کامیل (مکمل پانچ ہیسٹے) (کل سفہات : 275)
- (96) بولند آواز سے جیکر کرنے میں حکمت (کل سفہات : 48)
- (97) کہاں بول گئی (کل سفہات : 48)
- (98) پانی کے بارے میں اہم مالا (کل سفہات : 48)
- (99) گونگا مبارکی (کل سفہات : 55)
- (100) دا'وتے اسلامی کی م-دانی بہارے (کل سفہات : 220)
- (101) گوم شدہ دلہا (کل سفہات : 33)
- (102) میں نے م-دانی بُرکٰۃ کیا پہنچا؟ (کل سفہات : 33)
- (103) جنہوں کی دنیا (کل سفہات : 32)
- (104) تجھ کی رسم اسلامیہ سونت کیسٹ دو فرموم (کل سفہات : 48)
- (105) گرافیل درجی (کل سفہات : 36)

- (106) مुख़الیفُت مَحْبَّت مِنْ كَمْسَةَ بَدَلَيْ ? (کُل سَفَهَاتٌ : 33)
- (107) مُرْدَى بُولَّا عَلَى (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (108) تَجْكِيرَهُ أَمَّارِهِ أَهْلَهُ سُونَّتُ كِسْطٌ أَبْوَلَ (کُل سَفَهَاتٌ : 49)
- (109) كَفْنَ كَمْسَةَ سَلَامَتٌ (کُل سَفَهَاتٌ : 33)
- (110) تَجْكِيرَهُ أَمَّارِهِ أَهْلَهُ سُونَّتُ تَهَاهُرٌ (کُل سَفَهَاتٌ : 49)
- (111) تَلَ مَدِينَةَ كَمْسَةَ سَعْيَتَ مِيلَ غَرْبٌ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (112) بَدَ نَسَيَبَ دُلْهَهَا (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (113) مَا' جُرَّ بَصْبَهُ مُبَالِلَهُ كَمْسَةَ بَنَيْ ? (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (114) بَهَ كُسُورَ كَمْسَةَ مَدَدٌ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (115) أَعْتَارِي جِنَنَ كَمْسَةَ غُرَسَلَ مَثْيَرٌ (کُل سَفَهَاتٌ : 24)
- (116) نُورَانِي بَهَرَهُ وَالَّهُ بُرْجَهُ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (117) آنَّخَوْنَ كَمْسَةَ تَارَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (118) وَلَيَ سَهَنَسَهَتَ كَمْسَةَ بَهَرَتَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (119) بَهَ بَرَكَتَ رَهَيَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (120) إِغَوا شَعْدَهُ بَصَوْنَ كَمْسَةَ وَالَّهُ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (121) مَيْ نَكَ كَمْسَةَ بَنَأَ ? (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (122) شَرَابِي، مُعَاجِزِنَ كَمْسَةَ بَنَأَ ? (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (123) بَدَ كِيرَدَارَ كَمْسَةَ تَوَبَا (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (124) خُوشَ نَسَيَبِي كَمْسَةَ كِيرَنَهُ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (125) نَاكَامَ آشِيشِكَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (126) نَادَانَ آشِيشِكَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (127) هَرَوِيَنْيَهُ كَمْسَةَ تَوَبَا (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (128) نَويَ مُسْلِمَ كَمْسَةَ دَرْبَرَيَ دَاسْتَانَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (129) مَدِينَهُ كَمْسَةَ مُوسَافِرَ (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (130) خَوْفَنَاكَ دَانَتَهُ وَالَّهُ بَصَّهَا (کُل سَفَهَاتٌ : 32)
- (131) فِلَمِيَ اَدَهُ كَارَ كَمْسَةَ تَوَبَا (کُل سَفَهَاتٌ : 32)

- (132) ساس بہو میں سو لہ کا راجح (کुل سफہات : 32)
- (133) کبیریتیان کی چوڈل (کुل سفہات : 24)
- (134) فیضانے امریروں اہلے سونت (کुل سفہات : 101)
- (135) ہیرت ایگزیکٹو دینی (کुل سفہات : 32)
- (136) ماؤنٹن نائی جوان کی توبہ (کुل سفہات : 32)
- (137) کریسچن کا کبولے اسلام (کुل سفہات : 32)
- (138) سلاتوں سلام کی آشیکا (کुل سفہات : 33)
- (139) کریسچن مسیلمان ہو گیا (کुل سفہات : 32)
- (140) چمکتی آنکھوں والے بزرگ (کुل سفہات : 32)
- (141) میڈیکل شو کا مतووالا (کुل سفہات : 32)
- (142) میڈیکل نائی جوان کی توبہ (کुل سفہات : 32)

﴿مَجَالِيْسِ تَرَاجُّعِ كَوْنُوكَ وَكَرْدَهَ كَوْنُوكَ﴾

بَانِيَهُ دَا' وَتَهُ إِسْلَامِيَّهُ مَؤْلَيَا نَأَبُو بِلَالَ مُهَمَّدَ إِلْيَاهُسَ اَنْتَارَ كَادِيرِيَ مَدْظُلَهُ الْعَالِيَ کے ان رسائل کے ان رہبی تراجیم شاءاے ان ہو چکے ہیں :

- (1) بادشاہوں کی ہڈیوں (یا مول ملک)
- (2) موردنے کے سدامے (ہمومیل میثیت)
- (3) جیسا اد دو سلام (جیسا اسلامیت وسلام)
- (4) ش-ج-رے اعلیٰ کا دییہ ر-ج-وییہ انترییہ

﴿دُنْ دَسَاعِلَ کَوْسِنَدَهِ تَرَاجُّعِ شَرِیْعَهُ شَرِیْعَهُ هُوَ تُوكَهُ﴾

- (1) جیسا اد دو سلام (معاولیل فہم : بانیے دا' وَتَهُ إِسْلَامِيَّهُ مَؤْلَيَا نَأَبُو بِلَالَ مُهَمَّدَ إِلْيَاهُسَ اَنْتَارَ کَادِيرِيَ مَدْظُلَهُ الْعَالِيَ)
- (2) گرفتار (معاولیل فہم : بانیے دا' وَتَهُ إِسْلَامِيَّهُ مَؤْلَيَا نَأَبُو بِلَالَ مُهَمَّدَ إِلْيَاهُسَ اَنْتَارَ کَادِيرِيَ مَدْظُلَهُ الْعَالِيَ)
- (3) ابُو جہل کی موت (معاولیل فہم : بانیے دا' وَتَهُ إِسْلَامِيَّهُ مَؤْلَيَا نَأَبُو بِلَالَ مُهَمَّدَ إِلْيَاهُسَ اَنْتَارَ کَادِيرِيَ مَدْظُلَهُ الْعَالِيَ)

- (4) اہوتیگامے مسیحیت (مُعْتَدِلُوں : بانیے دا' وَتَهُوَ إِسْلَامُ مَوْلَانَا
ابو بیلآل مسیح مسیح اُنّا ر کادیری مَدْعُوُلُهُ الْعَالِي)
- (5) دا' وَتَهُوَ إِسْلَامُ کا تاریخ اُرُوف़ ।

﴿इस के इलावा अमीरे अहले سُन्नत के कई रसाइल के सिन्धी तरاجुम श्री शाउअ़ हो चुके हैं﴾

- (1) اہکامے نماج
- (2) فیضانے رمजان
- (3) فیضانے بیسمیللہ احمد
- (4) پست جو کوپلے مدارینا
- (5) آدابے تاریخ
- (6) بیاناتے اُنّا ریخ
- (7) جیناتے جو بادشاہ
- (8) سُون्हے بہاراں
- (9) جلجنلوں انہا اسٹباں
- (10) آکھا جو مہینو
- (11) ابکھ کھوڈے سُوار
- (12) پول سیرات جی دھشت
- (13) جنکھی نانگ
- (14) کافلن جی واسی
- (15) بولی کان مدارینا
- (16) مولائیں جا لای 21 م-دنی گول
- (17) شجراء اُنّا ریخ
- (18) 40 رُحْمَانِیِّیِّیِّ ایلاؤ

﴿अल मदीनतुल इलिम्या के इन २साइल के सिव्ही तराजुम श्री शाउध्र हो चुके हैं ॥

- (1) मूवी इन टीवी
- (2) उशर जा अहकाम (हारीन जा लाइ)
- (3) मुफ़ितये दा'वते इस्लामी
- (4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
- (5) इन्फ़िरादी कोशिश
- (6) ख़ौफ़े खुदा عَزُّ وَجَلُّ
- (7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
- (8) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला

दिखावे के लिये ज़ेवरात पहनना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मकतबतुल मदीना की मत्रबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 270 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अृत्तार क़ादिरी فَرَمَّا تَوَسَّلَ إِلَيْهِ بِرَأْيِهِ ذَمَّتْ بِرَأْيِهِ اَنْتَمُ الْعَالَمُونَ फ़रमाते हैं : औरत को बतौरे फ़ख़्र व तकब्बुर दिखावा करने के लिये ज़ेवर पहनना बाइषे अ़ज़ाब है। हुज़रे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम, दाफ़े रंजो अलम, साहिबे जूदो करम, शाफ़े उम्म माक़े ए रंजो अलम, साहिबे जूदो करम, शाफ़े उम्म مَنْ كَانَ مِنْ أَنْفُسِهِ مُحِبًّا لِّلَّهِ وَمُنَاهِيًّا عَنْهُ كَانَ مِنَ الظَّالِمِينَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : तुम में से जो औरत सोने के ज़ेवर पहने जिसे ज़ाहिर करे उसे इस के सबब अ़ज़ाब दिया जाएगा । (سنن ابى داود، ج ٤، ص ٦٢١، الحدیث: ٧٣٤٤)

ياد داشت

دُوراً نے مُتَّالِعْ أَنْجُرَتَنَ اَنْدَرَ لَاِنَ كَيْجِيَ، إِشَارَاتَ لِكِبَرَ كَرَ سَفَهَ نَمْبَرَ نَوْتَ فَرَمَا لَيْجِيَ، إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَمْ مِنْ تَرَكَكَيْ هَوَيَّ।

ذُنْوَان	سَفَهَ	ذُنْوَان	سَفَهَ

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المؤمنين اما بعد كما يوصي بالذم من الشيطان الرجيم يشير الى المؤمنين الظالمين



सुन्दरत की बहावें

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المؤمنين اما بعد كما يوصي بالذم من الشيطان الرجيم يشير الى المؤمنين الظالمين

तब्लीغे कुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहौल में ब कसरत सुन्ततें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्ततों भरे इज्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी इलितजा है। अशिकाने रसूल के म-दनी काफिलों में ब नियते सबाब सुन्ततों की तरबियत के लिये सफर और रोजाना फिक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्ड्रामात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्मृ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफरत करने और ईमान की हिफाजत के लिये कुद्दों का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये “म-दनी इन्ड्रामात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “म-दनी काफिलों” में सफर करना है।

सबकान्बुद्ध भर्ती वाली

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : गृीव नवाज मस्जिद के सामने, सैफ़ी नार रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ : 19/216 फ़लाह दारैन मस्जिद, नाला बाजार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

ستة العين
MC 1286

मकत्तबतुल मधीना

मिलेक्टेड हाऊस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,
अहमदाबाद-1, गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

ستة العين